SANGRASH

BY

R.S.NULPERUMAAL

संघर्ष

[देशद्रोही शक्तियों का भंडाफोड़ करने वाला सामाजिक उपन्यास]

आर० एस० नल्लपेरुमाल

सुरुचि साहित्य
केशवकुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली-११००५५

प्रकाशक
सुरुचि साहित्य,
केशवकुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली-११००५५

प्रथम संस्करण : १९८२

मूल्य : १५.००

मुद्रक : नवप्रभात प्रिंटिंग प्रैस
बलबीर नगर, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

SANGHARSHA (Novel) By R. S. Nallaperumal
Rs. 15/-

एक

वह एक पुराना मकान था। शहर के कोलाहल व लोगों की चहल-पहल से दूर। दूर से देखने पर उजड़ा हुआ सा लगता था। उस उजड़े छोटे से मकान से एक सजीव पत्रिका नवजीवन का स्पंदन लिए हर दिन सूर्योदय के साथ-साथ प्रकाशित हो रही थी। उस पत्रिका में सनसनीदार खबरें, गुदगुदी देने वाली अश्लीलता न थी। खबरों को जिस ढंग से सुरुचिपूर्ण शैली में जनता के सम्मुख पेश करना है, उस उत्तरदायित्व को वह गरिमा के साथ निभा रही थी। 'भारतमणी' का नाम उसके लिए बिल्कुल उपयुक्त था। सचमुच भारत का वह अनमोल हीरा था। पत्रिका के स्तर और उसकी अमित बिक्री में कोई सम्बन्ध नहीं, इस सच्चाई का 'भारतमणी' एक ज्वलंत उदाहरण बना था।

'जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसी' यही 'भारतमणी' का तारक-मंत्र था। इसी आदर्श पर टिके रहने से उसकी बिक्री सीमित थी, एक हद से ज्यादा न हुई। 'भारतमणी' के उच्चादर्श व पत्रिका धर्म के प्रति आम जनता की श्रद्धा न रही तो आश्चर्य की बात क्या? उनको तो हर दिन कुछ न कुछ सनसनीदार, चटपटी खबरें, हल्की-फुल्की अश्लीलता भरी उत्तेजक वार्ताएँ चाहिए; जो उनके मन मस्तिष्क पर छा जाए, बुद्धि को भ्रष्ट करे, और वासना का उन्माद चढ़ा दे। हां, ऐसा रसीलापन व सेन्सेशनल न्यूज़ अपेक्षित थी।

सह-संपादक दिन भर प्राप्त खबरों को संपादित करने में व्यस्त थे। सह-संपादक मुरकानन्दम् ने एक न्यूज़ तथा उसके शीर्षक पर नज़र पड़ते ही नाक-भौं चढ़ाते हुए सामने बैठे व्यक्ति से पूछा—"क्योंजी! यह क्या! होटल कोहिनूर की न्यूज़...? तिस पर इसके लिए एक हैड लाइन...हूं...

चश्मे को जरा ऊपर की तरफ चढ़ाते हुए सह-संपादक रामभद्रन् ने पूछा —"कौन सी खबर ! कल रात अरेस्ट किया था···वही···"

झट स्वामीनाथन् ने उत्साहपूर्ण स्वर में फरमाया—"जी ! वह मेरी न्यूज़ है।"

"जरा इधर आइए न !" मुरकानन्दम् बोले। हाथ की पेन्सिल को मेज पर पटककर वह उठा और मुरकानन्दम् के पास जाकर खड़ा हो गया। मुरकानन्दम् ने उस खबर की ओर इशारा करते हुए पूछा—"यह तुम्हारी करतूत है क्या ?" स्वामीनाथन् ने सिर हिलाकर हामी दी।

"कितनी बार समझाऊं तुम्हें ! अभी आगे एक महीना हो गया, लगता है कुछ सीखा नहीं। इस खबर को ऐसे मोटे-मोटे अक्षरों में छपवाने की क्या जरूरत आ पड़ी है। ऐसी-वैसी खबरें किसी एक कोने में छोटे-छोटे अक्षरों में भी छपने योग्य नहीं ···। समझे ?" मुरकानन्दम् ने कहा।

"नहीं···नहीं···ऐसी खबरें ही पाठकों को आकर्षित करेंगी।"

"वह सब हमें भी मालूम है। अगर सम्पादक इसे पढ़ लें तो इसे फाड़ कर तुम्हारे सिर पर डालेंगे।".

"जी···यही तो सनसनीदार खबर है।"

"होटल कोहिनूर में कोई मर्द और औरत नशे में चूर होकर हंगामा मचाये···उस होहल्ला को सनसनीदार रिपोर्ट देने के लायक हमारी पत्रिका नहीं। समझे ?"

"जी···यह तो सुप्रसिद्ध सिने-तारिका शशिरेखा से सम्बन्धित बात है।"

"कोई भी हो, हमें क्या ? शशिरेखा क्या इस देश की नेत्री है ?" झल्लाते हुए मुरकानन्दम् ने उस न्यूज़ छपे पृष्ठ को मोड़कर गोला-सा बनाते हुए रद्दी की टोकरी में फेंक दिया। स्वामीनाथन् अपना-सा मुंह लिए सीट पर लौट आया।

"संपादक महोदय आ गए !" स्टैनो-टाईपिस्ट प्रेमा ने कमरे में आकर ऊँची आवाज में सूचना दी। तुरन्त तीनों उप-संपादक प्रधान-संपादक के कमरे की ओर बढ़े।

"कोई नई खबर है ?" प्रधान-संपादक मुरली ने उन्हें देखते ही

पूछा।

रामभद्रन् बोल उठे—"दोपहर को किसी ने फोन पर बुलाकर धमकी दी है।"

"किसने कहा ?"

"फोन ऑपरेटर ने कहा।"

"क्या कहा था ?"

"कम्युनिस्ट पार्टी सम्मेलन पर हमारी जो रिपोर्ट निकली उसका जिक्र करके चेताया है।"

मुरली मुस्कराया। "ओह ! तब हमारी रिपोर्ट ने उनको चिढ़ा दिया है।"

"आज रात को उनकी पब्लिक मीटिंग है।"

"उसे फ़ालो करने किसको भेजें ?"

"हां, स्वामीनाथन् जाये वहां !" मुरली ने सिर घुमाकर स्वामीनाथन् की ओर देखा। स्वामीनाथन् ने स्वीकृति जतायी।

मुरकानन्दम् बोले—"नहीं, इसे न भेजना ! वहाँ जाकर झगड़ा मोल न ले बैठे। वह तो मजदूरों की मीटिंग है। जरा होशियार रहना है।"

"यह तो हमारा संवाददाता है···यही जाए···!" मुरली ने जोर देकर कहा तो मुरकानन्दम् मौन हो गए।

मेज पर रखी फोन की घंटी बजी। मुरली ने रिसीवर उठाया—"हलो !····'भारतमणी' का संपादक बोल रहा हूं।···कौन ?···सिनेमा चक्रवर्ती ?···और ! हां-हां···बहुत दुखी हो गए···? झूठ कैसे लिखना ? जानते हैं न भारतमणी कभी झूठी-मूठी बातें नहीं छापती···वह तो भारतमणि की ओपीनियन् है···नान्सेन्स···" मुरली ने फोन रख दिया। थोड़ी देर कुछ सोचता रहा। फिर सामने बैठे सह-संपादकों की ओर देखा।

"किसने···?" मुरकानन्दम् ने धीमी आवाज़ में बुदबुदाया।

"हमने उस फिल्म का रिव्यू किया था न ? उसने चन्द्रमोहन का दिल दुखा दिया लगता है। उसी के सेक्रेट्री ने फ़ोन किया है। कहता है

कि हमें अपनी भूल पर क्षमा याचना करते हुए एक और रिव्यू प्रकाशित करना है।" मुरली ने हंसते हुए कहा।

आधे घंटे के बाद उप-संपादक अपने कमरे में वापस आए। स्टैनो-टाइपिस्ट प्रेमा शाम की डाक में आयी चिट्ठियों का बंडल ले आयी। चिट्ठियों का बंडल खोलकर मेज़ पर रखते हुए बोली—"शिवराम जी ने फोन किया।"

"क्या बात थी ?"

"पूछा कि आप हैं क्या ? कह दिया कि आपके आने के बाद फिर फ़ोन करेंगे···हां···थोड़ी देर पहले शारदा जी आयी थीं।"

"कहाँ ? यहाँ आयी थी ?···क्या वह चली गयी ?" मुरली ने हड़-बड़ाते हुए एक साथ कई प्रश्न कर दिये। उसकी व्यग्रता व उतावलेपन को देखकर प्रेमा मन ही मन मुस्करायी।

"थोड़ी देर ठहरने के लिए कहा था। यह भी बताया कि आपके कमरे में बैठ जायें। लेकिन फिर कभी आने की बात कहकर वह तुरन्त चली गयीं।" प्रेमा ने बातें करते-करते मुरली की तरफ़ गौर से देखा। मुरली की आँखों में अनोखी चमक थी। प्रेमा अपनी ओर देख रही है, यह महसूस होते ही मुरली ने झट बात बदल दी—"पेपर मिल की वह चिट्ठी टाईप कर दी ?"

"वो तैयार है।"

"अच्छा ! तुम जा सकती हो।"—मुरली कुर्सी से उठ गया।

वह छत से उतरकर सीधे छापाखाने में गया जहाँ पत्रिका छप रही थी। उसे देखते ही कम्पोजिटर ने उस दिन प्रकाशित होने वाली अखबार की डम्मी-कापी उसके हाथ में दे दी। पन्नों को उलटता रहा कि तीसरे पृष्ठ पर एक शीर्षक आँखों में गड़ गया। तुरन्त उस न्यूज़ को पढ़ लिया, फिर कहा—"देखिये, चौथे कॉलम की इस न्यूज़ को निकाल देना है।"

"वह जगह खाली रह जाएगी।"

"असेम्बली के मेम्बरों का नीचतापूर्ण व्यवहार" के बदले 'सदस्यों का दल परिवर्तन' या 'पैंतरेबाजी'—ऐसा लिख दीजिए न !"

"अच्छा जी ! ऐसा ही लिख दूंगा।"

'मुरकानन्दम्‌जी की नज़र से न जाने यह कैसे बच गयी है।' बुद-बुदाते हुए मुरली बरामदे में आया। द्वार पर बैठे छोकरे को स्वामीनाथन् को बुला लाने की आज्ञा देकर मुरली नीचे उतरा और लॉन की ओर बढ़ा। स्वामीनाथन् के आते ही दोनों द्वार पर खड़ी मोटर की तरफ बढ़े। चलते-चलते मुरली ने कहा—"बताया है न ! पेज मेकअप करने के बाद एक बार मुरकानन्दम् जी को दिखाने के उपरान्त ही स्ट्रैक आर्डर देना है।"

"ऐसा ही करता हूं सर···" स्वामीनाथन् ने बड़ी भव्यता दिखायी।

"नहीं···अन्य उप-संपादक ऐसा नहीं करते···इसलिए तुमने भी अपना मैटर सीधे प्रेस को भेज दिया है।"

"नहीं···सर··· मैंने ऐसा कुछ नहीं भेजा है···"।

"रामभद्रन् जी की बात अलग है। वे अनुभवी हैं। इस पत्रिका के आदर्श व सिद्धांत से परिचित हैं।"

"मुरकानन्दम् जी को सब कुछ दिखाकर ही···"

"असेम्बली मेम्बरों का नीचतापूर्ण व्यवहार, यह शीर्षक किसने दिया था ? तुमने ही न ?"

स्वामीनाथन् ने पल भर सोचा। फिर फीकी हंसी के साथ बोला—"हां···लेकिन···उसे···" उसने आश्चर्य के साथ मुरली की ओर देखा।

"पूछना चाहते हो कि मुझे कैसे पता लगा कि वह शीर्षक तुमने ही दी होगी··है न ? शीर्षक के शब्दों ने ही तुम्हें रंगे हाथ पकड़ लिया। सुनो ! खबरों को जैसी की तैसी जनता को देना ही पत्रिका का धर्म है। खबरों पर अपनी निजी राय या आलोचनात्मक विचारों को साथ में नहीं देना है। जो कुछ हमारा निजी अभिप्राय है, उसे संपादकीय लेख में देना है। नहीं तो कार्टून का सहारा ले सकते हैं। अगर तुम्हें असेम्बली मेम्बरों में भ्रष्टाचार पर, उनके परिवर्तन पर, कुछ लिखना है, उस पर एक लेख लिख सकते हो। उसे चौथे पृष्ठ में जहाँ लेख आदि प्रकाशित किया जा रहा है, उस कालम में दे सकते हैं। अपनी निजी आलोचना को खबरों के साथ मिला के देना अशिष्टता है। कई बार यह बात मैंने तुम्हें समझा दी है—लेकिन तुम्हारे कानों में जूँ तक नहीं रेंगती।" मुरली की आवाज में झल्लाहट थी।

"एक पार्टी के टिकट पर चुनाव जीत लें, फिर दूसरी पार्टी की ओर लपकें…यह द्रोहपूर्ण कृत्य, यह पैंतरेबाजी नीचता नहीं तो और क्या है सर ?" स्वामीनाथन् ने अकुलाहट भरे स्वर में पूछा ।

"तुम्हें वह नीच व भ्रष्टतापूर्ण आचरण सा दीखता है तो सही… लेकिन इस क्षुद्रतापूर्ण व्यवहार पर जहाँ छींटे कसना है, वहाँ उसे करना है, अलावा…

"खबरें सुनते ही भावावेश में आने…"

"यह आवेश और उन्माद…एक गौरवपूर्ण पत्रिका के लिए अपेक्षित नहीं है। उत्तेजनापूर्ण खबरों को भी संयत स्वर में उचित रूप में निकालना ही हमारा लक्ष्य है । हमारी पत्रिका का संस्कार वही है। स्वामीनाथन् ! तुम्हारे मन की बात मैं जानता हूं । चाहते हो लोगों को लुभाना…लेकिन सस्ता आकर्षण दिलाके लोगों की कुत्सित भावनाओं को उभाड़ कर पैसा बनाने वाले व्यापारी हम नहीं हैं। समझे ?" हंसते हुए स्वामीनाथन् के कंधे पर हल्की थपकी देकर मुरली गाड़ी में जा बैठा ।

स्वामीनाथन् भौंचक्का-सा खड़ा देखता रहा कि मोटर धूल उड़ाती आँखों से ओझल हो गयी। स्वामीनाथन् तुरन्त लंबी डगें भरता हुए कंपोजिंग के कमरे में गया और बोला—"तीसरे पृष्ठ में एक गलती सुधारनी है ज़रा उसे निकालिए ?"

"एडिटर ने खुद सुधार दी है।" कंपोजिटर ने छपे हुए पृष्ठ उसकी तरफ बढ़ाए। स्वामीनाथन् ने देखा उसका दिया शीर्षक बदल दिया गया था ।

"आदर्श…संस्कार…ऐसा कहते रहें तो पत्रिका की बिक्री बढ़ेगी क्या ?" ओठों में बुदबुदाता वह ऊपर आया।

बाहरी कमरे में टाइपराइटर पर खट-फट करती बैठी प्रेमा ने उसे देखते ही शरारत भरी मुस्कान भरी । "स्वामीनाथन् जी ! एडिटर ने क्यों बुलाया था ?"

"दावत खिलाने…।"

"सोचा था बात वही होगी…आपका चेहरा ही बता रहा है कि बात क्या है। जी ! शशिरेखा की क्या न्यूज़ है ?"

"उसके लिए कोई और पत्रिका लेकर देखना । 'भारतमणि' में ऐसी न्यूज़ों का ब्लैक आऊट है । समझी ?"

इतने में फोन की घंटी बजी । स्वामीनाथन् ने रिसीवर उठाया।

"हैलो ! हां । 'भारतमणि' का दफ्तर है। कौन बोलते हैं···हाँ··· ऐडिटर से बातें करना है ? जी···आपका नाम ! ···शारदा है ।"

"प्रेमा ने झट उसके हाथ से रिसीवर छीन लिया और बोली—"कौन है···जी नमस्कार ! वे···अभी-अभी बाहर गए हैं । पता नहीं कब लौटेंगे। कोई खबर देनी है ?···अच्छा ।"

रिसीवर को नीचे रखती प्रेमा की आँखें चमक उठीं ।

"ये बातें मैं नहीं बता सकता था ? रिसीवर को जबरदस्ती छीनने की क्या जरूरत थी ?" स्वामीनाथन् गुस्से में आ गया।

"शारदा ने बातें की थीं—इसीलिए तो···।"

"तो रिसीवर हाथ से छीन लेना था ?"

"जी ! यह एडिटर का निजी मामला है ।"

"ओह ! ऐसी बात ! कौन है यह शारदा ?"

"एक लड़की है ।"

"वह तो आवाज़ से स्पष्ट था । बताओ कौन है वह ?"

"एडिटर की परिचिता है । बस ! इतनी ही न्यूज़ अब दे सकती हूं ।" प्रेमा उसे देखकर मुस्करायी । फिर दराज़ बन्द करके घर जाने को तैयार हो गयी ।

आगे उसके मुंह से एक शब्द भी न निकलेगा यह जानकर स्वामीनाथन् अपने कमरे की ओर बढ़ा ।

"स्वामीनाथन् जी ! शशि की न्यूज़ को फॉलो कीजिएगा···" प्रेमा ने पीछे से आवाज दी ।

एक बार उसकी तरफ घूरकर स्वामीनाथन् अपने कमरे में गया । प्रेमा हंसती हुई सीढ़ियां उतरने लगी ।

दो

हेरालट कार धीमी रफ्तार में जा रही थी। उसकी गति के अनुरूप मुरली की चिन्तनधारा भी मन्द-मन्द चल रही थी। पिछले एक हफ्ते से उसका मन अशान्त था। 'भारतमणी' के प्रतिद्वन्द्वी के रूप में 'स्वर प्रभाती' नाम से एक पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ था, उस पत्रिका के संचालक एक करोड़पति थे। 'भारतमणी' को शुरू हुए अभी दो साल हुए थे। इतने समय में ही वह जनता के बीच काफी लोकप्रिय बन गया। 'भारतमणी' का गौरवपूर्ण स्तर, समाचारों को देने में उसकी अपनी मर्यादित सुरुचि पूर्ण शैली, व उसका आदर्शवाद लोगों के आदर का पात्र बन गया था।

'भारतमणी' के संपादकीय लेखों का इतना महत्व था कि असेम्बली में भी उसकी धाक जम गयी। उसमें प्रकाशित 'पाठकों के पत्र' व 'लेख' सरकारी उच्चाधिकारियों व मंत्रीगणों का ध्यान आकृष्ट कर रहे थे। 'विदूषक' के नाम पर प्रकाशित मुरली के कार्टून ने सबको आकर्षित कर लिया था। ये व्यंग्य-चित्र काफी गहरी चोट लगाते थे। ये व्यंग्य-चित्र अर्थपुष्ट थे। भ्रष्टाचारियों पर बिच्छु-सा डंक मारने वाले इन कार्टूनों का व्यंग्य व विद्रूप, अपने सिद्धान्त को अभिव्यक्ति देने का साहस इत्यादि ने 'विदूषक' को काफी प्रख्यात कर रखा था। रोज सबेरे 'भारतमणी' को हाथ में उठाते ही पाठक यह देखने के लिए उत्सुक हो उठते थे कि उस दिन का कार्टून क्या है! इतना वह मशहूर हो गया था। शासक वर्ग हो या राजनीतिक हो, आमतौर पर शिक्षित समाज में 'भारतमणी' का बड़ा आदर व सम्मान था। लेकिन आजकल 'स्वर प्रभाती' की बिक्री के लिए उसके मालिक जिन उपायों को चालू कर रहे थे उसी ने मुरली को चिंता-

कुल कर दिया था।

एक हफ्ते के अन्दर 'भारतमणी' की बिक्री कम होने लग गयी। 'भारतमणी' की पचास हजार प्रतियाँ बिकती थीं, अब 'स्वर प्रभाती' के निकलते ही उसकी खपत कम हो गयी। इस पर मुरली हताश न हुआ। उसे इसका दृढ़ विश्वास था कि एक अच्छी पत्रिका कभी गिरेगी नहीं। एकाएक वह होश में आया कि देखा गाड़ी बड़ी ही धीमी रफ्तार में चल रही है और कई लोग फुटपाथ पर खड़े तमाशा देख रहे हैं। दूसरों की कौतुकपूर्ण दृष्टि का वह पात्र बन गया है यह ख्याल आते ही वह लज्जित हो गया। दो-तीन गाड़ियां जो उसे पार करके निकलीं, उनमें से लोग सिर निकालकर उसे देखते गए। मुरली मन ही मन हंसने लगा। कार की रफ्तार बढ़ी। घड़ी की ओर देखा। साढ़े पांच बज गए थे।

टाइपिस्ट का कहना याद आया। शारदा उसकी खोज में आयी थी न ? शारदा की याद आते ही गाड़ी की रफ्तार बढ़ गयी—मन···? वह तो उससे तेज भागता जा रहा था। आयी तो सही, थोड़ी देर ठहरती, इतनी जल्दी क्या थी ? जरा भी सब्र नहीं। हर बात पर जल्दबाजी। प्रोफेसर कमलस्वामी का धीरज, सब्र व शान्त स्वभाव, और इसकी चंचलता में जमीन-आसमान का अन्तर है। हमेशा वह कुछ ऐसी ही चंचल व बेसब्र है। कालेज के दिनों में भी···मुरली चौंक पड़ा। उसकी गाड़ी अब फिर मानो पहले जैसे जलूस में से निकल रही हो, धीमी चाल से चल रही थी। एक स्त्री जो तेजी से उसे पार करती गयी उसकी तरफ झल्लाहट भरी दृष्टि फेरती निकली तो मुरली को हंसी आ गयी।

उसने एक्सीलेटर को जोर से दबाया। गाड़ी एक झटके के साथ भाग निकली। प्रोफेसर के बंगले के पोर्टिको में कार छोड़कर उतरा कि आवाज आयी—"ओह ! ऐडिटर साहब आ गए !"

उसने सिर उठाकर देखा। बरामदे में मुंह में चुरुट लिए प्रोफेसर खड़े थे। उनकी गम्भीर आकृति, भव्य मुखमंडल पर ज्ञान की आभा, तेजस्वी आंखों में उमड़ता प्यार···मुरली श्रद्धा भरी आंखों से उन्हें देखता हुआ पास आया। निकट आते ही उसके कंधे पर हाथ रखे वे बरामदे में पड़े सोफ़े की तरफ चले।

"यह क्या ! ईद के चांद निकले···।"

"थोड़ा काम अधिक था—इसलिए आ न पाया।"

"अभी थोड़ी देर पहले ही शारदा ने तुम्हें फोन करने को कहा था। उत्तर मिला कि तुम दफ्तर से निकल गये। अच्छा ! यह बता कि पत्रिका का क्या हाल है ?" प्रोफेसर खुद बैठ गये और मुरली को एक और सोफे पर बिठा दिया।

"परवाह नहीं। चलता है। लेकिन पिछले हफ्ते से 'स्वर प्रभाती' के नाम पर एक और दैनिक निकल रहा है।"

"हां···देखा है।···बिल्कुल घटिया मैगजीन है। लेकिन आदिमूलम् बड़ा घुटा हुआ व्यापारी है। व्यापारिक दांव-पेंचों में चतुर है। वह जानता है क्या-क्या दाने बिखेरने से टके सीधे प्राप्त हों।"

मुरली ने चिन्तित स्वर में कहा—"लोगों का इसकी ओर आकर्षण है।"

"मुरली ! मानव की आदिम प्रवृत्ति यही है। हमारी शिक्षा, संस्कार, रुचि, सभ्यता, रहन-सहन, कुल तथा वातावरण आदि ने हमें अपनी आदिम प्रवृत्ति से ऊपर उठाकर मानव के स्तर पर खड़ा किया है। आदिमूलम् मानव मन की तह में छिपी पशुप्रवृत्तियों को, कुत्सित वासनाओं को उभारने की कला में दक्ष है। अब कमर कसके अखाड़े में उतर गया है। टके मिलते हैं और क्या ! सचमुच बड़ा खतरनाक व्यक्ति है।"

"भारतमणी की बिक्री गिर गयी है थोड़ी।"

"घबरा न जाना। चलते-चलते सब ठीक हो जाएगा···" चुरुट का धुंआ निकालते हुए प्रोफेसर बोले।

"तुम पत्रकारिता के क्षेत्र में कैसे आये ! यही अब भी मेरे लिए आश्चर्य की बात बनी है। तुम्हारी अभिरुचि, हाँ टेस्ट के योग्य क्षेत्र है तो सही, लेकिन अगर तुम्हें फर्स्ट डिविजन मिला होता तो शायद तुम इस फील्ड में न आते।"

"शायद किसी कालेज में लेक्चरार बना होता।" मुरली ने फिर कहा—"लेकिन कालेज में लेक्चरार बनने से स्वतंत्र रूप से एक पत्रिका का संपादक बनना ही मुझे अच्छा लगता है।"

"तब तो तुम्हारा एम० ए० में फेल हो जाना भी एक दृष्टि से अच्छा ही हुआ। मुरली !···यह बताना तुम फेल हुए कैसे ? अब तक मुझे इस बात पर विश्वास नहीं हो रहा है। मुरली, तुम पर मुझे कितना भरोसा था। ओह ! कहो न ! तुम कैसे फेल हो गए ?"

मुरली उन्हें अपलक निहारते बैठा था। उसके होठों पर हल्की मुस्कुराहट खिली थी। कमलस्वामी तो पुरानी यादों में खोये से बैठे थे। उन्होंने चश्मा उतारकर पौंछा और कहा—"मुरली, सबकी आशा थी कि तुम सारे प्रान्त में सबसे प्रथम निकलोगे, मगर तुम्हारे फेल होने की खबर पाकर मैं क्या, सारा कालेज भौंचक्का रह गया।"

"शारदा को वह सम्मान मिल गया न ?"

"मुझे तो इसकी बिल्कुल आशा न थी। लेकिन उसने तुमसे आगे निकलने के लिए दिन रात एक कर दी। मैंने उससे साफ बताया था—शारदा ! जमीन-आसमान एक करने पर भी तुम मुरली के पार पहुँच न पाओगी। उसमें मौलिकता है, तेज है—लेखन में वह तड़पन है···मगर एक बात है मुरली ! अगर वह फेल हुई होती···सचमुच पागल हो जाती। प्रांत भर में वही सबसे अव्वल आयी है, यह समाचार पाते ही कितना आनन्दित हुई वह ! बेचारी की मां न रही···यह सब देखने व सुनने को। प्रोफेसर बीती यादों से अकुला उठे। उन्होंने लंबी आह भर ली। मुरली ने विस्मय से उन्हें देखा। लगा उनकी आंखें भर आयी हैं।

थोड़ी देर वे वैसे ही खोये-खोये चुरुट का धुंआ उड़ाते हुए बैठे रहे। उन्हें अपने आसपास की सुध न रही। जब कभी वे गहरे चिन्तन में लग जाते ऐसे ही आंखें मूंदे चुरुट का धुंआ उड़ाते बैठे रहते। मुरली उनके चिन्तन में बाधा डालना न चाहता था। वह चुपचाप बैठा था। प्रोफेसर उसके श्रद्धा के पात्र थे। उनकी बुद्धि, प्रतिभा, चातुर्य, साहित्यिक ज्ञान, स्पष्ट चिन्तन ने उसे मोह लिया था। जिस किसी विषय पर बोलते इस गहराई से बातें करते कि श्रोता उस पर सोचने व चिन्तन करने के लिए उनसे प्रेरणा प्राप्त करता था। उनकी इस वाक्पटुता व हमेशा उनके चेहरे पर विकसित प्रफुल्लता पर मुरली मुग्ध था। काले फ्रेम का वह चश्मा और उनका अभिन्न साथी बना वह चुरुट उनकी गंभीर आकृति

को और भव्य बना रहे थे।

"न जाने तुमने यह हार कैसे झेल ली ? डरता था कि तुम कहीं टूट न जाओ। मुरली ! देखने में तुम बिल्कुल सीधे लगते हो—मगर दिल तुम्हारा पक्का है।" कमलस्वामी ने बड़े प्यार से उसकी ओर देखा। उनका यह प्यार व ममता भरी दृष्टि, स्नेह पूर्ण व्यवहार उसके लिए नयी बातें नहीं थीं।

"मुरली, वह तुम्हारे लिए बड़ा धक्का था न ?"

"मुझे उसकी बिल्कुल परवाह न थी सर !"

"नो-नो···अब···इस क्षण में भी मुझे विश्वास नहीं हो रहा है। कहीं कोई गलती—अवश्य हुई है।···लेकिन···मुरली, तुम फिर परीक्षा दे सकते थे। क्यों इन्कार कर दिया था ?"

"डिग्री ले के क्या करना है ?"

"यू आर करेक्ट···बट···डिग्री लेकर आखिर बनते क्या ? गुमास्तागिरी—"

"शारदा की पढ़ाई पूरी हुए दो साल गुजर गये। क्या करने का इरादा है उसका ?"

"तुम्हारा इरादा क्या है बताओ।"

"सुगृहणी बनने का शिक्षण ले।"

प्रोफेसर ने आश्चर्य के साथ उसकी ओर देखा। अब तक जिसके बारे में सोचा न था उसकी ओर मुरली ने इशारा कर दिया। अब तक शारदा को लाड़-प्यार से पाल दिया। घर-गृहस्थी की बात वह क्या जाने। उसे स्कूल, कालेज व पुस्तकों से मतलब है। गृहस्थी संभालना, एक पुरुष की पत्नी बने रहना, वह क्या जानती ? खेल कूद में समय बिता दिया। एक पिता चाहे कितने ही प्यार से, स्नेह से अपनी बिटिया को पाले। लेकिन एक के रिक्त स्थान को, उस कमी को कभी पूरा कर सकता है ?"

पल भर सारा अतीत उनकी आँखों में घूम आया—पन्द्रह साल पहले मरी उस दिवंगत पत्नी के चेहरे का स्मरण कर उन्होंने लम्बी सांस भर ली।···फिर बोले—"हमारे देश की लड़कियों को घर-गृहस्थी की बातें सिखाने की जरूरत नहीं।"

"ऐसी बात नहीं। आजकल हमारी प्राचीन संस्कृति रीति-नीतियाँ मिटती जा रही हैं। हिन्दु संस्कृति व सभ्यता का अध्ययन करके अगर कोई विदेशी भारत आकर यहाँ की सामाजिक, धार्मिक परिस्थिति पर कुछ लिखेगा तो यही लिखेगा—"हिन्दू संस्कृति, सभ्यता, सांस्कृतिक संस्कार जैसे महत्वपूर्ण, उच्चादर्श सालों पहले भारत में मौजूद थे। इसके चिन्ह व सबूत आज मिलते हैं; लेकिन वे भी उस गरिमामय अतीत के अवशेष के रूप में, भग्नावस्था में बिखरे पड़े हैं।

प्रोफेसर ने ठहाका मारा—"खूब कहा तुमने।"

मुरली बोला—"घर में फालतू बैठी है न ? अब 'भारतमणी' को एक सह-संपादक की जरूरत है। शारदा सहमत हो तो मेरी मदद कर सकती है।"

"पूछ लेना उससे। मुझे कोई एतराज नहीं। संपादक का काम उस के लायक है। तुम कहते तो शायद मान लेती।"

"ओह ! एडिटर जी ! रास्ता भूल गए लगते हो···" आवाज सुन-कर दोनों ने मुड़कर देखा। शारदा आ रही थी।

"तुम्हारे ही बारे में बातें हो रही थीं।" प्रोफेसर ने कहा।

"मेरे बारे में ? ऐसी क्या बात है ?" प्रश्न करती हुई शारदा सोफे में आ बैठी।

"पूछा था, सारे तमिलनाडू में जो एम० ए० में सर्वप्रथम निकली है, वो सालों से घर में बेकार क्यों बेकार पड़ी है ? आखिर क्या करने का इरादा है उसका ?"

"आपने क्या उत्तर दिया था ?"

"उत्तर भी उसी ने दिया।"

"क्या दिया था ?"

"कहा था सुगृहणी बनने का शिक्षण ले ले।"

"ओह ! घर की चारदीवारी में बन्दी रहने को कहते हैं ?" पूछती हुई शारदा ने मुरली की ओर देखा।

शारदा के प्रश्न ने मुरली को उकसा दिया। इस बात पर शरमाया कि वह अब तक उसकी ओर अपलक निहारता रहा था। झट संभलकर बोला —"गृहणी बनने का अर्थ चार दीवारी के अन्दर कैद होना थोड़े ही है।"

"आपके घिसे-पिटे पुराणपन्थ का अर्थ वही है।" शारदा फट पड़ी।

मुरली ने इसका कोई उत्तर न दिया। मुस्कुराता रहा।

"आप जैसे संकीर्ण दृष्टि वालों के कारण ही देश की दुर्दशा हो रही है।"

मुरली मौन रहा।

"मुरली! यह क्या? एकदम चुप्पी साध ली?" प्रोफेसर ने उसे उकसाया।

"कुछ ऐसी सच्चाईयाँ हैं, जिन्हें तर्कवाद द्वारा सिद्ध नहीं कर सकते। सच्चाई तो असल में समझने की बात है, तर्क की नहीं।"

"ओहो…हो…हो…" प्रोफेसर ने फिर से ठहाका मारा।

"तर्क से क्या फायदा? आज नदी तट पर वेदमूर्ति का भाषण है, सुनिएगा। तब मालूम होगा शब्द में कितनी शक्ति है।" शारदा ने रुखाई से कहा।

"शारदा! तुम तो वहां जाना चाहती थी न?"

"हां, पिताजी, वहीं जा रही हूँ। आप भी आइए न?"

"ना…ना बेटी…तुम जाओ।"

"मैं अकेली कैसे?"

मुरली ने बात काटी,—"अकेली कैसी? एक नारी…अपनी रक्षा के लिए एक और को साथ ले जाना पिछड़ेपन की बात नहीं तो और क्या है?"

"रात के वक्त—अकेली कैसे?"

"क्यों? जाने में क्या हर्ज़ है? हमारे संस्कार पिछड़े व फूहड़ हैं। एक युवती का, एक और को साथ लेकर जाना पुराणपंथी की निशानी है। तुम उसका अनुकरण क्यों करो? आज का युग समता का युग है। नारी और नर बराबर हैं। हर कहीं बराबरी का नारा लग रहा है न?"

प्रोफ़ेसर दोनों के वाद-विवाद का रस ले रहे थे। शारदा को कोई उत्तर न सूझा। झल्लाकर बोली—"रोड पर गुंडे फिरते हैं।"

"फिरते रहें। क्या हर्ज? लड़कियां भी गुंडों का जवाब गुंडागिरी से दें तो…"

"मैं कुतर्क करने को तैयार नहीं हूं।" शारदा नाराज हो गयी।

पिता की तरफ मुड़कर कहा—"आइए पिताजी, हम चलें।"

"ना बिटिया, आज मैं नहीं आ सकता। अच्छा मुरली, इसके साथ हो आना।"

"वे नहीं आयेंगे। उनको ये भाषण अच्छे नहीं लगेंगे। वे तो प्रगतिशीलता के विरोधी हैं।"

प्रोफेसर ने फिर कहा—"मुरली! जाओ भी!"

मुरली ने सिर हिला दिया।

आधे घंटे में शारदा सजधज कर बाहर जाने को तैयार हो गयी। मुरली ने उस पर एक दृष्टि फेरी, फिर बोला—"बातों में ही क्रांति का जोश है। आचरण में नहीं।"

शारदा ने विस्मय से पूछा—"आप क्या बता रहे हैं?"

"कहता हूं तुम्हारी वेशभूषा, लंबी-वेणी, सिर पर के फूल, माथे पर यह बिन्दी···सब कुछ पुरातनपंथी की निशानी है।"

"आपको हमेशा कुछ न कुछ वितंडावाद करते रहना है।" बुदबुदाती हुई वह सीढ़ियों से उतरी।

प्रोफेसर ने हंसते हुए कहा—"अरे! रास्ते भर ऐसा तर्क करते न जाना। समझे!"

मुरली ने गाड़ी स्टार्ट की। मगर न जाने उसे क्या हो गया, निकलने से साफ इन्कार कर दिया। गाड़ी वहीं छोड़कर दोनों ने बस में जाने का इरादा कर लिया।

प्रोफेसर बरामदे में बैठे-बैठे उन दोनों को जाते देख रहे थे। मुंह पर चुरुट सुलगती रही। वे मुरली को बेहद चाहते थे। जब वह एम० ए० लिटरेचर करने आया, तब वे ही उसके प्रोफेसर थे। उसकी तेज बुद्धि व शान्त प्रकृति ने उन्हें आकर्षित कर लिया था। उसके साथ बातें व चर्चा करने में उन्हें निराला आनन्द मिलता था। दुनिया भर की बातों पर वह सरसता से बातें करेगा। ऐसी कोई बात नहीं जिसे वह जानता न हो। उसके चिंतन में स्पष्टता थी। बातों में मन की दृढ़ता थी। न पहलवान सा हट्टा-खट्टा शरीर था, न दुबली-पतली रोनी सूरत। गम्भीर आकृति का नहीं कह सकते, लेकिन उसमें एक निराला आकर्षण था। स्वभाव व

प्रकृति से संकोची था। इसलिए सबसे खुलकर बातें न करता। शांत व विनयशील होने के नाते वह खुद किसी से बातों में न उलझता। यदि कोई बातें करता तो उत्तर अवश्य देता, मगर वहां से कटकर निकल जाने की, किसी एकान्त में चले जाने की छटपटाहट उसे अकुलाती रहती। उस की उन बड़ी-बड़ी आँखों में भयभीत गिलहरी-सी घबराहट झाँकती रहती। चेहरे पर नारी-सी कोमलता रहने पर भी प्रतिभा की तेजस्विता, चिन्तन-शीलता की क्रांति थी। शुभ्र ललाट, आँखों में अपूर्व प्रकाश, प्रशान्त मुस्कान उसे एक चिन्तक व बुद्धिजीवी ही नहीं, विनयशील भी घोषित कर रहे थे।

समय के साथ उसने प्रोफेसर कमलस्वामी के दिल में अपने लिए अलग स्थान बना लिया। अब भी प्रोफेसर उसी के बारे में विचार करते हुए आंखें मूंदे पड़े थे। जैसे उसकी यादों को सहारा दे रहा हो। चुरुट के धुएँ ने उन्हें घेर लिया था।

तीन

दोनों बस स्टाप की ओर चले।

"सुना था शाम को दफ्तर आयी थी ?" मुरली ने कहा।

"उस तरफ से गुज़री, 'भारतमणी' का साइनबोर्ड आँखों में चुभ गया बस अन्दर चली गई।"

"ओह ! 'भारतमणी' आँखों को दुखाने लगा कि तुम अन्दर आयी, लिहाजा और कोई कारण नहीं···"

"ऊहूं···"

"तब तो द्वार पर खड़े-खड़े साईनबोर्ड को देख जाती।" मुरली

की आवाज़ में हल्की निराशा थी।

"सोचा था आप अन्दर होंगे।"

"अच्छा हुआ कि मेरी याद भी आयी।"

"ऐसा क्यों ?"

"क्योंकि— ऐसा था तुम्हारी व्यस्तता व दौड़-धूप में मेरी याद की गुंजाइश कैसे।" इतना कहकर मुरली ने उसकी ओर आकुल नयनों से देखा। मगर उसकी दृष्टि दूर से आती बस पर लगी थी।

मुरली ने फिर पूछा—"शारदा! मेरी पत्रिका के लिए एक उप-संपादक की जरूरत है···वह काम तुम लोगी ?"

"यहाँ सिर फुटैल करते रहना काफी नहीं जो चाहते हैं दफ्तर में पास-पास बैठे आए दिन लड़ते रहें ?" शारदा ने हंसते हुए कहा।

"दूर-दूर रहने से अक्सर उलझ पड़ते हैं—पास-पास आ जाएं तो अच्छा! अब तो बहुत-सा काम पड़ा रहता है सिर पर। तुम हाथ बंटा-ओगी तो बड़ी मदद मिलेगी।"

"क्यों ? कोई और नहीं मिला ?"

"ऐसी बात नहीं—बहुत से लोग हैं। मेरा मनचाहा व्यक्ति मिले अच्छा होगा। बताओ शारदा! सहमत हो ?"

"मुझे सोचने के लिए अवकाश चाहिए।"

"ऐसा क्यों ?"

"किसी एक की अधीनता में काम करना।"

"मुझसे डरती हो ?"

"डर-वर कुछ नहीं। सोचकर बताऊंगी।"

"अच्छा! आपकी मर्जी।"

इतने में बस आ गयी। बस में बड़ी भीड़ थी। लगा सारी भीड़ उस मीटिंग में जा रही है। थोड़ी दूर पर बस रुकी तो एक युवती बस में चढ़ गयी। किसी दफ्तर में काम करने वाली सी लगी। हाथ में एक बैनिटी बैग था। पाँवों में हाई हील शू। साड़ी नाभी के नीचे उतर आयी थी। बस में उसे कहीं बैठने की जगह न मिली। इधर-उधर देखा और अन्त में ऊपर डंडा पकड़कर खड़ी हो गयी। वहीं पास सीट पर जो युवक बैठा था

उसे सीट देने के लिए उठा। मगर बगल में बैठे साथी ने उसका शर्ट पकड़कर खींचा और बुदबुदाया—"अरे! उठते क्यों हो? बैठो न।"

"युवती खड़ी है न?"

"खड़ी रहे! क्या हर्ज? एक मर्द खड़ा हो सकता है तो औरत खड़ी नहीं हो सकती?"

"हाय, बेचारी है।"

"चुप रहो! नारी और नर बराबर हैं। समत्व की भावना पर ठेस पहुंचाने का दुस्साहस कैसा! अरे! हमारे संविधान का अपमान न करना।"

उन मित्रों की बातों ने बस के यात्रियों का ध्यान खींच लिया। वे लोग इस तर्क-वितर्क का मज़ा लेने लगे। एक वृद्ध ने पूछा—"भई! इसमें संविधान का अपमान कैसा?"

"जी! हमारे संविधान के अनुसार नारी और नर बराबर हैं। हर क्षेत्र में आजकल नारी, नर से होड़ लगा रही है। इस स्पर्धा का, समत्व भावना का, हमें आदर करना है न! अगर हम उठकर उन्हें जगह दे दें यह उनकी समत्व भावना के लिए चुनौती नहीं तो और क्या है?…"

कुछ लोग हंसने लगे और कुछ कुछ लोग चिन्तामग्न हो गये।

मुरली सामने बैठी शारदा की ओर देखकर मुस्कुराया। उसने घृणा से मुंह फेर लिया। मुरली ने अपनी सीट से उठकर उस युवती को सीट दी। वह बैठ गई।

उस युवक ने परिहासमय स्वर में कहा—"मिस्टर, आपने संविधान के कानून का अपमान कर दिया है।"

सब लोग हंस पड़े। मुरली ने भी उस हंसी में भाग लिया। लेकिन नाभी का प्रदर्शन करती बैठीं सात-आठ फैशनेबिल महिलाएं इस हंसी में भाग न ले पायीं।

मैदान के पास के स्टाप पर बस रुकी। मुरली और शारदा उतर कर मैदान की ओर चले। शारदा ही पहले फूट पड़ी—"बस में भाषणबाज वह युवक…उसे ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहती थी…"

"ओह!"

"पूछना था तुम्हारे घर में मां-बहन, बेटी कोई नहीं है ?"

"लेकिन यह तो उसका ठीक उत्तर नहीं···अगर वह परम्परावादी यह बता दे कि मेरे परिवार की स्त्रियाँ चार टके कमाने ऐसे सड़कों पर घूमती नहीं फिरतीं···तब तुम क्या जवाब देती ?"

"ईडियट्स्" शारदा बुदबुदायी।

रात उतर गयी। घना अंधकार छा गया था। सामने के विशाल मैदान में लोगों की भारी भीड़ लगी थी। भीड़-भाड़ से जरा दूर हटकर, दोनों हरी घास पर जा बैठे। थोड़ी दूर पर बने चबूतरे पर कई व्यक्ति बैठे नजर आये। चबूतरे के चारों तरफ नियॉन बल्ब जगमगा रहे थे। जहाँ तक दृष्टि जाती लोगों के सिर ही सिर दिखाई दे रहे थे।

कम्यूनिस्ट पार्टी के अद्वितीय नेता वेदमूर्तिजी का भाषण सुनने के लिए ही आज इतनी भारी भीड़ लगी थी। जो कम्यूनिस्ट नहीं थे वे भी उनका भाषण सुनने आए थे। सारे देश में वेदमूर्ति की वाग्विदग्धता मशहूर थी। वे सुप्रसिद्ध वक्ता थे। भाषण की एक कला के रूप में उपासना करके श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने की प्रतिभा उनमें थी। उनके सिद्धान्तों को मानें या न मानें, उनकी अनुप्रासमयी शैली, प्रवाहमयी भाषा, विलक्षण ढंग से कथित विषय को जनता के सम्मुख प्रस्तुत करने की चातुरी, असत्य को भी, सरासर झूठी बात को भी अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा सत्य सा प्रतिष्ठित करने में जन साधारण का विश्वास प्राप्त करने में वे अपना सानी नहीं रखते थे। श्रोता उनकी वाणी के जादू में खिचे आते थे। जनता उनकी वाणी के पीछे पागल थी।

चाहे घिसी-पिटी, रटी-रटाई बात हो, वेदमूर्तिजी मंच पर खड़े हो जाएं, उन्हीं बातों को उनके मुंह से सुनते वक्त श्रोताओं के मन में नई-नई उद्भावनाएं, नये-नये अर्थों को उभारने में समर्थ थे। वेदमूर्ति का हर शब्द मीठा और मधुर लगता था। उनके भाषण सुनकर लौटते वक्त लोगों में सुखद अनुभूति की मादकता छायी रहती। मानो अमृत की वर्षा में भीगे हों। लेकिन एकान्त में बैठ, जरा विचार कर देखें कि उन्होंने क्या कहा था तो कोई विषय चिन्तन में न उभरता।—यही वेदमूर्तिजी की व्यक्तिगत विलक्षणता थी। उनकी बातें सुनते वक्त दिल व दिमाग़ उत्तेजना से

भर जाता, उन्माद सा चढ़ जाता, मगर अकेले में चिन्तन करते वक्त कुछ हाथ न लगता, ठोस बातें दिल में जमती नहीं। बस ! इसी में वेदमूर्ति की वाक्पटुता की चातुरी सफलता थी। उनका ही क्यों ? उनकी क्रांति-कारी पार्टी का महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त ही है—'व्यक्ति किसी चिन्तन के घेरे में अपने आपको बन्दी न बना ले।'

उनके इस सैद्धान्तिक तत्वदर्शन, जादू भरी वाणी, गंभीर आकृति, तराशी हुई नुकीली दाढ़ी तथा उनके नेतृत्व में अपना होश-हवास भूले बैठे नौजवानों और गंवार जनता की कोई गिनती नहीं थीं। आज उसी अद्वितीय महान् प्रवक्ता का भाषण सुनने उस विशाल मैदान में इतनी भीड़ लगी थी कि तिल धरने को जगह नहीं। मंच पर कई वक्ता आये। भाषण दिया। मगर जनता का ध्यान उस ओर न रहा। सारी भीड़ वेदमूर्ति के भाषण की प्रतीक्षा में थी। भीड़ बेसब्र हो उठी। तालियाँ बज उठीं। सीटी बजायी गयीं—हुल्ला सा मच रहा था। मुरली और शारदा यह सब तमाशा देखते वहाँ बैठे थे जहां ज्यादा प्रकाश न था। कंधे पर कैमरा लटकाते स्वामीनाथन् उनके पास से गुजर गया। चार/कदम जाते ही ज़रा रुककर, उनकी तरफ मुड़कर देखा—शायद—उस भीने-भीने अंधकार में इसका निश्चय न कर पाया हो कि वहाँ पर जो बैठा है वह मुरली है या और कोई।

मुरली ने आवाज दी—"स्वामीनाथन्, अभी आये तुम ?"

"जी ! आप···? सोचा था शायद आप, जी···मैं तो कब का आ गया···" स्वामीनाथन् उनके पास आया।

"बोलनेवाले और बहुत हैं क्या ?" मुरली की आवाज़ में ऊब थी।

"अब आपके मित्र शिवरामजी बोलने वाले हैं। उनके बाद वेदमूर्ति का भाषण होगा।"

"ओह ! शिवरामजी बोलने वाले हैं।" शारदा ने बीच में टोका। उस मन्द प्रकाश में भी स्वामीनाथन् उसे गौर से देखना न भूला।

"अच्छा, तुम जाओ !" मुरली ने उसे विदा दी। थोड़ी देर में भीड़ में सनसनी फैल गयी। मंच पर वेदमूर्ति माईक पकड़े खड़े थे। उनके पास एक युवक खड़ा था। उसके कंधे पर एक हाथ रखे उन्होंने बोलना शुरू

किया।

"कामरेडस् !"

वेदमूर्ति की आवाज सुनते ही सारी भीड़ एकदम मौन हो गयी। चारों तरफ निस्तब्धता छा गयी। सबकी उत्सुकतापूर्ण दृष्टि उन्हीं पर लगी थी। खूब तराशी हुई दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए वे बोले—"कामरेड, शिवराम जी जो मेरे पास खड़े हैं, आप लोगों के परिचत हैं। हमारी पार्टी की मीटिंगों, सभा-सम्मेलनों में मधुमक्खी से चुस्त-दुरुस्त होकर बड़ी व्यस्तता से इधर-उधर चक्कर लगाते इनको आपने देखा होगा। अब तक पार्टी-मीटिंग तथा सभा-समितियों में ही जो बोलते रहे, आज पहली बार आम जनता के सामने भाषण देने खड़े हुए हैं। दो साल पहलेये एम० ए० के छात्र थे। कॉलेज के दिनों में भी, कॉलेज की पढ़ाई, युवा लड़कियों के प्रणय कटाक्ष ने इनका दिल लुभाया। मदमाता यौवन, सुन्दर रूप और दिलरुबा सौंन्दर्य इनको मुहब्बत के जाल में फंसाकर आलस्य के गड्ढे में धकेल न पाया। किसी तन्वंगी के कजरारे नयनों की प्रणय तरंगों में तन्मय होकर, मदमत्त कोयल-सा कूकते, मत्त मयूर-सा नाचते, प्रणय की पीयूष धारा में रस सिक्त होने के लिए विह्वल यौवन को, उफान से लहरें मारते, यौवन की उमंगों पर इस युवक ने अपनी बुद्धि व प्रतिभा की आहूति नहीं दी। उलटे इसका युवा दिल कम्यूनिस्ट क्रान्तिकारी पार्टी की विद्रोही भावनाओं से भरा था। पार्टी के लिए इस युवक ने अपना सर्वस्व लुटा दिया है। पार्टी के लिए, पार्टी के आदर्श मार्ग पर अपनी लंबी यात्रा शुरू करने के हेतु कॉलेज की पढ़ाई को तिलान्जलि देकर ये हमारे बीच में आ गये हैं। इस युवक की दृष्टि में डिग्रियाँ, धन, वैभव, पदवी किसी का मूल्य नहीं। भाईयो ! आर पार रहित पारावार में अगणित सीपियाँ भरी पड़ी हैं, लेकिन मोती बिरलों को ही हाथ लगते हैं। मोती चुनने के लिए न जाने कितनी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है, अमूल्य मोती के लिए प्राण खतरे में डाले जाते हैं···। ऐसे एक अपूर्व, अमूल्य मोती को आपके सामने प्रस्तुत करने में मैं बड़े गर्व का अनुभव करता हूं। अब, ये बोलेंगे···।" वेदमूर्ति शिवराम के कंधे पर हाथ रखे उसे आगे ले आये और माईक के सामने खड़ा करके पीछे हट गये।

भीड़ खामोश बैठी थी। शारदा विस्मय विस्फारित नेत्रों से मंच की ओर ताक रही थी।

शिवराम ने बोलना शुरू किया—"कामरेड्स, हमारे आदरणीय नेता ने मोती को आपके सम्मुख पेश कर दिया। अब इसका भाग्य आपके हाथों में है। आप चाहें तो इसे दूर फेंक सकते हैं या माला में गूंथकर अपनी शोभा बढ़ा सकते हैं। आपकी जो मरजी हो···उसे स्वीकारने को मैं तैयार हूं। लेकिन एक बात है। आप स्वीकार करें या उपेक्षा करें, मोती की आभा, उसकी चमक उसी में बनी रहेगी। वैसे भी मैंने जिस लक्ष्य को अपनाया है···वह मरते दम तक बना रहेगा···"

भीड़ ने जोर से तालियां बजायीं। शारदा भी आत्मविस्मृत-सी तालियाँ पीटने लगी। मुरली चुपचाप सब कुछ देखता रहा।

शिवराम का भाषण बे रोक टोक दोनों कूलों को छूती हुई बहती प्रवाहमयी धारा-सा चलता रहा। सारी भीड़ खामोशी से सुनती रही। शिवराम की वाणी में न उन्माद का आवेश था, न शब्दों में आलंकारिक शब्दावली थी। उसकी बातों में गहराई थी। भावुकता के बदले गहरा चिन्तन था। श्रोताओं को चिन्तन करने के लिए मजबूर करने की शक्ति थी, उसमें उसके विचार चित्त में जम जाते थे, विभ्रम में न डालते थे। उसके बोलते वक्त ऐसा लगता था मानो बड़ी आत्मीयता से सामने बैठे हुए व्यक्ति से निजी मामलों पर चर्चा कर रहा है।

शिवराम की भाषण प्रवणता ने पल भर में श्रोताओं को इतना मोह लिया कि तीस मिनिट तक वे मंत्र-मुग्ध से बैठे रहे। जब शिवराम ने अपना भाषण खत्म किया सारी भीड़ जैसे किसी स्वप्न से जाग उठी हो, चुल-बुलाने लगी।

"ओह ! कैसा ओजस्वी भाषण है। न जाने कहाँ ऐसा बोलना सीखा है ?" शारदा की आवाज़ में आश्चर्य था।

मुरली ने कहा—"पार्टीवालों को सिखा-पढ़ी की जरूरत नहीं। अपने आप दक्ष हो जाएंगे। इस पार्टी का प्रधान अस्त्र ही भाषण देने की कला है।"

"कालेज में पढ़ते वक्त सभा सोसाइटियों में बोलने से जो हड़बड़ाते थे —वे ही अब इतनी भारी भीड़ में धड़ाधड़ बोलते जाते हैं। मुझे विश्वास

नहीं हो रहा है।"

"पार्टी की गुप्त सभाओं में भाषण देने का शिक्षण लिया होगा। लो, वेदमूर्ति आ गये मंच पर।"

सबका ध्यान अब मंच की ओर खिंच गया। मंच पर खड़े होकर वेदमूर्ति ने एक बार चारों तरफ अपनी दृष्टि घुमायी। फिर माईक को अपने कद के बराबर ऊंचा किया और बोले—"कामरेडस्, यह देखकर मुझे सन्तोष मिला कि आप लोग कामरेड शिवराम की वक्तृता में अपने आपको भूल बैठे। मैंने यह भी महसूस किया कि उनके हर शब्द ने आपकी चिन्तन शक्ति को उभार दिया है। आधे घंटे तक उन्होंने अपनी जादू भरी वाणी में आप सबको बांध रखा था। इस अद्‌भुत घटना को मैंने अपनी आँखों से देखा। भाईयो! शिवरामजी आज पहली बार आज मंच पर खड़े हुए हैं।"

भीड़ में कोलाहल मच गया। बधाई के नारे लग गये।

"हां···हां···जिन्होंने अपने पहले भाषण में इतनी सफलता पाई है, वह प्रतिभाशील युवक निकट भविष्य में पार्टी की विजय पताका फहरा देंगे, इसमें कोई सन्देह नहीं।"

अब की बार करतल ध्वनि ने आकाश को गुंजा दिया। शारदा ने भी इसमें भाग लिया। मुरली विस्मय से उसके कुतूहल को देखता रहा। थोड़ी देर में पूर्ववत् शान्ति फैल गयी।

वेदमूर्ति ने बोलना शुरू किया। मन्द-मन्द विचरती मलयानिल-सी आवाज लहराने लगी। धीरे-धीरे उसकी गति बढ़ती गयी। रोमांच ने आवेश का रूप धारण कर लिया। उनके बिछाये शब्दजाल में श्रोतागण बेसुध से, अपना होश-हवास खोये रहे थे। एक घंटे तक उस विशाल मैदान में तूफानी हवा चली। घोर वर्षा हुई। बीच में मंद बयार भी चला, कड़ाके की सर्दी पड़ी। कोयल की कूक के मधुर गुंजन के साथ दहाड़ते सिंह का गर्जन भी गूंज उठा।

पूरे एक घंटे के बाद वहाँ खामोशी फैली। जैसे एक कुशल अभिनेता की अतिरंजित भावुकता पूर्ण फिल्म को अपलक निहारने के बाद लंबी आहें भरते हुए बोझिल मन किए लोग लौट आते हैं, वैसे ही श्रोतागण मैदान से

निकले। शिवराम और वेदमूर्ति के भाषण की मन ही मन तुलना करती हुई भीड़ विसर्जित हो रही थी। कुछ लोग दोनों की वाक्पटुता को लेकर आपस में चर्चा करते जा रहे थे। शिवराम और वेदमूर्ति दोनों के भाषण ने जनता को मोह लिया था। मगर दोनों में कितना अन्तर था ?

वेदमूर्ति की वाणी आतिशबाजी सी छूटती रंगबिरंगी चिन्गारियों जैसी आँखों को चौंधिया देती है। जैसे जगमगाहट ने लोगों को चकित कर दिया, अणुबम के विस्फोट ने हड्डियों को कंपा दिया। चारों तरफ ज्योतिमंय कणों को बिखेरकर तन-मन को पुलकित कर दिया। मगर शिवराम की वाणी रंगीन सलायी सी बिलकुल शान्त थी। स्निग्ध, शान्त प्रकाश की लौ सी उद्भासित हो उठी। सतरंगी शोभा छितराती हुई शान्त थी। उसमें शीतलता थी।

शारदा और मुरली बस स्टाप की ओर चले। शारदा ने पूछा—"भाषण आपको कैसे लगे ?"

"भाषण में तड़क-भड़क ज्यादा थी।"

"बस ! इतना ही और कुछ नहीं ?"

"झूठ और फरेब भी था।"

"क्या कहा ?"

'हां, तुम कैसे समझ पाओगी ? आवेशमय वक्तृत्व व आलंकारिक शब्दाडम्बर में तुम उलझ गयी होगी। सोचने की शक्ति रही कहाँ ?··· ऐसी तकरीर का जादू फूंककर ही ये लोग राजनीति के क्षेत्र में खिलवाड़ कर रहे हैं।"

"इनमें कौन-सी झूठ और फरेब को देख लिया आपने ?"

"इन्होंने जो आंकड़े जनता के सम्मुख पेश किये थे। वे सही नहीं थे। कौन इन बातों पर सिर खपाने वाला है—इस खयाल से मनमानी बातें करते फिरते हैं ये लोग ! हां, ये बातों के धनी हैं। कोरे शब्दों को लेकर भव्य इमारत खड़ी करने की कला इन्हें आती है। इनके बिछाये आंकड़ों के जाल में बेचारी जनता ऐसी उलझ जाती है कि निकल नहीं पाती।"

"आप जैसे लोगों के लिए ये भाषण देने नहीं आये हैं।"

"यह तो मानी हुई बात है। इस तरह के कोरे शब्दजाल में श्रमिक

वर्ग और छात्र ही फंसते हैं। न मजदूर सोचता है न छात्र। पूंजीपतियों के प्रति जो आक्रोश व जलन है वह मजदूरों को सोचने नहीं देती। छात्रों को रोकती है, उनकी चढ़ती जवानी।"

शारदा ने गुस्से में फुफकारा—"आपको कम्युनिस्टों से एलर्जी है।"

दूर से बस आती दीख पड़ी। चर्चा छोड़कर दोनों तेजी से उस ओर बढ़े। बस में बैठी शारदा के मन में मंच पर खड़े शिवराम की बातें घुमड़ रही थीं। मंच पर गम्भीरता से खड़ी उसकी भव्य आकृति, उसके हाव-भाव, भाषण देने का उसका ढंग···आदि के बारे में सोचते-सोचते, मीठी, मादक, मधुर अनुभूति से उसका अंग-अंग फूल उठा। वेदमूर्ति के वे शब्द एकाएक कानों में गूंज उठे—"कालेज के दिनों में न कालेज की पढ़ाई, न युवा लड़कियों के प्रणय कटाक्ष ने इनका दिल लुभाया था।"

"हूं···" शारदा मन ही मन झल्ला उठी, 'पार्टी ने इनका दिल मोह लिया। पार्टी ! ऐसी कौन सी बड़ी पार्टी है। छि:-छि: कोरा पागलपन है, पागलपन ! पार्टी में रहने वाले हर कोई इनके जैसे थोड़े ही सन्यासी बने बैठे हैं। हूं, बड़ा गर्व है इनको ! घमंडी कहीं के···' बस स्टाप पर रुक गयी, तभी शारदा होश में आकर नीचे उतर आयी। दोनों चुपचाप घर की ओर जाने लगे। सड़क की रोशनी भी रोनी सूरत लिए मन्द-मन्द जल रही थी।

दोनों बंगले पर पहुंचे। रसोइये ने दरवाजा खोला।

"मुत्तू, पिताजी कहाँ हैं। दस भी नहीं बजे अभी से सोने चले गए।" बड़बड़ाती हुई शारदा बरामदे में आयी।

"वे तो बाहर गए हैं, छोटी मालकिन।"

शारदा पल भर भौंचक्की सी खड़ी थी।

"तालाब के पास से एक महिला आती हैं न ? वे ही लम्बे कद की··· हंस-हंसकर बातें करने वाली···फियट कार में आती हैं···वही···।" मुत्तू उसे समझाने की कोशिश में था।

"ओह···जानकी जी ?"

"हाँ···हाँ, वही आयी थीं। मालिक को अपनी गाड़ी में ले गयी हैं।

मुत्तू ने इतना कहकर मूर्खतापूर्ण हंसी बिखेरी।

शारदा का मुंह एकदम काला पड़ गया। उसने आँखों के कोर से मुरली को देखा। वह तो बिल्कुल तटस्थ भाव से रसोइए की मूर्खतापूर्ण हंसी को देखते खड़ा था। शारदा होंठों में कुछ बुदबुदाती रही। फिर रसोईए को फटकारा—"हमारा खाना यहीं लाओ!"

वह धड़ाम से सोफे पर बैठ गयी।

"मुझे घर नहीं जाना है क्या? ग्यारह बजे तक बस मिलेगी। अच्छा, मैं चलता हूं।" मुरली जाने को तैयार हुआ।

"नहीं! पिताजी के लौटने तक नहीं, उनके आने के बाद चले जाना।" शारदा की आवाज कुछ ऐसी आग्रहपूर्ण रही कि मुरली इनकार कर न पाया।

"पिताजी के आने तक हम यहीं बैठे रहें।"

"तुम क्यों उनींदी बैठी हो—खाना खाकर सोने चली जाना। मैं बैठा रहूंगा।"

"ना···ना···मैं भी उनके आने तक जागती रहूंगी।"

"किसी को जागते रहने की जरूरत नहीं। तुम अपने कमरे में जाके सो जाना। मैं यहीं लेट जाऊंगा। उनके आने तक पलकों के पांवड़े बिछाए बैठे रहने की क्या जरूरत है? न जाने वे कब आयेंगे।"

"आप चाहें तो सो जाना। मैं जागती रहूंगी।" उसकी आवाज में हल्की झल्लाहट थी। उसके चेहरे से साफ जाहिर था कि वह मन ही मन किसी बात पर उबल रही है।

मुरली ने चुपचाप सोफे पर पीठ टिका ली। शारदा भी मौन बैठी थी, बोली नहीं।

मुत्तू खाना लेकर आया और बरामदे में पड़ी मेज पर खाना परोसा। खाते वक्त मुरली ने शारदा की ओर गौर से देखा। वह घोर मानसिक यंत्रणा में गुजर रही है, यह देखते ही मुरली उदास हो गया।

"पिताजी कुछ ऐसे ही बीच-बीच में लापता हो जाते हैं। मीटिंग में बुलाया तो इन्कार कर दिया और अब।" शारदा का गला भर आया। खाने में उसे बिल्कुल रुचि न रही। बार-बार द्वार की ओर देखती रही।

मुरली ने कहा—"हो सकता है कोई जरूरी काम हो।"

शारदा ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा। पहचान न पायी कि उसकी आवाज में व्यंग्य है या बिल्कुल सहज भाव से बतियाता रहा है। बोली—"आप पिताजी से निकटतम सम्पर्क रखने वाले हैं। आपके प्रति उनका बड़ा प्यार व मर्यादा है।" एकाएक वह रुआंसी हो उठी। आगे कुछ बोलने में मानो असमर्थ रह गयी। मुरली समझ न पाया कि वह असल में क्या बताना चाहती है। कुछ क्षणों के बाद वह बोल उठी—"आप का कहना शायद वे मान लें।" इतना कहकर उसने उसकी ओर गौर से देखा।

कोई ऐसी बात उसके दिल में खटकती रहती है, जिसे एक पराये पुरुष के सम्मुख दिल खोलकर बताने में वह संकोच का अनुभव कर रही है, यह समझने में मुरली को देर न लगी। फिर भी जैसे कुछ समझ न पाया हो। पूछा—"शारदा ! बताओ न ! क्या बात है ?"

शारदा मौन रही। दो-तीन बार मुंह खोला मगर कहा कुछ नहीं। कहती कैसे ? अपने पिताजी के बारे में, उनके अंतरंग जीवन की बातें…।

"कुछ नहीं… पिताजी का ऐसे वक्त, बेवक्त बाहर चला जाना…।" लड़खड़ाते स्वर में इतना कहकर वह पूर्ववत् मौन हो गयी। इतना कहना भी असल में उसे बड़ा मुश्किल हो रहा था। अपने पिताजी के बारे में एक पराए व्यक्ति से शिकायत करने की मजबूरी का ख्याल आते ही वह सकुचा गयी। मुरली की ओर आँख उठाकर देखने का साहस न रहा।

लेकिन मुरली पराया है क्या ? उस परिवार में वह अपना बनकर रहता है। प्रोफेसर उसे कभी पराया नहीं मानते। अकेली शारदा ही उसे समझ नहीं पायी है। केवल उसी की दृष्टि में वह पराया है।

"शारदा ! मेरी हालत भी तुम जैसे ही है। वे तुम्हारे पिताजी हैं। मेरे लिए पितृ तुल्य हैं। जैसे तुम इस बात पर उनसे सीधा कुछ बोल नहीं पाती हो, वैसे ही मैं भी खुलकर बातें कर न पाऊँगा।"

"मुरली, आप पुरुष हैं।"

"मगर किसी के निजी जीवन की अंतरंग बातों में दखल देना…।" मुरली ने वेदना भरे स्वर में अधूरी बात कही।

"सारा शहर उनके बारे में..."

"मेरे कान में भी पड़ता है...मैं भी सुनता हूं। लेकिन हमें यह बात नहीं भुलनी है कि सारे शहर में उनका कितना आदर व सम्मान है। ये सब बातें बिल्कुल मामूली हैं। शारदा! चांद में कलंक होने से उसकी उज्ज्वला व महत्ता कम नहीं होती।"

"पुरुषों की दृष्टि में शायद यह हल्की बात हो...मगर चार लोगों का परिहास, अफवाहें और व्यंग्य भरे तानों को जब सुनती हूं, मुझसे सहा नहीं जाता।" शारदा का गला भर आया। आगे कुछ बोल न पायी।

मुरली हाथ मलता रह गया। उससे रहा न गया। मगर साफ-साफ स्पष्ट शब्दों में उस मामले पर चर्चा करना—उसके लिए जितना कठिन हो रहा था उतना ही इस स्थिति में कुछ कहे बिना चुप रहना भी मुश्किल लग रहा था। वह असमंजस में पड़ा देखता रहा कि गेट के बाहर मोटर की रोशनी भभक उठी।

गाड़ी पोर्टिको में आकर रुकी। उसमें से प्रोफेसर कमलस्वामी उतरे वह महिला जो गाड़ी चलाकर लायी थी, हाथ हिलाकर 'गुड नाईट' कहती हुई तेजी से निकल गयी। सीढ़ियों पर चढ़कर बरामदे में पैर रखते ही सोफे पर बैठे दोनों को देखकर प्रोफेसर चौंक पड़े। प्रफुल्ल चेहरा एकदम फीका पड़ गया।

"आप लोग अब तक सोए नहीं? कोई जरूरी काम आ गया था... अच्छा...आप लोग मेरी इन्तजार में बैठे हैं?" बड़बड़ाते हुए वे उनके पास आए। उनकी आँखें शारदा की ओर लगी थीं। उन आँखों में घबराहट की हल्की छाया थी। लेकिन वह तो बिना कुछ कहे गेट के बाहर निकलती उस फियट कार को घूर रही थी। उसकी चुप्पी मुरली को काटने लगी। मुरली ने झट स्थिति संभाल ली। बोला—"नींद न आयी, यहाँ आ बैठे। हम खाना खाकर बातें कर ही रहे थे कि आप आ गए।"

"शारदा, मीटिंग कैसी थी?" पूछते हुए प्रोफेसर सोफे पर आ बैठे। जैसे उससे सीधे आँखें मिलाने से डरते हों, उन्होंने अपनी दृष्टि घुमा ली।

"पता नहीं।" शुष्क स्वर में उत्तर आया।

"अच्छा ! तुम जाकर सो जाओ। लगता है बहुत थक गयी हो।" मुरली ने कहा। उसकी आवाज व आँखें जैसे कह रही थीं, तेरे पाँव पड़ता हूं यहाँ से चली जाओ। शारदा समझ गयी।

"गुड नाईट" वह उठकर अन्दर चली गयी। उसके चले जाने के बाद प्रोफेसर ने आराम की साँस ली। वे सोफे से उठकर खड़े हो गए। "मुरली, आओ न ! ग्यारह बज गए हैं।" उन्होंने बरामदे के बल्ब को बुझा दिया। दोनों अन्दर आए।

मुरली फोन की ओर गया।

"इस वक्त किसको फोन करते हो ?" प्रोफेसर ने चारपाई पर निढाल होकर पूछा।

"भारतमणी के दफ्तर को—सवेरे के ऐडीशन का संपादकीय लेख फोन पर ही डिक्टेट कर दूंगा।" मुरली फोन डायल करने लगा।

चार

कमलस्वामी बिस्तर पर लेटते ही सो गए। मुरली संपादकीय लेख को फोन पर डिक्टेट करके बिस्तर आ लेटा, मगर नींद कहाँ ? उसका मन प्रोफेसर साहब के इर्द-गिर्द चक्कर काटता रहा और नींद नहीं आयी।

प्रोफेसर की उम्र लगभग साठ की होगी। लेकिन उनका रोबीला व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था। इस उम्र में भी ऐसी गम्भीरता, चेहरे पर विलक्षण कांति हो तो चढ़ती जवानी में कैसे रहे होंगे। इसमें कोई संदेह नहीं कि इन्हें देखकर युवतियाँ उसाँसें भरती होंगी।

बालों पर अब जरा-सी सफेदी चढ़ आयी है फिर भी उनके घुंघराले

केश कितने आकर्षक हैं। माथे के ऊपर के बाल जरा-सा पीछे हट गए हैं, लेकिन उनके काले फ्रेम के चश्मे की भव्यता ने उस अभाव को भी भर दिया है। वे चुम्बकीय काँतिपूर्ण आंखें और ओठों पर थिरकती चिर मुस्कान उनकी असली उम्र पर ऐसा परदा लगा देती थी कि देखने वाले भ्रम में आ जाते थे। ताम्बूल रंजित अधर, हंसते वक्त जरा-सी खुलती दन्त पंक्तियां देखने वालों को ऐसा मोह लेतीं कि वे बार-बार उनकी ओर देखने के लिए विवश हो जाते। जैसे सामने खड़े हुए व्यक्ति को अपनी आँखों में समा लेना चाहते हों, वे ऐसे स्निग्ध, स्नेहसिक्त कटाक्ष करते कि हर कोई उस दृष्टि के वशीभूत हो जाता था।

इन सब बातों से भी एक और विशिष्ट बात थी जो लोगों को उन की ओर खींच लेती थी। वह थी उनकी मधुर, मीठी बातें। बातें करते वक्त उनकी आवाज में ऐसी आत्मीयतापूर्ण स्नेह उभर आता कि मानो कोई दिल पर स्नेहपूर्ण हाथ फिरा रहा हो। सभा, सोसायटी, दावतें, मीटिंग, हर कहीं भीड़ उन्हें घेरे रहती। उनसे बातें करने के लिए तरसने वालों की कमी नहीं। ओह, कितने आसानी से वे लोगों को अपनी ओर खींच लेते थे। इसमें कृत्रिमतापूर्ण प्रदर्शन या बनावटीपन नहीं था। यह उनका स्वभाव था। बस और कुछ नहीं।

उनके इस असाधारण व्यक्तित्व की शिरोमणी बनी थी उनकी बुद्धि और विद्वत्ता।

उनकी प्रतिभा व पांडित्य से प्रभावित सरकार ने उन्हें कई समितियाँ का संयोजक व संचालक नियुक्त किया था। इस तरह जनसाधारण में ही नहीं, अधिकारी वर्ग के बीच भी प्रोफेसर का बड़ा आदर और गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था।

मुरली ने सोचा—इतना सब कुछ होते हुए भी उनमें एक कमी थी। लेकिन उनकी वह कमी, वह कमजोरी कितनी बड़ी गलती थी।

जीनियस और वासना में कोई अटूट सम्बन्ध होगा। शायद बुद्धि की तेजस्विता को 'यह' मन्द न पड़ने देती हो। मुरली मन ही मन मुस्कराया। करवट बदलकर प्रोफेसर की ओर देखा। चांद की किरणें खिड़की से हो कर उनके चेहरे पर पड़ रही थीं। वे बिलकुल निश्चिन्त पड़े सो रहे थे।

चांद के उज्ज्वल प्रकाश में उसने देखा—निद्रा में भी उनके होंठों पर वही मधुर मुस्कान खिली थी।

कई पदवियाँ, उपाधियाँ, शहर के गण्य-मान्य लोगों की संपर्कता···। भीड़-भाड़ में फंसे व्यक्ति की पोशाक में जैसे मैल व धूल चिपक जाती है, वैसे ही इनके व्यस्त जीवन की निविडता में तरह-तरह की स्त्रियों की संपर्कता लग जाती है।···इस उम्र में भी इनसे यह सब कैसे संभव होता है ?··· शारदा की नाराजगी ! हूं···उसके नाराज होने में आश्चर्य क्या ?··· पिताजी के बारे में जब तरह-तरह अफवाहें चलती हैं, वह कैसे ? उफ़ ! उसके चेहरे पर कितनी वेदना थी ? एक बेटी अपने पिताजी से इस बात पर खुलकर कैसे बोल सकती है ? यह चर्चा करने की बात है क्या ?··· और···और लगता है स्त्रियाँ इस बात को इतने हलके ढंग से किनारे नहीं कर सकती हैं—इस तरह मुरली बड़ी देर तक सोचता रहा था। जब उसकी आँख लगी तो दो बज गए।

× × ×

'भारतमणी' कार्यालय में प्रवेश करते वक्त स्वामीनाथन् में बड़ा उत्साह था। उसके हाथ में एक दैनिक पत्रिका थी। द्वार पर आते ही प्रेमा ने उसे देख लिया। उसके अन्दर आने पर देखे अनदेखे से वह टाइप करने लगी। उसे पार करके सह-संपादकों के कमरे के द्वार पर पहुंचकर स्वामीनाथन् ने उसकी ओर मुड़कर देखा।

"तुम्हें न्यूज़ देने की जरूरत नहीं। मैं न्यूज़ जमा करके आया हूं।" स्वामीनाथन् ने उसकी ओर देखकर कहा।

"कौन सी न्यूज़ ?" प्रेमा ने उत्सुकता से पूछा।

"एडिटर—शारदा—न्यूज।"

"ओह ! ऐसी बात है ?"

"मैं 'भारतमणी' का सह-संपादक हूं···मुझ से छिपती है कोई खबर ? ···इतना कहकर वह कमरे में चला गया। बाकी सह-संपादक अब तक नहीं आये थे। टेलिप्रिन्टर से आयी खबरों को प्रेमा लिख रही थी। स्वामीनाथन् ने कुर्सी पर पीठ टिकाए हाथ के दैनिक को खोला। मुख पृष्ठ पर छपी किसी अभिनेत्री का अर्धनग्न चित्र उसकी आँखों में चुभ गया। वह

कुछ मिनटों तक घूरता रहा। इतने में सह-संपादक रामभद्रन् आ गये। तुरंत स्वामीनाथन् ने पन्ने पलट दिए ।

"कौन सी पत्रिका है ? इतने ध्यान से देख रहे हो तुम?" पूछते हुए रामभद्रन् अपनी कुर्सी पर बैठ गए।

"स्वर प्रभाती···देखिए दैनिक हो तो ऐसा ? खबरों को किस ढंग से देते हैं ? शीर्षक देखते ही पूरी खबर एक सांस में पढ़ने के लिए मन ललचा उठता है।"

"अच्छा ! एकाध शीर्षक पढ़िए न देखें···" "प्रेमी की मृत्यु का मर्म"·····"प्रेमी का कान नदारद —" "जवान लड़की घर से लापता"··· "मुरकानन्दम्‌जी ने जिस न्यूज़ को हमारे अखबार के लिए नकार दिया, उसी न्यूज़ को इसने कैसे प्रकाशित किया है देखिए न ? मोटे-मोटे अक्षरों में 'प्रसिद्ध सिने तारिका कैद', कोहिनूर होटल के कमरे···में जलसा, 'एक युवक भी कैद',···ओह ! कैसी लच्छेदार न्यूज़ है ?"

"उहूं···यह भी कोई न्यूज़ है ?" रामभद्रन् ने घृणा से नाकभौहें सिकोड़ते हुए कहा।

"जी ! इस न्यूज़ के लिए आज इस दैनिक की बिक्री दुगनी हो गयी ···सर, पत्रकारिता में आपकी कितने साल की सर्विस है ?"

"छब्बीस साल हो गए।"—रामभद्रन् के स्वर में ऊब थी।

"जी ! माफ कीजिए···इतने सालों से अनुभवी होते हुए भी न्यूज़ में कैसे आकर्षक ढंग से देनी है, यह जानते हैं क्या आप ?"

"जानता क्यों नहीं। टैक्नीक तो मालूम है। अभी तुम्हारी पच्चीस की उम्र भी नहीं। जानते हो तुम्हारे जन्म होने के पहले ही मैं सर्विस में आ गया था ?"

"सर···सर···नाराज न होईए···मैंने तो यों ही पूछा था।"

"सुनो···एक लड़की से साईकिल टकरा जाती है। पाँव पर हलकी-सी चोट लगती है। कहो···इस न्यूज़ को कौन सा शीर्षक दोगे। बड़ा आया टेकनिक पर बोलने वाला।"

"युवा लड़की से टक्कर।"

"बस ! यही तुम्हारी टैकनीक ? 'युवा लड़की के घाघरे पर खून के

धब्बे।' कहो ! शीर्षक कैसा लगता है ?"

"जी ! कमाल कर दिया आपने। 'स्वर प्रभाती' में आपको प्रधान संपादक की पदवी मिल जाएगी।"

"लेकिन भूल न जाना, हम 'भारतमणी' में काम कर रहे हैं। हमारी पत्रिका का आदर्श कुछ और है।"

"आदर्श ! आदर्श में क्या रक्खा है जी ? आदर्श की रट लगाते रहें तो टके मिलते ? मान लीजिए 'भारतमणी' और 'स्वर प्रभाती' दोनों एक जगह पर हैं। कहिए, कोई किसे खरीदेगा ? 'युवा लड़की के गुप्त प्रेमी की मृत्यु, ऐसे मोटे-मोटे अक्षरों में छपा शीर्षक और सिनी तारिका का फोटो देखकर ललचाने वाला हमारी पत्रिका को छुएगा ?"

"हमारी पत्रिका स्तरीय है..."

"जी ! आपके स्तरीय व्यक्ति भी बड़ी उत्सुकता से 'स्वर प्रभाती' को पढ़ते हैं। घर में ब्याही पत्नी के होते हुए भी बाजारु औरत के पीछे पड़ते हैं न ? कुछ वैसे ही इसके पन्ने उलटते हैं। कण्णार्गी बड़ी सती साध्वी थी। मगर कोवलन को माधवी का मोह चढ़ा था न ? हां...चार आदमियों के सामने खुलमखुल्ला उसे पढ़ने के लिए संकोच होगा...बस। और कुछ नहीं। चुपके रस लूटेंगे।"

"जब तक वह संकोच बनी रहेगी—तब तक हमें अपने देश के बारे में चिन्तित होने की जरूरत नहीं।" इन शब्दों के साथ मुरली अन्दर आए। उन्हें देखते ही स्वामीनाथन् एकदम मौन हो गया। शायद उसका यह ख्याल रहा होगा कि प्रधान संपादक के साथ चर्चा करना उचित नहीं है।

मुरली ने दफ्तर में आते ही स्वामीनाथन् को बुला भेजा। स्वामीनाथन् को अपने कमरे में आते ही प्रेमा ने बीच में पड़कर फुसफुसाया—"क्यों जी, एडिटर की न्यूज़ आपको कैसे मिली ?"

"ओह ! वह तो हमारे धंधे का रहस्य है"—लापरवाही से कुछ मुस्कराहट लिए स्वामीनाथन् चला गया।

छुटते ही मुरली ने पूछा—"कम्यूनिस्ट पार्टी की मीटिंग की रिपोर्ट देना काफी नहीं ? फोटो क्यों छपवाया ?" मुरली के हाथ में 'भारतमणी' की ताजी प्रति थी।

"फोटो बहुत अच्छे निकले हैं।"

"ओह ! तुमने फोटो लिया है—इसलिए अवश्य छपवा देना है, है न ?"

"शिवराम जी आपके दोस्त हैं।"

"शिवराम मेरा मित्र है, सही। मगर वेदमूर्ति···?"

"केवल वक्ता का फोटो प्रकाशित कर सभापति का फोटो न दें तो शिकायत करते—वह तो अपना आदमी है इसलिए फोटो छपवा दिया।" स्वामीनाथन् ने कहा।

मुरली हंस पड़ा। उसने आश्चर्य से स्वामीनाथन् की ओर देखा—इसने उसे निरुत्तर कर दिया न ?

"इस मीटिंग को इतनी मुख्यता देने की जरूरत नहीं। एक जनतान्त्रिक देश के लिए यह पार्टी अनावश्यक है।" मुरली की आवाज में नफरत थी।

"आपको वहां देखा था न ? सोचा कोई राजनीतिक महत्त्व रखने वाली मीटिंग होगी···इसीलिए ऐसी रिपोर्ट प्रस्तुत की।"

और एक बार अचूक ताना मारा गया है, मुरली मन ही मन झल्ला उठा।

"जहाँ-जहाँ मैं जाता हूं वहाँ कोई मुख्य बात है ऐसा कोई नियम है क्या ? संवाददाता के रूप में तुम्हीं को यह निश्चय करना है कि कौन सी बात जरूरी है, कौन सी बेजरूरी।" मुरली ने हल्के क्रोध के साथ कहा।

"हाँ सर ! 'भारतमणी' एक स्तरीय पत्रिका है। उसके संपादक ऐसी जगहों पर ही जाएंगे जो महत्त्व रखती हैं···ऐसा विश्वास कर लिया था मैंने। गलती हो गयी। माफ कीजिएगा सर !" स्वामीनाथन् ने गंभीर हो कर कहा। उसके चेहरे पर अब हंसी नहीं थी।

मुरली ने भौंचक्का-सा होकर उसकी तरफ देखा। ओह ! कैसी मार्मिक चोट लगा दी इसने। केले के फल में सुई भौंकने जैसी कैसी मीठी मधुर व्यंग भरी चोट है। मुरली का सारा गुस्सा एकदम ठंडा हो गया। स्वामीनाथन् की चातुरी ने उसे चमत्कृत कर दिया। मुस्कराते हुए उसकी पीठ पर थपकियाँ दीं।

इतने में शिवराम कमरे के अन्दर आ गया। उसके आते ही स्वामीनाथन् निकल गया। पास पड़ी कुरसी पर बैठते ही शिवराम ने कहा—"दुनिया में सबसे बड़े आश्चर्य की बात है यह।"

मुरली ने, जैसे कुछ समझ न पाया हो, उसकी ओर विस्मय से देखा।

"क्रांतिकारी पार्टी के नेता का फोटो प्रकाशित करके तुमने उस मीटिंग की रिपोर्ट को भी इतना महत्त्व दिया है।"

"तो इस भ्रम में न रहना कि 'भारतमणी' तुम्हारे पक्ष में आ गया है।"

"वह दिन अब दूर नहीं…'भारतमणी' क्या, सारा देश इस पार्टी के अंगुल में आ जाएगा।" शिवराम ने जोर दे कर कहा।

"महान व्यक्तियों और त्यागियों ने जहाँ जन्म लिया है, उसका ऐसा पतन संभव नहीं है।"

"महान् व्यक्ति और त्यागी लोग अकेले भारत में ही जन्मे हैं? चीन और रूस में नहीं?…देखो…उन देशों ने कितनी प्रगति कर ली है।"

"जिसकी तारीफ के पुल बांध रहे हो उस चीन ने क्या किया है, देखना।" मुरली ने मेज पर रखी 'भारतमणी' की कापी को उसकी तरफ फैंका।

"सबेरे ही देख लिया मैंने। विदूषक महोदय का कार्टून भी देखा। इसमें कौन-सा गुनाह है? तिब्बत में चीन ने अपनी सांस्कृतिक क्रान्ति को शुरू किया है। दलाईलामा क्रान्ति का सामना न कर पाये। देश से भाग गये।" शिवराम हंस पड़ा।

"एक देश की शान्ति को भंगकर उसकी आबादी को हड़प लेना ही सांस्कृतिक क्रान्ति है?"

"सोये हुए देश को जगा रहे हैं।"

"जो भी हो! पार्टी ने तुम्हें अच्छा वक्ता बना दिया है। कल मैं मीटिंग में गया था।"

"तुम! तुम आये थे?"

"मजबूरी थी। शारदा के साथ आना पड़ा था। तुम्हें मुख्यता देने में

तुम्हारे लीडर को भी 'भारतमणी' में प्रधानता मिल गयी।"

हमारे लीडर को 'भारतमणी' द्वारा ही प्रधानता मिलती है, ऐसी कोई बात नहीं। उनकी उंगली के इशारे पर हजारों-लाखों मजदूर अपना प्राण न्यौछावर करने को तैयार हैं।" शिवराम ने आवेशपूर्ण स्वर में कहा।

"हाय बेचारा श्रमिक वर्ग ! उनकी आँखों में धूल झोंककर आप लोग उनसे और क्या ले सकते हैं ?"

"मुरली ! तुम से एक मुख्य बात कहने आया हूँ। क्रान्तिकारी पार्टी के विरुद्ध संपादकीय लेख मत लिखना।"

"सुनो शिवराम, 'भारतमणी' अपने सिद्धान्तों को और भी जोरदार आवाज में कहता रहेगा। वह दबेगा नहीं। वह तो कम्यूनिस्ट पार्टी का अव्वल नम्बर का दुश्मन है।"

"तुम जनमत के खिलाफ आवाज उठाते हो।"

"अकेली तुम्हारी पार्टी जनमत है ? ज्यादा से ज्यादा तुम्हारी पार्टी में हजार सदस्य होंगे। बस।"

"नहीं सोलह हजार हैं।" शिवराम ने उत्साह के साथ कहा।

"अच्छा, इन सोलह हजार लोगों का विचार ही आखिर जनमत है ? याद रखना, इस देश की आबादी पचास करोड़ है। सोलह हजार के विचार को पचास करोड़ व्यक्तियों पर लादना चाहते हो ?"

"पार्टी तुम पर नाराज है।"

"होने दो ! तुम्हारी पार्टी वालों में 'भारतमणी' को पढ़ने का साहस नहीं।"

शिवराम जैसे चेतावनी दे रहा हो, बोला--"एक सशक्त पार्टी का विरोध मोल लेना अच्छा नहीं।"

"पार्टी से अन्तरात्मा की वाणी सशक्त है शिवराम ! कम्यूनिस्ट पार्टी में शामिल हो जाने से शायद तुम इस बुनियादी सत्य को भूल बैठे हो— रूस और चीन को जो देवता मान बैठे हैं, उनसे और क्या आशा की जा सकती है ?"

प्रेमा दरवाजा खोलकर अन्दर आयी। उसे देखते ही बोलना छोड़कर मुरली उसकी तरफ मुड़ा। प्रेमा ने कहा—"शारदा जी आयी हैं।"

"अन्दर आने को कहना।"

कुछ मिनटों में शारदा अन्दर आयी। शिवराम को वहाँ पर देखते ही उसका चेहरा खिल उठा। उसे देखती हुई बोली—"हार्दिक बधाइयाँ, "भारतमणी' ने आपकी वक्तृता की खूब तारीफ की है।"

शारदा उसके पास रखी कुर्सी पर बैठ गयी।

"आपने…संपादकीय लेख के आखिरी पैरे को शायद नहीं पढ़ा है।"

"ओह! पढ़ा है! ऐसे प्रतिभाशील युवक की शक्ति और समय इस पार्टी के लिए व्यर्थ हो रही हैं। यह तो बड़े दुख की बात है…' ऐसा जो लिखा है, उसे कहते हैं वह तो संपादकीय महोदय का अपना निजी अभिप्राय है।" फिर मुरली की तरफ घूमकर बोली—"तिब्बत के मामले पर विदूषक का कार्टून अद्भुत है। 'खिड़की के जरिए भारत बगल के घर में चीन को चोरी करते देख चुप खड़ा है। यह कार्टून बिलकुल सही लगता है।"

शिवराम ने टोका—"भारत और क्या कर सकता है?"

"बस! इसी हिम्मत पर चीन लुटेरा बन बैठा है। इसका जोरदार खंडन करना भारत का कर्तव्य है। अब की बार हम आवाज उठाने से चूक गये तो कल हमारी भी यही गति होगी।"

"तब भारत कम्यूनिस्ट बन जाए तो सब ठीक हो जाये।" लापरवाही से कहता हुआ शिवराम उठ गया। साथ ही शारदा भी उठ खड़ी हुई।

मुरली ने पूछा—"तुम कहाँ निकलीं?"

"आपकी कार मरम्मत करने मैकनिक आया था। रिपेयर होते ही मैं गाड़ी ले आयी।"

"अच्छा। मैं तुम्हें घर पर छोड़ दूंगा।"

"नहीं, मुझे थोड़ा काम है।" शारदा शिवराम के साथ चलने को उद्यत हो गयी।

मुरली कुरसी पर बैठे उन दोनों को जाते देख रहा था। शारदा को देखते ही उसके मन में जो उत्साह और आनन्द उमड़ आया था अब न रहा। वह कुरसी से उठकर बरामदे में आया। उसकी आँखें अनायास नीचे सड़क की तरफ गयीं। फुटपाथ पर शिवराम और शारदा हंस हंसकर बातें करते हुए

बस स्टाप की ओर जा रहे थे। उनके आँखों से ओझल होने तक वह वहीं बरामदे में ही खड़ा रहा। फिर लौटकर अपने कमरे में आया। शारदा के केशों पर लगाई चमेली की सुगन्ध उसके चले जाने के बाद भी सब ओर बिखरी हुई थी। मुरली का मन उदास हो आया। अनजानी बेचैनी ने उसे अपने आक्रोश में भर लिया।

पांच

"कहां जाती हो ? घर ?" शिवराम ने पूछा।

"आप ?"

"मैं घर जा रहा हूं।…अम्मा ने कल भी तुम्हारे बारे में पूछा था।"

"ओह !"

"कहा था, मिले बहुत दिन हो गये।"

"तब तो मैं आपके साथ आऊं ?" शारदा की उत्सुकतापूर्ण आँखें शिवराम के चेहरे पर टिकी थीं।

"ओह ! खुशी से ! आओ न।"

दोनों बस स्टाप की तरफ चले। बस आयी नहीं। दोनों उसकी प्रतीक्षा में खड़े थे।

"मुरली ने 'भारतमणी' में आपकी तारीफ की है—" शारदा के स्वर में आश्चर्य था।

"ठीक है। मगर वह पार्टी पर करारी चोटें लगाता है। यही मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"आपकी पार्टी तो आजकल बड़ी ताकतवर और प्रभावशाली बन

गयी है। 'भारतमणी' जो भी लिखे—इसकी चिन्ता क्यों ?"

"भारतमणी कोई मामूली पत्रिका नहीं है। भारतमणी के संपादकीय लेख व टिप्पणियों को अधिकारी वर्ग तथा राजनैतिक नेता आंखों में तेल डालकर देखते हैं। अभी उसको शुरू हुए दो साल भी नहीं हुये। मुरली ने इतने कम अरसे में उसे इतना लोकप्रिय तथा जनता के आदर व श्रद्धा का पात्र बना दिया है। खासकर विदूषक के कार्टून जनता में काफी लोकप्रिय हो गये हैं।"

"सुना है इतना सब कुछ होते हुए भी पत्रिका घाटे में चलती है।"

"जो हो। उसे जनता का आदर व सम्मान प्राप्त हो गया। मुरली की लेखनी में एक आवेश है, प्राणों का स्पंदन है।"

"उससे होड़ लगाने अब 'स्वर प्रभाती' आ गया है। कहते हैं अब 'भारतमणी' की बिक्री कम हो गयी है।"

"यों ही समय बिताने के लिए लोग 'स्वर प्रभाती' को ले लेते हैं। अलावा इसके उसमें छपने वाली किसी स्वर पर न विश्वास करते हैं न ध्यान देते हैं। 'स्वर प्रभाती' कुछ सीरियस बात भी लिखे तो लोग उसे भी मजाक समझ बैठते हैं। हाँ, मजाकिया चाहे दर्शन की बात बोले, लोग उसे तमाशा मान बैठते हैं न, कुछ वैसे ही समझ लो।···वह तो एक घटियापन है।"

"लेकिन वही आपकी पार्टी की बातों को प्रधानता देती है।"

"वे लोग अपने आप ही जो पब्लिसिटी देते हैं उसे हम अस्वीकार क्यों करें ? हम इन बातों का बिलकुल ख्याल नहीं करते। केवल 'भारतमणी' को लेकर हम चिन्तित हैं।"

इतने में बस आ गयी। दोनों उस पर चढ़कर शिवराम के घर के पास उतर गये। शिवराम की माँ पट्टम्माल, शारदा को देखते ही बहुत प्रसन्न हुई। बड़े प्यार से उसने उसका स्वागत किया। उसने शिवराम के लिए तो पहले ही थाली परोस रखी थी। अब शारदा के लिए भी एक पत्तल ले आयी। शारदा ने इनकार न किया। पट्टम्माल ने दोनों को खाना परोसा। दोनों को पास-पास बैठे देखकर वह मन में फूल उठी।

शारदा ने कहा—"मैं भी कल मीटिंग में गयी थी।"

"मुरली ने बताया था।"

"आप इतना जोशीला भाषण देंगे—इसकी मुझे बिलकुल आशा न थी।"

"सारा श्रेय हमारे लीडर मूर्तिजी को जाता है।"

"लगता है कुछ दिनों में चेला गुरु से आगे निकल जाएगा।" शारदा ने एक तरफ सिर झुकाकर उसकी ओर आतुरतापूर्ण नयनों से देखा। लेकिन शिवराम को बिलकुल इसका ध्यान न रहा, वह खाने में व्यस्त था।

शारदा ने पूछा—"कम्यूनिस्ट पार्टी में दक्षिणपंथी वामपंथी दो दल हैं न? अब आपकी क्रान्तिकारी पार्टी की क्या जरूरत है?"

यह तीव्रवादियों का दल है। बस, और कुछ नहीं। वामपक्ष वालों को चीन का नेतृत्व है। दाहिने पक्षवालों को रूस का नेतृत्व है। हम दोनों के नेतृत्व को मानते हैं। दुनिया के रंगमंच पर चीन और रूस जो अलग-अलग गुट-सा-दीखता है वह चिरन्तन नहीं है। यहाँ भारत में वामपक्ष और दाहिना पक्ष हमेशा के लिए अलग-अलग न रहे, इस ख्याल से स्थिति को संभालने के लिए क्रान्तिकारी पार्टी बनी है। असल में यह तो अति तीव्रवादियों का दल है। जब समय आयेगा तब यह सारा भेद मिट जायेगा। पार्टी एक हो जाएगी।"

"भारतमणी ने पहले ही आपका भंडा फोड़ दिया है न?" शारदा हंस पड़ी।

शिवराम कुछ न बोला। मन में झल्लाया।

"क्रान्तिकारी पार्टी किस उद्देश्य को लेकर संचालित हो रही है, इसका पर्दाफाश करते हुए भारतमणी ने लिखा था—

"क्रान्तिकारी पार्टी यद्यपि नाम के वास्ते एक नयी पार्टी सी लग रही है फिर भी उसकी चिन्तनधारा, सिद्धान्त, आदर्श, कार्यप्रणाली, आदि सब कुछ रूस और चीन की हैं। इस धोखे में न रहना कि यह पार्टी कुछ अद्भुत करामात करके दिखाएगी, नवीनता का अग्रदूत बनेगी। इसका रंग बहुत शीघ्र ही धुल जाएगा। जरा धीरज रखिएगा..."

'भारतमणी' पर शिवराम बौखला उठे तो आश्चर्य क्या? वह तो मन

ही मन क्रोध से उबल रहा था।

"शारदा बेटी, तुम्हीं इसे जरा समझा देना। कहता है—पार्टी, मीटिंग है। वक्त, बेवक्त खाता है। समय पर घर नहीं लौटता। घर में एक बुढ़िया अपने लिए आसन बिछाये बैठी है, इसका इसे बिलकुल ख्याल नहीं। बेटी! रात को एक बजे, दो बजे घर आता है···" पट्टम्माल ने शिकायत भरी आवाज में शारदा से कहा।

"मां जी, वे क्या नादान बच्चे हैं कि मैं समझाऊं!" शारदा ने उसकी ओर कटाक्ष करते हुए कहा।

शिवराम तो सिर झुकाये, दही-भात के कौर को जल्दी-जल्दी उठाकर मुंह में ठूंस रहा था।

"देखो न बेटी! कैसे खाता है। खाने में इतनी जल्दी क्यों? आराम से बैठकर भोजन नहीं कर सकता।" पट्टम्माल का गला भर आया। आँखें सजल हुईं। वह आगे बोलती ही गयी, "इसका ख्याल रखने कोई आ जाती तो मैं निश्चिन्त हो जाती कि जो चाहे कर ले। लेकिन वह तो उसके लिए भी अपनी सम्मति नहीं देता, बेटी!" पट्टम्माल ने इतना कहकर शारदा की ओर आतुर नयनों से देखा। शारदा का चेहरा एकदम सिन्दूरी हो गया। वह कुछ न बोली। सिर झुकाये खाती रही।

जैसे इन बातों से उसका कोई मतलब न हो, शिवराम भोजन करके उठ गया। पट्टम्माल ने लंबी साँस भर ली। शारदा की दबी आह की ओर दोनों का ध्यान न गया।

शिवराम तुरन्त साईकिल लेकर जाने को तैयार हो गया।

पटम्माल ने बड़े स्नेह से कहा, "बेटी! तुम्हें क्या जल्दी है? उसके तो सिर पर काम है, भागता जाता है। तुम बैठो न, धूप जरा उतर जाये··· फिर जाना।"

"नहीं, मां जी! पिताजी इन्तजार करते होंगे फिर किसी दिन आऊंगी।" पट्टम्मल से विदा लेकर शारदा बाहर आयी। उसे देखते ही शिवराम ने पूछा—"तुम्हें घर पर छोड़ दूं?"

"नहीं, नहीं मैं बस में चली जाऊंगी।" शारदा बस स्टाप की ओर बढ़ी। आज वह बेहद खुश थी। शिवराम के साथ बैठकर आज उसने

भोजन किया है। यह सुखद अनुभूति उसे बड़ी मीठी लग रही थी। उसका मन मत्त मयूर सा नाच उठा।

लेकिन शिवराम, उसमें कोई परिवर्तन नजर न आया। वह इतना हर्षित व उल्लसित कहाँ रहा? चुपचाप खाता रहा। खाने में ही उसका सारा ध्यान था। जब माँजी ने उसकी शादी की चर्चा उठाई तब भी सिर न उठाया···मैं तो पागल-सी उसकी ओर अपलक निहारती रही। लेकिन उन्होंने एक बार भी मेरी तरफ आँखें उठाकर न देखा—बड़े गर्वीले हैं न जाने मन में अपने को क्या सोच रखा है? शिवराम के बारे में सोचते रहना शारदा को बड़ा अच्छा लग रहा था। बैठे-बैठे उसे देखते रहने में उसे अजीब सा आनन्द मिलता था।

उसकी गम्भीर आकृति, आंखों में ऐसी मस्ती जैसे किसी की पर-वाह न हो। अधरों पर थिरकती शरारती मुस्कान, श्रोता को चुम्बक की तरह अपनी ओर खींचने वाली जादू भरी आवाज, इन सब बातों ने जैसे उसे बांध लिया था। इससे भी अजीब बात यह थी कि उसने इस बंधन से अपने को छुड़ाने की कोशिश कभी नहीं की। उलटे और भी उलझते रहने के लिए विह्वल हो उठी। सोचा—लेकिन इतना गर्व—ऐसी रुखाई उसे शोभा नहीं देती। खुद उससे घनिष्टता बढ़ाने के लिए बहुत से लोग प्रयत्न करते, वह उन्हें बातों में उलझा देती। लेकिन शिवराम की रुखाई और लापरवाही तो गुलाब के कांटे-सी उसे खटकती रही। सोचती, यह तो शायद उसका जन्मजात गुण है। हूं, इस रुखाई में भी निराली गंभीरता है न! शारदा इस तरह अपने आपको समझ लेती।

कालेज के दिनों में ही शिवराम की ओर वह खिंच गयी थी। विद्या-र्थियों के बीच में वह बिल्कुल निराला व अनोखा सा लगा। सिनेमा और सिनेमा के पोस्टरों को देख-देखकर जिनका मन व मस्तिष्क गंदे व विकृत विचारों से भरा था। जो लड़कियों की ताक-झाँक करते फिरते थे, उन विद्यार्थियों के बीच में शिवराम का आचरण बिल्कुल नया लग रहा था।

शारदा ने देखा जो विद्यार्थी उससे बातें करने आते, ठीक तरह से बोल न पाते। वक-झक करते रहते। उनकी प्यासी आँखें उसके अंग-अंग

को घूरती रहतीं। मुँह खोलकर कुछ कहने की जरूरत नहीं, उनकी आँखें ही बता देतीं कि उनके मन में कैसी कुत्सित, विकृत इच्छायें दबी पड़ी हैं। लेकिन शिवराम बिल्कुल तटस्थ भाव से बातें करता। उसके निश्चल नयनों में अनोखी चमक थी। यही नहीं, उसके शिष्टतापूर्ण व्यवहार में ऐसी रुखाई उभर आती जैसे अपने सामने खड़ी शारदा के रूप, यौवन, सौन्दर्य, बुद्धिमत्ता किसी की उसे बिल्कुल परवाह नहीं।

शारदा को शिवराम की लगन सी लग गयी। वह जितना दूर हटता जाता, उतना ही वह उसकी ओर खिची जाती थी।

दूसरों का दिल दुखाने वाली उद्दण्डता उसकी बातों में न थी। फिर भी उसकी स्थित गम्भीर दृष्टि, बातों में व्यंजित स्वाभिमान और ओठों पर छायी हुयी दबी मुस्कान उसे बड़ा गर्वीला जता रहे थे। शहद सा मीठा लगता नीम का फल जैसे मुँह में हल्की कड़वाहट को भर देता है, वैसे ही शिवराम की मीठी मादक स्मृतियों में यह कसक भी बनी रही। शारदा ने सोचा—पार्टी ने उसे कैसा मोह लिया है? उसके जीवन का ध्येय, उसके जीवन का सर्वस्व अब वह पार्टी है तो उसके लिए इस संसार में और कोई लगन व इच्छा नहीं है? ओह! कैसा पागलपन है। अन्धी उन्मत्ता है यह! उसे याद आया। एक दिन उसने कहा था—'शारदा, मैंने अपने निजी जीवन के बारे में अब तक सोचा ही नहीं है। अब मेरा संसार, मेरा जीवन, मेरा सब कुछ क्रांतिकारी पार्टी है। और कुछ नहीं।' शारदा इस बात पर विह्वल हो रही थी कि वह अपनी उस दुनिया में, जीवन में, चिन्तन में उसे भी अपनी साथिन बना ले। वह अक्सर इस बात पर बिसूरती रही कि क्या उसने उसके लिए अपने दिल में रत्ती भर भी स्थान दिया है? प्रकट रूप से न सही मन् ही मन में उसके बारे कभी सोचा है?

लेकिन शिवराम की बातों में, व्यवहार में, आँखों की उज्जवलता में इसका हल्का आभास भी नहीं मिला तो शारदा और भी विह्वल हो उठी।

× × ×

क्रांतिकारी दल के कार्यालय में कई लोग इकट्ठे हुए थे। पार्टी के

सभी प्रांतीय तथा जिले के कार्यकर्त्ता आए थे। शाम को तीन बजे प्रांतीय नेता का चुनाव नियत था। आंध्र, बंगाल, केरल, और उत्तर-प्रदेश के कार्यकर्त्ता भी इसमें भाग लेने आए थे। शिवराम हर प्रांत के कार्यकर्ताओं व नेताओं से अलग-अलग बातें करता रहा। अब तक यह निश्चय नहीं हो पाया था कि किसको प्रांतीय नेता बनायें। अखिल भारतीय क्रांतिकारी पार्टी के नेता वेदमूर्ति के आगमन की प्रतीक्षा थी। लगभग चार बजे वेदमूर्ति जी ने कार्यालय के अन्दर प्रवेश किया। उनके अन्दर आते ही कार्यालय का द्वार बन्द कर दिया गया। सब लोग ऊपर की छत पर इकट्ठे हुए थे। वेदमूर्ति के प्रवेश करते ही हाल में अजीब सी खामोशी फैल गयी। सबकी आँखें उन्हीं पर लगी थीं। नल्लदम्बी जो एक जिले का कार्यकर्त्ता था, बड़ी मर्यादा के साथ उठकर खड़ा हो गया। वेदमूर्ति ने उसकी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि फेरी।

"प्रांतीय नेता के चुनाव में उम्मीदवारों का नाम बताने···" उसकी बातें पूरी होने के पहले ही वेदमूर्ति फट पड़े—"चुनाव क्यों? एक मत होकर किसी एक को नेता बना लें तो सही नहीं?"

"लगता है एकाध व्यक्ति उस स्थान के लिए प्रतियोगिता करना चाहते हैं।" नल्लदम्बी ने डरते-डरते कहा।

"कोई जरूरत नहीं। तुम बैठो! नेता का नाम मैं प्रेरित करूंगा।" वेदमूर्ति ने आज्ञापूर्ण स्वर में कहा।

"उम्मीदवार चाहते हैं तो चुनाव होने दें। यही अच्छा है।" विजयवाडा से आये सुब्बारेड्डी ने कहा। वे हाल के दक्षिणी कोने में बैठे थे। वेदमूर्ति ने मुड़कर उसकी ओर घूरा। उनकी क्रोधपूर्ण आँखें पल भर उन पर ठहरकर लौटीं।

"अनावश्यक स्पर्धा क्यों? शिवराम इस प्रांत का लीडर बनेगा।" वेदमूर्ति ने दृढ़तापूर्ण स्वर में कहा। हाल में खामोशी थी। किसी ने कुछ न कहा। सब गुमसुम बैठे थे। शिवराम भौंचक्का रह गया। हड़बडाकर उठा और बोला—"चुनाव कराया जाए तो अच्छा होगा।"

वेदमूर्ति ने उसकी तरफ आँखें गड़ाकर देखा। आँध्र के लीडर की हिम्मत बंध गयी, बोले—"शिवराम जी के कहे अनुसार चुनाव करा दें तो

क्या हर्ज ?"

थोड़ी देर मौन छाया था। वेदमूर्ति ने एक बार उन सबकी ओर देखा। "ओहो ! चुनाव कराना है ? वह अनिवार्य है क्या ?" उनकी क्रोध भरी आवाज कमरे की चार दीवारों से टकराकर लौट आयी।। किसी ने कोई उत्तर न दिया।

शिवराम फिर उठा। दृढ़ता भरी आवाज में विनम्रता से कहा—"कुछ लोग चुनाव कराना चाहते हैं, इसलिए उसे होने दें।"

वेदमूर्ति थोड़ी देर उसे गौर से देखते रहे। उनका चेहरा लाल हो गया था। उनकी आँखें यह साफ बता रही थीं कि अपने अन्दर उमड़ते तूफान को वे बड़ी मुश्किल से दबाने की कोशिश कर रहे हैं। एक बार उनकी तीव्र मर्मभेदी दृष्टि हाल में घूम आयी। उस विशाल कमरे को अजीब-सा मौन बोझिल बना रहा था। किसी में मुँह खोलने का साहस न रहा। सबकी आँखें वेदमूर्ति पर टिकी थीं। लगा एक अनबूझ आंतक उस कमरे में व्याप्त होकर उन्हें आतंकित कर रहा है।

"अच्छा, उम्मीदवार अपना अपना नाम बताएं—लीडर की आवाज में कठोरता थी।

कोई न उठा। लीडर ने अपनी बात दुहरायी। कोई न उठा तो वे जोर से चिल्ला उठे। "हूं, कहिए न ? कौन-कौन से कामरेड चुनाव में खड़ा होना चाहते हैं—बताओ न ! क्यों समय को बरबाद कर रहे हैं ?"

नल्लदम्बी धीरे से उठा। एक बार चारों तरफ देखा, "मैं शिवराम जी का नाम प्रांतीय नेता के स्थान के लिए प्रेरित करता हूं।" तुरन्त पास बैठा एक व्यक्ति हडबडाकर उठा और बोला,—"मैं इसका अनुमोदन करता हूं।"

हाल में पूर्ववत खामोशी फैल गयी। कुछ मिनिटों तक कोई न बोले। वेदमूर्ति की आँखें चारों तरफ घूमती रहीं।

"फिर ? और कोई नाम नहीं ?…चुनाव में जो लड़ना चाहते हैं उनका नाम भी बताओ ना !" वेदमूर्ति ने जोर देकर कहा।

किसी ने खड़े होने का साहस न किया। एक दूसरे का मुंह देखते रहे मगर किसी का नाम प्रेरित न किया। वेदमूर्ति दो-तीन मिनटों तक अचल

बैठे घूरते रहे।

आंध्र के नेता ने अपने पास बैठे एक जिले के कार्यकर्त्ता को उकसाया।

"कामाक्षीनादन् का नाम प्रेरित करना चाहते थे न ? उठकर नाम बताओ।" उन्होंने धीमी आवाज में कहा।

मगर उस जिले के कार्यकर्त्ता ने उठने का नाम न लिया। फुसफुसाए, "जब लीडर शिवरामजी को नेता बनाना चाहते हैं—तब···"

सुब्बा रेड्डी झल्ला कर बोले—"तब चुनाव का नाम क्यों लेते हैं आप लोग ?"

इनकी कसमसाहट वेदमूर्ति के कानों तक पहुंची होगी। उन्होंने उन की ओर ताकते हुए ऊंची आवाज में पूछा—"क्या बात है ? किसी का नाम प्रेरित करना चाहते हैं ?"

वेदमूर्ति की आवाज सुनते ही उस कार्यकर्ता के प्राण मानो सूख गए। बेचारा उठने का प्रयत्न करते हुए कांपती आवाज में बोला—"नहीं··· नहीं।" आंध्र के सुब्बारेड्डी खून पीकर रह गए।

"अच्छा ! कोई प्रतियोगिता नहीं ! सर्वसम्मति से शिवराम जी इस प्रांत के नेता चुने गए हैं।" इस घोषणा के उपरांत वेदमूर्ति अपने सामने रखे नोट में कुछ लिखने लगे। मीटिंग की सारी कार्यवाही की रिपोर्ट लिखने के बाद अपने हस्ताक्षर करके उठे और पास बैठे शिवराम से हाथ मिलाया। भीड़ ने तालियाँ बजायीं। कई लोग शिवराम के पास दौड़े आए। बधाईयाँ दीं।

थोड़ी देर के बाद वेदमूर्ति चले गए। भीड़ विसर्जित होने लगी। जैसे नेता बनने से खुशी न हो, शिवराम एकदम उदास हो गया था। दो-चार व्यक्ति उसे घेरे खड़े थे।

"कहा था चुनाव होगा। मगर किसी का नाम प्रेरित नहीं किया।" बंगाल के कार्यकर्त्ता नरेन्द्र बोस ने चिढ़े हुए स्वर में कहा।

"जब स्वयं सभापति ने नाम सुझा दिया—तब कैसे ?" नल्लदम्बी ने हिचकती आवाज में कहा।

शिवराम उस पर टूट पड़ा—"तब क्यों कहा था कि चुनाव होगा।"

"अब क्या हो गया ? तुम तो उस स्थान के योग्य व्यक्ति हो।"

"मुझ में योग्यता है या नहीं वह कुछ और बात है। हम लोग एक नेता को चुनने के लिए इकट्ठे हुए। एक नेता को चुनने का अधिकार व जिम्मेदारी उस प्रांत के कार्यकर्त्ताओं की है और किसी की नहीं। लीडर ने जब एक नाम का प्रस्ताव किया तब आप लोग गुमसुम बैठ गए। पूछता हूं··· इसके लिए इस तरह मीटिंग बुलाने की क्या जरूरत थी ?"

"जब लीडर प्रस्ताव करते हैं, हम उनके विरुद्ध कैसे···" नल्लदम्बी की आवाज में अब भी भय की छाया थी।

"इस तरह आप लोग घबड़ा उठे तो काम कैसे होगा। हमारे प्रांत में हम कभी ऐसा नहीं होने देंगे।" सुब्बारेड्डी क्रोध से उबल पड़े।

"एकदम तानाशाही है।" नरेन्द्र बोस बुदबुदाए।

"इस चुनाव में भाग लेने का मुझे अधिकार होता तो ऐसा कभी न होने देता।" सुब्बारेड्डी ने कड़कती आवाज में कहा।

"अच्छा ! जो होना था हो गया। अब आगे की बात पर विचार करें। शनिवार को पार्टी की कार्यकारिणी की मीटिंग है। उसकी व्यवस्था करें हम।" नल्लदम्बी उठ गया।

शिवराम का मन बिल्कुल अशांत था। चुनाव में एक उम्मीदवार बनने का उसने निश्चय किया था। उसे आशा थी कि वह जरूर चुना जाएगा। उसकी कार्यकुशलता पार्टी के सिद्धांतों पर उसकी अटूट श्रद्धा व उन्मादपूर्ण लगाव से हर कोई परिचित था। जीत उसी की होगी यह निश्चित था। फिर भी अन्य उम्मीदवारों से होड़ लगाकर जीत लेता, तो कितना आनन्द और उत्साह मिलता ! असल में दो उम्मीदवार पूरी तैयारी के साथ आए थे। लेकिन पार्टी लीडर ने अप्रत्याशित ढंग से शिवराम का नाम लिया कि सारा मजा किरकिरा हो गया। जो अजीब-सी दहशत इन सब बातों से ज्यादा, आज की सभा में छायी हुई थी—वही उसके दिल को अकुलाती रही। पार्टी लीडर की दृष्टि और उन शब्दों ने उपस्थित लोगों को कितना आतंकित कर दिया। जो लोग उनके आने से पहले कई प्रकार के सुझाव पेश करने की तैयारी में थे, उनके आते ही कैसे गूंगे बन गए। इस बात पर शिवराम को रह-रहकर आश्चर्य हो रहा

था। यद्यपि वेदमूर्ति के इस असाधारण व्यक्तित्व पर उसे आश्चर्य हुआ फिर भी अन्य लोगों की कायरता का ख्याल आते ही नफरत-सी उमड़ आई। उसे लगा इस पार्टी की व्यवस्था में कहीं कोई एक कमी है। तानाशाही के अलावा और क्या है, बंगाली नेता की बुदबुदाहट कानों में गूंज उठी। लेकिन बेचारे वे भी ऊंची आवाज में यह कह न पाए। केवल बुदबुदाते रहे। शिवराम चकराया। बिदा लेते वक्त सुब्बारेड्डी ने उसे बधाइयाँ देते हुए कहा था—"कामरेड ! अपने प्रांत के लिए आप एक सुयोग्य नेता हैं। लेकिन···एक बात है।

"आपका स्वतंत्र चिन्तन और कार्यकुशलता किसी और के जबरदस्त अंकुश के दबाव में न आ जाय। वेदमूर्ति जी हमारे पार्टी लीडर हैं। लेकिन कामरेड ! हमें भी स्वतंत्र चिन्तन करने का अधिकार है।" शिवराम के कंधे पर थपकियां देते हुए आगे बोले—"लीडर हमारे प्रति नाराज़ है। उनकी तानाशाही में मैं और बंगाल के मित्र बाधा बने हुए हैं यह उन्हें खटकता है।"

शिवराम ने कहा—"मैंने तो चुनाव कराने को कहा था न ?"

"जब आपने ऐसा प्रस्ताव किया···मैं कितना खुश हुआ था, जानते हो कामरेड।" उन्होंने बड़े प्यार से उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

शाम को छः बजे के लगभग सब बिदा हो गए। शिवराम भी निकला। तब नल्लदम्बी वहाँ आया। बोला—"लीडर तुमसे मिलना चाहते हैं। रात के नौ बजे पार्टी आफिस में आना। वे रात को यहीं ठहरें हैं।" फिर धीमी आवाज में फुसफुसाया—"तुम्हें लीडर के विरुद्ध ऐसा न बोलना था।"

"विरुद्ध क्या कहा था मैंने ? जो करना चाहिए था वह बताया।"

"लीडर एक बात का निर्णय कर लेते हैं तो फिर उसे बदलना असंभव है।"

"क्यों असम्भव है ? चुनाव का अर्थ उनकी मनमानी है क्या ?"

"तुम्हीं को चुना है न ?"

"उसे मैंने कोई बड़ी बात न समझी। जब तक अपने अधिकार को सिद्ध नहीं कर पाते···"

"तुम्हें अनुभव नहीं है कामरेड ! कच्चे हो तुम। जैसे तुम कहते हो वैसे पार्टी में हर कोई अपने-अपने हक व अधिकार का प्रश्न उठायेगा, तब पार्टी सशक्त कैसे रहेगी ? तुम्हें पार्टी के तीव्रवादी सदस्य बने अभी थोड़े ही दिन हुए हैं···आगे बहुत-सी बातें आप ही समझ लोगे।" नलदम्बी चला गया। लेकिन शिवराम ने चिन्तामग्न हो घर की राह ली। उसका मन इतना बेचैन था कि प्रान्तीय नेता के रूप में चुने जाने की खुशी भी उसे न रही।

छः

शाम को छः बजे के बाद से ही 'यंगमेन्स क्लब' में चहल-पहल मचती। फिर रात के एक-दो बजे तक उसकी रंगरेलियाँ हल्ला मचाती रहतीं। फिर सारा हल्ला एकदम शान्त हो जाता। सारे शहर का वही एकमात्र मनोरंजन का केन्द्र था। दिल बहलाने व समय बिताने शहर के धनी-मानी व्यक्ति वहाँ आ जाते थे। संपन्न घराने के लोग ही उसके सदस्य बन सकते थे। इसलिए धनाढ्य वर्ग की हर तरह की हंसी-खुशी व लीला.विनोद को शाम को छः बजे से लेकर आधी रात तक वहाँ देख सकते।

क्लब में आने का हर मैम्बर का अपना एक मतलब था। एकाध अवकाश प्राप्त अफसर लोग समय बिताने वहाँ आया करते थे। बाकी लोग रातों को रंगीन बना देने के साधन वहाँ पर मिलने से वहाँ आया करते थे। बड़ी हैसियत में रहने वाले अफसर लोग जो वहाँ पर आते थे, उनसे अपना उल्लू सीधा करने कई लोग मैम्बर बने थे। बड़े ओहदों पर रहते अफसरों को देखते ही खीसें निपोरते, हाथ जोड़ते व्यक्तियों को देखने में बड़ा मजा

आयेगा। कुछ और लोग अपने धन की चमक-दमक दिखाने आते थे। कुछ विलासी रसिकजन जिन्हें रातों का रंग जमाना आता था, उनके लिए क्लब ही स्वर्ग था। यहाँ आ जाते तो वे अपना घर-बार, बाल-बच्चे, पत्नि सबको भूल जाते, बन्धन मुक्त योगी समान कर्मरत हो जाते।

जब इस तरह के लोग रात उतरते ही शहर से थोड़ी दूर हटे एकान्त में खड़े क्लब में आकर जमा होते, क्लब की इमारत में नव-जीवन का संचार हो जाता। समय के घटते-घटते, जब सारा शहर ऊंघने लगता, क्लब का कोलाहल बढ़ता जाता। गिलासों के टूटने, टकराने की आवाज, ताश के खेल में पैसे गंवाने वालों की आहें, बड़े-बड़े आदमियों के मुंह से निकलती अश्लील, भद्दी, कामोत्तेजक बातें, निर्लज्ज रंगरेलियाँ इत्यादि, इत्यादि···ही यंगमेन्स क्लब है।

मुरली रोज क्लब में आता था। ब्रिज खेलता, लोगों से बातें करता। विभिन्न तरह के लोगों के विचित्र व्यवहार व अनोखी प्रवृत्तियों का दर्शक बना तटस्थ भाव से देखता रहता। दस बजते ही घर चला जाता। दिनभर की व्यस्तता व तनाव से रिलैक्स करने वह वहाँ आता था।

आज उसमें उतना उत्साह नहीं था। 'भारतमणी' को आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ेगा, इसका आभास उसे मिल चुका था। 'स्वर-प्रभाती' के प्रकाशन के उपरान्त भारतमणी की बिक्री बहुत-कुछ गिर गयी थी। इसी चिन्ता में गोते लगाता हुआ जब वह क्लब में पहुँचा, वहाँ हमेशा की तरह चहल-पहल मची थी। बरामदे से लगे विशाल कमरे में पड़ी पाँच गोलाकार मेजों पर व्यक्ति बैठे 'रम्मी' खेल रहे थे। ताश के खिलाड़ियों को घेरे बहुत-से लोग खड़े-खड़े तमाशा देख रहे थे। इतनी भीड़भाड़ में भी उस कमरे में खामोशी फैली थी। रम्मी के खेल खेलने में लोग ऐसे तन्मय हो गये थे जैसे योगी मुद्रा में बैठा हो। जिन्होंने खेल में पैसा गँवा दिया था, वे अपना पैसा वापस लेने की धुन में परेशान थे। जीत जिनके पल्ले में पड़ी थी वे तो और भी पैसा लूटने के जोश में खेल रहे थे। उसके बगल के कमरे में दो व्यक्ति विलियर्डस खेल रहे थे। बरामदे के दक्षिणी कोने में अवकाश प्राप्त बूढ़े ताश खेल रहे थे। एक और कमरे में चार-पाँच लोग कुछ खाते-पीते अतंरग बातें करने में मशगूल थे। निऑन बल्बों का उजला प्रकाश

सारी बिल्डिंग में जगमगा रहा था। मुरली का ध्यान किसी ओर न रहा। वह सीधे बरामदे के कोने में जहाँ जरा तन्हाई थी, सोफे पर जा बैठा। बैरे को वेजिटबिल कटलेट और काफी का आर्डर देकर आँखें मूंदे पड़ा था।

"ओह ! मिस्टर मुरली ! यू आर हियर !" ऊँची आवाज में पूछते हुए जज राजरत्नम् उसके पास आ बैठे। उन्हें देखते ही मुरली सीधे बैठ गया।

"क्या बात है ? तबियत ठीक नहीं ? थके-से लगते हैं ?" जज साहब ने पूछा।

"कुछ नहीं···"बनावटी मुस्कान बिखेरते हुए मुरली ने उत्तर दिया।

"भारतमणी में फिल्म्स का रिव्यू पढ़ा; दो डोण्ट एगरी विद यू··· केवल सिनेमा में ही अश्लीलता है ?" जज साहब ने चुनौती देने की आवाज में पूछा।

"और बातों में अश्लीलता है ही—इसलिए सिनेमा में रहे तो क्या हर्ज ! यही आपका ख्याल है न ?" मुरली ने हँसते हुए पूछा।

"एक दृष्टि से देखा जाए तो ऐसी बातें भी आदमी के लिए अनिवार्य ही हैं।" जज साहब ने मुँह में लगी पाईप का एक कश लिया और धुंएं का छल्ला उड़ाते हुए पाईप हाथ में ले ली।

"मनुष्य की हर जरूरतें मान्य हैं क्या ?"

"परिस्थिति व मजबूरी ऐसी रहे तो मान्यता देने के अलावा कोई चारा नहीं। आज की परिस्थिति कुछ ऐसी है। मनुष्य ने अपने जीवन में खुद ही नई-नई समस्याओं को बना लिया है। इसके चंगुल से अपने को छुड़ाने के लिए उसे एक सहारा चाहिए। वह साधन सस्ता भी रहे, मनोरंजक भी रहे तो उसमें अपने बेबस मन को बहला लेता है। और यही साधन है आज का सिनेमा।"

"इसके लिए सिनेमा में अश्लीलता का नग्न-प्रदर्शन अपेक्षित है ?"

"मिस्टर मुरली, कोई भी उपदेश सुनने, या ज्ञान प्राप्त करने सिनेमा नहीं जाता। दिनभर के तनाव, व थकान मिटाने, दिल पर चिहुँटी मारकर उत्तेजित करने वाले लुभावने, रसमय दृश्यों को देख कुछ मिनटों तक उल्लसित रहने के लिए ही लोग थियेटर में जाते हैं। ये सब मनुष्य की

बुनियादी लालसाएँ हैं । चन्द्रमोहन और शशीरेखा इन लालसाओं की भूख मिटाते हैं । हो सकता है वे कुशल अभिनेता न हों । मगर असंख्य लोगों की अतृप्त इच्छा व वासनाओं को वे तृप्त करते हैं ।"—इतना कहकर जज साहब ने पाईप मुंह में लगा ली । बैरा एक प्लेट में कटलेट और कॉफी ले आया ।

"आपके लिए कुछ मंगाऊं ?"—मुरली ने उनसे पूछा ।

"अभी नहीं···मुझे कुछ देर लगेगी," मुरली को उत्तर देते हुए जज साहब ने बैरे को गिलास और सोडा लाने का आर्डर दिया ।

"आप जो भी तर्क पेश करें, अश्लीलता, हर दृष्टि में अश्लील ही है । हर मानव में तरह-तरह की विकृतियाँ, वक्रताएँ हो सकती हैं । मन के अंतरंग में विकारग्रस्त कुंठाएं होंगी । उन सबको न्याय संगत ठहराना व कुत्सित भावनाओं को तृप्त करने का साधन, सुविधाएं देना है । इस तर्क को मैं मानने के लिए तैयार नहीं हूँ ।" मुरली ने दृढ़ता से कहा ।

"जब मानव की प्रवृत्तियाँ, उसके टेस्ट बदल रहे हैं, हम उसके विरुद्ध उल्टी दिशा में उन्हें नहीं ले जा सकते, मिस्टर मुरली ! आप इस बात पर इतना जोर इसलिए दिखा रहे हैं कि यह व्यक्ति के चरित्र व आचरण से सम्बन्धित बात है···है न ?" जज साहब यह प्रश्न करते हुए जरा तन कर बैठे ।

मुरली ने सिर हिलाकर स्वीकृति जतायी ।

"लगता है इस विषय में आप स्पष्टतया विचार न कर पायें" जज ने इतना कहकर, बैरे द्वारा मेज पर जो गिलास और सोडा रख गया था, उसे अपने पास खींच लिया । फिर पास रखे एक चमड़े के सुन्दर बैग से एक छोटी-सी बोतल निकाली और उसे खोलकर गिलास में उंडेला । आधा गिलास भरते ही बोतल बन्द करके बैग में रख ली । बैरा सोडे को गिलास में भरने लगा । झाग-सा उफन आया तो सोडे की बोतल को वहीं छोड़कर बैरा चला गया । मुरली कॉफी का चश्का लेता हुआ यह सब देखता बैठा था । जज साहब ने मुँह से पाईप बाएं हाथ में ले ली, और दाएं हाथ में गिलास उठाकर दो घूंट पी ली । फिर गिलास को मेज़ पर रखते हुए बोले —"मिस्टर मुरली ! चरित्र और शील पर हमारे विचार अब बदल गये

हैं। तीस-चालीस साल पहले शील व शालीनता का जो दृष्टिकोण था वह अब नहीं रहा। स्त्रियाँ धनोपार्जन करने घर की देहली पार करके सड़कों पर आ गयी हैं। नौकरी की तलाश में भटकती फिरती हैं। आज का परिवेश इतना दूषित हो गया है कि अनैतिकता और असंगतियों से पूर्ण वातावरण बनता जा रहा है। जब परिस्थितियाँ बदलती हैं तब मानव के विश्वास व धारणाएँ भी बलदने लगती हैं। सतीत्व पर जो दृष्टिकोण है, वह भी बदल जाएगा।"

मुरली ने बात काटी।

"अगर हम चाहें कि यह परिवर्तन न हो तो वह गलत है? हम भारतीयों की अपनी संस्कृति है, संस्कार हैं। आप चाहते हैं कि वह धीरे-धीरे विलुप्त हो जाएँ?"

जज साहब हाथ के गिलास को इधर-इधर घुमाकर उसकी रंगीन रेखाओं को देखते रहे, बोले, "मिस्टर मुरली, इसमें हमारा कोई वश नहीं। उफनकर आती बाढ़ बाँध तोड़कर निकल जाती है। आप उस धारा के विपरीत चल पायेंगे? हमें धारा के साथ-साथ बहना है। तभी जिन्दा रह सकेंगे, अन्यथा डूब जायेंगे।" जज ने एक और घूंट पी और ओठों को अंगोछे से पोंछ लिया।

"सतीत्व की नई व्याख्या देने की मजबूरी में आज की सभ्यता और जिन्दगी ने हमें यहाँ लाकर खड़ा कर दिया है। हम स्वीकार करें या न करें, वह चलता रहता है···" जज साहब वाक्य को अधूरा छोड़कर मौन हो गये। उनकी दृष्टि गिलास पर टिकी थी। उनके माथे पर उभरी रेखाओं से मुरली ने जान लिया कि वे गहरी चिन्ता में हैं। कुछ मिनटों के बाद सिर उठाकर उसे देखते हुए वे बोले, "मिस्टर मुरली, आज हम लोग संक्रान्तकालीन युग में हैं। न पाश्चात्य सभ्यता को पूरी तरह अपना पाये, न अपनी प्राचीन संस्कृति व संस्कार की रक्षा कर पाये। इन दोनों के बीच में पड़कर हम सड़ रहे हैं। न तो हमें पूरी की पूरी पाश्चात्य सभ्यता को अपना लेना है, न पूरे दिल से अपनी संस्कृति का पालन करना है। परिवार, दांपत्य जीवन, सतीत्व इत्यादि बातों पर हमारे और पाश्चात्य देशों के दृष्टिकोण में जमीन आसमान का अन्तर है। जब हमने तलाक, स्त्रियों का

पुर्नविवाह इत्यादि पाश्चात्य विचारों को अपना लिया है, तब प्राचीन संस्कृति, सभ्यता व संस्कार जनित सतीत्व आदि की दुन्दुभि वजाते फिरने में कोई अर्थ नहीं।" थोड़ा रुककर जज ने फिर एक घूंट पी। थोड़ी देर कुछ सोचते रहे, फिर बोलने लगे—"मिस्टर मुरली, एक स्त्री चाहे जितनी बार तलाक दे, पुनः शादी कर सकती है। मगर एक की पत्नी की हैसियत से किसी और के साथ सम्बन्ध नहीं रखना है। आज के सतीत्व की व्याख्या यही है।"

"आप पुर्नविवाह का आक्षेप करते हैं?" मुरली ने आश्चर्य से पूछा।

"नो! नो! मैं उसके बारे में अब कहना नहीं चाहता। इतना समझा देना चाहता हूँ कि हमारी प्राचीन संस्कृति में सतीत्व की जो पंरपरागत मान्यताएँ हैं, उससे आज के विधि-विधान मेल नहीं खाते। जब हमारी संस्कृति विशुद्ध न रही, मिलावटी हो गयी तब 'हमारी भारतीय संस्कृति, भारतीय संस्कार' ऐसा प्रलाप करते रहने से क्या फायदा? समय के प्रवाह के साथ-साथ बहने के लिए हम मजबूर हैं। आज का युग सेक्स के पीछे अंधी दौड़ लगा रहा है। आप विश्वास करते हैं कि हम इस आसुरी अंधी दौड़पर रोक लगाकर इसकी दिशा बदल सकते हैं? जी! हमारे संविधान के कानून व नियम, हमारी प्राचीन संस्कृति व सभ्यता के आधार के अनुरूप नहीं बने हैं। आजाद होने की खुशी में हमारे संविधान को कुछ मनीषियों ने ऐसे ढाँचे में ढाल दिया है। इस विधि-विधान को रूप देने में जिनका हाथ था, उनमें से कुछ लोगों को ईश्वर पर भी विश्वास न रहा। रूस का मोहावेश चढा था उनमें। भारतीय संस्कृति व संस्कार, भारतीय पारिवारिक जीवन-प्रणाली का तत्वाधान तथा उसका जीवन-दर्शन इत्यादि पर गहरा विचार व चिन्तन करने की स्थिति में वे न रहे।"

एकाएक जज साहब का ध्यान मुरली के पीछे खड़े व्यक्ति पर गया तो बोले—"लो, प्रोफसर आ गये।"

मुरली ने मुड़कर देखा। प्रोफसर कमलस्वामी आये थे। जज ने उन्हें अपने पास बुलाकर बिठा लिया। प्रोफेसर की आँखें जज साहब के हाथ के गिलास को घूरती रहीं।

"यह आपकी पसन्द की नहीं। आपकी रसिकता कुछ और है न?" जज साहब ने खिलखिलाकर हंसते हुए कहा। प्रोफेसर भी मुस्कराये। मगर मुरली थोड़ा लज्जित हुआ। उसने चुपके से प्रोफेसर की तरफ़ देखा। उनके चेहरे पर कोई परिवर्त्तन नहीं। हमेशा की तरह मुस्कुराते रहे।

'ओह! कैसा निलज्जं परिहास है! ये बड़े आदमी हैं। जिन बातों को मुँह में लाने से शरमाना है, उन्हें खुलमखुल्ला वताकर वड़ी रसिकता से उसका रसास्वादन ले रहे हैं ये लोग।' मुरली सकुचाया। जिनके लिए उसके दिल में आदर का स्थान था, उनके मुँह से ऐसी बातें निकलते देख वह विस्मित हो उठा। जिन बातों को और कहीं बोल न पाते, उन्हें दिल खोलकर बोलने व उसका रस लूटने ही ये लोग क्लब में आते हैं?'

"आपके लिए कुछ मंगाऊँ?" जज साहब ने पूछा।

"नहीं, कुछ नहीं चाहिए।" प्रोफेसर ने इनकार किया। फिर मुरली की तरफ देखकर पूछा—"मुरली, किस बात पर आप दोनों चर्चा कर रहे हैं?"

"भारतमणी में प्रकाशित फिल्म रिव्यू पर।"

प्रोफेसर बोले—"आई अप्रिशियेट इट।"

"ओ! आप भी उसके पक्ष में हैं!" इस सवाल के साथ जज साहब ने एक ही घूंट में गिलास खाली करके मेज पर रख दिया। फिर प्रोफेसर की ओर देखकर कहा—"जी! आपके मानने न मानने से होता क्या? उन रसिकों को यह मानना है, जिनमें एक ही फिल्म को दस बार देखने का नशा चढ़ा है। फिल्म इन्डस्ट्री को उन्हीं लोगों पर भरोसा है, हम तुम पर नहीं।" जज साहब उठ गये, हाथ घड़ी पर एक नजर डालते हुए बिदा ले-ली। उनके जाते ही प्रोफेसर भी 'पोकर' खेलने के इरादे से उठ गये। उन्होंने मुरली को भी बुलाया। "नहीं मुझे जाना है" मुरली ने इनकार कर दिया। प्रोफेसर चले गये। एकान्त में बैठे मुरली का मन तरह-तरह की चिन्ताओं से बेचैन हो रहा था। सबेरे आडिटिर ने जो चेतावनी दी थी वह याद आयी। इतना तो स्पष्ट हो गया कि यदि आगे भी यही हालत रहेगी तो भारतमणी बहुत दिनों तक टिक न पायेगी। किसी

पुनर्विवाह इत्यादि पाश्चात्य विचारों को अपना लिया है, तब प्राचीन संस्कृति, सभ्यता व संस्कार जनित सतीत्व आदि की दुन्दुभि वजाते फिरने में कोई अर्थ नहीं।" थोड़ा रुककर जज ने फिर एक घूँट पी। थोड़ी देर कुछ सोचते रहे, फिर बोलने लगे—"मिस्टर मुरली, एक स्त्री चाहे जितनी बार तलाक दे, पुनः शादी कर सकती है। मगर एक की पत्नी की हैसियत से किसी और के साथ सम्बन्ध नहीं रखना है। आज के सतीत्व की व्याख्या यही है।"

"आप पुनर्विवाह का आक्षेप करते हैं?" मुरली ने आश्चर्य से पूछा।

"नो! नो! मैं उसके बारे में अब कहना नहीं चाहता। इतना समझा देना चाहता हूँ कि हमारी प्राचीन संस्कृति में सतीत्व की जो पंरपरागत मान्यताएँ हैं, उससे आज के विधि-विधान मेल नहीं खाते। जब हमारी संस्कृति विशुद्ध न रही, मिलावटी हो गयी तब 'हमारी भारतीय संस्कृति, भारतीय संस्कार' ऐसा प्रलाप करते रहने से क्या फायदा? समय के प्रवाह के साथ-साथ बहने के लिए हम मजबूर हैं। आज का युग सेक्स के पीछे अंधी दौड़ लगा रहा है। आप विश्वास करते हैं कि हम इस आसुरी अंधी दौड़पर रोक लगाकर इसकी दिशा बदल सकते हैं? जी! हमारे संविधान के कानून व नियम, हमारी प्राचीन संस्कृति व सभ्यता के आधार के अनुरूप नहीं बने हैं। आजाद होने की खुशी में हमारे संविधान को कुछ मनीषियों ने ऐसे ढाँचे में ढाल दिया है। इस विधि-विधान को रूप देने में जिनका हाथ था, उनमें से कुछ लोगों को ईश्वर पर भी विश्वास न रहा। रूस का मोहावेश चढा था उनमें। भारतीय संस्कृति व संस्कार, भारतीय पारिवारिक जीवन-प्रणाली का तत्वाधान तथा उसका जीवन-दर्शन इत्यादि पर गहरा विचार व चिन्तन करने की स्थिति में वे न रहे।"

एकाएक जज साहब का ध्यान मुरली के पीछे खड़े व्यक्ति पर गया तो बोले—"लो, प्रोफसर आ गये।"

मुरली ने मुड़कर देखा। प्रोफसर कमलस्वामी आये थे। जज ने उन्हें अपने पास बुलाकर बिठा लिया। प्रोफेसर की आँखें जज साहब के हाथ के गिलास को घूरती रहीं।

"यह आपकी पसन्द की नहीं। आपकी रसिकता कुछ और है न ?" जज साहब ने खिलखिलाकर हंसते हुए कहा। प्रोफेसर भी मुस्कराये। मगर मुरली थोड़ा लज्जित हुआ। उसने चुपके से प्रोफेसर की तरफ़ देखा। उनके चेहरे पर कोई परिवर्त्तन नहीं। हमेशा की तरह मुस्कुराते रहे।

'ओह ! कैसा निलज़्ज परिहास है ! ये बड़े आदमी हैं। जिन बातों को मुँह में लाने से शरमाना है, उन्हें खुलमखुल्ला बताकर बड़ी रसिकता से उसका रसास्वादन ले रहे हैं ये लोग।' मुरली सकुचाया। जिनके लिए उसके दिल में आदर का स्थान था, उनके मुँह से ऐसी बातें निकलते देख वह विस्मित हो उठा। जिन बातों को और कहीं बोल न पाते, उन्हें दिल खोलकर बोलने व उसका रस लूटने ही ये लोग क्लब में आते हैं ?'

"आपके लिए कुछ मंगाऊँ ?" जज साहब ने पूछा।

"नही, कुछ नहीं चाहिए।" प्रोफेसर ने इनकार किया। फिर मुरली की तरफ देखकर पूछा—"मुरली, किस बात पर आप दोनों चर्चा कर रहे हैं ?"

"भारतमणी में प्रकाशित फिल्म रिव्यू पर।"

प्रोफेसर बोले—"आई अप्रिशियेट इट।"

"ओ ! आप भी उसके पक्ष में हैं !" इस सवाल के साथ जज साहब ने एक ही घूंट में गिलास खाली करके मेज पर रख दिया। फिर प्रोफेसर की ओर देखकर कहा—"जी ! आपके मानने न मानने से होता क्या ? उन रसिकों को यह मानना है, जिनमें एक ही फिल्म को दस बार देखने का नशा चढ़ा है। फिल्म इन्डस्ट्री को उन्हीं लोगों पर भरोसा है, हम तुम पर नही।" जज साहब उठ गये, हाथ घड़ी पर एक नजर डालते हुए बिदा ले-ली। उनके जाते ही प्रोफेसर भी 'पोकर' खेलने के इरादे से उठ गये। उन्होंने मुरली को भी बुलाया। "नहीं मुझे जाना है" मुरली ने इनकार कर दिया। प्रोफेसर चले गये। एकान्त में बैठे मुरली का मन तरह-तरह की चिन्ताओं से बेचैन हो रहा था। सबेरे आडिटर ने जो चेतावनी दी थी वह याद आयी। इतना तो स्पष्ट हो गया कि यदि आगे भी यही हालत रहेगी तो भारतमणी बहुत दिनों तक टिक न पायेगी। किसी

न किसी तरह बिक्री को बढ़ाना है।

मगर कैसे बढ़ाये ? स्तर और बिक्री परस्पर विरोधी तत्व हैं। स्तर बढ़े, बिक्री कम हो जाएगी। और स्तर भी घटाएँ बिक्री आप ही चढ़ जाएगी। यही आज तमिलनाडू में पत्रकारिता की मौजूदा हालत है। लेकिन मुरली किसी भी हालत में अपने लक्ष्य व सिद्धान्तों को नीलाम पर न चढ़ाएगा। तब तो इस उलझन को सुलझायें कैसे ? कौन-सा रास्ता निकाले ? मुरली चिन्तित हो उठा। जज साहब के शब्द रह रहकर कानों में गूँज रहे थे—'क्या आप विश्वास करते हैं कि हम आसुरी अंधी दौड़ पर रोक लगाकर इसकी दिशा मोड़ सकते हैं ?' जज साहब का यह प्रश्न विश्वरूप धारण कर उसके मन-मस्तिष्क पर छा गया। उन्होंने पूछा था—'आप धारा के विपरीत चल पायेंगे ? जी ! हमें प्रवाह के साथ-साथ बहते जाना है तभी जिन्दा रह सकेंगे, अन्यथा डूब जायेंगे।'

ओह ! जज साहब ने चन्द शब्दों में आज के युग तथा परिवेश को कितना साफ़ और स्पष्ट पेश कर दिया था। मुरली प्रतिवाद न कर पाया, मगर उनके तर्क को स्वीकार करने के लिए उसका मन तैयार न था। जैसे ईश्वर के अस्तित्व को नकारने वाले नास्तिक के सम्मुख श्रद्धालु आस्तिक निरुत्तर होकर अपनी श्रद्धा व भक्ति की अटूट, अटल नींव पर खड़े-खड़े उसका मुख ताकता रहता है वैसे ही मुरली लाजबाव रहा, मगर झुका नहीं।

'भारतमणी' घाटे में चलती है, यह तो स्पष्ट है। घाटे का कारण भी, जो जज साहब ने कहा, वही है।···लेकिन इस उलझन से निकलने का भी रास्ता मालूम है। वह तो बिल्कुल आसान है। भारतमणी के स्तर को स्वर-प्रभाती के बराबर गिरा देना काफी है। लेकिन कभी सिंह सियार बन सकता है ? वह गुर्रायगा नहीं, गरजेगा ?

अभी दो साल पहले बिना किसी ठाठ-बाट के एक पुरानी इमारत में, चार-पाँच व्यक्तियों की सहायता में 'भारतमणी' का जन्म हुआ था। प्रोफेसर कमलस्वामी ने ही पत्रिका शुरू करने के लिए उसे प्रोत्साहित किया था। तब मुरली विद्यार्थी था। सबकी यही आशा थी कि सारे प्रान्त में वही प्रथम आएगा। जब खबर मिली कि मुरली फेल हुआ है, किसी को विश्वास न

हुआ। लेकिन मुरली ने इसका बिलकुल ख्याल न किया। प्रोफेसर ने बहुत कुछ कहा, मगर मुरली ने फिर से परीक्षा देने से इन्कार कर दिया। उसका मन डिग्री, पदवी इत्यादि के लिए लालायित न था। उसकी चिर आकांक्षा यही रही कि वह पत्रकार बने। कार्टून बनाना उसे बहुत अच्छा आता था। परीक्षा की असफलता ने उसे पत्रकार बना दिया। प्रोफेसर का प्रोत्साहन भी मिल गया। गाँव में उसके दो घर थे, उनमें से एक को तथा अपनी जमीन के आधे हिस्से को बेंच डाला, और उस पूंजी को लेकर पत्रिका शुरू कर दी।

मुरली अपने माँ-बाप की इकलौती सन्तान था। प्रसूति-घर में ही माँ चल बसी। आठ वर्ष की उम्र में पिता मर गये। मामाजी ने उसे अपनी छाया में ले लिया। वे ही उसकी जमीन-जायदाद की देखभाल करते थे। दैनिक पत्रिका के लिए पैतृक संपत्ति को बेचना उन्हें अच्छा न लगा। उन्होंने उसे मना किया, बहुत कुछ समझाया, लेकिन मुरली ने एक न सुनी। अपनी हठ पकड़ ली। वे करते क्या? उसे अपनी राह पर छोड़ दिया। भारतमणी-पत्रिका का प्रकाशन हुआ। बहुत जल्दी ही उसे बड़ा नाम मिल गया। धन व यश दोनों एक साथ प्राप्त हुए। लेकिन अब काला बादल उस पर आने लगा है।

केवल टके की प्राप्ति के लिए 'भारतमणी' को 'स्वर प्रभाती' के स्तर पर घटा दें? भारतमणी एक आदमी की नींव पर पनपने लगी है। लोगों के दिल में उसके लिए एक आदरणीय स्थान है। अब उस स्थान से उसे गिराना, उसके स्तर को घटाना संभव नहीं है। ओह! किसी भी हालत में उसे गिरने न देना है। लेकिन बिक्री?

मुरली का हृदय वेदना से कराह उठा। समझ में न आया कि क्या करे? दिल में घुमड़ते तूफान को उसने प्रकट न होने दिया, मगर उस झंझावात ने उसे झकझोर दिया था। शून्य की ओर ताकता हुआ मुरली चुपचाप बैठा रहा था।

बैरे ने आकर बताया कि उसका फोन आया है।

"हेलो।"

"सर! मैं स्वामीनाथन् बोल रहा हूँ।" स्वामीनाथन् की आवाज से

पता लगा कि वह किसी बात पर घबरा गया है।

"क्या बात है ?"

"चार-पाँच लोग सड़क पर से हमारे दफ्तर पर पत्थर मारने लगे हैं। पुलिस को सूचना दी है। वे लोग अब दिखाई नहीं पड़ते। लगता है चले गये।"

"तोड़फोड़ कुछ नहीं हुआ न ?"

"जी, शीशे की नौ खिड़कियाँ टूट गयीं। पाँच ट्यूब लाइट, चार बल्ब···।"

"लिस्ट की जरूरत नहीं ? किसी को चोट लगी है ?" मुरली ने चिन्तित स्वर में पूछा।

"नहीं जी !"

"पुलिस आ गयी ?"

"अब तक तो नहीं।"

"अच्छा ! मैं अभी आता हूँ।" मुरली ने फोन रख दिया और लम्बी साँस भर ली। वह बिलकुल थक गया था। घड़ी देखी। साढ़े नौ बज गये। गाड़ी लेकर सीधे दफ्तर की ओर चला।

'भारतमणी' का दफ्तर जिस रोड पर था, वहाँ सड़क के दीप अपने प्रकाश फैलाने में मानो कंजूसी बरत रहे थे। मुरली ने कार को गेट के बाहर रोककर चारों तरफ देखा। चहारदीवारी के आस-पास छोटे-मोटे पत्थर छितरे पड़े थे। सड़क निर्जन थी। कहीं किसी की सूरत न दिखाई पड़ी। भारतमणी के दफ्तर में दीप जल रहे थे। टूटी-फूटी खिड़कियां बाहर सड़क से साफ दिखाई पड़ीं। मुरली की दृष्टि एकाएक कम्पाउण्ड की दीवार पर गयी। तुरन्त टार्च लेकर वह गाड़ी से नीचे उतर आया। दीवार पर चिपकाये पोस्टर पर उसने टार्च की रोशनी घुमायी—वह माओत्से तुंग का चित्र था। माओ का पोस्टर ? चीन के इस विप्लवी नेता और भारत-मणी के कम्पाउण्ड की दीवार का क्या सम्बन्ध है ?

सात

रात के नौ बजे शिवराम अपनी साईकिल पर पार्टी आफिस की ओर जा रहा था। आज सारा दिन वेदमूर्त्ति उसके मन पर ऐसे छा गये थे कि वह कुछ और सोच न पाया। वेदमूर्त्ति के प्रति उसके दिल में कितना स्नेह और विश्वास भरा है यह उसे अच्छी तरह मालूम था। उनमें एक ही बात उसे अच्छी न लगी—उनका निर्ममता पूर्ण व्यवहार, अपनी इच्छा की पूर्ति में उनकी कठोरता, व उनकी हठधर्मी पर वह मन ही मन नाराज हो गया था। नेता की हैसियत से उनको दूसरों के विचारों का बिलकुल ख्याल न करते देख आज वह सन्न रह गया था।

उसे पार्टी का सदस्य बनाकर, उन्होंने ही उसे आज के पद के लिए तैयार किया है। पार्टी में सिद्धान्तों व तत्वों को बाल पाठ की तरह सिखा-पढ़ाकर उसके दिल व दिमाग में ऐसा भर दिया है कि आज वह पार्टी के लिए अपना सर्वस्व समर्पण करने पर तुला है। इसका सारा श्रेय वेदमूर्त्ति को ही मिलता है। शिवराम पर उन्हें विशेष ममता और अटूट विश्वास है।

कुछ महीने पहले एक सार्वजनिक सभा में वक्ता के रूप में परिचय कराते हुए उन्होंने उसकी तारीफ़ के पुल बाँधे थे। आज भी उसकी याद आते ही कृतज्ञतावश शिवराम की आँखें भर आती हैं।

शिवराम की मोहक छवि, सुडौल रूप, हर बात को गहराई से जान लेने की उत्सुकता, विपक्षी को भी अपनी ओर खींच लेने की चुंबकीय शक्ति, जहाँ भी रहे, सारे परिवेश को प्रभावित करने वाला उसका व्यक्तित्व आदि ने वेदमूर्ति को शुरू में ही आकर्षित कर लिया था। उनका दृढ़ विश्वास था कि पार्टी का भविष्य उसके द्वारा और उज्ज्वल बनेगा। इन्हीं

ख्यालों में डूबता-उतरता वह जा रहा था कॉलेज, जहाँ वह पढ़ता था। उसके निकट आते ही साईकिल की गति धीमी पड़ गयी। पास के होस्टल के सभी कमरों में रोशनी थी। वह दृश्य देखने में बड़ा रम्य लगा। छात्रों की चहलपहल सड़कों पर मुखरित थी। दो साल पहले वह भी एक छात्र था। इसी होस्टल में रहता था। उन दिनों के सपने, आशा और अरमान कितने निराले थे।

अतीत की स्मृतियाँ जाग उठीं।

वह एम० ए० का छात्र था। होस्टल में वह और मुरली एक ही कमरे में रहते थे। दोनों में बड़ी आत्मीयता थी। फिर भी, विचार, चिन्तन, व सिद्धान्तों की दृष्टि से दो ध्रुव थे। शिवराम हर क्षेत्र में नवीनता का आकांक्षी था। आधुनिकता उसे प्रिय लगती थी। मुरली, प्राचीनता में नूतनता का अनुभव करता था। दोनों अक्सर वाद-विवाद में उलझ पड़ते, लेकिन उनकी मित्रता बनी रही। स्कूली जीवन से लेकर शिवराम को भाषण व व्याख्यानों ने आकर्षित कर लिया था। समाज-सुधार का नारा लगाकर जो लोग अपने को बुद्धिवादी घोषित करके मंच पर खड़े होते थे, उनके धाराप्रवाह भाषणों ने उसके मन को मोह लिया था। उन वक्ताओं के तर्क, दलीलें, बुद्धि को चमत्कृत कर देनेवाले वाक्‌चातुर्य ने उसे उनका बिना मोल का गुलाम बना दिया। ये बुद्धिवादी वक्ता मंच पर आकर पुराण, देवी-देवता, व शास्त्रों की खिल्ली उड़ाकर उन्हें अपने तर्कों द्वारा चूर-चूर कर देते, तो शिवराम मारे खुशी से तालियाँ बजा उठता। मन्दिर, देवालय के उन्नत गोपुर, तालाबों को देखते वक्त वह बौखला उठता। होस्टल तथा कालेज में उसके बुद्धिवादी सिद्धान्तों के अकाट्य तर्कों के सम्मुख सब विद्यार्थी निरुत्तर रह जाते।

जिस किसी बात को लेता उसके पीछे जी-जान से लग जाना उसका स्वभाव था। कॉलेज में प्रवेश करते समय बुद्धिवादियों ने उसके चिन्तन को पूर्ण रूप से आकर्षित कर लिया था। उम्र के साथ-साथ उसमें परिपक्वता व संस्कारिता का विकास होने लगा तो कोरे बुद्धिवाद के तर्कों से उसका मन उचटने लगा। उसका मन जिस सहारे को लिए लहलहा उठा था, उसे जर्जरित होता देख एक और जबरदस्त सहारे के लिए

विह्वल हो उठा। तभी क्रांतिकारी पार्टी के विप्लववादी सिद्धान्तों ने उसे अपनी ओर खींच लिया।

विप्लववादी सिद्धान्तों से भरे साहित्य ने मानव की समस्याएँ, मानव के आधारभूत अधिकार, मानव का मानव के प्रति किये जानेवाला भेदपूर्ण व्यवहार, शोषण इत्यादि बहुत सी बातों पर सोचने के लिए उसे विवश किया। जब शिवराम ने अपने ध्येय व धारणा के बल पर अपने लिए एक लक्ष्य का मार्ग निश्चित कर लिया, तब उसकी दृष्टि में अन्य लोगों का विचार और व्यवहार अर्थहीन होने लगा। उसकी समूची चिन्तनशक्ति, विचार व कार्य उसके चुने हुए लक्ष्य मार्ग की ओर उन्मुख थे। तन, मन, चिन्तन इतना एकाग्र हो गया था कि कॉलेज की पढ़ाई, होस्टल का उल्लासमय जीवन, चढ़ती जवानी के मादक सपने उसे अपनी ओर आकर्षित न कर पाये। प्रगतिशील विचारों को वह सबसे न्यारा व विलक्षण मानता था।

एक औसत कॉलेज छात्र के लक्षण उसमें तनिक भी न थे। फिल्मों ने उसका दिल न लुभाया। लव-सीन्स उसे रोमांचित न कर पाये। अश्लील फिल्मी गीतों को उसके ओठों ने कभी नहीं गुनगुनाया। लचकती फिरती मदमस्त युवतियाँ उसका ध्यान अपनी तरफ़ खींच न पायीं। कम से कम सिगरेट का धुआँ उड़ाता तो बात कुछ और बनती। वह भी नहीं। छिः छिः, अपने को कॉलेज का छात्र कहने में उसे लज्जा न आती थी? आज के आधुनिक सभ्यता के रंग में रंगे हुए छात्र-जगत के फैशन तौर-तरीकों से बिलकुल अनभिज्ञ, अनाड़ी सा···यह क्या?···शायद यही कारण था कि उसके कोई मित्र न रहे। उनकी दृष्टि में वह एक 'सनकी' था। वे लोग उससे बातें करने से भी हिचकते थे। उसकी नेकी, ईमानदारी और निर्भयता से विद्यार्थी आतंकित थे।

दो साल पहले की वह घटना उसे याद आयी। एक दिन शाम को शिवराम और मुरली कॉलेज के भवन से बाहर निकले तो देखा विद्यार्थी पेड़ों के नीचे झुंडो में खड़े होकर किसी बात पर जोरों की चर्चा कर रहे हैं। नीम के वृक्ष की छाया में खड़ा विद्यार्थी-संघ का नेता शिवराम को देखते ही दौड़ा आया।

"मिस्टर शिवराम ! केमिस्ट्री लेक्चरार को डिसमिस कर दिया।" उसने हड़बड़ाकर कहा।

"क्यों ? उनका कौन सा अपराध था ?"—शिवराम ने पूछा।

"अपराध ? अपराध कुछ नहीं। मैनेजमेण्ट को पसन्द न आया। बस, और कुछ नहीं।"

"मुझे विश्वास नहीं होता। एक व्यक्ति पसन्द न आये तो नौकरी से निकाल दिया ? निकालना है तो उनपर कुछ न कुछ आरोप लगाया जाता है।" मुरली ने बात काटी।

"आरोप तो कुछ न कुछ थोपा जाता है।" विद्यार्थी-संघ के नेता ने लापरवाही से कहा।

"कौन सा आरोप ?" शिवराम ने फिर उकसाया।

"उसने विप्लव-पार्टी के सिद्धान्तों के पर्चे कालेज में छात्रों के बीच में बाँटे हैं।"

मुरली झट बोल उठा—"यह तो सब से बड़ा अपराध है। कॉलेज के कम्पाउण्ड के अन्दर उस लेकचरर का काम छात्रों को पढ़ाना है। पार्टी के प्रचार को कालेज के अन्दर करनें की अनुमति कैसे देंगे ?"

"इसके लिए डिसमिस कर दें ?" विद्यार्थी-संघ के नेता ने गुस्से से पूछा।

"यह तो कालेज के मैनेजमेन्ट और लेकचरार के बीच की समस्या है। इससे हम छात्रों का कोई सम्बन्ध नहीं। इसमें हम क्या कर सकते हैं ?" शिवराम ने पूछा।

"क्या नहीं कर सकते ? हमें संघर्ष करना है। कालेज में एक अन्याय हो और हम देखते रहें ?"

इतने में वह लेकचरार भी वहाँ आ गये। आते ही फूट पड़े, "मिस्टर शिवराम ! इस अन्याय का हल निकालना है।"

"सर ! यह छात्रों से सम्बन्धित मामला नहीं है। यह प्रश्न आपके और कॉलिज के मैनेजमेण्ट के बीच का है। इसमें दखल देना···" शिवराम आगे कुछ कहने से हिचकता हुआ मौन हो गया।

"प्रश्न व समस्या किसी की भी हो ! यदि वह अन्यायपूर्ण है तो···।"

लेकचरार की बात पूरी करने से पहले मुरली ने बात काटी—"छात्र यहाँ पढ़ने के लिए आये हैं, दूसरों के मामलों में अनावश्यक दख़ल देकर अपना समय बरबाद करने नहीं आये।"

लेकचरार ने मुरली की तरफ घूरा।

"इसके लिए संघर्ष करने की क्या जरूरत है? आप खुद जाकर मैनेजमेण्ट से मिलिए न?" शिवराम ने विद्यार्थी-संघ के नेता की ओर देखकर पूछा।

"मिला था, कहते हैं प्रिन्सिपल ने मैनेजमेण्ट से शिकायत की है। अगर प्रिन्सिपल मान लें तो लेकचरार को फिर से नौकरी पर लेने में कोई आक्षेप नहीं है।"

"फिर क्या! प्रिन्सिपल से मिलकर बातें कर लें।"

"कर ली, प्रिन्सिपल मानने को तैयार नहीं।...कहते हैं कॉलेज की सीमा के अन्तर्गत पार्टी का प्रचार करना सबसे बड़ा गुनाह है। इसके पहले भी दो बार चेतावनी दी गयी है। फिर भी तीसरी बार ऐसा किया है, इसलिए यह अक्षम्य अपराध है। प्रिन्सिपल ने साफ़ कह दिया कि वे सिफारिश नहीं करेंगे।

"ठीक कहा है"—मुरली ने तपाक से कहा।

"क्या ठीक है मिस्टर?" लेकचरार क्रोध से चिल्ला उठे—"किसी पार्टी का होने और उसका प्रचार करने का आदमी को बुनियादी अधिकार है।"

"हाँ, ठीक है, अधिकार है। मगर कॉलेज की सीमा के अन्दर उसे सिद्ध करने के लिये नहीं कहा गया है।" मुरली ने बड़ी शान्ति के साथ दृढ़ता पूर्ण स्वर में कहा।

"आप लोग इस विषय में मेरी मदद करें या न करें, विद्यार्थी-संघ और संघ के नेता इस अन्याय का विरोध करने में मेरा साथ देंगे।" गुस्से से आग-बबूला होते हुए वे संघ के नेता का हाथ पकड़े घसीटते ले गये।

अगले दिन कॉलेज में छात्रों का संघर्ष शुरू हो गया। छात्रों के साथ इस हुड़दंगे में शहर के लुच्चे-लफंगे भी शामिल हो गये। विप्लव पार्टी ने इस संघर्ष में तीव्र भाग लिया था। उस मुहल्ले का नेता नल्लदम्बी छात्रों के बीच में बड़ी मुस्तैदी से काम कर रहा था। जो छात्र संघर्ष कर रहे थे,

उन्होंने और विद्यार्थियों को वर्ग में न जाने दिया। छात्राएँ इस होहल्ले से घबरायी सी—दूर एक इमली के पेड़ के नीचे खड़ी होकर तमाशा देख रहीं थीं। किसी भी क्षण संघर्ष के विकराल रूप धारण करने की संभावना थी। जो छात्र इस संघर्ष में भाग ले रहे थे, उनके मुँह से प्रिन्सिपल पर गंदी भद्दी-भद्दी, गालियों की बौछार हो रही थी, जिसे भले आदमी सोचने से लज्जित हो उठेंगे। एक छात्र ने दीवार पर प्रिन्सिपल का एक अश्लील चित्र खींचा और नीचे गंदी-गंदी बातें लिखीं। इस पर कईयों ने तालियाँ बजायीं। एकाध छात्र ने उदास होकर नाक-भौंह सिकोड़ी। छात्राओं ने लज्जित होकर अपनी दृष्टि फिरा ली।

यह सब देखकर शिवराम का खून खौल उठा। "छि छि! ···कैसे बेहया बने हैं लोग! अब मैं इस वर्ग में जाऊँगा। देखता हूँ कौन मुझे रोकता है।" लेकिन मुरली ने उसे जाने न दिया। "तुम क्यों इस पचड़े में पड़ते हो। संघर्ष एक तरह शान्त रूप से चल रहा है। तुम बीच में पड़कर उन्हें उत्तेजित मत करो।"

"तब तो हम होस्टल लौट जाएँ। इसे देखता रहूँगा तो नाराज हो जाऊँगा।" शिवराम मुरली के साथ होस्टल लौट गया।

शाम के चार बज गये, मगर छात्रों का दल हल्ला मचाता रहा। उनकी चीख-पुकार व शोरगुल होस्टल में भी सुनाई पड़ा। मुरली जो तमाशा देखने गया था, लौटकर आते ही बोला—"प्रिन्सिपल का उनके कमरे में घेराव कर दिया है।"

"किसने किया?" शिवराम ने तड़फड़ा कर पूछा।

"और कौन? छात्रों ने किया है।" घृणा से मुँह सिकोड़ते हुए वह बोला—"उनके कमरे को बाहर से बन्दकर ताला लगा दिया है।"

"और पुलिस?"

"वे भी तमाशबीन बने खड़े हैं। एक पुलिसवाले से बात छेड़ी। पता लगा कि छात्रों के मामले में दखल न दें, ऐसा ऊपर से आर्डर आया है। इसी के भय से पुतले बने खड़े हैं।"

"अपराधी चाहे कोई भी हों, उन्हें मना करना पुलिसवालों की जिम्मेदारी है न?"

"अफसर लोग उस जिम्मेदारी को लेने को तैयार नहीं—बेचारे! प्रिन्सिपल सबेरे से बन्द पड़े हैं। खाया-पिया भी कुछ नहीं।"

शिवराम शर्ट पहनने लगा। मुरली ने टोका—"अरे! कहाँ निकल चले तुम ?"

"पुलिस का काम करने···मुझे मना न करना।" यह कह कर शिवराम तीर-सा निकल गया। मुरली भी कमरे पर ताला लगाकर उसके पीछे चला।

कॉलेज के अहाते में भारी भीड़ लगी थी। कौन छात्र हैं, कौन गुंडे यह पहचानना कठिन था। कॉलेज के निकट आते ही शिवराम सन्न रह गया। कॉलेज की इमारत की शीशे की खिड़कियाँ एक भी न बची थीं। सब की सब चूर-चूर हो चुकी थीं। सचमुच बड़ा दर्दनाक दृश्य था। हर कहीं छोटे-छोटे पत्थर बिखरे पड़े थे। शिवराम ने देखा, पुलिसवाले जहाँ के तहाँ अचल खड़े हैं। शिवराम एक पुलिस अफसर के पास गया।

"सर! प्रिन्सपल का घेराव कर दिया है, उनको छुड़ाना नहीं है क्या ?" अफसर ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा—"आप कौन हैं ?"

"इसी कॉलेज का छात्र हूँ। क्या मैं देखने में छात्र-सा नहीं लगता ? यहाँ पर जो प्रिन्सिपल को गन्दी-गन्दी गालियाँ दे रहा है, वही छात्र-सा लगता है ?"

"नहीं मिस्टर, इतने लोगों में केवल आपने ही ऐसा प्रश्न पूछा है, इसलिए सन्देह हुआ। छात्र लोग प्रिन्सिपल के कमरे के सामने ही बैठे हैं। अगर हम कुछ करें तो अनावश्यक हल्ला मच जाएगा।"

"तब तो प्रिन्सिपल का घेराव करना आपकी दृष्टि में सही है—शीशे की खिड़कियों की तोड़-फोड़ करना भी न्यायसंगत है ?"

"नहीं गुनाह है मिस्टर! मगर हम विवश हैं।"

"जी! आप एक पुलिस अफसर हैं। लगता है आप इसे भूल गये हैं।" शिवराम की हंसी में परिहास था।

"मिस्टर, यह बात मुझे याद है और अच्छी तरह याद है। मैं पुलिस अफसर हूँ। लेकिन मुझे अधिकार याने 'पावर' होती तो शीशे की खिड़कियाँ टूटतीं ? यह भीड़-भाड़, हो-हल्ला कब का शांत हो गया होता।

इतना क्या ? कॉलेज सुचारु रूप से चलता । लेकिन क्या करूँ ?" एक लम्बी सांस लेते हुए पुलिस अफसर ने अपनी मजबूरी प्रकट की ।

"असल में हुआ क्या ?"

"ऊपर से आर्डर मिला है कि छात्रों के मामले में दखल न दें । अगर हम यहाँ शाँति स्थापित करने के लिये कोई ऐक्शन लें तो कल असेम्बली में चीख-पुकार मच जायेगी । मंत्रिगण हम पर अपना गुस्सा उतारेंगे । हमेशा इस चखचख में फंसनेवाले हम बेचारे पुलिसवाले हैं । कलह को शान्त करे तो भी हमारी निन्दा, न करें तो भी गाली गलौच । आप ही कहिए हम क्या करें ? प्रजातंत्र का युग है मिस्टर ! सब कुछ ऐसा ही चलता है ।" अफसर की बातों व हँसी में लापरवाही थी ।

"तब तो आपको यहाँ आना नहीं चाहिए था ।"

"हाँ । यहाँ आकर हम क्या कर पाये ? फिर एक शिकायत होती कि पुलिस समय पर न आयी । कालेज के मैनेजमेण्ट ने हमें बुलाया, हम आ गये । छात्रों की हिफाज़त में यहाँ खड़े हैं । बस, और कुछ नहीं ।"

अफसर का यह सपाट उत्तर सुनकर शिवराम भौंचक्का रह गया । सोचा, 'हाँ, बेचारे क्या कर सकते हैं ? अपनी विवशता साफ प्रकट कर दी । आगे उनकी सहायता की प्रतीक्षा करना बेकार है ।' एक निश्चय पर आकर वह छात्र संघ के अध्यक्ष से मिला, कहा—"वर्ग में जाना या न जाना, आपकी मर्जी है । लेकिन प्रिन्सिपल को ऐसे बन्द कर देना फौज़दारी कानून के अनुसार अपराध है ।"

पास खड़े कैमिस्ट्री लेक्चरर ने बीच में टोका, "मिस्टर ! आपको इसमें दखल देने की जरूरत नहीं ।"

शिवराम ने उनकी ओर घूरकर देखा, फिर कहा—"जी, मैं आपसे बातें करने नहीं आया हूँ । कॉलेज के कायदे-कानून के विरुद्ध कालेज के अन्दर आपने पार्टी का प्रचार किया है, यही अपराध है । जिस पर आपने अपने स्वार्थ-लाभ के लिए छात्रों को कलह करने के लिए उकसाया है, जो सबसे बड़ा अपराध है । समझे ! मैनेजमेण्ट से आपकी कुछ तकरार है, या उसने आपके प्रति अन्याय किया है तो आप अदालत में कानून द्वारा न्याय की माँग कर सकते हैं । ऐसा न करके इस तरह छात्रों को भड़का देना, दंगा--

बाजी खड़ी करनी नहीं चाहिये थी।" शिवराम ने गुस्से के साथ बड़-बड़ाकर छात्रों के लीडर की तरफ देखा। वह तो चिन्तित-सा लेक्चरर का मुँह ताकने लगा। लेक्चरर साहब जोश में आकर चिल्ला उठे—"इस मामले का न्याय होने तक हम लोग शान्त न होंगे।"

"अच्छा ! तब तो कॉलेज के लेक्चरर्स व प्रोफेसरों का दल बाँधकर आवाज उठाईए। आपकी नौकरी छूट गयी, तो छात्रों को दंगेबाजी में क्यों घसीटते हैं ?" शिवराम ने छात्रों के लीडर की ओर मुखातिब होकर कहा, "मिस्टर ! सोचकर देखिए न ? जब इनके सह-कर्मचारी ही इनका साथ देने को तैयार नहीं हैं, छात्रों की संगठित शक्ति आप क्यों बरबाद कर रहे हैं ?"

"हड़ताल हमने शुरू कर दी। अब पीछे हटना···" छात्रों के लीडर ने अपनी असमर्थता प्रकट की।

"अच्छा ! आपकी मर्जी। लेकिन एक बात है, प्रिन्सिपल को ऐसे बन्द कर रखना अपराध है। उन्हें निकलने दीजिए।"

लेक्चरर बोले—"नहीं, हमारी माँग को वे स्वीकार करें तभी उन्हें हम छोड़ सकते हैं।"

शिवराम का पारा चढ़ गया। चन्द मिनिटों तक लेक्चरार की ओर क्रोधपूर्ण आँखों से एकटक देखता रहा कि उस दृष्टि की उग्रता में उनका शरीर थोड़ा काँप उठा। शिवराम ने एक बार घूमकर देखा। पास खड़े एक छात्र के हाथ से हॉकी छीनकर प्रिन्सिपल के कमरे की ओर लपका। दरवाजे पर लटकते ताले पर हॉकी को ऐसा तानकर मारा कि ताला दो टूक होकर गिर गया। जोर के धक्के के साथ दरवाजा खोल कर अन्दर घुस गया कि सबके सब काठ के पुतले-से खड़े-खड़े देखते रहे। दरवाजा खुलते ही चार-पाँच लोगों ने उसके साथ अन्दर जाने की कोशिश की। उनका रास्ता रोकते हुए वह गरज़ पड़ा—"किसी को अन्दर नहीं आना है। समझे ?" बस, जैसे मन्त्र फूंक दिया हो। सबके सब वैसे ही रह गये, हिले तक नहीं।

कमरे के अन्दर प्रिन्सिपल अधमरे-से बैठे थे। भूख, प्यास व भय से मानो उनका प्राण सूख गया था। हाथ में हाकी लिए धड़ाम से अन्दर आये

शिवराम को अपने निकट आते देख वे थर-थर काँप उठे। सोचा वह उन्हें मारने आ रहा है। शिवराम ने बड़ी भव्यता से कहा—"क्षमा कीजिएगा। छात्रों ने बड़ी गलती कर दी है। आपके प्रति बड़ा अन्याय कर बैठे हैं। यह तो राजनीतिज्ञों के बहकावे में आ गये···आप उस लेक्चरर को फिर से नौकरी दिलाने की सिफारिश करने वाले हैं क्या ?"

प्रिन्सिपल डरते-डरते बोले—"क्या करता ? इतना बड़ा हो-हल्ला मच गया है ?"

शिवराम के अधरों पर हल्की हंसी फूट पड़ी। "हो-हल्ले के डर से आप अन्याय का साथ देने वाले हैं ?"

"तुम···तुम···क्या कह रहे हो ?" प्रिन्सिपल चकराये।

"साहस के साथ काम कीजिए न ? चाहे प्राण भी जाएं, कभी अधर्म का साथ न दीजिएगा। मैं आपका साथ दूंगा। मुट्ठी-भर लोग उछल-कूद मचा रहे हैं। इन्हीं लोगों ने औरों को डरा धमकाकर अपने साथ खींच लिया है।"

"कहो अब मुझे क्या करना है ?"

"मेरे साथ आईएगा। आपको घर पहुँचा दूंगा।"

"बाहर की भीड़-भांड़।"

"घबराईए मत। भीड़-भाड़ आपका क्या कर सकती है ? यदि कुछ हो भी जाए इस प्राण को धर्म संस्थापित करने के लिए अर्पित नहीं कर सकते सर ?···ऐसा कुछ न होगा। आईए न मेरे साथ !" हाथ की हॉकी को एक तरफ फेंककर शिवराम उनका हाथ पकड़े बाहर ले आया।

प्रिन्सिपल को शिवराम के साथ आते देख सारी भीड़ सन्न रह गयी। शिवराम उनको साथ लिए आगे बढ़ा। किसी ने कोई आनाकानी न की। कोई कुछ न बोला जैसे जमीन पर जड़ पकड़ चुके हों, कोई अपनी जगह से हटा तक नहीं। उलटे उन दोनों को जाते अपलक ताकते रहे। चन्द मिनिटों के पहले तक जहाँ नारेबाजी व हो-हल्ला मचा हुआ था, वहाँ अब एकदम सन्नाटा छाया हुआ था। शिवराम के चलते-चलते भीड़ ने पीछे हटकर उनको रास्ता छोड़ दिया। प्रिन्सिपल सिर झुकाए, इधर-उधर देखे बिना डरे आगे बढ़ रहे थे। शिवराम सिर ताने, बड़ी गम्भीरता से तेजी से डगें

भरता गया। कॉलेज की चार-दीवारी के बाहर खड़ी पुलिस जीप में प्रिन्सिपल को बिठाकर, उन्हें बिदा करके, वह होस्टल की तरफ चला गया। पीछे मुड़कर भी न देखा।

पुलिस जीप के स्टार्ट होने के बाद जैसे अभी होश में आये हों, उपस्थित भीड़ में सनसनी फैली। मुरली के पास खड़े पुलिस अफसर ने विस्मय के साथ कहा—"मिस्टर! आपके मित्र में गजब का साहस है। देखिए! कितनी हिम्मत के साथ काम लिया है।"

"आप जो करने से चूक गये, कम से कम उसने करके दिखाया है।" उपेक्षापूर्ण आवाज में शब्दों को उगलकर मुरली वहाँ से चल पड़ा।

मुरली के शब्द अफसर के दिल में तीर से लग गये। वे तिलमिलाकर रह गये। शरम के मारे उनका चेहरा सूख गया।

शिवराम की हिम्मत और साहसपूर्ण व्यक्तित्व ने उसे दूसरों से अलग कर रखा था। उसका एक मात्र मित्र—अकेला मुरली था। औरों को उससे बातें करने का भी साहस न था।

अतीत की इन यादों में गुजरता हुआ शिवराम विप्लव पार्टी के कार्यालय की ओर धीमी गति से जा रहा था। वेदमूर्त्ति ने उसे क्यों बुला भेजा है? इसी उधेड़बुन में उसका मन उलझता रहा।

आठ

मुख्य सड़क और भारतमणी कार्यालय की गली जहाँ पर मिलती थी, उस मोड़ पर शिवराम की साईकिल पहुँचते ही चार-पाँच व्यक्ति गली की तरफ से मुख्य सड़क की ओर तेजी से भागते आए और उसे पार करते चले।

उन्हें देखते ही शिवराम के विचारों की शृंखला टूट गयी। सोचा उन भागने वालों का पीछा करके देखूँ कि वे कौन हैं? न जाने क्यों फिर उसने इरादा छोड़ के साईकिल की गति धीमी कर दी। उसके देखते-देखते वे लोग आँखों से ओझल हो गए। चाँद का प्रकाश था। उस मन्द प्रकाश में वह उनको पहचान न पाया। उनमें से एक ने सिर पर बड़ा-सा साफा बाँधा हुआ था। लंबी मूँछें भी थीं। अलावा इसके कुछ और पता न लगा।

कोई चोर हैं? भारतमणी कार्यालय में से कुछ चुराके भाग रहे हैं?··· ऐसे बेवक्त समय में क्यों अंधाधुंध भागते जा रहे हैं? हूँ···कोई भी हों हमें क्या? शिवराम आगे कुछ सोच न सका। चाँद की शीतल उजियाली में, नीरव रात के समय धीमी गति से साईकिल चलाना उसे बड़ा सुहावना लग रहा था। स्मृति में फिर से मुरली की यादें लहरा उठीं। उन दिनों की याद करके वह प्रफुल्लित हो उठा।

मुरली के साथ बिताए दिन कितने सुखद व आनन्दमय थे? स्वभाव से मुरली जरा जिद्दी है। अपनी बात पर अड़ा रहेगा। हूँ, क्या मैं उससे कम हूँ? मैं भी तो हठी हूँ। लेकिन मुरली हर बात पर गहराई से विचार करेगा। चिन्तन मनन करके विषय को समझ लेगा। मुझसे उसे कितना प्यार है! जब उसे पता लगा कि मैं विप्लव पार्टी में गुप्त रूप से भाग ले रहा हूँ वह कितना विचलित हो गया था? उस वक्त उसकी आँखों में कैसा भय समा गया था? चेहरा कैसा विवर्ण हो उठा था? ओह! आज भी उसकी याद करते वक्त हंसी आती है। विप्लव पार्टी ऐसी घिनौनी व खौफ-नाक है? जैसे किसी भयंकर, घृणित विषैले जन्तु को देखकर घबरा गया हो, वैसे पलभर वह भौंचक्का-सा खड़ा था न?···उसे तो कम्यूनिज्म में विश्वास नहीं है। उन सिद्धान्तों को वह मानता नहीं। लेकिन मैं···मैं तो मानता हूँ कि अकेला वही सिद्धान्त मानव समाज का जीवाधार है। मुझ में ऐसे अकाट्य अटूट विश्वास पैदा करने के लिए वेदमूर्त्तिजी ने कितना श्रम किया है। मेरे प्रति उन्हें कितनी ममता व श्रद्धा है। सचमुच मूर्त्तिजी जन्मजात नेता हैं, लीडर हैं। अगर हर नेता इनके जैसा रहे तो यह संसार कितना बदल जाये?

झट आँखों के सामने वेदमूर्त्ति से उसकी पहली मुलाकात का दृश्य

तैरने लगा। उन्हें देखते ही वह कितना उत्साहित हो उठा था। कॉलिज में जिस दिन दंगाबाजी हुई थी, उस दिन रात को नौ बजे शिवराम कस्तूरी ऐयर होटल में एक कोने में पड़ी मेज के सामने बैठा था। एक प्याला गरम चाय का आर्डर देकर, उस दिन की घटनाओं पर विचार करता हुआ चिन्तामग्न था। तभी कोई उसके सामने की कुर्सी पर आ बैठा और शिवराम को देखकर मुस्कुराया। अपने एकान्त का इस तरह भंग होना शिवराम को अच्छा न लगा। उसने खिड़की की तरफ अपनी दृष्टि फिरा ली।

"आज शाम को तुम वहाँ पर न आते, तो प्रिन्सिपल बड़ी मुश्किल में पड़ जाते।" सामने बैठा व्यक्ति एकाएक बोला।

शिवराम की आँखें उस व्यक्ति की तरफ घूमीं। उम्र लगभग तीस बरस की होगी। दुबला-सा शरीर। विपक्षी के मर्म को भेदने वाली आँखें। नजाकत से छोटी-सी मूँछ उस चेहरे को आकर्षक बना रही थी। धोती और जिब्बा पहना था। शिवराम की दृष्टि अपनी ओर घूमते ही वह फिर से मुस्कुराया। उसके आकर्षक मुखड़े और प्रशान्त आँखों ने शिवराम का ध्यान खींचा।

उसने कहा—"तुम्हारे कार्य ने छात्रों को उनके अधिकार से वंचित कर दिया।"

"प्रिन्सिपल को कमरे में बन्दी बनाना ही छात्रों का अधिकार है?" शिवराम ने जरा कठोरता से पूछा।

"संघर्ष करने का यह भी एक तरीका है। आज सारे संसार में जो वर्ग संघर्ष फैला पड़ा है, उसमें हिंसा व बलप्रयोग का ही पहला स्थान है।"

"आप?..." शिवराम ने संशय-भरी आवाज में पूछा।

"शिष्टाचार निभाने की कोई जरूरत नहीं। मुझे 'तुम' कह सकते हो। मेरा नाम नल्लदम्बी है।"

"ओह! आप विप्लव पार्टी के सचिव हैं न?" नल्लदम्बी ने सिर हिलाकर हामी भरी। शिवराम उत्सुक हो उठा। बोला, "विप्लव पार्टी के सिद्धान्तों के प्रति मेरी बड़ी दिलचस्पी है।"

"जानता हूँ। पिछले हफ्ते पार्क में तुम अपने मित्र के साथ राजनीति पर जोरों से चर्चा कर रहे थे न ? तब मैं भी वहाँ था। तुम जैसे नौजवानों के कारण ही विप्लव पार्टी दिन-दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है।"

"मैं पार्टी में शामिल होना चाहता हूँ। आप मुझे लेंगे ?"

नल्लदम्बी के होठों पर मुस्कान खिल उठी। बैरे द्वारा लाई चाय को शिवराम ने नल्लदम्बी की ओर बढ़ाया। वह बोला—"नहीं, मैंने काफी मंगायी है।"

शिवराम जैसे अपने को रोक न पाया हो, फिर पूछा—"मैं पार्टी में शामिल हो सकता हूँ न ? उसके लिए क्या-क्या करना है ?"

"पार्टी में शामिल होकर ही पार्टी का काम कर सकते हो, ऐसी बात नहीं। तुम पार्टी के शुभाकांक्षी की हैसियत से भी बहुत कुछ कर सकते हो।"

"पार्टी का मेम्बर बनकर, तीव्रता से काम करने की मेरी बड़ी इच्छा है। आप जो भी काम दें करने को तैयार हूँ।" शिवराम की बेसब्री बढ़ती जा रही थी।

"हमारे बीच में इस 'आप' जैसी औपचारिकता की जरूरत नहीं। 'तुम' का सम्बोधन ही सही है। अच्छा अगले इतवार को यहीं पर शाम के छः बजे हम मिलेंगे। ठीक है न ?" इतना कहकर नल्लदम्बी काफी पीने लगा।

"तब तो अगले हफ्ते मैं पार्टी का मेम्बर बन सकता हूँ न ?"

"देखेंगे।" नल्लदम्बी कुर्सी से उठ गया।

इतवार की शाम को छः बजे मुरली की आँख बचाकर शिवराम होटल में आ गया था। बरसात के महीने थे, इसलिए छः बजने के पहले ही रात उतर गयी। थोड़ी देर के बाद नल्लदम्बी आ गया। वह अकेला नहीं था। उसके साथ एक युवती भी थी। उसे देखते ही शिवराम चौंक पड़ा। लेकिन वह उसे देखकर बड़ी शालीनता से मुस्कुरायी। बीस-बाईस की उम्र होगी। जरा लम्बा-सा पतला शरीर। बड़ी-बड़ी आँखें। सुन्दर सुडौल नाक। उन मद भरी आँखों में थिरकती लापरवाही उसे गर्वीली घोषित कर रही थी। वह शिवराम के कॉलेज की सहपाठिन थी। हाँ ! कॉलेज-मेट ! तीनों एक साथ 'फेमिली केबिन' में जा बैठे। नल्लदम्बी ने तीन प्याले चाय का आर्डर दिया और शिवराम के सामने आ बैठा। पर युवती शिवराम

की बगल में बैठ गयी।

"आपने बिलकुल मेरी आशा न की होगी।" उसने हंसते हुए कहा। शिवराम ने सिर हिलाया, बोला नहीं। उसे वहाँ पर देखकर वह इतना चौंक गया था कि उस धक्के से अभी तक मुक्त नहीं हो पाया था।

नल्लदम्बी ने कहा—"कान्ता ने तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कहा है।"

"ओह ! तब तो यह भी विप्लव पार्टी में..."

"हाँ, अनुगामिनी है।"

तीनों चाय का चसका लेते हुए बड़ी देर तक तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति तथा कम्यूनिस्ट विप्लव पार्टी के विकल्प में छात्रों का योगदान इत्यादि पर बातें करते रहे। कान्तामणी ने चर्चा में ज्यादा भाग न लिया। चुपचाप उन दोनों की बातें सुनती रही।

"उसदिन कॉलेज के अहाते में जो कुछ हुआ, वह सब पार्टी के आदेश पर हुआ। लेकिन तुमने आकर गुड़ गोबर कर दिया।" नल्लदम्बी ने शिकायत भरी आवाज में कहा।

"मुझे मालूम नहीं।...अलावा, उस संघर्ष व दंगेबाजी में कोई न्याय नहीं था।"

"नहीं...अभी तक तुम्हारे विचार में परिपक्वता नहीं आयी है। तुम बुर्जुगों के दृष्टिकोण से देख रहे हो। पार्टी की दृष्टि में वह संघर्ष महत्त्व-पूर्ण है।"

शिवराम कुछ न बोला।

"आगे हम मिलते रहेंगे। मेरे बदले कान्ता तुम से मिलेगी। यदि मुझ से कुछ कहना हो, कान्ता के द्वारा कहला भेजना। हम दोनों की निकट संपर्कता का गुप्त रहना ही अच्छा है।" नल्लदम्बी जाने को तैयार हो गया। कान्ता भी उठ गयी। कमरे के द्वार पर पहुँचते ही शिवराम को याद आया कि उसके पार्टी में शामिल होने के बारे में नल्लदम्बी ने कुछ नहीं बताया है। झट नल्लदम्बी के निकट आकर पूछा—"मैं पार्टी का मेम्बर कब बनूंगा ?"

"अगली मुलाकात के वक्त कान्ता से पूछना। वह बतायेगी।" नल्लदम्बी सीढ़ियाँ उतर गया। बाहर निकलते ही कान्ता और नल्लदम्बी

अलग-अलग दिशा में चले गये। शिवराम उन्हें देखते खड़ा था। बड़ी देर तक उसका आश्चर्य दूर न हुआ। कान्ता जो, उसकी कॉलेज-मेट है, एक विप्लवकारिणी है। बस इस एक बात ने उसे विस्मयविमुग्ध कर दिया था। कॉलेज में वह रोज उससे मिलता है। दोनों में बातें होती हैं, लेकिन किसी को इसका पता नहीं कि वह क्रान्तिकारिणी है। ओह ! कितनी होशियारी से उसने काम लिया है? उसका सरल सौम्य व्यवहार। हर बात को ध्यान से देखने व सुनने की प्रवृत्ति, शिष्ट व संयत स्वभाव ने उसे प्रभावित कर दिया था। वह जितना दूसरों की बातें ध्यान से सुनती थी, उतना कम बोलती थी। बनावटी लज्जा संकोच के बिना बड़ी गम्भीरता से सिर ऊँचा करके चलने की वह अदा कितनी सुन्दर है? शिवराम ने सोचा, सचमुच कान्ता एक पार्टी का नेतृत्व करने योग्य है।

दो दिनों के उपरान्त कॉलेज की लाइब्रेरी में कान्ता से मुलाकात हुई। उसके हाथ में एक छोटी-सी पुस्तिका को देकर वह तेजी से चली गयी। पुर्स्तिका के पन्नों को उलटकर देखा तो एक चिट्ठी थी। उसमें इतना ही लिखा था—"शाम को पाँच बजे।"

उस दिन कस्तूरी ऐयर के होटल में शिवराम उसकी प्रतीक्षा में बैठा था। कान्ता के आते ही दोनों एक कमरे में जा बैठे। छूटते ही शिवराम ने पार्टी के मेम्बर बनने की बात छेड़ी।

"इतनी बेसब्री क्यों? इतनी जल्दी में मेम्बर नहीं बन सकते। पार्टी में श्रमजीवी दल, अन्य दल जैसे दो विभाग हैं। इन दोनों में किसी एक के साथ ही पहले अपना सम्बन्ध जोड़ सकते हैं। श्रमजीवी, श्रमजीवी दल में भर्ती होंगे। अन्य लोगों को दूसरे दल में ही शामिल होना है।"

"तब तो कोई सीधे पार्टी का मेम्बर नहीं बन सकता?" शिवराम की आवाज में हल्की निराशा थी। इतने में काफी आ गयी। काफी पीती हुई कान्ता ने कहा—"क्यों नहीं? सीधे मेम्बर बन सकते हैं। मगर उसके लिए हाईकमाण्ड से अनुमति मिलती है।"

"तुम इसके लिए कुछ नहीं कर सकती?"

"अगर आप पार्टी का मेम्बर बनने के लिए इतना आग्रह करें तो आप को भर्ती कराने में कोई दिक्कत न रहेगी। मगर आप पार्टी के मेम्बर हैं,

इस बात को गुप्त रखना है। आप अपने असली नाम पर मेम्बर नहीं बन सकते···।"

"तब तो ?"

"एक और छद्म नाम देकर आपके नाम को दर्ज किया जाएगा। अगली बार मिलते वक्त इसके लिए जो कुछ करना है वह सब तैयार करके आऊँगी। कहिए ! किस नाम पर आप को मेम्बर बनाएँ ?"

शिवराम ने जरा सोचकर बताया, "कोदण्डम् ।"

"सुन्दर नाम है।" मोती से दाँत चमकाती हुई कान्ता हँस पड़ी।

दो दिनों के बाद एक दिन शाम को कान्ता शिवराम को पास के एक गाँव में ले गयी। तालाब के निकट, एक तंग गली में, एक छोटे से मकान में वे गये। उस मकान के अन्दर दस-बीस आदमी पहले ही आ बैठे थे। कान्ता को देखते ही सब लोग बड़ी मर्यादा के साथ उठ खड़े हो गये। कमरे के एक ओर एक बैंच पड़ी थी। कान्तामणी उस पर बैठी। बाकी सब फर्श पर बैठ गये। उसने सबसे शिवराम का कोदण्डम् के नाम से परिचय कराया। शिवराम भी उन लोगों के साथ बैठ गया।

कान्ता ने बहुत अच्छा जोरदार भाषण दिया। विप्लव पार्टी के सिद्धान्त, पूंजीवादी वर्ग के अत्याचार, उनके द्वारा मजदूरों का शोषण, श्रमजीवी वर्ग की दयनीय स्थिति इत्यादि पर विस्तार से बताया। मजदूर वर्ग का भविष्य बड़ा उज्ज्वल है, लेकिन उस भविष्य का बन्दूक की नोक पर ही स्वागत करना होगा। बुर्जुवा वर्ग के लोकतंत्र के द्वारा यह असम्भव है, ऐसा विश्वास दिलाया। उपस्थित लोग बड़ी श्रद्धा से उसकी बातें सुन रहे थे। उस अजीब-सी परिस्थिति में शिवराम बेचैन हो उठा। उसका खून गरम हो गया। लगा कि उसकी नस-नस में नई स्फूर्ति व नया जोश आ गया है। पार्टी के कार्यों में तीव्रता से भाग लेने की विह्वलता बढ़ती जा रही थी। समझ न पाया कि उसे क्या हो गया है। विस्मय-विस्फारित आँखों से कान्ता की ओर देखता रहा। उसके साहस, लगन, और प्रभावशाली व्यक्तित्व ने उसे आश्चर्य में डाल दिया। उपस्थित लोग उसके प्रति जो आदर दिखा रहे थे इससे इतना साफ था कि विप्लव पार्टी में कान्ता एक मुख्य व्यक्ति है।

मीटिंग के पूरा होने के बाद जब दोनों वापस लौट रहे थे तब शिवराम ने पूछा—"ये लोग किस दल के हैं?"

"यही फेमिली विंग है। हफ्ते में एक बार पार्टी के सिद्धान्तों पर मैं वर्ग चला रही हूँ।"

"ये लोग पार्टी के मेम्बर हैं?"

"नहीं, सहानुभूति रखने वाले हैं। पार्टी में सबको मेम्बर नहीं बनने देते। उसके लिए परिपक्वता होनी चाहिए। इसके अलावा जो मेम्बर बनना चाहता है, उस पर पार्टी को विश्वास होना चाहिये।"

"विश्वास दिलाने के लिए मुझे क्या करना होगा?"

कान्ता हँस पड़ी। चाँद के धवल प्रकाश में वह हँसी बड़ी मधुर लगी।

"ओह! इतनी बेसब्री क्यों? आप की लगन व तीव्रता को मैं समझ गयी। कुछ दिन सब्र करना पड़ेगा। पार्टी निकट भविष्य में आपको स्वीकार कर लेगी।"

"आप···आप मेम्बर हैं?" शिवराम ने बेधड़क पूछ लिया।

कान्ता ने उसकी ओर गौर से देखा। चाँदनी में वे बड़ी-बड़ी आँखें चमक उठीं। एक लम्बी साँस लेती हुई वह बोली, "पार्टी में कौन मेम्बर है, कौन मेम्बर नहीं है, इसका किसी को पता नहीं। यह बताना भी मना है। दूसरों को इसके बारे में तलब नहीं करना चाहिए। पार्टी की निकट भविष्य में अण्डरग्राउण्ड होने की सम्भावना है।"

कान्ता आगे कुछ न बोली।

अगले दिन रात के दस बजे का समय था। शिवराम और मुरली हॉस्टल के कमरे में लेटे थे कि किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। शिवराम ने उठकर दरवाज़ा खोला। मुरली की आँखें दरवाज़े पर टिकी थीं। आगन्तुक ने शिवराम के कान में कुछ कहा। तुरन्त शिवराम ने अन्दर आकर शर्ट पहन ली और हाथ में टार्च लेकर निकल गया।

"दस बज गये। अब कहाँ···?" मुरली ने पूछा।

"एक जरूरी बात है, अभी आ जाऊँगा" शिवराम निकल गया। हॉस्टल से बाहर आते ही पूछा—"नल्लदम्बी! क्या बात है?"

"दल के नेता वेदमूर्त्तिजी ने तुमको बुला भेजा है।" नल्लदम्बी ने

धीमी आवाज में कहा।

वेदमूर्त्ति का नाम सुनते ही शिवराम ने नई स्फूर्त्ति का अनुभव किया। जिसे देखने, जिससे बातें करने को वह इतने दिनों से बेचैन हो रहा था, उनसे कुछ मिनटों के बाद उसकी मुलाकात होनेवाली है, यह ख्याल आते ही वह अधीर हो उठा।

पार्टी के कार्यालय में प्रवेश करते ही जैसे अपने को रोक न पाया हो, अन्दर की ओर भागने लगा। जो उसके दिल व दिमाग में छाये हुए थे, स्वप्न और जागृति में पूर्णतया आच्छादित हो चुके थे, उनसे मिलने की उत्सुकता में वह सीढ़ियों को दो-दो, तीन-तीन करके लाँघता गया। जो उसके साथ आया, एक बड़े कमरे के द्वार पर उसे छोड़कर चला गया।

कमरे के अन्दर एक प्रकाशमान वल्ब जल रहा था। एक तरफ एक बड़ी खाट पड़ी थी। कमरे के अन्दर कदम रखते ही शिवराम की नज़र खाट पर बैठे व्यक्ति पर पड़ी। उम्र चालीस के लगभग होगी। लम्बा कद। गोरा उज्ज्वल रंग। तेजस्वी आँखें। चौड़ा प्रभावशाली मुख मण्डल। उस छोटी-सी करीने से कटी दाढ़ी को देखते ही शिवराम समझ गया कि यही मिस्टर वेदमूर्त्ति हैं। शिवराम को देखते ही, खाट पर बैठे-बैठे, उन्होंने हल्की मुस्कान भरते हुए अपनी आँखों से उसका स्वागत किया।

उनकी आँखों में आँख डालते ही शिवराम स्तब्ध रह गया। उस मर्मभेदी दृष्टि में जैसे वह अन्दर ही अन्दर पिघलता जा रहा था। सारे शरीर में हल्की कंपकंपी दौड़ी। गला सूख गया। दिल में जो विचित्र अनुभूति क्षण-क्षण बढ़ती जा रही है, वह उत्साह है या भय या दोनों? पल भर शिवराम चकरा गया। शरीर पसीने से तर हो गया।

नेता ने फिर से हल्की मुस्कान भरी। दाएँ हाथ से दाढ़ी को सहलाते हुए बोले—, "आओ! भई।"

उनकी गम्भीर आवाज उसे आगे खींचती गयी। धीमी चाल से खाट के निकट पहुँचा। पास आते ही उन्होंने उसका हाथ पकड़कर अपने पास बिठा लिया। उस स्पर्श से वह सिहर उठा। वे बोले—"नल्लदम्बी और कान्ता ने तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कहा है। तुम क्यों पहले ही मुझसे मिलने नहीं आये?"

उनकी स्नेहपूर्ण बातों ने उसमें इतनी हिम्मत भर दी कि शरमाते हुए उसने कहा—"बहुत दिनों से आपसे मिलना चाहता था। मगर आज ही वह इच्छा पूरी हुई।"

वेदमूर्त्ति ने अपना दायाँ हाथ उसके कंधों पर रख लिया। "विप्लव पार्टी के सिद्धान्तों पर तुम्हें कितनी श्रद्धा व लगन है, यह मालूम हुआ। असल में तुम जैसे साहसी, प्रतिभाशील युवकों की खोज में हूँ मैं।" एक मिनट मौन के बाद फिर कहा—"कॉलेज में छात्रों के आन्दोलन के वक्त तुमने जो कुछ किया वह भी जानता हूँ।"

"आपके ख्याल से मैंने गलती की है?"

शिवराम के कन्धे से अपना हाथ हटाये बिना वे बोले, "हाँ, जहाँ तक पार्टी का सवाल है वह सही नहीं है। लेकिन व्यक्तिगत दृष्टि से तुम मेरी बधाई के पात्र हो।"

नेता की प्रशंसा ने उसमें पुलक और लज्जा को भर दिया। वह सिर झुकाये बैठा था। उसके कन्धे पर हलकी थपकियाँ देते हुए वे बोले—"इस पार्टी में भर्त्ती होकर, पार्टी के लिए सब कुछ करने को तैयार हो तुम?"

झट सिर तानकर उमंग भरे स्वर में शिवराम बोला—"तैयार हूँ। चाहें तो प्राण भी दूँगा।"

"जल्दी न करना। तुम्हें दस दिन का अवकाश दे रहा हूँ। खूब सोच विचार करके एक निर्णय पर पहुँचो।"

"मैं कभी का निश्चय कर चुका हूँ।"

"ना-ना···जल्दबाजी की कोई जरूरत नहीं। आज से दसवें दिन इसी स्थान पर इसी समय हम मिलेंगे। तब अपना निर्णय बताना। तब तक खूब गहराई से सोच-विचार कर लो। शिवराम! विप्लव पार्टी में अन्य पार्टियों जैसे आकर्षण नहीं हैं। कई दिशाओं में इस पार्टी का जबर्दस्त विरोध हो रहा है स्वयं सरकार इसके विरुद्ध है। कभी-कभी फरार होना पड़ेगा। पार्टी के कायदे-कानून बड़े सख्त व कठोर हैं। पार्टी में भर्ती हो जाओगे तो फिर इससे निकल न पाओगे। शिवराम, खूब सोच लो। काफी समय ले सकते हो।···कोई जल्दी नहीं। तुम पर मुझे पूरा भरोसा है।···अच्छा! अब तुम जा सकते हो। दस दिनों के बाद इसी वक्त

मिलेंगे।" वेदमूर्त्ति खाट से उठ गये।

विप्लव कार्यालय से बाहर आते वक्त शिवराम को लगा कि वह एक अजीब सपनों की दुनिया से बाहर आ रहा है। उसे इस बात पर यकीन न हुआ कि उसने विप्लव दल के नेता से मिलकर बातें की हैं। एक विचित्र मादकता उसके शरीर व प्राणों में भरी हुई थी।

हॉस्टल में मुरली बिस्तर पर करवटें बदल रहा था। ग्यारह बज गये, मगर उसे नींद न आयी।

वह शिवराम की प्रतीक्षा में था। कमरे में आते ही द्वार बन्द करके शिवराम मुरली के गले में हाथ डालकर आनन्द विह्वल स्वर में बोला—"जानते हो ! मैं किससे मिलकर आया हूँ ?"

"बताओ तो सही ! आते ही इतना उछल-कूद मचा रहे हो। क्या बात है ?" मुरली ने आश्चर्य से पूछा।

"मेरी वेदमूर्त्ति से मुलाकात हुई।"

"—प्यू···इतनी सी बात है।"

"अरे ! वेदमूर्ति कोई मामूली आदमी हैं ?"

"विप्लव पार्टी का नेता मानो कोई देवता है ?"

"हाँ, देवता है देवता। श्रमजीवी वर्ग का देवता है। वे अपनी उंगली हिलायें तो सारा देश···"

"बस—बस ! श्रमजीवियों की आड़ लेकर राजनीति की चालें चलाना आज का फैशन बन गया है। हाय ! बेचारे बलि के बकरे बने हैं।"

"मुरली ! विप्लव पार्टी की शक्ति का तुम्हें पता नहीं।"

"सब कुछ जानता हूँ। आपके विप्लव दल में शक्ति कहाँ ? रूस व चीन के आप लोग मुहताज हैं न ?"

"चीन और रूस तुम्हारी दृष्टि में इतने हेय हैं ?" शिवराम क्रोध में चिल्ला उठा।

"रूस और चीन को हेय नहीं मानता। लेकिन स्व-चिन्तन व शक्ति के बिना उन लोगों के मुहताज बने फिरते हैं न ? उसे देखते हुए शरम आती है। उस दिशा में न घूमते तो आप में शक्ति कहाँ ?"

"यार, आज वह सारी शक्ति व क्रियाशीलता वेदमूर्त्ति के रूप में

मूर्तिमान हो गयी है। मुरली ! उनकी गंभीर आकृति, वह छोटी-सी दाढ़ी ! बोलने का वह ढंग ! पार्टी के लिए उनकी कड़ी साधना ! ओह ! सच कहता हूँ मुरली ! तुम एक बार उनसे मिलोगे तो उनके बिना मोल के गुलाम बन जाओगे।"

"ओह ! ऐसा जादू-टोना करके ही उन्होंने पार्टी के लिए इतने लोगों को इकट्ठा किया है ?···अरे यार ! जानते हो ! यह मिट्टी इतनी पवित्र है कि इनसे भी महान और श्रेष्ठ लोगों ने यहाँ पर जन्म लिया है। ऐसे-ऐसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त व तत्वों का प्रचार करके हार गये हैं, जो इस मिट्टी में पनप न पाये। तुम्हारे इन मूर्ति का आकर्षक व्यक्तित्व व प्रचार गौतम बुद्ध से बढ़कर शक्तिशाली है ? गौतम बुद्ध का तेजस्वी मुखमंडल, उनकी वह प्रशान्त मुस्कान, उनके उन्नत तत्व व चिन्तन, और त्यागपूर्ण जीवन पर लाखों-करोड़ों आदमी निछावर हो चुके थे। लेकिन गौतम बुद्ध के वे उन्नत सिद्धान्त जब इस धरती पर जड़ न पकड़ सके, पनप न पाये तो तुम्हारे इस दाढ़ीवाले की पार्टी की जड़ें यहां जम जायेंगी ?" मुरली ने उपेक्षापूर्ण हँसी के साथ कहा।

"तुम मूर्ति के महत्व को जानते नहीं, इसलिए ऐसी बातें करते हो। वे ज्ञान के भंडार हैं। उनकी वह दाढ़ी ही उनकी चिन्तनशीलता का सबूत है।"

"ओह ! अगर दाढ़ी ही प्रखर बुद्धि व चिन्तन का सबूत है तो भेड़ बकरियाँ भी बड़ी बुद्धिमान हैं। अरे यार ! सुनो, दाढ़ी में जूँ लग सकती है, बुद्धि नही।" मुरली ने झल्लाकर कहा।

यह सोचकर कि मुरली से तर्क करने का कोई फायदा नहीं, शिवराम बत्ती बुझाकर लेट गया।

अतीत की स्मृतियों की धारा एकाएक टूट गयी। लगा उसकी साइकिल की गति बिलकुल धीमी पड़ने से एक तरफ लुढ़कने लगी है। शिवराम झट संभल गया और तेजी से चलने लगा। सड़कें बिलकुल निर्जन पड़ी थीं। घड़ी में देखा। दस बज गये थे।

नौ

विप्लवदल के नेता वेदमूर्ति से मिलने के बाद शिवराम के जीवन में न जाने कितने हेर फेर हो गये थे। पार्टी से उसकी निकट संपर्कता बढ़ती गयी और वह पार्टी के भीतरी वृत्त में आ गया। आज वह इस प्रान्त का नेता बन गया है न ? पार्टी में इस हद तक ऊपर उठने के लिए उसने कितना कष्ट और मुसीबतें उठायीं हैं। उसकी वे यातनाएँ और कड़ा शिक्षण, कठोर नियंत्रण। ओह ! आज भी उनकी याद करके वह सिहर उठा।

शिवराम ने चाँद की मंद उजियाली में बाएँ हाथ की तर्जनी के दाग को ध्यान से देखा। तुरन्त मन पर अतीत की वह अविस्मृत स्मृति चल-चित्र सी उभर आयी कि वह फिर से यादों में खो गया।

वेदमूर्ति से मिले दस दिन हो गये। उस दिन रात को ही उनसे मिलना है। शिवराम नौ बजे ही कमरे से निकल गया। मुरली ने कुछ न कहा। वह समझ गया कि शिवराम पार्टी कार्यालय में जा रहा है। उसे यह भी मालूम था कि शिवराम मनाने से मानने वाला व्यक्ति नहीं है।

"यार ! जल्दी में टार्च ले जाना भूल गये।" मुरली ने मेज पर पड़ी टार्च शिवराम की ओर बढ़ायी। शिवराम द्वार तक पहुँच चुका था। मुड़कर अर्थहीन हँसी हँसते हुए उसने टार्च ले ली।

मुरली बोला—"टार्च रास्ते को प्रकाश देगी, बुद्धि नहीं।"

शिवराम पल भर रुककर मुरली की ओर देखते हुए मुस्कुराया और बोला—"चिन्तन की टार्च मेरे पास है।"

"होने से क्या फायदा ! वह तो बिगड़ गयी है।"

"उसकी मरम्मत करने वाले के पास ही जा रहा हूँ।"

"जा—जा···" होठों से कुछ बुदबुदाते हुए मुरली ने अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया।

होस्टल के निकट खड़े नीम के वृक्ष की आड़ में नल्लदम्बी उसकी प्रतीक्षा में खड़ा था। दोनों विप्लव कार्यालय की ओर तेजी से कदम धरने लगे। कार्यालय के अन्दर प्रवेश करते ही नल्लदम्बी ने बाहरी दरवाजा बन्द कर दिया। शिवराम की बेताबी क्षण-क्षण बढ़ती जा रही थी। दोनों ऊपर गये। बरामदे में उस प्रान्त के चार-पाँच प्रमुख खड़े थे। शिवराम के आते ही उसे साथ वे लेकर हाल में गये। उस विशाल कमरे के बीच में एक बड़ी मेज के सामने दल के नेता वेदमूर्ति विराजमान थे। उनके पीछे दीवार पर स्टालिन और माओ-त्से-तुंग की बड़ी-बड़ी तस्वीरें टंगी थीं।

शिवराम को देखते ही वेदमूर्ति ने आसन से उठकर उसका स्वागत किया, बोले—"मुझे विश्वास था कि तुम अवश्य आओगे।"

शिवराम ने बड़ी मर्यादा के साथ हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

"कामरेड! ऐसे हाथ जोड़ना गुलामी का द्योतक है। पूंजीवादी वर्ग का अभिशाप है।" वेदमूर्ति ने उसके दाएँ हाथ को जोर से पकड़कर हिलाते हुए इस गंभीर आवाज में कहा तो शिवराम रोमांचित हो उठा। वे उसे मेज के पास ले गये और उसके ऊपर से एक कागज उठाकर उसके हाथ में पकड़ा दिया। शिवराम उसे लेकर पढ़ने लगा। बाकी लोग मेज से जरा दूर हटकर जैसे कतार बाँध ली हो, मौन खड़े थे।

शिवराम ने ध्यान से पढ़कर देखा। पार्टी के सदस्य बनने के नियम व शर्तें उसमें लिखी थीं। सबकी नजर उसी पर टिकी थी। नियमावली को पूरा पढ़ने के बाद शिवराम ने सिर उठाया कि वेदमूर्ति की गंभीर आवाज गूंज उठी—"बताओ! अब क्या कहते हो?"

"ये शर्तें मुझे मान्य हैं। मैं इनके अनुसार चलने को तैयार हूँ।" उसकी आवाज में दृढ़ता थी।

"अच्छा! नियमावली को जोर से पढ़ो।"

शिवराम ने पूरी नियमावली को ऊँची आवाज में दूसरों को सुनाते

हुए पढ़ा। सब लोग उसका पढ़ना ध्यान से सुनते खड़े थे। अन्त में शिवराम ने पूछा—"इस पर दस्तखत करनी है न?"

"हाँ! मामूली दस्तखत नहीं। अपने खून से हस्ताक्षर। समझे! तुम से संभव है?" वेदमूर्ति ने उसकी आँखों में झाँका। शिवराम का शरीर काँप उठा। चौंका। अपनी दृष्टि चारों तरफ घुमायी। कमरे में उपस्थित सभी लोगों की दृष्टि उसी पर टिकी थी। वहाँ पर खड़े हर व्यक्ति ने इसी तरह प्रतिज्ञा-पत्र पर अपने खून से हस्ताक्षर किया होगा, यह ख्याल आते ही उसकी नस-नस में नया जोश-सा, अजीब उन्माद-सा छा गया।

उसने सिर तानकर वेदमूर्ति की ओर देखा और कहा—"हर बात मुझ से संभव है।" उसके माथे पर पसीने की बूँदें मोती-सी चमक उठीं। वेदमूर्ति ने बड़ी खुशी से उसका कंधा पकड़कर झकझोरते हुए मेज पर एक छोटी-सा चाकू उठाकर उसकी ओर बढ़ाया।

शिवराम ने बेझिझक चाकू उठाया और बाएँ हाथ की तर्जनी पर चलाया कि खून निकल आया। वेदमूर्त्ति ने मेज पर से कलम उठाकर दी। शिवराम ने उस कलम को खून में सिंचित कर प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर किया। वेदमूर्त्ति ने छाती फुलाकर एक सिपाही की तरह अपना दाँया हाथ बढ़ाया। शिवराम ने भी कलम मेज पर रखकर बड़े उत्साह से अपना हाथ बढ़ाया। दोनों ने हाथ मिलाये। फिर उपस्थित लोग एक-एक करके आये और हाथ मिलाया। इस कार्यक्रम के पूरा होने पर वेदमूर्ति ने तर्जनी के घाव पर दवा लगाकर पट्टी बाँध दी।

प्रतिज्ञा-बद्ध होकर उसके बाहर निकलते-निकलते ग्यारह बज गये। तर्जनी पर हल्का दर्द हो रहा था, फिर भी उस दर्द ने उसमें अननुभूत बड़प्पन की भावना और नये जोश को भर दिया था। खून से हस्ताक्षर करने वाले उस कार्यक्रम ने यद्यपि उसे भयभीत कर दिया था, फिर भी एक महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी आंदोलन में वह भी एक भागीदार है, इस ख्याल से उसमें नया जोश आ गया था।

अगले दिन शाम को होटल में पूर्ववत् कांता से मुलाकात हुई। उसके पार्टी के सदस्य बनने का अनुमति-पत्र वह साथ ले आयी थी। उसमें उसका नाम 'कोदण्डम्' लिखा था। कान्ता ने हँसते हुए कहा—"पार्टी में

आपका नाम यही है।" बातों ही बातों में उसने यह भी कहा कि इतनी शीघ्र आपको पार्टी में ले लिया है, यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। बस! नेता को आप पर विश्वास हो गया है—और कुछ नहीं। हाँ एक बात है। कोई न कोई बहाना करके आपको कॉलेज की पढ़ाई छोड़नी होगी। पार्टी का शिक्षण लेने आपको कहीं और जाना होगा।"

"कहाँ जाना है?"

"अब मालूम नहीं, बाद में बताया जायगा। हाँ एक और बात—आपको मुरली से अपनी मित्रता त्यागनी होगी।"

शिवराम हड़बड़ाकर बोला—"वह तो मेरा पक्का दोस्त है।"

"हो सकता है। मगर पार्टी में भर्ती हो जाने पर पाटा ही आपका सबकुछ है। आपका प्राण है। पार्टी में भी आपको किसी से गहरी दोस्ती नहीं रखनी है! जानी दोस्त, जिगर का टुकड़ा, इस बात की गुँजाइश नहीं। पार्टी में कर्त्तव्यपरायणता और सेवा ही सब कुछ है। इसके अलावा अन्य भावनाओं का मोह त्याग देना ही पार्टी का बुनियादी आदर्श है।"

"तब तो पार्टी के कामरेड से स्नेह नहीं जताना है?" शिवराम ने विस्मय से पूछा।

"मित्रता व स्नेह कर सकते हैं। मगर किसी पर भरोसा नहीं करना है।"

"किसी पर भरोसा न करके···कैसे?" शिवराम चकराया।

कान्ता बोली—"इसका निश्चय नहीं कि कौन कब विश्वासघात करेगा, द्रोह करेगा। हमेशा सचेत रहना है। पार्टी जो आज्ञा देती है उसे पूरा करना है। आज्ञा का पालन करना है। बस उससे न रत्ती भर ज्यादा, न रत्ती भर कम होना है। इस पर चर्चा, विचार-विमर्श सब कुछ मना है।"

शिवराम चिन्ताकुल हो उठा। कांता ने इसे ताड़ लिया, बोली—"शिवराम जी, अन्य राजनीतिक दलों में जो आकर्षण और लुभावनी बातें हैं, वे सब इसमें नहीं। हर दल के प्रति लोगों का आकर्षण व खिंचाव इस बात पर निर्भर है कि वह दल अपने सदस्य को क्या-क्या फायदा व लाभ दे सकता है। लेकिन विप्लव पार्टी अपने सदस्यों को कुछ प्रदान नहीं

करती, उलटे सदस्यों का सब कुछ वह अपने में समेट लेती है। हाँ, हमारी आज़ादी को भी !···एक कंम्यून है···।"

शिवराम विस्मय विमुग्ध भाव से उसकी बातें सुन रहा था। अन्त में कान्ता ने हल्के से पूछा—"डर गये ?"

शिवराम ने चकित-सा हो उसकी ओर देखा और फिर कहा—"डर ! काहे का डर ? इसके बाद भी ?" उसने अपने बाएँ हाथ की तर्जनी की पट्टी की ओर इशारा किया और गंभीरता से मुस्कुराया।

प्रतिज्ञा लिए तीन महीने गुजर गये। शिवराम ने कॉलेज की पढ़ाई अधूरी छोड़ दी और पार्टी का शिक्षण लेने कहीं चला गया। किसी को पता नहीं कि वह कहाँ गया। शिवराम अपनी विधवा माता पट्टम्माल की एकमात्र सन्तान था। उस बेचारी का उसपर बड़ा भरोसा था। गाँव में थोड़ी जमीन और एक छोटा-सा मकान था। भले ही ठाठ का जीवन न बिता सकें, पेट भरने के लिए वह जायदाद काफी थी। माँ की सबसे बड़ी अभिलाषा थी कि बेटा पढ़-लिखकर, बड़े ओहदे पर रहे, और दोनों हाथ कमाये। असल में यही आस लगाये बैठी थी वह। हर किसी से अपने बेटे के सुखमय भविष्य पर, उसकी शादी पर बातें करती रहती। वहू का मुंह देखने के लिए वह बूढ़ी माँ तरसती रही। लेकिन शिवराम को इन बातों का बिलकुल ख्याल न था। उसका वर्तमान और भविष्य का सारा चिन्तन पार्टी का था। हमेशा पार्टी के बारे में सोचता-विचारता रहा। वेदमूर्त्ति ने उसके दिल और दिमाग पर पार्टी के सिद्धान्तों का ऐसा नशा चढ़ा दिया था कि उसे और किसी का ध्यान ही न रहा।

एक साल तक केरल के वयनाडू प्रदेश के जंगलों में मारा-मारा फिरना पड़ा। वहीं पर गुप्त रूप से क्रान्तिकारियों को गोरिल्ला युद्ध प्रणाली, सामरिक शिक्षण तथा पार्टी के सिद्धान्त के शिक्षण वर्ग चले। दल के नेता वेदमूर्त्ति भी उन गुप्त स्थानों में अक्सर आ-आकर उन्हें उत्साहित करते थे। केरल प्रान्त के घने जंगलों में एक सुसंगठित सेना को तैयार देखकर शिवराम के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। नेता वेदमूर्त्ति की संगठन-शक्ति, प्रखर-बुद्धि, अद्भुत कार्यकुशलता देखकर वह सन्न रह गया। नेतृत्व करने की अपार सामर्थ्य उनमें थी। उन्होंने अपनी

जोशीली बातों से शिवराम के दिल में कई सपनों व कल्पनाओं को अनुप्राणित कर दिया था। जैसे बर्रा, कीड़े को डंक मार-मारकर अपने जैसा बना लेता है, वैसे वेदमूर्ति की संगति ने शिवराम का कायापलट कर दिया। आगे कभी वह चाहे तो भी पार्टी से अलग होना असंभव था, इतना पार्टी में वह घुलमिल गया था। इस बन्धन में उसने असीम आनन्द का अनुभव किया। पार्टी के प्रति उसको इतना लगाव था कि उसकी बुद्धि, चिन्तन, मनन, क्रियाशीलता पर पार्टी हावी हो गयी।

केरल के उन जंगलों में एक साल गुप्त जीवन बिताकर जो बाहर आया, वह पुराना शिवराम नहीं था। उसमें भारी परिवर्त्तन आ गया था। वह पुराना उतावलापन, जल्दबाजी, छटपटाहट अब उसमें न रही थी। उसके बदले वह शान्त, संयत व गंभीर बन गया था। हर बात पर गहराई से विचार करने की प्रवृत्ति उसमें आ गयी थी। शहर में वापस आया तो यहाँ भी कई परिवर्त्तन हो गये थे। सबको विस्मय में डालकर मुरली एम० ए० में फेल हो गया था और शारदा तमिलनाडू में सबसे प्रथम आयी थी। इसके अतिरिक्त मुरली ने 'भारतमणी' पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया था।

इन्हीं पुरानी यादों में गोता लगाता हुआ शिवराम जा रहा था कि उसकी दृष्टि अनायास प्रोफेसर कमलस्वामी के बंगले की तरफ़ गयी। बंगले की छत पर अब भी दीप जल रहा था। उसकी साईकिल गति और भी धीमी पड़कर घोंघा-सी रेंगने लगी कि वह लड़खड़ाया। झट बाएँ पैर को जमीन पर जमाकर पल भर रुका, फिर छलांग मारकर सीट पर बैठा और तेजी से चलने लगा। सोचा, 'न जाने इस वक्त वह क्या कर रही होगी। किताबी कीड़ा ठहरी ! कुछ न कुछ पढ़ती होगी। हाय ! बेचारी का दिल मैंने कितना दुखा दिया ? अब भी मुझ पर भरोसा है उसका। लेकिन शारदा ! हम दोनों का जीवन कभी जुड़ सकता है ? मैं तो पार्टी, मीटिंग··· ऐसा इधर-उधर मारा-मारा फिर रहा हूँ। तुम तो बंगले में रहनेवाली ठहरी। हाथ में किताब लिए, कल्पना की दुनिया में विचरती रहती हो। पूंजीवादी वर्ग और श्रमजीवी वर्ग—कभी एक हो सकते हैं ? ये दो ध्रुव कभी मिल सकते हैं ? शारदा ! मेरा जीवन हमेशा-हमेशा के लिए पार्टी के

साथ जुड़ गया है। हम दोनों अभिन्न हो गये हैं। अब तो तुम्हें…तुम्हें…।' ओह शारदा ! तुम समझती नहीं, शिवराम की छाती को चीरती हुई एक लंबी आह निकली। साथ ही हँसी भी आयी। प्रेम के बारे में सोचते ही अनजाने वह हँस पड़ा। विप्लव पार्टी के क्रान्तिकारी सिद्धान्त व योजनाएँ उसके विचार में चक्कर काटने लगीं। सोचा—प्रेम ! मुहब्बत ! यह तो बुर्जुआ वर्ग की कल्पना है, ऐसा पार्टी का सिद्धान्त बताता है। मुहब्बत ही नहीं, दिल को लुभाने वाली मोहने वाली हर बात बुर्जुआ वर्ग की मीठी मादक कल्पना है, ऐसा पार्टी का अकाट्य तर्क था।' हठात् शिवराम के दिमाग में बिजली-सा एक विचार कौंध उठा।

मन को मोहित करने वाली हर बात बुर्जुआ की कल्पना है, तो पार्टी… वह भी तो दिल व दिमाग को मोह लेती है। तब तो पल भर शिवराम को ज़ोर का धक्का-सा लगा। पार्टी के सिद्धान्तों में अटूट विश्वास रखनेवाला अपने मन में उठे इस सवाल का कोई जवाब न दे पाया, चकराया। लगा उसका प्रश्न उसके विश्वास की नींव को हिला रहा है। मगर पार्टी के सिद्धान्तों में एक मुख्य तत्व यह था कि पार्टी के सिद्धान्त के खिलाफ उठनेवाला हर सन्देह मूर्खतापूर्ण तथा अज्ञान है और कुछ नहीं।

शिवराम आगे कुछ न सोच सका। पार्टी का दफ़्तर आ गया। अब उसके मन में कोई चिन्ता, कोई विचार नहीं। अपने नेता से मिलनेवाला है, केवल वही विचार दिल की सतह पर तैरता रहा। बरामदे में साईकिल छोड़कर वह तेजी से सीढ़ियाँ तय करने लगा।

दस

विप्लव पार्टी कार्यालय की छत पर वेदमूर्त्ति, शिवराम की इन्तजार में बैठे थे। उनकी नजर सामने दीवार पर टंगी माओ-त्से-तुंग की तस्वीर पर टिकी थी। उस तस्वीर से प्रेरणा व शक्ति पा रहे से, वे उसकी ओर अपलक निहारते हुए ऐसे अचल बैठे थे मानो समाधिस्थ हो गये हों। शिवराम अन्दर आकर उनके पास जाकर खड़ा हो गया। उसके आगमन का आभास तक उन्हें न रहा। जैसे एक भक्त अपने आराध्य देवता के सम्मुख नयभक्ति के साथ, आत्मविस्मृत होकर सजल आँखों से गद्गद् होकर खड़ा रहेगा, वैसे माओ की तस्वीर के सम्मुख वेदमूर्ति आत्म-समर्पित भाव से मौन खड़े थे। शिवराम थोड़ी देर मौन खड़ा था। उससे रहा न गया तो हल्के से खखारा। आवाज पाकर वेदमूर्ति का ध्यान भंग हुआ। उन्होंने उसकी ओर मुड़कर देखा।

उनके चेहरे पर हमेशा की वह मुस्कान न थी। चिड़चिड़े से नजर आये। चुपचाप मेज की दूसरी तरफ़ पड़ी कुर्सी की ओर इशारा किया। शिवराम उसपर जा बैठा। वेदमूर्त्ति भी अपने आसन पर बैठ गये। थोड़ी देर दोनों न बोले। वेदमूर्त्ति की उंगलियां दाढ़ी को सहलाती रहीं। दोनों के बीच में वह विशाल लंबी-चौड़ी मेज पड़ी थी। उसपर दोनों कुहनियाँ टिकाये बैठे थे। बीच-बीच में गला साफ़ किया। फिर एकाएक कहा—"एक मुख्य विषय पर बातें करने तुम्हें बुलाया है।"

शिवराम ने बिना उत्तर दिये उनकी तरफ देखा।

"तुम को मुझ पर भरोसा है?"

यह प्रश्न अप्रत्याशित था। कहीं छिपकर एकाएक वार करने के जैसा था। शिवराम सन्न रह गया। घबराया-सा उनकी तरफ़ फटी-फटी आँखों

से देखता रहा। फिर कहा—"जी! यह कैसा प्रश्न है? मुझे आप पर अविश्वास होगा, ऐसा आपको विश्वास है?"

"तुम्हें मुझ पर पूरा विश्वास है?" उन्होंने अपना प्रश्न दुहराया।

शिवराम चकराया।

"बताओ···साफ-साफ बता देना। लुकाव-छिपाव की जरूरत नहीं। यह पार्टी के भविष्य की बात है?" वेदमूर्त्ति की आवाज से यह पहचानना मुश्किल था कि मन में क्या है। चेहरा निश्चल था। आँखों की तीखी दृष्टि शिवराम के मर्म को भेद रही थी।

"आप पर पूरा भरोसा है।"

"तब आज सबेरे की मीटिंग में मेरे विरुद्ध क्यों आवाज उठायी?"

"यह और लोगों की राय थी। मैंने उसी को आवाज दी। आँध्र के नेता भी चुनाव का ही समर्थन कर रहे थे।"

"इस मीटिंग में अपनी राय देने का उसे क्या अधिकार है? आँध्र में उसका व्यवहार, व रंग-ढंग उतना अच्छा नहीं लग रहा है। लगता है पार्टी में मतभेद खड़ा कर देगा। मेरी योजनाओं में अक्सर दखल देता रहता है।···अच्छा! रहने दो इन बातों को। शिवराम! दूसरों के अभिप्राय का तुम्हें ख्याल करने की जरूरत नहीं। अगर तुम्हें अपने नेता पर पूरा भरोसा हो तो और लोगों की बात पर झुकने की कोई जरूरत नहीं। समझे!"

"चुनाव की बात जब आती है तब तो···"

"शिवराम! पार्टी के सिद्धान्त व कार्यप्रणाली का तुम्हें अच्छा ज्ञान है। फिर भी लगता है कि तुम्हारे मन में अब भी चंचलता है। दुविधा से तुम मुक्त नहीं हुए हो। आज तुम एक मामूली कार्यकर्त्ता नहीं। एक प्रान्त के नेता हो। नेतृत्व को वहन करने की सारी योग्यताएँ हैं तुममें! समझे!"

"आपके के ख्याल में मैं नेता बनने लायक नहीं हूँ?"

"नहीं, अकेले तुम्हीं में इसकी योग्यता है। इसीलिए मैंने तुम्हें इस पद के लिए चुना है। छः महीने पहले पब्लिक मीटिंग में तुमने जो जोरदार भाषण दिया था, तत्क्षण मैं इस निश्चय पर आ गया कि तुम ही प्रान्त के नेता बनने योग्य हो।"

"चुनाव में कुछ लोग भाग लेना चाहते थे···"

"चुनाव लड़ाने, प्रतियोगिता चलाने या बहुमत पर कार्य चलाने, मैं यहाँ नहीं बैठा हूँ। पार्टी का संचालन करने यहाँ बैठा हूँ। शिवराम ! देखो इस चित्र को। माओ-त्से-तुंग का चित्र है यह ! चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी के ये संचालक हैं। पार्टी इनकी आज्ञा पर चलती है। पार्टी के इंगित इशारे पर ये नहीं चलते। यही इस पार्टी का सब से महत्वपूर्ण सिद्धान्त है।"

वेदमूर्त्ति थोड़ी देर मौन रहे फिर बोले—"चुनाव, प्रतियोगिता ये सब सुनने व पढ़ने के लिए बड़ी रसमय व दिलचस्प बातें हैं। इनके विधि, विधान तथा नियम बुर्जुआ वर्ग की भ्रमपूर्ण माया है। हमारा मुख्य आदर्श पार्टी है। ये छोटी-मोटी बातें नहीं।"

शिवराम मौन भाव से उनकी बातें सुन रहा था। वेदमूर्ति ने अपनी कुर्सी से उठकर कमरे में एकबार चहलकदमी की। फिर शिवराम के सामने आकर मेज पर एक हाथ टिकाये पूछा—"मानव वर्ग को पूरी आजादी दिलाने की योग्यता केवल एक दल में है और वह दल हमारी पार्टी है। इसमें तुम्हें सन्देह नहीं है न ?"

शिवराम ने सिर हिलाकर हामी जतायी।

"श्रमजीवी वर्ग के हाथ में ही इस संसार की शासन सत्ता का अधिकार होना है—इस सिद्धान्त को तुम मानते हो न ?"

शिवराम ने 'हाँ' कहा।

"आज संसार में जितनी बुराइयाँ व असंगतियाँ प्रचलित हैं उसका कारण पूंजीवादी वर्ग का रुख व चाल-चलन है, इस बात पर तुम सहमत हो न ?"

"जी हाँ···"

"आज मानव समुदाय जिन बुराइयों से उत्पीड़ित है, ग्रस्त है, उन्हें दूर हटाने, श्रमजीवी वर्ग की शक्ति व संगठन को बढ़ाकर सारे संसार को, समस्त मानव समुदाय को, एक लक्ष्य के नीचे, एक झंडे के अन्तर्गत लाने के लिए ही जबर्दस्त पार्टी की आवश्यकता है, इस सत्य से तुम अवगत हो न ?"

"हाँ-जी ! यह भी जानता हूँ कि वह पार्टी अकेली हमारी पार्टी ही हो सकती है।" शिवराम भावावेश में आ गया था।

"एक पार्टी को अगर सर्वशक्तिमान होना है, तथा समस्त विरोधों का सामना करके बढ़ना है तो उसके लिए एक जबर्दस्त नेता अनिवार्य है—यह बात तुम मानते हो न शिवराम ? जो नेता के स्थान पर बैठा है उसे ही नेतृत्व करते जाना है। दल का संचालन उसी के हाथ में होना है। शिवराम ! गरिड़या भेड़ों को चराता है। अगर भेड़ें गड़रिया को घुमाने-फिराने लगें तो ?···शिवराम ! आज सबेरे तुम्हारा व्यवहार कुछ ऐसा ही था।" बोलना छोड़कर वेदमूर्त्ति ने शिवराम की ओर ध्यान दिया।

"पार्टी के लिए नेता है या नेता के लिए पार्टी ?" प्रश्न शिवराम के होठों तक आ गया। मगर निकला नहीं। जो कहना चाहता था उसे निगल लिया।

"आपका विरोध करने का मेरा इरादा नहीं था···" वेदमूर्त्ति ने बीच में टोका। "तुम क्या कहना चाहते हो, यह मुझे मालूम है। जो भी सफाई दो वह पार्टी के बुनियादी सिद्धान्त के विरुद्ध होगी। आज पार्टी एक सामरिक दल के ढंग से संचालित हो रही है। सामरिक संगठन के अनुरूप संगठित है। इसमें कमाण्डर की आज्ञा ही अन्तिम निर्णय है। इसे तुम्हें अच्छी तरह समझना चाहिए। तुम इस प्रान्त के नेता अर्थात कमाण्डर हो। इस प्रान्त के कार्यकर्ताओं के लिए तुम्हारी बात ही आज्ञा है, कमाण्ड है। इस बात को अच्छी तरह समझकर तुम्हें कार्य करना है। इस नियम के पालन में रत्ती-भर भी भूल-चूक नहीं होनी है। कहो शिवराम, नेता की हैसियत से तुम अपनी जिम्मेदारियों का वहन कर सकते हो ?"

"कर सकता हूँ, और करके दिखाऊंगा।" शिवराम उत्साह के साथ बोला।

वेदमूर्त्ति ने उसकी पीठ पर थपकियाँ देते हुए कहा—"जो नेता है वह विधि-विधान, कायदे-कानून सबके ऊपर है। वही सर्वेसर्वा है। औरों को नेता के सम्मुख झुकना है, उसे किसी के सामने झुकने की जरूरत नहीं।"

इतना कहकर वे एकबार तेजी से डगें भरते कमरे में घूम आये। फिर शिवराम की तरफ मुड़कर बोले—"शिवराम ! कल तक तुम एक

मामूली कार्यकर्ता थे, लेकिन आज तुम्हारी हैसियत बदल गयी। तुम नेता बन गये। एक नेता के योग्य गुणों को तुम्हें पूर्ण रूप से अपनाना पड़ेगा। उस ढाँचे में अपने को ढालना है शिवराम ! आज तक तुमने जो कुछ सीखा, जो कुछ अनुभव प्राप्त किया, वह सब पार्टी के कार्यकर्त्ता के रूप में तुमने पाया है। आगे तुम्हें जो कुछ जानना व सीखना है, वह इससे बिलकुल भिन्न है।"

वेदमूर्त्ति कमरे में चहल-कदमी करने लगे। शिवराम मौन बैठा उन्हें देख रहा था। थोड़ी देर के बाद मेज की एक छोर पर बैठे, कहने लगे, "एक सुसंगठित शक्तिशाली पार्टी के नेता और अन्य लोगों के बीच में महान अन्तर है। शायद हर मौके पर तुमने इसका अनुभव किया होगा। कभी-कभी तुम सकते में आ गए होगे। बाहरी दुनिया में एक औसत आदमी का दृष्टिकोण, पार्टी के दृष्टिकोण से एकदम भिन्न है।"

वेदमूर्त्ति मेज से उतरकर माओ की तस्वीर के सामने जाकर खड़े हो गये। पलभर उस तस्वीर को स्थिर दृष्टि से देखते रहे फिर गंभीर आवाज में कहा—"शिवराम ! एक सक्षम नेता को अगर सख्ती व बेरहमी बरतनी पड़े, मिथ्याचरण करना हो, उसे बेझिझक ऐसा करना पड़ेगा। एक लक्ष्य की पूर्ति के लिए जब कमर कस लेता है, तब धर्म, अधर्म, न्याय, अन्याय की मीमाँसा करते रहने की कोई जरूरत नहीं। व्यक्तिगत रूप से एक कार्य अन्याय, अधर्म, व निष्ठुरतापूर्ण हो सकता है। लेकिन जहाँ तक पार्टी का सवाल है, वह कार्य न्यायसंगत ही नहीं, अनिवार्य हो जाएगा। जब कोई पार्टी में आ जाता है फिर व्यक्तिगत सिद्धान्त, लक्ष्य, रुचि, अरुचि व अन्तःकरण की आवाज इत्यादि की बिलकुल गुंजाईश नहीं। केवल पार्टी की उन्नति व उसका विकास ही एक नेता का लक्ष्य हो सकता है।

"कर्म का मार्ग बड़ा कठोर है। कर्मपथ पर अग्रसर होते वक्त यदि कुछ लोगों की बलि चढ़ती हो, निर्ममता से उन्हें कुचलते हुए आगे बढ़ना है। हिचकना नहीं। सुनो शिवराम ! एक नेता का अपना कोई निजी लक्ष्य, आदर्श, अन्तःकरण···कुछ भी नहीं है। व्यक्तिगत इच्छा, अनिच्छा की संभावना ही नहीं। इन बातों को लेकर उसे चिन्तित होने की कोई जरूरत नहीं। उसका साध्य अर्थात् उसका लक्ष्य यदि उन्नत व श्रेष्ठ हो,

तो उस मंजिल तक पहुँचने के लिए···चाहे वह जिस किसी साधन को, मार्ग को अपना ले, उस पर चिन्तित होने की कोई जरूरत नहीं। साधन नहीं साध्य ही मुख्य है···" वेदमूर्त्ति एकाएक मौन हो गये। उनकी दृष्टि माओ के चित्र से नहीं हटी। शिवराम भय मिश्रित भाव से आँखें फाड़कर उनकी ओर ताक रहा था। चेहरे पर उभरे पसीने को पोंछने की सुध भी उसे न रही।

"अपनी मंजिल तक पहुँचने, सीढ़ियाँ तय करते वक्त यदि हिंसा, बल प्रयोग या आतंक का सहारा लेना पड़े, तो भी नहीं हिचकना है।"

वेदमूर्त्ति की आवाज ने मौन को भंग किया तो शिवराम ने बात काटी, "जी !"

वेदमूर्त्ति ने अपनी जगह से मुड़कर उसकी ओर देखा। उनकी भृकुटियाँ प्रश्नचिह्न-सी ऊपर उठीं।

"अपने आत्मीयों की उपेक्षा करके, उनके प्रति निर्मम बनने से एक नेता की शक्ति बढ़ सकती है, मगर वह प्रशंसा का पात्र नहीं बन सकता।" शिवराम ने धीमी आवाज में कहा।

"नेतृत्व का वह स्थान, यश प्राप्ति के लिए नहीं है शिवराम ! मनुष्य की व्यक्तिगत यश-प्राप्ति, कीर्ति, सुख, भोग ये सब जर्जरित बुर्जुआ वर्ग की अर्थहीन कल्पनाएँ हैं। एक नेता को यश व कीर्ति की जरूरत नहीं है। उसे अपने दल को सुसंगठित करके संचालित करने की ताकत, शक्ति चाहिए और कुछ नहीं। अन्य लोग अपने बारे में क्या सोचेंगे··· ऐसी हीनभावना एक नेता के दिल में कभी नहीं होनी है। शिवराम ! लोगों के दिलों में एक नेता के प्रति प्रेम नहीं, आतंक छाये रहना चाहिये, समझे !" वेदमूर्त्ति ने शिवराम के पास आकर उसके कंधे अपने हाथ से जोर से दबाते हुए पूछा—"आशा है अब तुमने मुझे अच्छी तरह समझ लिया होगा।"

शिवराम ने बैठे-बैठे आँखें उठाकर देखा। उनकी लाल-लाल आँखों से उसकी दृष्टि मिली तो वह सिहर उठा। उन आँखों में अथाह भावनाओं का एक समुद्र लहरें मार रहा था। खूँखार बाघ का भयंकर आक्रोश, तमाच्छादित भयावने जंगल की निस्तब्धता, प्रचण्ड आँधी का आवेश,

काले सर्प का हलाहल, छल, प्रवंचना, धोखा, क्रूरता···ओह ! इतना सब कुछ उन आँखों से झाँक रहा था। आँखों को चौंधिया देने वाली उस बिजली की कौंध में, जितेन्द्रियता से स्फुरित उसका वह वैराग्य, लक्ष्य का उन्माद, अचल शिला-सी मानसिक दृढ़ता, नेता की वह अहम्मन्यता दमक उठी।

जलती हुई उन लाल आँखों को जैसे सीधी दृष्टि से देख न पाया हो, शिवराम ने अपनी आंखें फिरा लीं। करीने से कटी उनकी वह छोटी-सी दाढ़ी भी अब उसे डराने-सी लगी। धीरे-धीरे सारी बातें स्पष्ट होने लगीं।

अखिल भारतीय विप्लव पार्टी का हर कामरेड वेदमूर्त्ति का नाम सुनते ही नई स्फूर्ति व उत्साह का अनुभव करता था। हर व्यक्ति चाहे वह जो भी हो उनकी बातों को सिर-आँखों पर मान लेता था। सबसे बढ़कर बात यह थी कि समस्त विरोधों का सामना करते हुए भी वह पार्टी अपने अभियान में, एक सुगठित, सुसंगठित, सक्षम पार्टी के रूप में सिर तानकर बड़ी गंभीरता से विपक्षियों और शासन सत्ता को भी चुनौती देने योग्य बनी तो वह सारा श्रेय वेदमूर्त्ति को ही मिलता है। वेदमूर्त्ति एक जन्मजात नेता हैं, लीडर हैं, इसके लिए इससे बढ़कर कौन-सा सबूत दे सकते हैं ?

कितनी ही गुप्त मन्त्रणाएँ, कूटनीति, छल, प्रपंच, नमकहरामी, त्याग, बलिदान, खौफनाक षडयंत्र, खून···बस ये ही पार्टी की महत्त्वपूर्ण सफलता व साधनाओं की नींव हैं।

नेता के मुह से नेतागिरी के तत्वार्थपूर्ण व्याख्या सुनकर शिवराम के रोंगटे खड़े हो गये। दिल कांप उठा। साथ ही यह सन्देह सिर उठाने लगा कि नेता के योग्य यह दृढ़ता व वैराग्य मुझमें है क्या ? उसने फिर एक बार उनकी तरफ आँखें उठाकर देखा। उनकी वह गंभीर आकृति। वह छोटी-सी आकर्षक दाढ़ी, मर्मभेदी दृष्टि। सबने उसमें नया साहस भर दिया।

"शिवराम ! जो कुछ कहना था कह दिया। तुम पर मुझे पूरा-पूरा भरोसा है।" इन शब्दों के साथ उसके कंधे से अपना हाथ हटाकर वे तेजी से कमरे के बाहर निकल गये। शिवराम कुछ मिनटों तक पाषाण

प्रतिमा-सा बैठा था। वेदमूर्त्ति ने जो कुछ कहा वे सब बातें उसके मस्तिष्क में आलोकित लहरों-सी आ-आकर टकराने लगीं। दीवार पर टंगे स्टालिन और माओ के चित्र की तरफ उसकी आँखें फिरीं तो उसके सारे शरीर में कंपकंपी-सी दौड़ गयी।

एक साम्राज्य खड़ा करने की महत्वकांक्षा के पीछे, कैसे-कैसे नृशंसता-पूर्ण अत्याचार व अन्याय चलते हैं? इतिहास इसका साक्षी है। आज पार्टियों के नाम पर पाशविकता व राजनीतिक कूटनीतियों का प्रपंच है··· लेकिन ये सब अनिवार्य हैं। ऐसी निर्ममता व सख्ती न हो तो आज भारत में लोकतंत्र की जो दुर्गति हो रही है, वैसी ही पार्टी की दुर्दशा हो जाएगी। ···शिवराम ने सोचा, 'लेकिन···यह सब मुझसे सम्भव है?···ना-ना··· अभी से घबराने की क्या जरूरत है। जब मौका आएगा तब देखा जाएगा। और वेदमूर्त्ति ने कितना साफ-साफ कह दिया कि वे अनुशासन भंग व आज्ञा उल्लंघन को कभी नहीं सह सकते हैं।···यह मेरे लिए एक चेतावनी है, या नेता की हैसियत से मुझे कैसा व्यवहार करना है, इसका शिक्षण है।' शिवराम एक निश्चय पर आ न पाया। उठकर बाहर आया। बरामदे में नल्लदम्बी उसकी प्रतीक्षा में खड़ा था। उससे बिदा लेकर शिवराम साईकिल पर घर लौटा।

उसका मन बेचैन था वेदमूर्त्ति के विचारों को वैसे ही अपना लेना उसके लिए असम्भव-सा लगा। चाहे जितना भी उन्नत व महान् लक्ष्य व सिद्धान्त हो, उसमें धर्म, न्याय व अन्तःकरण के लिए स्थान न रहे तो कैसे? ···वेदमूर्त्ति ने निष्ठुरता से 'ना' कह दिया···। कितने कठोर और निर्मम हैं वे। हर शब्द कितना स्पष्ट, सशक्त, चाबुक की मार-सा श्रोता को आतंकित करने वाला था? यद्यपि वेदमूर्त्ति के व्यवहार पर कभी-कभी उसे घृणा-सी हो आयी, फिर भी उनके इस लम्बे चौड़े वक्तव्य को सुनने के बाद लगा कि उन्हें एक नेता के योग्य गुणों से विभूषित करने के लिए वे कितना श्रम उठा रहे हैं? शिवराम की आँखों में कृतज्ञता के आँसू छलछला उठे।

अतीत की एक घटना उसकी स्मृति में हमेशा ताज़ी रही। जब कभी उसकी याद आती है, उसका दिल पानी-पानी हो जाता है।

उस समय अखिल भारतीय विप्लव दल का सम्मेलन कलकत्ते में हुआ। सम्मेलन की व्यवस्था में शिवराम भारी दौड़धूप कर रहा था। सम्मेलन का अन्तिम दिन था। मीटिंग हो रही थी। शिवराम वेदमूर्त्ति के पास बैठा था। देश के विभिन्न प्रान्तों से आए प्रतिनिधिगण भाषण दे रहे थे। हर कोई पार्टी के सिद्धान्त, उसके लक्ष्य, तथा उसके प्रसार के बारे में बोलते जा रहे थे शिवराम ऊब-सा गया।

बुदबुदाया—"हर कोई पिष्ट पेषण कर रहा है। कोई नया सुझाव नहीं देते।" पास बैठे वेदमूर्त्ति ने आश्चर्य के साथ उसकी तरफ देखा। फिर धीमी आवाज में फुसफुसाये—"और किस बात पर बोलना है ?"

"विषयों की कोई कमी है क्या ? ये सिद्धान्त और लक्ष्य तो हम जानते हैं ?"

इतने में मंच पर जो बोल रहे थे, अपना भाषण पूरा करके नीचे उतर आये। झट वेदमूर्त्ति उठे और माईक के सामने खड़े होकर कहा—"कामरेड्स अब हमारे पार्टी के कार्यकर्त्ता कामरेड शिवराम अपना भाषण सुनायेंगे।"

यह सुनते ही शिवराम अकचकाकर रह गया। उसे बिलकुल यह आशा न थी कि नेताजी ऐसा अनाउन्स करेंगे। अब तक वह किसी मंच पर बोला नहीं था। असमंजस से उनकी ओर आँखें फाड़े देखता रहा। वेदमूर्त्ति उसके पास आये और उसके कंधे पर हाथ रखकर पतली आवाज में कहा, "घबराना मत ! हिम्मत से बोलना ! जो कुछ कहना चाहते थे, उसे माईक के सामने धड़ाधड़ कहते जाना। मैं तो तेरे पास खड़ा हूँ···डर काहे का ? आओ न ?"

वे उसे गले में हाथ डाले मंच पर ले गये। माईक के सामने खड़ा करके वहीं पास की कुर्सी पर बैठ गये। शिवराम के हाथ-पाँव फूल गये। सोचा—ओह ! कैसे संकट में फँस गया ! पार्टी-लीडर की बात टालनी कैसे ? एकाध मिनट इधर-उधर देखता रहा। समझ में न आया कि क्या बोले ? मन-ही-मन वेदमूर्त्ति पर झल्ला उठा। उपस्थित लोगों पर दृष्टि डाली। सिर-ही-सिर नजर आये। लगा हर एक की कौतुकपूर्ण दृष्टि उसी पर लगी है। माईक के सम्मुख पुतला-सा खड़ा था वह। गला सूख गया। कान भिन्ना रहे थे। भ्रम हुआ कि मस्तिष्क एकदम शून्य हो गया। पसीने

की धारा-सी छूट रही थी। बोलने की कोशिश की गले में कुछ अटक गया…खखरा…लेकिन आवाज निकली नहीं।

उसे क्या हो गया है अब ? पंडाल में बैठे लोग उसकी ओर विस्मय से देख रहे थे। कुछ लोगों को उस पर तरस आया। वेदमूर्त्ति ने स्थिति समझ ली। तुरन्त आये और केवल उसी को सुनाते हुए धीमी आवाज में कहा, "हिम्मत से काम लो। तुमसे बढ़कर यहाँ कोई नहीं है। जो चाहे बोलना।"

शिवराम थोड़ा संभल गया। एक बार उपस्थित लोगों को आँखें उठाकर देखा। एक हाथ से माईक को पकड़ा। पैरों में अब भी हल्का कम्पन था। गला साफ करके उसने बोलना शुरू कर दिया—"कामरेड्स !" बस। अगला शब्द मुँह से न निकला। वेदमूर्त्ति ने उकसाया, "जो मन में आता है बताओ…तुम्हारे विचारों को उन्हें जान लेना है न ? बोलो…बोलो न !"

शिवराम ने माईक को कसकर पकड़ लिया और बोलना शुरू किया, "कामरेडस् ! मेरे मन में जो विचार हैं उन्हें आपके सम्मुख पेश करना चाहता हूँ। अब तक जिन्होंने भाषण दिये हैं, वे लोग पार्टी के सिद्धान्त व लक्ष्य के बारे में काफी विस्तार से बताते रहे। लेकिन ये सिद्धान्त व लक्ष्य हमारे देश की परिस्थिति व परिवेश को कहाँ तक स्वीकार्य हो सकते हैं ? आज की मौजूदा हालत में उन्हें उपयुक्त बनाने के लिए हमने क्या-क्या किया है, क्या-क्या करना है, इसके बारे में मैं कुछ कहना चाहता हूँ।" शुरू में लड़खड़ाते शब्द फिर धड़ाधड़ निकलते गये। अपने विचार व निष्कर्षों को स्पष्ट व साफ शब्दों में कहने लगा। थोड़ी देर पहले तक जो संकोच और भय उसे त्रस्त कर रहे थे, अब धीरे-धीरे छूटते गये। एकाध मिनट के अन्दर जैसे उसके विचारों का समर्थन कर रहे हों, वेदमूर्त्ति ने तालियाँ बजायीं। उपस्थित लोगों ने उनका अनुकरण करके करतल ध्वनि से उसे उत्साहित किया।

शिवराम का भाषण यद्यपि जोशीला व सनसनीदार न था, फिर भी विचारों की गहराई व स्पष्टता थी। जैसे किसी मित्र से बातें करके विषय को समझा रहा हो। शिवराम बोलता गया। पन्द्रह मिनट में अपना भाषण खत्म करके वह मंच पर से उतरा कि वेदमूर्त्ति ने लपककर उसे अपने आलिंगन में भर लिया। बोले—"कमाल कर दिया तूने !" शिवरामने

कृतज्ञतापूर्ण आँखों से उनकी ओर देखा।

उस दिन एक हॉल के अन्दर उसके भाषण का श्रीगणेश हुआ था। आज वह कितनी ही सार्वजनिक सभाओं में गूँजता रहता है। पार्टी के लीडर वेदमूर्त्ति के बराबर जोरदार भाषण देने वाला···सारे देश में अकेला वही है। ऐसा नाम उसे मिला है। उसकी इस उन्नति और बड़ाई का मूल कारण वेदमूर्त्ति हैं···यह ख्याल आते ही उसका हृदय भर आया।

पार्टी-लीडर के रूप में वे कठोर, निर्मम व अन्याय के पक्षपाती हो सकते हैं। लेकिन व्यक्तिगत रूप में उनमें कौन कमी व दोष निकाल सकता है? मानवोचित कमजोरियों को भी उन्होंने अपने वश में कर लिया है। सचमुच वे वीर पुरुष हैं। कर्मठ व्यक्ति हैं। जो-जो कमजोरियाँ मनुष्य को पतन के गढ़े में गिरा दें उनसे संघर्ष करके, उन पर अपनी विजय की मुहर लगा दी है उन्होंने। सब कुछ उनका गुलाम बने। वे कभी किसी के गुलाम न रहें···इस उन्मादपूर्ण वैराग्य ने उन्हें जितेन्द्रिय बना दिया था। चालीस की उम्र हो गयी उनकी, अब भी वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे। इस विषय में वे अंगारे जैसे थे। हाँ, पार्टी के लक्ष्य रूपी अग्निकुण्ड में उन्होंने अपने जीवन की आहुति चढा दी। पार्टी की लीडरी करने के लिए मानो उस फौलादी आदमी का सृजन हुआ था। उनके निजी जीवन की पवित्रता, निष्काम सेवा, निस्वार्थ भावना, तथा कठोर वैराग्य ने और लोगों को भयत्रस्त कर दिया। अपनी निजी आशाओं, अभिलाषाओं, और स्वार्थ लाभ का बोझ उठाते फिरने वालों के लिए वे ऐसी प्रज्वलित अग्नि के समान थे जिसके वे निकट भी न आ पायें।

एक दिन उन्होंने जो कहा वह आज भी कानों में गूँज रहा था—'शिवराम! जो अपने मन को काबू में नहीं ला सकता है वह दूसरों को काबू में लाने योग्य नहीं है। तुच्छ भोग लालसा से, सेक्स की भूख मिटाने को जो नारी के पीछे पड़ता है, उससे कौन-सी महत्ता की, श्रेष्ठता की आशा कर सकते हैं? यही भूख मनुष्य को गिरा देती है।

पार्टी के एक सदस्य के चाल-चलन की जब शिकायतें आयीं, तभी उन्होंने ऐसा कहा था। उस वक्त उनके चेहरे व आँखों में घृणा व नफरत उभर आयी। आज भी शिवराम भूल न पाया कि वह व्यक्ति उनकी दृष्टि

में कितना नीच, कितना हेय निकला था। मानो बिलबिलाता हुआ कोई कीड़ा हो।

वेदमूर्त्ति के वैराग्य पूर्ण जीवन की यादों के साथ-साथ शारदा की याद भी आयी। शिवराम मन-ही-मन हँस पड़ा।

लीडर के जीवन में एक शारदा न आयी होगी···यदि आयी हो तो? इस प्रश्न का उत्तर न पाकर कुछ सोचता हुआ वह घर की ओर जा रहा था।

ग्यारह

असेम्बली में हो-हल्ला मच गया था। विपक्षी दल वाले चीख-पुकार कर रहे थे। सरकारी पक्षवाले उनको कोई जबाब न दे पाये। सभापति हाथ मलते रह गये। समझ में न आया कि क्या करें। हर मेम्बर के हाथ में उस दिन का 'भारतमणी' था। सम्पादकीय लेख के पास प्रकाशित विदूषक के व्यंगचित्र को देखकर सब लोग भौंचक्के रह गये।

चीन के अद्वितीय नेता माओ पत्थर के टुकड़े उंठा-उठाकर दे रहे हैं। विप्लवपार्टी वाला उन पत्थरों को 'भारत' नामक शीशे के महल पर तान-तानकर मार रहा है। जरा दूरी पर भारत सरकार रूपी एक आदमी भयभीत-सा, दोनों हाथों से मुँह ढाँपकर, उंगलियों के छेदों द्वारा देखता हुआ खड़ा है। यही वह कार्टून था।

कम्यूनिस्ट पार्टी वाले और उनके मित्र काफी उत्साहित दीख पड़े। विपक्षी मेम्बर अपने हाथ में रखी 'भारतमणी' को खोलकर उसमें प्रकाशित फोटो, व कार्टून की ओर सभापति का ध्यान खींचने की कोशिश कर रहे थे। गत-रात को भारतमणी कार्यालय पर जो आक्रमण हुआ था, उसके

फोटो पत्रिका में प्रकाशित थे। चहारदिवारी पर चिपकाई माओ-त्से-तुंग की तस्वीर, कार्यालय की टूटी-फूटी शीशे की खिड़कियों का फोटो छापे गये थे। विपक्षी दलवाले सदस्य ने 'भारतमणी' के संपादकीय लेख को पढ़कर सुनाया—'तमिलनाडू पर चीन का आक्रमण' यही लेख का शीर्षक था।

"···यह हमला बिलकुल मामूली है। इससे दस-पन्द्रह शीशे की खिड़कियाँ, कुछ बिजली के बल्बों को हानि हुई है। कुल मिलाकर एक सौ रुपये का घाटा उठाना पड़ेगा। बस ! और कुछ नहीं। लेकिन इसके पीछे जो खतरा और भयंकर आफत छिपी है, उसे लोगों को समझना चाहिए। चार दीवारी पर चिपकाए—माओ के पोस्टर ने सारी बातों का परदा-फाश कर डाला है। देशद्रोही लोगों ने विदेशी आक्रमण के लिए द्वार खोलकर रखा है। आक्रमणकारी किसके कुली हैं इसे जताने के लिये माओ के चित्र को चिपका दिया है। हाय बेचारे ! इनको एक भारतीय, लीडर के रूप में न मिला। विदेशी को अपना नेता मानकर जिन्होंने यह काँड रचा है वे देशद्रोही, नमकहराम व्यक्ति, विप्लव पार्टी के हैं। देश में यह विषैला कीटाणु फैलता जा रहा है। यदि इस पर ध्यान न दिया तो सारा देश विषाक्त हो जाएगा। फिर हम इससे अपने देश की संस्कृति व सभ्यता की रक्षा न कर पायेंगे···।

इसे पढ़ते वक्त कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्य चिल्ला उठे। सदस्य ने पढ़ना छोड़कर उनकी तरफ देखते हुए कहा,—"मेरे प्रिय मित्रगण क्यों चिल्ला रहे हैं? 'भारतमणी' देशद्रोहियों का ही खण्डन कर रहा है। कम्यूनिस्ट सदस्य क्यों इसका विरोध कर रहे हैं? आज तक मेरा यही विश्वास है कि कम्यूनिस्ट मित्र देशद्रोही नहीं हैं। आशा है इस सभा का भी यही विश्वास है।"

सदस्यों ने तालियाँ बजायीं। मेम्बर आगे पढ़ने लगे—"भारतमणी पर जो पत्थर फेंके गये हैं वे पत्थर नहीं, बम के गोले हैं। जिन्होंने पत्थर मारा है वे चीनी नहीं, चीनियों के मार्ग दर्शक देशद्रोही हैं। द्रोही दुश्मन से बढ़कर खतरनाक है। इस खतरे को रोकने को सरकार व पुलिस के भरोसे रहने से कोई फायदा नहीं। उक्त घटना को घटित हुए एक घंटे के बाद ही पुलिस घटनास्थल पर पहुँची। बेचारे पुलिस वालों की निन्दा करने से

कोई लाभ नहीं। शासक वर्ग की नीति ही ऐसी है। जनता को ही सजग व सचेत रहना है। 'कहीं कुछ घटा है, हमें क्या ?' ऐसा मत सोचना। भारत-मणी पर जो पत्थर बरसाये गये हैं वे कल देश भर में गोले बनकर बरस पड़ेंगे।"

संपादकीय लेख को पढ़ने के उपरान्त सभा में भारी हलचल मच गयी। कम्यूनिस्ट सदस्यों का क्या कहना ! गला फाड़कर चिल्ला उठे।

शहर में सड़कों और गलियों में लोग झुण्डों में खड़े होकर, हाथ में 'भारतमणी' को लिए गरमा गरम चर्चा कर रहे थे। 'भारतमणी' कार्यालय के सामने भारी भीड़ लग गयी। टूटी-फूटी खिड़कियों को देखकर वे लोग अपनी सहानुभूति प्रकट कर रहे थे। दोपहर दो बजे के लगभग शिवराम 'भारतमणी' के कार्यालय में आया। सीधा मुरली के कमरे में जाकर मारे गुस्से से फट पड़ा, "विप्लव पार्टी पर क्यों दोषारोपण करते हो ?"

"विप्लव पार्टीवालों ने जो कांड रचाया है उसका दोष और किस पर डालें ? तुम्हारी पार्टी किसपर आरोप लगा रही है ?" मुरली ने शान्ति से पूछा।

"हमने ही किया है ! इसका कौन सबूत है तुम्हारे पास ?"

"तुम खड़े-खड़े क्यों बोल रहे हो···बैठो।"

शिवराम एक कुर्सी खींचकर बैठ गया।

"पहले यह बताओ—इस हमले पर तुम्हें दुख है या प्रसन्नता ?"

"मेरी बात रहने दो। तुम कैसे हम पर यह आरोप लगा सकते हो ?"

"अर्थात् इस काँड के पीछे जिनका हाथ है, उन्हीं पर तुम्हारा दुखी होना या हर्षित होना निर्भर है। है न ?"

"तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर मैं नहीं दे सकता। विप्लव पार्टी ने ही हमला किया है, ऐसा तुम कैसे लिख सकते हो ?"

"माओ के चित्र को दीवार पर चिपकाकर गये हैं। क्या इतना सबूत काफी नहीं है ?"

"कम्यूनिस्ट सिद्धान्तों का तुम खंडन करते हो···इसपर किसीने अपना गुस्सा उतारा होगा।"

मुरली ने फोन पर स्वामीनाथन् से बातें कीं। थोड़ी देर में स्वामी-

नाथन् ने अन्दर आकर एक पर्चा उसके हाथ में दिया।

"कल रात को जिन्होंने पत्थर मारा है, वे इसे छोड़ गये हैं···यह तुम्हारी पार्टी का पर्चा है।" मुरली ने पर्चा शिवराम की ओर बढ़ाया।

शिवराम ने उसे ध्यान से देखा, फिर कहा, "संभव है किसी और ने इसे यहाँ पर डाला होगा।"

"मैं जासूस नहीं हूँ। लेकिन मेरा पक्का विश्वास है कि यह सब तुम्हारी ही पार्टीवालों की करतूत है। फिर कहता हूँ। कल जिन्होंने, हमला किया है वे विप्लव पार्टी के ही हैं। और कोई नहीं।"

"तुम अनावश्यक हमारे विरुद्ध बेमतलब की बातें लिखकर हमारी पार्टी की दुश्मनी मोल ले रहे हो।" शिवराम कुर्सी से उठ गया।

"अगर इस दुश्मनी के बावजूद इस देश व जनता को फायदा मिल सकता है, तो चाहता हूँ यह दुश्मनी और बढ़ती जाए।" यह कहकर मुरली हँस पड़ा। शिवराम तेजी से डगें भरता कमरे के बाहर चला गया। स्वामीनाथन् भयत्रस्त आँखों से शिवराम को जाते देखता रहा। उसके चले जाने के बाद भी उसका भय दूर न हुआ। बोला—"सर! विप्लव पार्टी कार्यालय से अभी फोन आया है।"

"क्या बात है? कौन बोला।"

"हमें धमकी दी है। बताया नहीं कि कौन बोलता है। इतना ही कहा कि अगर पार्टी के विरुद्ध कुछ लिखा तो हम सबको मिट्टी में मिला देंगे।"

मुरली मुस्कुराया, पूछा, "तुम्हें डर लगता है?"

"अकेला मैं ही नहीं—यहाँ सब के सब घबरा गये हैं।"

"अच्छा! किसी कपड़े की दुकान को फोन करके—दस-बीस साड़ियाँ लाने का आर्डर दो।"

"क्यों सर?"

"डरनेवालों को देने के लिए! पहन लें साड़ी···" मुरली की आवाज में क्रोध की फुफकार थी। स्वामीनाथन् शरमाया सा खड़ा था।

"सर। इस पार्टीवाले खतरनाक हैं···जो चाहे कर दें।" असल में स्थामी-नाथन् का भय अब तक दूर न हुआ था।

"ओहो! ऐसी बात है? तब तो हम सब शहर छोड़कर कहीं भाग

जाएँ ?"

"जी मेरे कहने का मतलब…"

"मतलब !"

"आगे से उस पार्टी के विरुद्ध लिखना छोड़ दें तो…।"

"इससे भी एक आसान तरीका है—पत्रिका को बंद कर दें।… स्वामीनाथन् ! यह सुझाव देते तो अच्छा होता।"

बेचारा स्वामीनाथन् सकपकाया खड़ा था।

इतने में फोन की घंटी बजी। स्वामीनाथन् ने फोन उठाया। फिर मुरली के हाथ में देते हुए कहा, "सचिवालय से सचिव बोल रहे हैं।" मुरली के फोन का चोगा हाथ में लेते ही स्वामीनाथन् चुपचाप वहाँ से खिसक गगा।

"हलो ! मैं एडिटर बोल रहा हूँ।"

"गुड ईवनिंग मैं सचिव बोल रहा हूँ।"

"कहिए…"

"पुलिस पर आपने दोषारोपण किया है।"

"आरोप नहीं केवल सहानुभूति प्रकट की है। लगता है आपने लेख को ठीक से नहीं पढ़ा है।"

"पढ़ चुका। विदूषक का कार्टून भी देखा है। मिस्टर मुरली ! चाहे जो भी हो ! आपको ऐसा नहीं लिखना चाहिए था।"

"जी, कार्यालय पर आक्रमण हुए एक घंटे के बाद ही पुलिस आयी, इस पर मैंने खेद प्रकट किया है। और कुछ नहीं।"

"आपने सरकार को लक्ष्य करके ताना मारा है। खासकर वह कार्टून सरकारी नीति पर सीधी चोट है।"

"सर…मैं एक मामूली प्रजा ठहरा। राजनीतिज्ञ भी नहीं। सरकार के विरुद्ध आवाज उठा सकता हूँ ?"

"एडिटर जी…आई एम सीरियसली स्पीकिंग। समझे ! आगे से लेखन में जोश-खरोश थोड़ा कम करें तो अच्छा। खासकर अपने कार्टूनिस्ट को सावधान करके रखना। अन्यथा बाद में मुसीबत में फंसकर पछताना पड़ेगा।"

"सर ! चिन्ता न कीजिएगा। आपसे मदद माँग कर आपको मुसीबत में न डालूँगा। आपकी विवशता मैं जानता हूँ। कल रात पुलिस हमारी मदद करने आयी थी न? तभी मुझे आपकी असमर्थता का पता लग गया। सर ! कार्टून···इस बात को स्पष्ट करता है। आपने मुझे सचेत करने का कितना श्रम उठाया है—इसके लिए धन्यवाद।" मुरली ने फोन रख दिया।

"ओह ! किस पर इतना गुस्सा है। कहीं चोगा टूट न जाए।"

मुरली ने आवाज सुनकर सिर उठाया। शारदा कमरे के अन्दर आ रही थी। उसे देखते ही उसका सारा गुस्सा व थकान दूर हो गई। उदास चेहरा फिर से खिल गया। हृदय आनन्द से उल्लसित हो उठा। हाथ की किताबों को मेज पर पटकती हुई शारदा उसके सामने आ बैठी।

"सुना है पत्थर की खूब वर्षा हुई···?"

"वदले में मैंने भी वाक्बाणों की वर्षा की है।"···मुरली ने हँसते हुए कहा।

"हाँ···हां। उसे भी पढ़ा। आपका वह कार्टून भी देखा। लगता है—पत्थरों की मार से आपके शब्दवाणों की चोट करारी है। असेम्बली में भगदड़-सी मच गयी है। क्या सचमुच विप्लव पार्टी वालों ने ही पत्थर मारा है?"

मुरली ने सिर हिलाकर हामी भरी।

शारदा ने पूछा—"मिस्टर शिवराम को इसका पता है?"

"पता है या नहीं यह तो मैं नहीं जानता···शायद जान-बूझकर अनजान बना रहता होगा···अभी थोड़ी देर पहले यहाँ आया था।"

"ओह ! आप अपने मित्र पर ही सन्देह करते हैं?"

"विप्लववादियों के लिए न कोई मित्र है, न बन्धु। उनके लिए पार्टी का सिद्धान्त ही सब कुछ है।" मुरली की आवाज में नफरत भरी झुंझलाहट थी।

शारदा ! चिन्तामय हो गयी। बोली नहीं।

"शारदा। अगर तुम मेरा साथ दोगी तो मैं दुगुने उत्साह से संघर्ष में लग जाऊँगा···'भारतमणी'···तुम्हारी सेवा की प्रतीक्षा में है।" मुरली

की आशापूर्ण दृष्टि शारदा के मुँह पर लगी थी।

"ओह! वर्ग संघर्ष के अखाड़े में उतर गये आप?"

"मैं अपने लिए नहीं···इस देश के लिए, इस देश की करोड़ों जनता के लिए, इसकी संस्कृति, संस्कार, सभ्यता···के लिए···शारदा···अगर तुम मेरा साथ दोगी तो···।"

"जनता जिस लक्ष्य के पीछे पड़ी है, उसके विरुद्ध कर सकते हैं? यह व्यर्थ का प्रयास है।" शारदा ने रुखाई से कहा।

"जनता का प्रिय लक्ष्य···? शारदा! तुम क्या कह रही हो।"

"हाँ। विप्लव पार्टी के सिद्धान्तों के बारे में ही कह रही हूँ।"

"शारदा! तुम्हारी बुद्धि, प्रतिभा व ज्ञान पर मेरा बड़ा भरोसा था। लेकिन स्वप्न में भी न सोचा था कि तुम भी इस धोखे में आ जाओगी।" मुरली ने अतीव निराशा प्रकट की।

"आपके ख्याल में विषमता पूर्ण इस समाज में समता को संस्थापित करने का एक लक्ष्य अर्थहीन है क्या?"

"नहीं शारदा! विप्लववादियों ने जिस कम्यूनिज्म के सिद्धान्त को अपनाया है उसके बराबर, उससे बढ़कर एक श्रेष्ठ, उन्नत तत्व आज तक किसी के चिन्तन में नहीं आया है? लेकिन दुनिया भर में लोग महात्माजी या ईसा बने रहें, तभी ये सिद्धान्त व्यावहारिक सिद्ध होगा अन्यथा नहीं।" बोलते-बोलते मुरली शारदा द्वारा लायी गई किताबों के पन्ने उलटने लगा। विस्मय से उसकी भौंहें ऊपर उठ गयीं। शारदा की ओर देखा। वह तो मुस्कुराती हुई उसीकी ओर निहार रही थी। मुरली ने पुस्तकों को उलट-पुलटकर देखा। वे कम्यूनिस्ट सिद्धान्तों की किताबें थीं। एक रूस की, दूसरी चीन की। दोनों विप्लव पार्टी पुस्तकालय की हैं, ये उन पर लगी मुहर से साफ था।

"ओह! इसीसे तुम ऐसी बातें बघारती हो?"—पन्नों को पलटते हुए मुरली ने पूछा—"किसने दी हैं?"

"शिवराम जी ने दी हैं। कम्यूनिज्म के सिद्धान्त व चिन्तन मन को बड़ी शान्ति प्रदान करते हैं। आज पामर लोगों की समस्या का एकमात्र हल ये ही सिद्धान्त हैं। कहिए! कब तक श्रमजीवी वर्ग शोषण का

शिकार बना पंगु बना रहेगा ?" शारदा के स्वर में हल्का आक्रोश था।

मुरली ने पुस्तकों को सहेज कर मेज पर एक ओर रखा। उसके चेहरे पर फिर से उदासी छा गयी। एक लंबी साँस लेता हुआ बोला—"आशा थी कि तुम भारतमणी की उपसंपादक बन मेरी सहायता करोगी। मगर शिवराम ने मैदान मार लिया।"

शारदा चुपचाप बैठी थी।

मुरली मेज पर रखी पुस्तकों की तरफ शून्य भाव से घूरता रहा। लेकिन मन ? वह तो उस परिवेश से कहीं दूर, किसी चिन्तन में भटक गया था।

"पत्रिका में काम करने से बढ़कर पार्टी की सेवा करने में मुझे आत्म-तृप्ति मिलेगी।"

शारदा के ये शब्द सुनते ही जैसे होश में आया हो, मुरली ने हड़-बड़ाकर पूछा, "पार्टी में भर्ती हो गयी तुम ?"

"नहीं···अभी तक नहीं। लेकिन शिवरामजी ने बताया है बहुत शीघ्र ही मुझे पार्टी में ले लेंगे। मगर आपको पार्टी के सिद्धान्तों से एलर्जी है न ?" शारदा हँस पड़ी।

"जो अव्यावहारिक है, जो-जो हमारे देश के लिए अनावश्यक है, उन सबसे मुझे एलर्जी है—"मुरली ने तनी हुई आवाज में कहा।

"इसमें कौन-सी कमी देख ली आपने ?"

"कमी ? शक्कर के आवरण में विष और क्या ? हर मानव को चिन्तन करने, बोलने, व लिखने की आजादी चाहिए। यह बुनियादी आजादी उस पार्टी में कहाँ है ! लेनिन और स्टालिन ने बोलने व लिखने की आजादी को कभी स्वीकारा नहीं। अगर बोलने व लिखने की आजादी दी जाए तो कम्यूनिज्म के सिद्धान्तों की जड़ें हिल जायेंगीं। देश, वर्ग, इनसे बने समाज, इनकी अपनी सस्कृति, संस्कार, सभ्यता—किसी को आपका सिद्धान्त मान्यता नहीं देता, न मानता है। इनको पूर्णतया मिटाना चाहता है। इस विचार को जड़ से निकाल देना ही कम्यूनिज्म का लक्ष्य है। अपने इस लक्ष्य पर अमल कराने के लिए रूसी कम्यूनिस्ट दल ने रूस में लाखों को मृत्यु के घाट उतार दिया था।"

"एक ही संसार, एक ही वर्ग, "यह आदर्श नहीं है ?"

"हम सब देवता बन जाएँ, यह भी तो उच्चादर्श है। लेकिन क्या यह संभव है ? कोरी कल्पना से क्या फायदा ? आत्मतृप्ति मिल सकती है ?"

"रूस और चीन की प्रगति हुई है न ?" शारदा ने तड़पकर पूछा।

"लाखों की बलि चढ़ाकर एक सिद्धान्त पर अमल करें ? बर्बरता पूर्ण अत्याचार की नींव पर एक देश को उन्नति, करनी है क्या ? यदि सचमुच ऐसी प्रगति व उन्नति हुई है तो लोहे का परदा क्यों ? परदा हटाकर वहाँ की यथार्थ स्थिति को दुनिया के सम्मुख पेश क्यों नहीं किया ? उन्नीस सौ तीस-बत्तीस में 'सामूहिक खेती' प्रथा को अमल कराने के लिए लगभग दस लाख व्यक्तियों की बलि दी गयी। ढाई लाख परिवार भयंकर अत्याचार के शिकार हुए। कम्यूनिज्म की तानाशाही व्यवस्था की असलियत यही है। रूस और चीन में आजादी कहाँ है ? रूस में लेखकों की स्थिति बड़ी दयनीय है। बेचारे पोस्तरनाक ने एक उपन्यास लिखकर कितना कष्ट उठाया ? कितना उत्पीडित हुआ बेचारा ! अगर तुम्हारे विचार के अनुसार कम्यूनिस्ट देशों में घी-दूध की नदियाँ बहती हों तो बताओ कम्यूनिस्ट पूर्वी जर्मनी ने बर्लिन की दीवार क्यों खड़ी की ? कम्यूनिस्ट देशों से लाखों की संख्या में लोग क्यों भाग आये और अन्य देशों में शरण ली ? आज भी यह चलता रहता है। ···बताओ शारदा ! यह सब क्यों हो रहा है ? मनुष्य केवल पेट का ही भूखा नहीं है। आज संसार में दो शक्तियों के बीच में भारी संघर्ष चल रहा है। एक तो मानव वर्ग की आजादी रक्षा पर तुला जनतंत्र। दूसरा इस आजादी को नकारवाला कम्यूनिज्म। इन दोनों से आगे निकले हैं ये विप्लववादी। ये देशद्रोही हैं। उनके लिए उनकी पार्टी, उनका सिद्धान्त ही मुख्य है। अपनी जननी जन्मभूमि नहीं।"

शारदा ने टोका—"देश, जाति, वर्ग···यह सब संकीर्ण दृष्टिकोण हैं। यह संसार व्यापक व विशाल है। प्रकृति के सामने सब बराबर हैं।"

मुरली हँस पड़ा। उसकी हँसी में विरक्ति व वेदना थी।

"शारदा ? तुमसे तर्क करने का अब मुझ में दम नहीं है, 'जननी

जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' इस वचन का आदर करनेवाला हूँ मैं। 'भारतमणी' का आदर्श यही है।···अच्छा! तुम्हारा दृष्टिकोण बदल गया है। अब मैं जितना भी कहूँ तुम पर उसका असर नहीं होगा। पार्टी के सिद्धान्त का नशा तुम पर चढ़ गया है ···तुम विप्लव पार्टी में भर्ती होना चाहती हो। यह सुनते ही मैं व्याकुल हो गया हूँ। एक बात कहता हूँ। याद रखना! पार्टी में जाने के पहले खूब सोच समझ लेना···मुरली ने उस पर दयाद्र दृष्टि डाली। लेकिन शारदा की हँसी में लापरवाही थी। उसकी आँखें मानो बता रही थीं—तुम्हारी घबराहट, सहानुभूति व दया अर्थहीन हैं। विदा लेते वक्त मुरली ने फिर कहा—"शारदा! चाहे तुम्हारा आदर्श कुछ भी हो, जिस किसी पार्टी की तुम सेवा करो मेरे मन में तुम्हारे प्रति नफरत या क्रोध जरा भी नहीं होगा।"

शारदा बिना उत्तर दिये उसकी ओर देखकर मुस्कुराती चली गयी।

उसके चले जाते ही मुरली को शून्यता ने आ घेरा। जैसे उसका सर्वस्व लुट गया हो। अजीब खालीपन का अनुभव हुआ। देर तक उखडा-उखडा-सा बैठा रहा, उठा नहीं।

चार साल पहले शारदा से हुई पहली मुलाकात उसे याद आयी :

एम० ए० में भर्ती होने, आवेदन-पत्र देने के इरादे से उस दिन वह कालेज गया था। दफ्तर से आवेदन-पत्र लेकर बरामदे में पड़ी बेंच पर बैठा। सामने की डेस्क पर फार्म को रखकर उसे भरने के लिये कलम निकालने को जेब पर हाथ डाला। इधर-उधर टटोला, कलम का पता नहीं। ओह! कलम लाना भूल गया! क्या करें! इधर-उधर देखा। बगल की बेंच पर एक युवती बैठी आवेदन पत्र को गौर से देख रही थी। सोचा—उसके फार्म पूरा करते ही उससे कलम माँग लूं। वह तो जल्दी-जल्दी में फारम को पूरा कर रही थी। उसकी नजर बार-बार हथघड़ी की ओर घूमती रही। फार्म पूरा करते ही कलम को चोली में खोंसकर वह उठ गयी।

मुरली लपककर उसके पास पहुँचा तो वह एकदम घबरा गयी।

"सिस्टर! जरा अपनी कलम थोड़ी देर के लिए दे सकती हैं?" मुरली ने खींसे निपोरते हुए पूछा।

उसने उसकी ओर उपेक्षा भरी दृष्टि डाली और, "सॉरी! मुझे जल्दी

जाना है" ऐसा कहकर उसकी तरफ मुड़कर भी देखे विना फर्र से वह निकल गयी।

मुरली चकित सा रह गया। उसने कलम नहीं दी, इस बात से बढ़कर उसके उपेक्षापूर्ण व्यवहार ने ही उसे चौंका दिया था। आँखें फाड़कर उसको जाते हुए देखता रहा। उसकी मस्त चाल, काली नागिन सी लहराती लम्बी वेणी, पल भर उसकी आँखों में कौंधकर ओझल हो गयी। खोया-खोया सा खड़ा मुरली बुदबुदाया—'बड़ी गर्वीली-सी लगती है।'

कॉलेज खुल गया। पहले दिन कक्षा में प्रवेश करते ही सबसे पहले उसकी दृष्टि उस गर्वीली लड़की पर पड़ी। पहली कतार में वह बैठी थी। उसे देखते ही उसका दिल थोड़ा चंचल हो उठा। लेकिन उस गर्वीली ने उसे देखते ही अपनी दृष्टि दूसरी ओर फिरा ली। वह लड़की भी उसी वर्ग में पढ़ती है। यह जानते ही उसका उत्साह बढ़ गया। वह लड़की तो वैसी ही लापरवाही जताती रही। लेकिन रोज कक्षा में प्रवेश करते ही मुरली की दृष्टि अनायास उसी की तरफ घूमती। एक दिन वह उसके पीछे की कतार में बैठा था। प्रोफेसर पढ़ा रहे थे। नोट्स लेने के लिए उस लड़की ने ब्लाउज में कलम टटोला। मगर कलम नहीं थी। हल्की निराशा के साथ उसने इधर उधर देखा। पास बैठी अन्य लड़कियाँ खुद नोट्स ले रही थीं। इसलिए उनसे मिलने की संभावना नहीं। तभी उसने पीछे की तरफ से एक कलम को अपनी तरफ बढ़ते देखा। घबराई सी वह मुड़ी। उसके पीछे बैठा मुरली ही अपनी कलम उसे दे रहा था। बोला—"इससे लिखिएगा। मुझे कोई जल्दी नहीं।" असल में उसे इस बात पर खुशी हो रही थी कि उसने उस लड़की से बदला ले लिया है। इस लड़की ने कलम न ली। उसकी तरफ घूरते हुए फट पड़ी—"मुझे इसकी जरूरत नहीं।" बेचारे मुरली का चेहरा एकदम सूख गया। पास बैठे विद्यार्थी हँस पड़े तो मुरली अपमान से सिकुड़ गया।

"मुरली ! नाक कट गयी न ?" किसीने ताना मारा। शारदा के कानों में भी यह पड़ा। वह हंस रही है, इसका भान होते ही मुरली को अपने ऊपर गुस्सा आया।

शारदा से उसका परिचय इसी तरह प्रारम्भ हुआ था। शारदा की लापरवाही और उपेक्षापूर्ण व्यवहार यद्यपि खटकता रहा, फिर भी मुरली को उसमें अनोखे रस का आस्वादन मिला। कॉलेज के साहित्य संघ के अध्यक्ष पद के लिए जब वह खड़ा हुआ, तब शारदा ने उसके विरुद्ध काम किया। एक दिन सीढ़ियों पर दोनों का आमना-सामना हुआ। उसका रास्ता रोककर मुरली ने कहा—"साहित्य संघ के अध्यक्ष पद के लिए खड़ा हूँ, आपका सहयोग अपेक्षित है।"

शारदा ने झट ताना मारा…"जो साहित्य संघ का अध्यक्ष बनना चाहता है उससे साहित्यिक ज्ञान अपेक्षित है।"

मुरली इस व्यंग पर तिलमिला उठा, व्यंग भरी आवाज में कहा—ओह ! शायद इसीलिए आपने प्रतियोगिता नहीं की है।"

आस पास खड़ी छात्राएँ जोर से हँस पड़ीं। अपमान से शारदा का चेहरा लाल हो गया। बिना उत्तर दिये धड़धड़ाती वह सीढ़ियों से उतर गयी। गुस्से के साथ उसका सीढ़ियों पर उतरना देखकर मुरली वहीं खड़ा-खड़ा रस ले रहा था।

चुनाव में शारदा ने उसके विरुद्ध खूब दिल लगाकर काम किया। मुरली के विपक्षी की जीत की खबर पाते ही सबसे पहले तालियाँ पीटकर उसी ने खुशी प्रकट की थी। चुनाव की घोषणा के बाद मुरली छत से नीचे आ रहा था। बारामदे में खड़ी शारदा को देखते ही बगलें झांकने लगा। मगर शारदा ने आवाज दी—"मिस्टर…मिस्टर…"

उसकी शरारत भरी हंसी, आँखों में झांकती चुलबुलाहट पर मुरली पल भर मुग्ध हो उठा।

"आपको मेरी हार्दिक सहानुभूतियाँ।"शारदा मुस्कुराती हुई उसके पास आयी।

मुरली विमूढ़-सा उसे अपलक देखता रहा। फिर धीमी आवाज में फुसफुसाया—"बहुत धन्यवाद। उस पर आपको सन्तोष है न ?"

"किस पर ?"

"मेरी हार पर !"

"जिनमें प्रतिभा है वे अवश्य जीतेंगे" फिर से वही व्यंग्य भरी चोट।

जैसे ईंट का जबाव पत्थर से देना न चाहता हो, होठों तक आये शब्दों को निगलकर मुस्कुराते हुए मुरली वहाँ से हट गया।

शुरू-शुरू में वे दोनों दो ध्रुव के जैसे ही रहे। उनकी संपर्कता कुछ ऐसे ही शुरू हुई थी। अतीत की इन यादों में खोये से बैठे मुरली को टेलिफोन की घंटी ने होश में लाया।

प्रोफेसर कमलस्वामी का ही फोन था। उन्होंने रात के भोजन के लिये उसे अपने घर पर बुलाया है। उनका न्योता स्वीकार कर मुरली ने फोन रख दिया।

बारह

रात के नौ बजे मुरली की मोटर प्रोफेसर कमलस्वामी के बंगले की तरफ तेज़ रफतार से जा रही थी। उसका मन अशांत था। रह-रह कर शारदा की यादें उसे सताती रहीं। लगा, गत चार सालों से उसके साहचर्य में बिताये दिन, उसका मिलना-जुलना उसके साथ वाद-विवाद में उलझना···यह सब केवल उसका भ्रम था। शारदा को लेकर उसने कितने मीठे-मीठे सपने देखे हैं!

मुरली को माँ-बाप का सुख न बदा था। इस संसार में उसके प्रति स्नेह व ममता दिखानेवाले कोई न रहे। शारदा के साहचर्य में ही उसने स्नेह की मधुरता का अनुभव किया। तब तक पुस्तक ही उसकी साथी रही। उनकी संगति में अपने ज्ञान की भूख मिटाता रहा, लेकिन शारदा की शीतल स्नेह छाया में आने के बाद ही महसूस हुआ कि हृदय की भी भूख होती है।

पहली मुलाकात में शारदा ने जो उदासीनता प्रदर्शित की थी वह उसके दिल की गहराई में बैठ गयी थी। बाद में भी वह उसे अपना विपक्षी या प्रतिद्वन्द्वी ही मानती रही। उसके हर काम में दखल देती, उसे चिढ़ाती रही। इसका कारण था। अब तक हर क्लास में वही अव्वल आया करती थी। उसकी बराबरी करने वाला कोई न था। उससे होड़ लगाकर परीक्षा में उससे आगे निकलने का साहस करने वाला भी कोई नहीं था। इस बात पर उसे बड़ा गर्व था। मगर एम० ए० में मुरली उसके लिए एक चुनौती बन गया। प्रतियोगी के प्रति जनित ईर्ष्या ने शारदा को उसके विपक्ष में खड़ा कर दिया। साथ ही मुरली का कोमल मधुर स्वभाव, हर स्थिति को अधरों पर मुस्कुराहट के साथ अपना लेने की उस अपूर्व क्षमता ने उसे आकर्षित किया था। उसकी प्रशांत मुद्रा, सस्मितवदन को देखने व उससे सहज भाव से बातें करते रहने में सचमुच शारदा को अनूठा आनन्द मिलता था। अलावा, प्रोफेसर मुरली से बड़ा प्रेम व आदर रखते थे। वह जितना उसका विरोध करती थी, उतना ही मुरली उसके प्रति स्नेह व श्रद्धा का भाव दर्शाता रहा। दिन व दिन यह बढ़ता रहा, कम न हुआ। शारदा ने आखिर यह जान लिया कि वह चाहे उसका जितना भी तिरस्कार करे, उदासीन रहे···वह उसे न भूल सकता है, न त्याग सकता है।

स्वयं मुरली समझ न पाया कि शारदा के प्रति उसके इस आकर्षण का कारण क्या है! उसका सौंदर्य? या उसकी प्रतिरोधात्मक प्रकृति! अक्सर नासमझ बच्ची जैसी उससे उलझ पड़ेगी। तर्क-वितर्क करेगी। झगड़ेगी। उसकी यह मासूमियत, अबोध बच्ची-सी सरलता, शरारतों, चुभने वाली व्यंगोक्तियों पर मुरली अपना दिल गंवा बैठा। एकान्त में पले मुरली को शारदा की मित्रता नयी स्फूर्ति व उत्साह देती थी। उससे गपशप करने, तर्क-वितर्क करके अपना समय बिताने वह अक्सर उनके यहाँ आया करता था।

एम० ए० का आखिरी वर्ष था। परीक्षा निकट आ चुकी थी। एक रात को एकाएक उसकी नींद खुल गयी। देखा दो बज गये थे। बिस्तर से उठकर खिड़की की तरफ गया तो उसकी दृष्टि प्रोफेसर के मकान की तरफ

फिरी। प्रोफेसर उन दिनों हॉस्टल के वार्डन थे। उनके मकान की छत के कमरे में अब भी दीप जल रहा है। शारदा हाथ में पुस्तक लिए कमरे में चहल कदमी करती हुई पढ़ रही थी। मुरली को मालूम था कि इस साल की परीक्षा में शारदा ने किसी-न-किसी तरह मुरली को पछाड़ देने का बीड़ा उठाया है। प्रथम श्रेणी में पास होना उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन मुरली से ज्यादा अंक पाने के लिए दिन रात एक कर रही थी।

मुरली अगले दिन प्रोफेसर के यहाँ गया। देखा। शारदा मुरझायी सी खड़ी है। रात की नींद हराम होने से आँखों में अजीब थकान व रिक्तता छायी है। मुरली के मन में उसके प्रति ढेर-सी दया उमड़ आयी।

कमलस्वामी ने कहा—"मुरली ! जानते हो, तुमसे आगे निकलने के लिए यह दिन रात एक कर रही है। भगीरथ प्रयत्न करने पर भी यह तुम्हें मात कर पायेगी, यह तो सन्देह की बात है।"

मुरली ने मुस्कराते हुए कहा—"प्रयत्न में तीव्रता हो तो सफलता संभव है।"

"ओ ! ये कोई बड़े···'यह' हैं ? इनके कहने से मुझे सफलता मिलने वाली है ? हूँ ! मैं ऐसा कोई तीव्र प्रयत्न नहीं करती। इनको पछाड़ने के लिए कोई विशेष प्रयत्न की जरूरत नहीं है, पिताजी ! बिना कोई अतिरिक्त श्रम उठाये इनसे आगे निकल जाऊँगी" शारदा ने तुनककर कहा।

"ओह ! इतनी साधारण-सी बात के लिए रात के दो बजे तक पढ़ना होता है ? कल रात देखा था मैंने···" मुरली की हंसी व शब्दों में परिहास था। शारदा ने उसकी ओर ऐसे देखा मानो उसे जला देगी। फिर धड़धड़ाती वहाँ से चली गयी।

कमलस्वामी मुस्कराकर रह गये, बोले—"मुरली ! इस दफे तुमसे ज्यादा अंक न पाये···तो लगता है पागल हो जाएगी। पढ़ाई के सिलसिले में ऐसी स्पर्धा अच्छी है। मगर इस तरह हाथ धोकर पीछे पड़ने की उन्मत्तता ठीक नहीं। मुरली ! मुझे इसका विश्वास नहीं कि वह तुम्हारे से आगे निकल पायेगी।"

मुरली ने कुछ न कहा। प्रोफेसर आगे बोले—"केवल किताबी कीड़ा

काफी नहीं। पुस्तकीय ज्ञान से बढ़कर चिन्तन-मनन में मौलिकता चाहिए। विचारों में स्पष्टता व गहराई होनी चाहिये। अच्छी शैली, भाषा में सजीवता व शब्दसौन्दर्य भी मुख्य हैं। मुरली, इस विषय में तुम्हारी बराबरी करने वाला हमारे कॉलेज में कोई नहीं। सच कहता हूँ मुरली, गत दस सालों में तुम जैसा प्रतिभाशाली छात्र मैंने नहीं देखा।" प्रोफेसर की तारीफ ने मुरली को लजा दिया। उसकी आँखें घर के अन्दर जिसकी खोज में भटकती रहीं, वह खिड़की के पास टकटकी बाँधे खड़ी थी। पल भर दोनों की दृष्टि टकरायी। उन कातर नयनों में प्रतिच्छादित भय और सन्देह ने उसकी शिराओं में विचित्र-सी बेचैनी भर दी।

"क्या सचमुच मुरली को मैं नीचा न दिखा पाऊँगी?" शारदा दिल-ही-दिल में विसूरती रही।

जब परीक्षाफल निकला तब सबको जोर का धक्का-सा लगा। यूनिवर्सिटी में शारदा सबसे प्रथम आयी है, इस खुशखबरी से ज्यादा मुरली फेल हो गया है, इस खबर ने भारी सनसनी फैला दी। स्वयं शारदा अपनी इस सफलता पर प्रसन्न न हुई। मुरली जैसा होनहार विद्यार्थी जिसकी बराबरी करना असंभव माना जाता है, एक औसत छात्र के बराबर भी न निकला···फेल हो गया···यह जानते ही शारदा के दिल में उसके प्रति असीम दया उमड़ आयी। अनजाने ही उसकी आँखों में आँसू भर आये। लेकिन वह तो हमेशा की तरह प्रफुल्ल था। अपनी विफलता पर ज़रा भी दुखी न था। केवल प्रोफेसर ही उसकी विफलता पर निराश व दुखी थे।

शारदा से रहा न गया। उसने पूछ लिया, "मुरली! इतना बड़ा शॉक लेकर आप कैसे मुस्कुराते रहते हैं?"

"परीक्षा में हारना, कोई भारी धक्का है? मेरी हार तुम्हारी जीत है न, शारदा? यदि मैं जीत जाता तो मुझसे आगे निकलने का यह गौरव तुम्हें प्राप्त होता क्या? देखो न? तुम्हारी प्रतिज्ञा···तुम्हारी कामना पूरी हो गयी है।" मुरली ने अर्थ पूर्ण स्वर में कहा।

प्रोफेसर आश्चर्य से उसकी ओर देखते रह गये। धीमी आवाज में बोले—"मुरली! यदि शारदा इस प्रकार हार जाती···सच कहता हूँ भई, वह तो पागल हो जाती।"

बिदा लेते समय मुरली ने स्नेह पूरित स्वर में पूछा, "शारदा ! तुम्हारी मनोकामना पूरी हो गयी। तुम खुश हो न?"

"यदि आप भी प्रथम श्रेणी में पास होते, और मैं आप से ज्यादा अंक लेती तब खुश हुई होती।" उसके इस हर्ष पर मुरली का हृदय खिल उठा। उस रात को सोने से पहले उसने अपनी डायरी में लिखा, "अपने प्रियजनों के हृदय को प्रफुल्लित पाकर हमारा हृदय भी आनन्दित होता है। इस आनन्द में जो स्वर्गिक सुख व स्फूर्ति मिलती है, वह और किसी में प्राप्त नहीं होती। अपने प्रियजनों के सुख व आनन्द के लिए जो त्याग करते हैं, उसमें कितनी मधुरिमा है।" यह लिखकर उसने डायरी के पन्ने पलटे। परीक्षा के दिनों में उसने लिखा था, "सब प्रश्न बड़े आसान थे। लेकिन हर पेपर में दो-दो प्रश्नों का मैंने जानबूझकर उत्तर न लिखा। छोड़ दिया। ताकि शारदा मुझे हरा सके। ओह ! दूसरों के लिए अपना कुछ देने में कैसी अलौकिक सुखानुभूति है।"

वे पुरानी यादें अब भी बड़ी मधुर लगती थीं। उस वक्त अपनी हार उसे कितनी मीठी-मीठी लगती थी, अब भी उसकी वह मिठास कम न हुई थी।

अतीत की यादों से गुजरता हुआ मुरली जब यथार्थ दुनिया में आया तब उसकी मोटर प्रोफेसर के बंगले पर पहुँच चुकी थी।

तेरह

पोर्टिको में कार छोड़कर मुरली नीचे उतर आया। बरामदे में अंधकार था। बंगले के अन्दर जलते दीपों की मन्द रोशनी बरामदे में इधर-

उधर छितरी पड़ी थी। उसके हृदय की तरह वह बंगला भी प्रकाशहीन था।

उसकी मोटर की आवाज सुनते ही हमेशा प्रोफेसर या शारदा बाहर आकर उसका स्वागत करते थे। लेकिन आज कोई भी अन्दर से न आया। वह बुरी तरह थक गया था। वेदना बोझ बनी हृदय को कचोट रही थी। मुरली थोड़ी देर खड़ा रहा। सोचा "लौट चलूँ?" इतने में प्रोफेसर के खाँसने की आवाज आयी। मुरली ने झाँककर देखा। बैठक में प्रोफेसर आरामकुर्सी पर चित्त पड़े थे। मुंह से चुरुट का धुआँ निकल रहा था। लगा गहरी चिन्ता में पड़े हैं।

मुरली कमरे में गया और उनके पास की कुर्सी पर आ बैठा। मानो तभी होश में आये हों, प्रोफसर ने उसकी ओर मुड़कर देखा। उनके चेहरे पर हमेशा की वह प्रसन्नता नहीं थी। गहरी चिन्ता की थकान चेहरे पर अंकित थी। मुरली को देखते ही उन्होंने मुँह से चुरुट हटा ली। "ओह! तुम कब आये। कुछ सोचता रहा और तुम्हारे आने का आभास तक न रहा।" प्रोफेसर ने आरामकुर्सी से उठते हुए कहा। मुरली भी कर्सी से उठ गया। दोनों बरामदे में आकर सोफे पर बैठे। मुरली ने उठकर स्विच दबाया।

प्रोफेसर ने छूटते ही कहा—"मुरली! तुमसे बहुत-सी बातें करनी हैं। अच्छा हुआ कि शारदा घर पर नहीं है।"

"शारदा कहाँ है?"

"बाहर गयी है"—प्रोफेसर ने चुरुट की एक कश ली। थोड़ी देर छत की ओर ताकते रहे। फिर चुरुट को उँगलियों के बीच थामकर सीधे बैठ गये और कहा "सुना है, कल रात तुम्हारे कार्यालय पर हमला हुआ है। इसका मतलब···"

"मतलब···और कुछ नहीं। मैं विप्लव पार्टी के विरुद्ध आवाज उठा रहा हूँ न···बस वही कारण है।"

"लेखन की स्वतंत्रता, पत्रिका का धर्मइत्यादि के बारे में ये लोग क्या खाक जानते हैं? आखिर शिवराम इस पार्टी में जाकर शामिल हुआ है···" कमलस्वामी ने नफरत भरे स्वर में कहा। मुरली कहना चाहता था कि आपकी बेटी भी उसी दल में शामिल होने वाली है। मगर

कहा नहीं। शारदा के बारे में कुछ बोलने का उस वक्त उसका मन न था। उसकी यादों से ही उसका हृदय बोझिल था।

हर स्मृति भारी बोझ बने उसे दबा रही थी।

"मुरली ! वह पार्टी आतंकवादियों की पार्टी है। जरा सावधान रहना। पार्टी के लिए कुछ करने से वे न हिचकेंगें। स्टालिन ने जो हत्याएँ करायीं, उसकी गिनती ही नहीं। तुम एक बन्दूक अपने पास रख लेना।"

मुरली हँस पड़ा, "डरते-डरते कब तक जियेंगे ?"

"जिससे डरना है, उसका भय रखना ही होगा। सुनो ! ये विप्लव पार्टी वाले काले सर्प से भयंकर हैं।"...प्रोफेसर ने चुरुट का धुआँ उड़ाते हुए मुरली की ओर देखते हुए पूछा—"अच्छा बताओ ! शिवराम के बारे में तुम्हारी क्या राय है ?"

प्रश्न ने मुरली को चौंका दिया। इस प्रश्न को पूछने की क्या जरूरत पड़ी ? उन्होंने क्यों पूछा है। मुरली चकराया। प्रोफेसर की दृष्टि उसे भेद रही थी।

"कहो ! तुम्हारी क्या राय है ?"

"किस बात पर ?"

"यों ही। शिवराम कैसा व्यक्ति है ?"

"बड़ा अच्छा लड़का है। मेरा मित्र है...हाँ आपकी उससे अच्छी जान-पहचान है। वह आपका छात्र भी है। आपसे ज्यादा मैं क्या जानू ?"

प्रोफेसर कांपती आवाज में बड़बड़ाये, "मुझे डर लगता है मुरली ! डरता हूँ—शारदा को वह मुझसे अलग कर देगा।"

मुरली ने देखा उनकी आँखों में भय की छाया थी। एक अनमोल चीज उनके हाथ से निकल जाएगी, इस ख्याल से वे आतंकित हो रहे थे।

"लड़की को एक न एक दिन अपने माँ-बाप से बिछुड़ना ही होगा," मुरली ने शान्त स्वर में कहा।

व्यक्तिगत रूप से उसमें कोई कमी नहीं है। लेकिन जिस पार्टी में वह शामिल हुआ है वह भयंकर है। अगर इसको भी वह पार्टी में घसीट ले तो ?...मुरली...जो भी हो शारदा का उससे मिलना जुलना मुझे पसन्द नहीं।"

"यदि शारदा का मन उसकी ओर झुका हो तो ?"

"ओह ! भूल मेरी है ! शुरू में ही इस ओर ध्यान देना चाहिए था।" ओठों में बुदबुदाते हुए प्रोफेसर ने चुरुट को मुंह में दाब लिया।

हल्की हंसी के साथ मुरली ने टोका—"यदि ध्यान देते तो भी दो व्यक्ति परस्पर एक दूसरे को चाहें तो रोक लगाना कहाँ तक उचित है ?"

"नहीं ! शुरू-शुरू में मना कर दिया होता, तो बात यहाँ तक न बढ़ती।"

"आपके प्रति शारदा का बड़ा आदर व प्रेम है। चाहें तो अब भी आप उसे मना कर सकते हैं।"

"नो-नो···अब कुछ नहीं हो सकता, मुरली ! मैं व्यक्तिगत स्वतंत्रता को मानने वाला हूँ। उसमें दखल देना मुझे मान्य नहीं। हर एक को अपना-अपना मार्ग चुन लेना है। उसके लिए योग्य शिक्षा व चिन्तन शक्ति को ही एक पिता अपनी सन्तानों को दे सकता है। वह मार्गदर्शक है। बस आगे उनको अपना मार्ग अपनी बुद्धि व चिन्तन शक्ति के बल पर चुन लेना है।

"लेकिन ! मुरली ! मुझे भय लगता है कि मैं अपनी बेटी को ऐसी चिन्तन शक्ति व सुबुद्धि देने से चूक गया हूँ।" कमलस्वामी ने एकाएक मौन होकर बाहर की तरफ दृष्टि दौड़ायी। बाहर घना अंधकार छाया पड़ा था।

"मुरली ! एक पिता की हैसियत से उससे इस बात पर कैसे खुलकर बातें कर पाऊँगा···यदि उसकी माँ होती···" एक लम्बी आह उनकी छाती को चीरकर निकली। कुछ पलों के मौन के उपरान्त उन्होंने कहा—"मुरली ! इस विषय में तुम्हें ज़रा होशियार रहना था।"

मुरली चौंक पड़ा। फिर थोड़ी हिचक के साथ कहा—"दूसरों के व्यक्तिगत मामले में दखल देने का मुझे क्या अधिकार ? जो अधिकार एक पिता को नहीं—वह मुझे ?—सो कैसे ?" उसकी विस्मय भरी दृष्टि प्रोफेसर की तरफ उठी।

प्रोफेसर ने तपाक से पूछा—"मुरली ! सच सच कहना ! शारदा के प्रति···।"

मुरली सकपकाया-सा उन्हें देखता रह गया। उसकी पलकें फड़कने

लगीं। दिल की धड़कन तेज हो गयी। पसीने से तर हो गया। वह कुछ बोल न पाया···गले से आवाज निकली ही नहीं···

प्रोफेसर की सहानुभूतिपूर्ण आँखें उस पर टिकी थीं। वेदना मिश्रित स्वर में वे बोले—"मुरली ! मुझे मालूम है। उसके प्रति तुम्हारे दिल में कितना प्यार है, यह मुझसे छिपा नहीं। दो साल पहले ही मैंने इसे ताड़ लिया था। एम० ए० में अपनी हार पर ज़रा भी चिन्तित न होकर, उसकी विजय पर तुम फूले नहीं समाये।···तभी मैंने तुम्हारी दिल की बात जान ली थी। अब भी मेरे मन में यह संदेह है कि उसे जिताने के लिए तुमने जान-बूझकर हार को स्वीकारा है···लेकिन···लेकिन···मुरली ! लगता है···वह तुम्हें समझ नहीं पायी है। तुम्हारे मन की बात···वह···"

"नहीं ऐसी कोई बात नहीं···आपने जैसा सोचा है वैसा···" मुरली ने हड़बड़ाकर कुछ कहने की कोशिश की, मगर प्रोफेसर ने टोका, "इनकार मत करना मुरली ! मैं जानता हूँ। भलि-भाँति जानता हूँ। मैं अपनी कल्पना में हमेशा आप दोनों को एक साथ ही देखा करता था···।"

प्रोफेसर ने द्रवित कंठ से बोलते हुए मुरली की जाँघ पर अपना हाथ रखकर हौले से दबाया। उनकी ममता व वात्सल्य देखकर मुरली को रोमाँच हो आया।

"मैंने कुछ सोचा था, लेकिन अब कुछ और चलता है।" लम्बी सांस भरते हुए उन्होंने कहा, "मुरली ! शुरू में ही तुम्हें थोड़ा-बहुत आग्रह करके उसे 'भारतमणी' में ले लेना चाहिये था। लेकिन तुम चूक गये।"

"जहाँ भी रहे वह सुखी रहे।" धरती पर दृष्टि गड़ाये मुरली बुद-बुदाया।

उसकी बुदबुदाहट उनके कानों तक पहुँच गयी। बोले—"मेरी भी यही कामना है, मुरली ! लेकिन उसने जो मार्ग चुना है वह सही है क्या ? इसी पर मुझे सन्देह है। कहीं गुमराह न हो जाए।"

"जहाँ तक शिवराम की बात है, आप निश्चिन्त रह सकते हैं।"

"हाँ, शिवराम की बुद्धि, साहस, व प्रतिभा पर मुझे पूरा भरोसा है। लेकिन उसने जिस मार्ग को अपना लिया है, उस विप्लव पार्टी के सिद्धान्त

मुझे मान्य नहीं। उसके प्रति मेरे मन में बड़ी-बड़ी आशाएँ थीं। सोचा था लड़का बड़ा होनहार निकलेगा, ऊँचा उठेगा। लेकिन वेदमूर्त्ति के बिछाए जाल में वह बुरी तमह फंस गया, यह जानते ही उसके प्रति मेरा विश्वास उठ गया।"

कुछ क्षणों के बाद जैसे अपने आपको सुना रहे हों, बोले, "लगता है एक पिता के कर्त्तव्य को मैंने ठीक तरह से नहीं निभाया। मुझे केवल अपना ख्याल था। अपने सुख में इतना लीन हो गया कि बेटी का जितना ख्याल रखना था, उतना न रखा। गलती मेरी ही है।"

प्रोफेसर ने चुरुट का गहरा कश लेकर ढेर-सा धूंआ छोड़ा। उस छल्लेदार धुएँ को ऊपर उड़ते देखते हुए कई मिनटों तक मौन बैठे रहे। उनका मन अतीत की स्मृतियों का एक चक्कर लगाकर लौट आया, तो सोफे पर पीठ टिकाए आराम से लेटे-लेटे, बोले—"मुरली ! जीवन में मुझे सब कुछ मिला। बड़ी-बड़ी पदवियाँ, धन, वैभव, कीर्ति सब कुछ भोगा। अपनी इच्छा पर मैं जिया। स्वच्छन्द जीवन का रस लिया। मगर···मगर एक पिता के कर्त्तव्य को अदा करने से चूक गया। मुझे अपनी बेटी पर भरोसा था। उसकी बुद्धि, प्रतिभा व सामर्थ्य पर विश्वास था। लेकिन एक नारी हृदय के कोमल पहलू पर उसकी मानवीय कम-जोरियों पर कभी सोचा नहीं। मुरली ! जब तुम दोनों मिलने-जुलने लगे तब मैं कितना खुश हुआ था ? सोचा···आगे शारदा के बारे में चिन्तित होने की जरूरत नहीं। आशा थी कि उसका मन तुम्हारी तरफ जाएगा। हाँ ! मुझे विश्वास था कि तुम उसे अपनी राह पर खींच लोगे, और उसके विचारों को प्रभावित करने की शक्ति तुम में है। लेकिन···आखिर···मैंने धोखा खाया है।"

मुरली सन्न रह गया। आखिर सारा दोष उसी के सिर मढ दिया गया है, यह सोचकर वह अकुलाया। उसके आहत हृदय को प्रोफेसर की बातों ने चिढ़ा दिया।

"मैंने कभी किसी को अपने विचारों से प्रभावित करने की कोशिश न की है, न आगे करूँगा। हर एक को अपना-अपना मार्ग खुद ही चुन लेना है।" उसकी आवाज में ध्वनित गरमी को प्रोफेसर ने महसूस कर लिया।

तुरन्त बोले—"नाराज़ न होना मुरली ! मैं तुम्हारी शिकायत न करता । बस—इतना खुलकर, कहना चाहता था कि मेरे क्या-क्या सपने थे, आकाँक्षाएँ थीं। वस, और कुछ नहीं। मेरे सारे सपने ताश के महल से विखर गये। मुरली ! मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं। किसी पर मैं दोष नहीं लगाता।"

"बस ! इतना कहना चाहता हूँ। अगर मेरे मन की मुराद पूरी हुई होती, मुझे बड़ी शान्ति मिलती।" प्रोफेसर मौन हो गये।

मुरली सिर झुकाये वैठा था। प्रोफेसर कीबा तों ने उसे हिला दिया। सोचा—शिवराम विप्लव पार्टी का सदस्य न बनता तो ये इतने परेशान होते? वह पार्टी में है, वस, केवल इस बात पर इन्हें उससे नफरत है। नहीं तो इस बात की चर्चा मुझसे करते? मेरे प्रति इतनी श्रद्धा प्रदर्शित करते?···ओह ! मेरा ख्याल करने को इस संसार में कौन था? अब कौन है? मेरा तो कोई नहीं है।" मुरली एकाएक उठकर खड़ा हो गया, "अच्छा ! अव चलूं ?"

प्रोफेसर ने चौंककर उसकी ओर देखा। मुरली ने देखा उनकी आँखों में आँसू हैं।

"तुम नाराज हो गये मुरली ?"···हड़बड़ाते वे उठे और उसका हाथ पकड़ लिया। "मुझे गलत न समझना, मुरली ! जानते हो? तुम पर मेरा कितना भरोसा है ?···तुम—तुम भी मेरी उपेक्षा करके जा रहे हो—।" उनकी आवाज में रुदन था।

"ना—ना—मैं नाराज नहीं हूँ। देर हो गयी थी इसलिए निकला।" मुरली आश्वासन पूर्ण आवाज में कहता हुआ फिर से बैठ गया। थोड़ी देर दोनों न बोले। दोनों अपनी-अपनी चिन्ता में लीन थे। एकाएक प्रोफेसर ने मौन तोड़ा—"अब भी वह शिवराम से मिलने गयी है। कहा था उससे कुछ पुस्तकें लेनी हैं। आजकल क्रान्तिकारी साहित्य अधिक पढ़ती है। आई डोण्ट लाईक इट।"

पोर्टिको में किसी की आहट पाकर दोनों ने मुड़कर देखा। शारदा आ रही थी। पिता और मुरली को एकसाथ बैठे बातें करते देख एक जबरदस्त मुस्कान अधरों पर लिए उनके पास आयी। मुरली ने बनावटी

मुस्कुराहट लिए उसकी ओर देखा। प्रोफेसर चुपचाप चुरुट पी रहे थे।

"आप दोनों यहीं बैठे-बैठे बातें कर रहे हैं क्या ?"

तनिक उलाहने के भाव से पूछती हुई शारदा उनके पास आ बैठी।

"दस बज गये। अब तक कहाँ गयी थी तुम ?" प्रोफेसर की आवाज में अनजाने ही कठोरता आ गयी थी।

"पिताजी, लगता है आप भूल गये ? शिवराम से मिलने जाती हूँ—ऐसा बताकर ही गयी थी न ?"

"छ: बजे गयी थी और अब···।"

"हाँ-हाँ देर हो गयी। अगले हफ्ते विप्लव पार्टी के कार्यकर्ताओं की मीटिंग होने वाली है। इस सिलसिले में ज़रा काम संभालने के लिए मुझे भी बुलाया था।"

"उस पार्टी मीटिंग से तुम्हारा क्या मतलब ?" कमलस्वामी ने जरा गुस्से के साथ पूछा।

"पार्टी के सेक्रेट्री नल्लदम्बी भी शहर में नहीं हैं हैदराबाद गये हैं। बेचारे अकेले पड़े पिस रहे हैं। इसलिए मैंने उनकी मदद की। इसलिये देर हो गयी।" शारदा के लिए पिताजी के ये प्रश्न अप्रत्याशित थे। वे कभी उससे ऐसे पेश नहीं आते थे। उन्हें क्या हो गया है ? चकित हो उसने कनखियों से मुरली की ओर कटाक्ष किया। लेकिन उसकी आँखें बाहर अंधकार को घूर रही थीं।

प्रोफेसर ने कहा—"अच्छा ! देर हो गयी खाना खा लो···।"

"संपादक महोदयजी ने मौन व्रत लिया है क्या ?" पूछती हुई शारदा उठी। मुरली के अधरों पर फीकी मुस्कान खिल उठी। रुखाई से कहा—"तुम न बोली इसलिए मैं भी चुप था।"

"क्या करती ? आते ही पिताजी कैफियत तलब करने लग गये।" शारदा ने प्रोफेसर की ओर कटाक्ष करते हुए कहा। प्रोफेसर के चेहरे पर छायी कटुता एकदम गायब हो गयी। मुँह पर लगी चुरुट को हाथ में लेते हुए हंस पड़े। फिर मुरली की तरफ देखकर कहा—"देखा न मुरली ! इतना ही कहा था कि देर हो गयी है। इतनी-सी बात पर इसका पारा चढ़ गया।" फिर शारदा की तरफ मुड़कर कहा "जा—जा बेटी, पहले

खाना खा लो। पेट में चूहे दौड़ते होंगे—इसीलिए इतना गुस्सा आता है...।"

शारदा हंसती हुई अन्दर चली गयी। "मुरली आज रात को यहीं ठहर जाना। तुमसे ढेर-सी बातें करनी हैं। आओ जरा पार्क में चलकर घूम आयें।"

मुरली ने पलभर सोचा। उसका मन बेचैन था। सोचा था कहीं एकान्त में चला जाऊं तो मन की बेकरारी थोड़ा शान्त होगी। मगर प्रोफेसर की बात टाल न पाया।

दोनों मोटर पर पार्क की तरफ चले।

चौदह

रात के दस बजने पर पार्क में भीड़-भाड़ अधिक न होती थी। जहाँ-जहाँ दीप की धुँधली रोशनी की जगह घना अंधकार छाया था, उन जगहों पर युगल जोड़ियाँ बैठी थीं। प्रोफेसर ने ऐसी जगह ढूंढ ली जहाँ प्रकाश बहुत कम था। दोनों लॉन में जा बैठे। मुरली दोनों घुटनों पर हाथ बाँधकर बैठ गया। उसकी आँखें अंधकार में बैठी जोड़ियों की तरफ घूमीं। प्रेमी युगल मस्त भाव से सटे बैठे मस्ती-छान रहे थे। मुरली ने झट अपनी दृष्टि फिरा ली। उसे हँसी आ गयी।

प्रोफेसर ने पूछा—"हंसते क्यों हो ?"

"शायद घरों में एकान्त का अभाव है, ये जोड़े सार्वजनिक स्थानों पर आकर चोरी छिपे प्रणय-विह्वल हो रहे हैं।"

प्रोफेसर ने इधर-उधर छितराए जोड़ों पर निगाह दौड़ायी।

अंधकार के बीच में दो छायाएँ घुल-मिल रही थीं। प्रोफेसर को भी हँसी आ गयी। हँसते हुए बोले—"ये विधिवत् ब्याही जोड़ी हैं या प्रेमी, कौन जाने ?"…एकाध मिनटों के वाद बुदबुदाये…"मनुष्य की न जाने कितनी दमित इच्छाएँ हैं।" उनकी निगाह दोनों छायाओं पर टिकी थी। उन दोनों को वहाँ से निकल जाने तक वे देखते रहे। फिर मुरली की ओर घूमकर कहा—"देखा न ? दो प्रश्न पूछते ही शारदा को कितना गुस्सा आता है…हूँ। क्या कहना ? बड़े लाड-प्यार से पाला है…उसकी अम्मा जिन्दा रहती, तो वह ऐसी हठीली न बनती ! मैं उससे सख्ती से दो कटु शब्द तक नहीं कह पाता। उससे बिगड़ने व डाँटने का न मुझ में दम है… न योग्यता…।"

मुरली अंधकार में उन्हीं को घूरता रहा।

"कभी-कभी वह ऐसा पेश आती है, मानो कह रही हो कि मुझमें उसे डाँटने, गलती निकालने की क्या योग्यता है। उसकी वह दृष्टि, उन आँखों में कौंधती नफरत व अवहेलना मुझे एकदम हिला देती है…मेरी अन्तरात्मा मुझे सिर उठाने नहीं देती है—अपराधी भावना मुझे लज्जित करा देती है। उसके सम्मुख खड़ा होने का साहस मुझ में नहीं होता…।"

मुरली क्षणभर भौंचक्का रह गया। वे किस बात की ओर इशारा कर रहे हैं, यह समझने में उसे देर न लगी।

प्रोफेसर बोलते जा रहे थे, "बड़े-बड़े ओहदों में रह चुका। यश और कीर्ति मेरे पाँवों पर लोटी। जहाँ जाऊँ लोग बड़ा आदर सम्मान दिखाते हैं…लेकिन…लेकिन अपनी बिटिया के सामने संकुचित लज्जित होना पड़ता है। मुरली ! मेरे बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ?…"

बिलकुल अप्रत्याशित प्रश्न था। एकाएक छूटे प्रश्न ने उसे झकझोर डाला। क्या कहे ? वे एक विख्यात प्रोफेसर हैं। उसने उनको अपने हृदय-पीठ पर आदरणीय स्थान दे रखा है। पिता के जैसे वे भी उससे वात्सल्य-पूर्ण व्यवहार करते हैं। ऐसे स्नेहशील, ममतामय, उदारचित्त-वाले व्यक्ति के आचरण और कमजोरियों की ओर वह कैसे इशारा कर सकता है ? मुरली गुमसुम हो गया।

"थोड़े दिनों पहले की वह बात…याद है मुरली ! तुम शायद भूले न

होंगे। तुम और शारदा रात में बड़ी देर तक मेरी प्रतीक्षा में बैठे थे।··· उस वक्त मैं सीधी दृष्टि से शारदा को देख न पाया। संकुचित-सा रह गया। देखा, शारदा की आँखें मुझ पर नहीं, मुझे छोड़ने जो आयी···उस जानकी पर ही टिकी थीं। जानकी की मोटर के गेट के बाहर जाने के बाद ही शारदा की दृष्टि मेरी तरफ फिरी।···मुरली! मेरे आने के पहले शारदा ने तुमसे कुछ कहा था क्या?"

मुरली ने सिर हिलाया कि नहीं। उसे उनपर बड़ी दया आ रही थी। इतने बड़े व्यक्ति···अपनी कमजोरी पर कितना सकुचा रहे हैं? उसने उनकी तरफ सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि डाली।

"सारी जिन्दगी ऐसे ही बीत गयी। कोई मेरा निकट का नहीं। यह कभी-कभी मुझे खलने लगता है। केवल तुम्हीं मेरे निकट के हो। मेरे छात्र की हैसियत से नहीं, मित्र के समान तुम्हें मानता हूँ। छिपाना मत बताओ। मेरे बारे में तुम क्या सोचते हो।"

"सोचने के लिए क्या बात है?" मुरली ने शिष्टता निभायी।

"लोग मेरे बारे में क्या कहते हैं यह तुमसे छिपा नहीं। भले ही मेरे सामने कुछ न कहें, मेरे पीछे अफवाह उड़ाते रहते हैं और रहेंगे। तुम्हारे कानों तक भी बातें पहुँची होंगी। बताओ न!"

मुरली चुपचाप सुनता रहा। वे घास पर एक हाथ टिकाये अध-लेटे-से बैठे थे। मुरली पालथी मारकर बैठ गया। जेब से एक चुरुट लेकर उन्होंने मुंह में रखी और दियासलाई के लिए इधर-उधर टटोलते हुए बोले—"मुरली! आशा है तुमने मुझे गलत न समझा होगा। यह समाज बहुत-सी बातों पर उँगली उठाकर उन्हें गलत कहता है। लेकिन यह समाज एक व्यक्ति की भावनाओं और जरूरतों का ख्याल नहीं करता। कभी उन पर वह सोचता नहीं है। व्यक्ति अपने में इकाई है। वह उसका अपना अलग व्यक्तित्व है। जिस समाज का वह अंग है वह सामूहिक जीवन अलग है। इसे कई लोग नहीं मानते। मगर हर व्यक्ति की अपनी एक अलग जिन्दगी है। एकान्त में, लोगों से आँख बचाकर अपना एक रहस्यपूर्ण जीवन वह जी लेता है। यह उसका अपना निजी अन्तरंग जीवन है। लेकिन समाज में एक होकर जब वह खड़ा होता है, तब दूसरों को देखने की उसकी

दृष्टि कुछ और होती है । मुरली ! हर व्यक्ति को यह दुहरी जिन्दगी ढोनी पड़ती है। वह विवश है, लाचार है । समाज को संभालना है, साथ ही अपनी आत्मरक्षा भी करनी है ।" बोलना छोड़कर उन्होंने सलाई जला ली । भभकती उस लालिमा में उनका मुंह साफ नजर आया । मुरली ने देखा···गहरी वेदना की छाया थी वहाँ । चुरुट जलाकर एक कश लेते हुए उन्होंने पूछा—"मुरली ! देखता हूँ, हर कोई अपने लिए जीता है । समाज के लिए अपनी इच्छा, आशा व अरमानों का, वासनाओं का दमन करके उन्हें एकदम मिटाकर कोई नहीं जी रहा है । यह तो महात्मा व महान व्यक्तियों के लिए संभव रहा होगा । मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ । मुरली ! हर व्यक्ति जैसा एक औसत आदमी हूँ । दुनिया की नजरों में मैं असाधारण व्यक्ति हूँ, विख्यात व प्रतिभाशाली हूँ, मेरी बड़ी पदवी है, नाम है···क्या इसलिए···मैं अपने आपको मिटाकर, अपनी इच्छाओं का दमन कर, जड़-सा निर्जीव बना रहूँ ? कहो न ?" इस प्रश्न के साथ उन्होंने मुरली की ओर ध्यान से देखा ।

इधर मुरली विस्मय विस्फारित नयनों से उनकी बातें सुन रहा था । असल में वह मन ही मन द्रवित हो रहा था कि वे ये सारी बातें उसे क्यों सुना रहे हैं ? इतना तो साफ था कि वे आचरण का त्यागीकरण करना चाहते हैं । प्रोफेसर उसको मौन पाकर खुद बोलने लगे ।

"महात्मा व साधु सन्तों की जीवनियों को पढ़ते वक्त मुझे बड़ा आश्चर्य होता है । मानव की मूल प्रवृति ही 'लस्ट' अर्थात् कामवासना है । इस वासना की भूख से मुक्त उन महान् आत्माओं पर विचार करते वक्त विस्मयविमुग्ध हो जाता हूँ । सन्त रामलिंगम् स्वामी, रमण महर्षि ··आदि के बारे में सोचते-सोचते दंग रह जाता हूँ । यह उनसे कैसे संभव हुआ ? पत्नी को बगल में बिठाकर उसे अपनी माँ के रूप में देखने की वह मानसिक दृढ़ता रामकृष्ण परमहंस को कैसे प्राप्त हुई···हमने अपनी आँखों से गाँधी जी को देखा है न ?···मुरली ! इन सब महान व्यक्तियों ने मानव की इस वासना को, पशुतापूर्ण कामुकता को जीत लिया, उनका दमन करके जितेन्द्रिय बन गये थे । इसकी···मैं कल्पना भी नहीं कर पाता···मुरली ! इस चुरुट पीने की आदत से भी मैं अपने को छुड़ा नहीं पाता । शारदा अक्सर कहती है···न

जाने इस बदबूदार चुरुट पीने की आदत को आप कब छोड़ने वाले हैं··· लेकिन···जिस पीने की आदत को मैंने डाला है, उसे भी छोड़ नहीं पाता ···तब अपने शरीर के अन्दर जागती···उस स्वाभाविक भूख को, यौन इच्छाओं की उत्तेजना को दमन कर पाऊँगा?···मगर दुनिया में लोग मेरे जैसे ही होते हैं। विरले ही महात्माओं का अवतार होता है।"

मुरली ने बात काटी—"मानव ही महात्मा बनता है।"

यह सुनते ही प्रोफेसर तनकर बैठ गये। चुरुट को मुंह से हटाकर उसकी ओर गहराई से देखा। मुरली ने उनकी बात काट दी, इस ख्याल ने उन्हें थोड़ा निरुत्साहित कर दिया। तो भी संभलकर कहा,—"मुरली! तुम मुझ पर बड़ा स्नेह व आदर रखते हो इसलिए कभी मुझे नीची दृष्टि से न देख पाओगे न शिकायत करोगे···फिर भी तुम्हारे मन में मेरे प्रति क्या भावना है, इसे मैं अच्छी तरह समझ सकता हूँ···।"

मुरली ने हड़बड़ाकर बात काटी—"नहीं···मैंने आपको कभी गलत नहीं समझा···।"

"नो—नो···नो···मैं ऐसा नहीं कहता! केवल अपनी कमजोरियों, दुर्बलताओं के बारे में बता रहा हूँ। तुमने भी इसके बारे में सोचा होगा। शारदा इस बात पर मुझसे बेहद नाराज है। वह मन ही मन घुटती रहती है। पिता न होकर कोई और होता तो कड़ी आलोचना कर डालती ···लेकिन अब···।" प्रोफेसर ने चुरुट का गहरा कश लिया और छल्लेदार धुआँ उड़ाया। चुरुट की वह तीखी गंध चारों तरफ फैली। मुरली का दम घुटने लगा, फिर भी सहता रहा।

"मुरली! मेरी पत्नी मर गयी। जिन्दगी-भर मुझे अकेले ही अपनी इन्द्रियों का दमन करके ही जीना था क्या? इस तरह का संयम, जितेन्द्रियता, ब्रह्मचर्य, सतीत्व···इत्यादि उन्नत विचार व आदर्श हैं, मगर मानवीय प्रकृतियाँ नहीं है। 'लस्ट'···अर्थात् यौन वासना ही मानव की सहज प्रकृति है। इसकी सहजतम, प्राकृतिक उत्तेजना की ओर उसे आकर्षित होना पड़ता है। इसके विरुद्ध लड़ना···।"

मुरली ने टोका—"मानव की कमजोरियों में यह भी एक है।"

"ओह! नो! नो! इसे कमजोरी क्यों कहते हो? यह प्राकृतिक

उत्तेजना है। समाज में कुछ विधि-विधान बने हैं। जो कुछ उस विधि विधान के अन्तर्गत नहीं आते, उनको दुर्बलताएँ घोषित करके किनारे कर देने की बात पर मैं सहमत नहीं हूँ···इसे···मानव की कमजोरी कहने के बदले उसकी शक्ति, उसका बल ऐसा क्यों न कहें ? एक व्यक्ति को समाज की तथाकथित मान्यताओं, विधि-विधानों के मापदण्ड से नापने लगते हैं, तभी गड़बड़ी होती है। मुरली ! मनुष्य को मानवीय दृष्टि से ही मानव मन की प्रवृतियों को लेकर ही आँकना चाहिये। लेकिन···ऐसा देखने व परखने की शक्ति केवल महात्माओं में होती है, औरों में नहीं। इसलिए पापी भी उनकी दृष्टि में क्षमा योग्य है !" प्रोफेसर आगे न बोले। उनकी आँखें अंधकार में भटकने लगी। मुरली ने जान लिया सामने बैठे रहने पर भी उनका मन कहीं दूर, किसी और ध्यान में चला गया है। मुरली का दिल दया से पसीज उठा।

थोड़ी देर के बाद जैसे अभी होश में आये हों उन्होंने भारी आवाज में कहा, "शारदा के लिए ही मैंने दुबारा शादी नहीं की। सोचा था···दुख व चिन्ता की छाया तक उस पर न पड़े, वह सुखी रहे। हाँ, सुख-सुविधाओं के पालने में लिटाकर मैंने लाड़-प्यार से उसे पाला। माँ का अभाव उसे न खले···यही मेरा सबसे बड़ा लक्ष्य था। ···माँ का रिक्त स्थान मैंने भर दिया।···लेकिन मेरे अपने निजी जीवन में जो अभाव रहा···उसने मुझे और दिशा में बहा दिया। यह मजबूरी थी···अनिवार्य था। जहाँ तक मेरा सवाल है मुझे और कोई चारा नहीं था।···जो इसे समझ नहीं पाते, मेरी पीठ पर मेरी निन्दा करेंगे। कर लें। इसकी मुझे चिन्ता नहीं। जब स्वयं अपने ऊपर बीतती है, तभी कोई उसे समझ पायेगा।" प्रोफेसर की मानसिक वेदना उनके शब्दों में ही नहीं, चेहरे पर भी स्पष्ट थी।

"मुरली ! अपने आचरण का जवाब मुझे जिसको देना है वह, चल बसी। उसका अभाव ही मेरी इस दशा का कारण है। मेरी आलोचना करने, इस बात पर चर्चा करने का केवल उसी को अधिकार है···हाँ ! किसी और को मेरे व्यक्तिगत मामले में दखल देने का अधिकार नहीं।" उनकी आवाज में आक्रोश था। मुरली घबरा गया। कहीं उसकी बातों ने

उनका दिल दुखा दिया हो—इस आशंका से वह अधीर हो उठा।

मगर झट वे शान्त हो गये। धीमी आवाज में कहा—"शारदा की नाराजगी में एक हद तक न्याय है मुरली! उसका पिता चरित्रहीन हो, उसके लिए असह्य है।···लेकिन मुरली, कभी-कभी वह ऐसी घृणा भरी दृष्टि मुझ पर डालती है कि मुझ से सहा नहीं जाता···।"

"स्त्रियाँ इसे इतनी हल्की बात नहीं मानती हैं। खासकर भारतीय नारियों की मनोदशा भिन्न है।"

"यस! यस! यू आर करेक्ट। इस मामले में पुरुष और स्त्री का दृष्टिकोण भिन्न है।···हाँ इसीलिए मैं शारदा से इस बात को लेकर··· खुलकर बातें न कर पाया, न उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ कर ही पाता हूँ। मुरली! अब मेरी सब से बड़ी चिन्ता इस बात की है कि उसने अपने लिए सुखमय जीवन का रास्ता न लेकर···ऊबड़-खाबड़ मार्ग को चुन लिया है···"

मुरली ने कोई उत्तर न दिया। थोड़ी देर वहाँ पर मौन छाया रहा। प्रोफेसर की दृष्टि अपनी घड़ी पर पड़ी तो वे उठ गये।

जब दोनों घर लौट आये तो शारदा ने दरवाजा खोला। "कहाँ गये थे दोनों! आधी रात बीत गयी···"

प्रोफेसर ने कहा—"नींद न आयी। थोड़ी देर पार्क में बात करते रहे।"

"क्यों! यहाँ नहीं बातचीत कर सकते थे! कोई रहस्य की बात है?" शारदा ने हँसते हुए पूछा।

"अब तुम जवाब-तलब करने लगी हो समझी···" कमलस्वामी ने हँसी के बीच कहा।

जैसे उन दोनों की बात से उसका कोई मतलब न हो, मुरली जरा हट के अपनी कार की ओर देखता खड़ा था।

"मुरली! आओ···सबेरे जा सकते हो।" प्रोफेसर ने आग्रहपूर्ण स्वर में कहा।

"नहीं···मुझे काम है। दो उप-संपादकों ने छुट्टी ली है। और किसी दिन आऊँगा।" मुरली सीढ़ियाँ उतरने लगा।

उसकी कार के आँखों से ओझल होने तक प्रोफेसर बरामदे में ही खड़े उसे देखते रहे। फिर लंबी साँस भरते हुए अन्दर चले गये। लगा अब उनके दिल का बोझ थोड़ा हलका हुआ है।

पन्द्रह

शारदा बिस्तर पर करवटें बदलती रही। हृदय का उल्लास उफन-उफन कर रग-रग में मादकता भर रहा था कि नींद आंखों में उतरी ही नहीं। हृदय के प्याले में भरी शिवराम की मीठी मधुर स्मृतियाँ अमृत की वर्षा कर रही थीं। ओह! आज उसने कितने प्यार से बातें कीं। उसकी उस दृष्टि व बातों ने उसे कितना मस्त कर दिया था। आत्म-विभोर हो उठी न? कैसा सुशील व संस्कारी है शिवराम!

कॉलेज के दिनों में ही वह उसकी ओर खिच गयी थी। भीड़-भाड़ से अलग, अपने में मस्त रहनेकी उसकी प्रकृति और उसके स्वाभिमान ने उसे उसकी ओर आकर्षित कर दिया था। केवल उसे देखते रहने में ही उसने अजीब मस्ती का अनुभव किया। जब कभी वह उसके पिता से मिलने आता था वह अत्यधिक आह्लादित हो उठती। उसके एक स्नेहपूरित कटाक्ष के लिए वह तरसती रह जाती। उसकी छटपटाहट, हजार-हजार बातों बताती। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों के मौन संकेत, शिवराम से थोड़े ही छिपे रहते। फिर जानबूझकर अनजान बन, उसने कई बार उसे रुलाया है।

एक बार दोनों लाइब्रेरी में बैठे बातें कर रहे थे। शिवराम ने एकाएक पूछा—"शारदा! तुम्हारे जीवन का लक्ष्य क्या है?" इस प्रश्न

ने शारदा को चकरा दिया। समझ में न आया कि क्या उत्तर दे। एक लड़की का लक्ष्य क्या है ? कौन-सा लक्ष्य उसका हो सकता है ? बिना उत्तर दिये वह उसकी ओर टकटकी बाँधे बैठी रही थी।

"बताओ ! तुम्हारा लक्ष्य क्या है ?"

"एक हिन्दू नारी का जो लक्ष्य होता है, वही मेरा लक्ष्य है।"

"अर्थात् देखने में जो सुन्दर व सौम्य है, उससे विवाह कर लेना, बच्चों को जन्म देना, फिर गृहस्थी का बोझा ढोना···बस यही है न ?··· कीचड़ में लोटने वाले सूअर का जीवन क्रम भी यही है। शारदा, नारी··· कोरी मशीन है। जन्म लेना, ध्येयहीन रहना···एक दिन मरने के लिए नहीं। खाना, पीना वंशवृद्धि करना यही जीवन है क्या ? शारदा ! तुम जानती हो ! जो-जो महान क्रान्तियाँ हुई हैं उनमें कई एक नारियों ने महत्त्वपूर्ण भाग लिया है। कौटुम्बिक जीवन को ही जीवन का चिरन्तन लक्ष्य मानना कितना अर्थहीन है !"

शारदा उसकी ओर भयभीत आँखों से देखती बैठी थी। वह आवेश के साथ बोलता गया—"शारदा ! तुम्हारी प्रतिभा व बुद्धि चार दीवारों के अन्दर किसी एक के स्वार्थ लाभ के लिए बरबाद नहीं होनी है। मेरी आँखों में तुम असाधारण लड़की हो। तुम औरों से भिन्न और विशिष्ट हो। शारदा ! मैं आशा करता हूँ कि तुम औसत नारियों के जैसी बिलकुल मामूली आकांक्षाओं, और अर्थहीन कल्पनाओं को ढोती आलस्यमय जीवन न बिताओगी। मुझे विश्वास है कि तुम जीवन पर गंभीरता पूर्वक विचार करोगी।" इतना कहकर शिवराम ने उसकी ओर उत्सुक नयनों से देखा। दोनों कीं आँखें मिलीं। देर तक उनमें बातें होती रहीं। शिवराम के उन्नत विचार व आदर्शों से शारदा अभिभूत हो उठी।

शुरू-शुरू में शिवराम का तर्कवाद, लक्ष्य का नशा, आवेशपूर्ण बातें, प्रखर बुद्धि, आदि ने शारदा को भयभीत कर दिया था। लेकिन धीरे-धीरे उसकी बातों और व्यवहार में दिलचस्पी और श्रद्धा आ गयी थी। शारदा अपने लक्ष्य मार्ग की ओर झुकने लगी है, इसका आभास मिलते ही शिवराम की खुशी का ठिकाना न रहा। तभी उसे पार्टी का शिक्षण लेने शहर छोड़कर वयनाडू जाना पड़ा। उसको अपनी हर बात गुप्त

रखनी थी। इसलिए वह बिना कुछ बताये चला गया। शारदा दिल ही दिल में रो उठी। वह किससे अपना दुखड़ा रो सकती थी? हाँ, मुरली से पूछा था। लेकिन उसे भी इसका पता नहीं था कि वह कहाँ चला गया है। शारदा निराश हो गयी। शिवराम की निर्ममता दिल को कचोटती रही। कभी-कभी वह आशंकित हो उठती कि कहीं यह एकपक्ष का प्रेम न हो जाए। लगभग एक महीने तक वह पागल सी इधर-उधर फिरती रही। उसका मन किसी काम में न लगा था। फिर बिखरे मन को संजोकर अध्ययन में लगाया तो शिवराम की यादें व अतीत की स्मृतियाँ धुँधली होने लगीं। लेकिन एक साल के बाद जब शिवराम लौट आया, शारदा खिल उठी। उसकी कामनाएँ फिर से लहलहा उठीं।

दोनों का साहचर्य फिर से बढ़ने लगा।

शिवराम धीरे-धीरे उसके मन व विचारों को अपनी बातों से प्रभावित करने लगा। पार्टी के सिद्धान्तों से जिसे अरुचि थी, नाक-भौहें सिकोड़ती थी, उनमें अब इतनी दिलचस्पी लेने लगी कि पार्टी के सिद्धान्तों की अच्छी ज्ञाता बन गयी। यद्यपि उसने पार्टी के सिद्धान्तों को सैद्धान्तिक विवेचन द्वारा अपना लिया था तो भी उसकी कार्यप्रणाली के व्यावहारिक पहलू का समर्थन न कर पायी। इसीलिए विप्लव पार्टी की सदस्या बन सेवा करने से हिचकती रही। विप्लववादियों के सम्मेलन में उसने भी भाग लिया था। सभा के मण्डप में कान्तामणी को देखकर वह चौंक पड़ी। उसकी कॉलिजमेट कान्ता, विप्लववादी क्रान्तिकारी पार्टी में एक मुख्य स्थान रखती है, यह जानकर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। सम्मेलन की व्यवस्था में भाग लेकर, इधर-उधर दौड़ धूप करती, शिवराम से हँस-हँसकर बातें करती कान्ता को देखकर शारदा मन ही मन जल उठी। कान्ता की वह हँसी, उसकी चहकती बातों पर वह झल्ला उठी। दिन भर वह बेकरार रही। शाम होते ही वह शिवराम के यहाँ चली गयी। बातों के बीच में दिल का उबाल निकल गया, "कान्ता वहाँ कहाँ से टपक पड़ी। इधर-उधर अनावश्यक घूमती-फिरती रही?"

शारदा के शब्दों में ध्वनित झल्लाहट को समझे बिना शिवराम ने ठहाका मारते हुए कहा—"अनावश्यक घूमती-फिरती रही?···शारदा,

जानती हो ! वही इस सम्मेलन की कार्यकमेटी की अध्यक्षा है। इस सम्मेलन की इतनी सफलता का सारा श्रेय उसी को मिलना है।" कान्ता के बारे में बोलते वक्त शिवराम कितना उत्साहित होता है—यह शारदा की नजरों से न छिपा।

शिवराम ने, कान्तामणी का अद्वितीय साहस, कॉलेज के दिनों से लेकर पार्टी के काम में उसकी तीव्रता, लगन और प्राणों की बाजी लगाकर गुप्त कार्यों में लगना, आदि साहसपूर्ण कार्यों की तारीफ के पुल बाँधे तो उसी क्षण शारदा एक निश्चय पर आ गयी। जब उसने विप्लव पार्टी में शामिल होने के अपने निश्चय को सुनाया तो शिवराम ने भावावेश में आकर उसके दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिये।

शिवराम के दिल में निरन्तर रूप से अपना स्थान बना लेने के लिये शारदा सब कुछ करने को तैयार हो गयी। शिवराम उसे पार्टी में लेने की व्यवस्था करने में लग गया।

आज ही प्रधान कार्यालय से अनुमति-पत्र मिला था। उस पत्र को शारदा को दिखाते वक्त शिवराम कितना भावुक हो उठा था। हर्ष विह्वल होकर उसने उसके दोनों हाथ अपने हाथ में ले लिये और उसकी आँखों में झाँककर ऐसी दृष्टि डाली, मानो दिल की थाह ले रहा हो। उसकी उस दृष्टि और स्पर्श ने उन अननुभूत भावनाओं को जगा दिया जिसका इसके पहले शारदा ने कभी अनुभव न किया था। ओह ! इन्हीं क्षणों के लिए वह कितने दिनों से तरस रही थी।

लगा अब भी उसकी वह दृष्टि उसकी आँखों में छाकर उसे गुड़गुड़ा रही है। उसके हाथों का स्पर्श जहाँ लगा था, वहाँ से एक विचित्र मादकता पूर्ण पुलक, लहरों से बिफरकर उसके सारे शरीर में, उसके प्राणों में भरता जा रहा था। शारदा इन्हीं मीठी यादों में बे-सुधसी पड़ी करवटें बदल रही थी।

बगल के कमरे में से प्रोफेसर के खुर्राटे की हल्की ध्वनि उसकी स्मृतियों के हुल्लास नृत्य को मानो ताल दे रही थी।

× × ×

मुरली प्रोफसर के घर से सीधे कार्यालय में गया। स्वामीनाथ न्

रात को प्रेस में जिन्हें देना···उन खबरों का संपादन करने में लगा था। दो उपसंपादक काम पर न आये थे। इसलिए स्वामीनाथन् और रामभद्रन् ही कमरे में थे। मुरली को देखते ही स्वामीनाथन् उठ गया।

"क्या कोई मुख्य खबर है?" मुरली ने पूछा।

"खबर मिली है कि गाँवों में खेती के मजदूरों को बलवा करने के लिए विप्लववादी दल वाले उकसा रहे हैं। मजदूर लोग फसल की कटाई के लिए ज्यादा मजदूरी की माँग पेश करते हुए कलह कर रहे हैं। सुना है स्थिति बड़ी नाजुक है।"

"और कोई नया समाचार है?"

"विजयवाड़ा में विप्लववादी लीडर सुब्बारेडी का खून हो गया है। पुलिस बड़ी मुस्तैदी से खूनी का पता लगा रही है।"

"खून करने का कारण मालूम हुआ?"

"नहीं, अब तक खूनी का पता नहीं लगा है।"

"अपने लीडर के खून पर आंध्र में पार्टी वालों ने कोई हंगामा मचाया है?"

"नहीं! पार्टीवालों ने श्मशान मेंजमा होकर श्रद्धाञ्जली अर्पित की है। इसके अलावा, खून पर कोई हल्ला मचाया है या नहीं, इसकी सूचना हमें अब तक नहीं मिली है।" स्वामीनाथन् के स्वर में विस्मय था।

"अच्छा! इस न्यूज़ कोफॉलो करो···"मुरली ने कुछ सोचते हुए कहा।

"पार्टी के लीडर की ही हत्या को करना हो तो···किसी दुस्साहसी ने ही यह कार्य किया होगा···।"

"इतनी जल्दी किसी निश्चय पर न आ जाना। न्यूज़ को ध्यान से फॉलो करो। फिर अपना निर्णय बताना। मिस्टर रामभद्रन् तुम्हारे साथ हैं न? तुम दोनों संभाल सकते हो या मैं भी रहूँ? मैं बहुत थक गया हूँ।"

"नहीं सर! आप जाइए! हम संभाल लेंगे···" स्वामीनाथन् ने कहा।

मुरली ने मोटर स्टार्ट की। उसके शरीर ही नहीं, मन पर भी अतीव क्लांति छायी थी। विप्लव कार्यालय पास आते ही उसने देखा, कई लोग झुंडों। में खड़े बातें कर रहे थे। गली के नुक्कड़ पर शिवराम कुछ लोगों

के साथ खड़ा था। उसे देखते ही मुरली ने गाड़ी रोकी। तुरन्त शिवराम गाड़ी के पास आया। मुरली ने कार में बैठे-बैठे पूछा—"विजय-वाड़ा से कोई नई खबर मिली है ?"

"ओह ! आपको खबर लग गयी।" शिवराम ने विस्मय से पूछा।

"फिर क्या ? पार्टी लीडर की हत्या है न ?"

"कल यहाँ 'बंद' का इन्तजाम हो रहा है। खण्डनात्मक जुलूस भी निकालने वाले हैं।"

"आंध्र में बिलकुल खामोशी है, इधर क्या आ पड़ी है—'बंद' ?" मुरली ने लापरवाही से पूछा।

"तुम्हें किसने कहा कि आंध्र में इस पर खामोशी है ?"

"मैं एक पत्रकार हूँ। भूल न जाना···अच्छा···कल सबेरे 'भारत-मणी' को पढ़ने के बाद अपनी 'हड़ताल'—'बन्द' इत्यादि पर सोचना।"

"विजयवाड़ा में ऐसा रहे, यहाँ भी वैसा ही हो, ऐसी कोई बात नहीं। यहाँ कल 'बन्द' जरूर चलेगा।" शिवराम ने जोर देकर कहा।

"कहा था खण्डनात्मक जुलूस है। किसका खण्डन ?"

"और किसका ? खूनी का !"

"किसने खून किया है ?" मुरली ने उत्सुकता से पूछा।

"मालूम नहीं। पूंजीपतियों का षडयंत्र हो सकता है।···पार्टी इसका बदला लेने तक दम नहीं लेगी।"

"यदि इस खून में पूंजीपतियों का हाथ रहा होता तो अब तक आंध्र के विप्लववादी चुप रहते ? बवंडर मचा देते व कम से कम चार-पाँच मोटरों में आग लगी होती। दो-तीन जगहों पर पत्थरों की वर्षा हुई होती। भारी जुलूस निकाला होता। अस्पताल में दस-पन्द्रह घायल व्यक्ति भर्ती हुए होते—लेकिन···वहाँ कुछ भी नहीं हुआ है। एकदम शान्ति फैली है।"

"तब तो तुम जानते हो कि कौन खूनी है ?" शिवराम ने अधीर होकर पूछा।

"नहीं ! लेकिन इतना कह सकता हूँ। जैसा तुम्हारा अन्दाजा है, वैसे पूंजीपतियों का इस खून में कोई हाथ नहीं है।"

"सो तुम कैसे जानते हो ?"

"केवल अनुमान है। खून होते ही कोई हो-हल्ला नहीं मचा। है न ?"

"तब तो इसका भी अनुमान हुआ होगा कि खूनी कौन है ?" शिवराम के स्वर में परिहास था।

"हाँ, अनुमान हो चुका।…लेकिन अब बता नहीं सकता।"

"क्यों ?"

"क्योंकि तुम्हें विश्वास न होगा।"

"होगा।…बता दो…"

मुरली ने शिवराम का हाथ पकड़कर अपने पास खींचकर कानों में कुछ कहा कि शिवराम भौंचक्का रह गया। मारे डर से उसके शरीर में हल्का कंपन हुआ।

"सुनो ! बात को गुप्त रखना।…किसी से न कहना। समझे ! धीरे-धीरे समझ जाओगे कि मेरा कहना सच निकला है। ज्यादातर मेरा अनुमान गलत नहीं निकलता।" मुरली ने कार स्टार्ट कर दी।

शिवराम उसी स्थान पर कई मिनटों तक जड़वत् खड़ा रहा। मुरली ने उसके कान में जो कहा था उससे जोर का धक्का-सा लग गया। जैसे पेट में कुछ मथनी हो रही हो। भय ने उसे ग्रस लिया। सारा शरीर पसीने से तर हो गया। किसी ने कन्धे पर हाथ रखा तो वह होश में आया। कोई कामरेड पास में खड़ा था बोला—"हैदराबाद से नेताजी ने फोन किया है। नल्लदम्बी आज हैदराबाद से रवाना हो गये हैं। कल यहाँ हड़ताल करनी है। विजयवाड़ा तथा अन्य स्थानों में भी जुलूस निकाला जाएगा।"

"नल्लदम्बी आ जाए ! सारी बातें मालूम हो जाएँगी।" बुदबुदाते हुए शिवराम कार्यालय की तरफ चला।

× × ×

अगले दिन विप्लव पार्टी ने एक बड़े जुलूस का इन्तजाम कर दिया। लाल झंडों को लिए पार्टी के लोग नारा लगाने लगे—

"पूंजीवादीवर्ग"

"मुर्दाबाद"

"विजयवाड़ा के खून का"

"बदला लिए बिना चुप न होंगे"

"क्रान्ति"

"जिन्दाबाद"

नारे वाजी का हो-हल्ला और भीड़-भाड़ का आवेश देखकर दुकानदारों ने जल्दी-जल्दी अपनी दुकानें बन्द कर दीं। एकाध दूकान जो बन्द न हुई··· उस पर चटाचट पत्थरों की वर्षा होने लगी। एक दूकानदार को ऐसी चोट लगी कि वह अपनी दुकान पर ही खून की धारा में बेहोश गिर पड़ा। जुलूस की सुरक्षा के लिए जो पुलिस जा रही थी, इस दृश्य को देखती हुई जुलूस के साथ-साथ आगे चलती रही, रुकी नहीं। सड़क के एक ओर खड़ी सरकारी वस को देखते ही कुछ कामरेड तैश में आ गये। वस की तरफ लपके कि वस में वैठे लोग घबराकर नीचे उतरने लगे। स्त्रियाँ चिल्ला उठीं। वच्चे चीख-पुकार मचाने लगे। भगदड़-सी मच गयी। सबके तितर-बितर होने पर कामरेडों ने बस को उलटकर उसमें आग लगा दी। धू-धू कर जलती बस को देखकर तमाशाई वनी भीड़ उत्साहवश "हा-हू' कर शोर मचाने लगी। पुलिस वाले पुतले से खड़े इस लंकाकांड को देखते रहे। किया कुछ नहीं। शाम को छः वजे के वाद ही शहर में थोड़ी शान्ति ली। अब पुलिस के सिपाही बन्दूक लिए बड़ी मुस्तैदी से सड़कों और गलियों में घूमते नजर आये।

उस रात को मैदान में विप्लव पार्टी की पब्लिक मीटिंग हुई। ख़ासकर शिवराम का भाषण बड़ा जोशीला था। मीटिंग में शारदा भी गयी थी। एक कोने में खड़ी वह शिवराम का भाषण बड़े ध्यान से सुन रही थी। तभी उसे महसूस हुआ कि कोई पास खड़ा उसकी तरफ देख रहा है। उसने मुड़कर देखा स्वामीनाथन् कन्धे पर कैमरा लटकाये खड़ा है। उसे देखते ही मुस्कुराते हुए उसने पूछा—"नमस्ते ! वे नहीं आये ?"

"कौन ?" शारदा ने विस्मय से पूछा।

"मिस्टर मुरली···"

"ओह ! आप 'भारतमणी' में काम करते हैं ?···जी आपके सम्पादक को यह पार्टी पसन्द ही नहीं।"

"कैसे पसन्द आती ? आज इस पार्टी ने जो क्रान्ति मचायी है उसे

देखते···"

"क्यों ? क्या हुआ ?"

एक बस अब भी जलती हुआ धुआँ उगल रही है। पत्थर की चोट खाकर एक दुकानदार अन्धा बना अस्पताल में पड़ा है। दो पुलिस वालों को पत्थर की मार से सख्त चोट लगी है। कई दुकानदार···दुकानों के अन्दर बिखरे पड़े पत्थरों को बाहर उठाते हुए खून के आँसू बहा रहे हैं। यही है क्रान्ति ? विजयवाड़ा में किसी का खून हुआ है, तो यहाँ पर यह मारामारी···दंगाबाजी।"

"ओह ! इतना हल्ला मचा है ?"

"और क्या ! अगर शिवरामजी बीच में न पड़ते, न जाने क्या होता। वे रोक न लगाते तो यह क्रान्ति चीनी ढंग से भी चलती।"

"यह सब सच है या···" शारदा ने शंकित स्वर में पूछा। उसे स्वामीनाथन् की बातों पर विश्वास न हो रहा था।

मैं 'भारतमणी' का उप-सम्पादक हूँ। बिना सबूत के कोई बात नहीं कहता। सब के मैंने फोटो लिये हैं। कल सबेरे 'भारतमणी' को देखिएगा।··· लगता है आप 'स्वर प्रभाती' की पाठक हैं !" स्वामीनाथन् यह कहकर मुस्कुराया।

उसके परिहास पर शारदा बौखला उठी—"भारतमणी से 'स्वर प्रभाती' सौ गुणा अच्छा है।"

"ओह ! इसलिए आपको एक सम्वाददाता की बात पर भी विश्वास नहीं हो रहा है ! अच्छा ! आप वही पत्रिका पढ़ते रहिएगा।" स्वामीनाथन् वहाँ से हट गया।

ओठों में कुछ बुड़बुड़ाती हुई शारदा उसे जाते देखती रही।

सोलह

रात का वक्त था। भारतमणी के तीनों उप-सम्पादक बड़ी तत्परता से अपने काम में लगे थे। मुरली सम्पादकीय लेख लिख रहा था। सामने दीवार पर टंगी घड़ी में आठ बजे। कमरे का द्वार खोलकर स्वामीनाथन् अन्दर आया। घबरायी आवाज में बोला—"खबर मिली है कि हमारी सीमा के अन्दर चीनियों ने सड़क बनायी है।"

"कहाँ से खबर मिली है?"

"दिल्ली से। सुना है लॉबी में पार्लियामेण्ट के मेम्बर इसकी चर्चा कर रहे हैं। कल पार्लियामेण्ट में इस पर सवाल पूछा जाएगा।"

मुरली थोड़ी देर मौन रहा।

"कहते हैं सरकार ने यह बात लोगों से छिपाई है।"

मुरली ने केवल सिर हिलाया। कहा कुछ नहीं। उसके चेहरे पर चिन्ता की छाया थी। बोला—"तिब्बत को डकार लिया। आगे न जाने कब भारत पर हाथ रख दे? हमारे प्रधानमन्त्री इस स्थिति को कैसे सम्भालेंगे यह भी मालूम नहीं। आज रात के प्लेन से दिल्ली जाने को तैयार हो सकते हो?"

"मैं?" स्वामीनाथन् ने चकित स्वर में पूछा।

"हाँ, कल पार्लियामेण्ट की कार्रवाई की रिपोर्ट भेजो। जाओ प्लेन का टिकट बुक कर लो···जाओ-जाओ!" मुरली ने जल्दी की।

स्वामीनाथन् के चले जाने के थोड़ी देर बाद शिवराम वहाँ आया। रात के इस वक्त उसे देखकर मुरली को आश्चर्य हुआ।

छूटते ही शिवराम ने कहा, "तुमसे एक मदद माँगने आया हूँ।

टालना मत।" उसका चेहरा देखते ही मुरली ने जान लिया कि वह बहुत बेचैन और व्याकुल है।

"तुम्हारे संवाददाता ने आज की घटना के कई फोटो लिये हैं।"

"किसने कहा?"

"शारदा ने"

"शारदा ने? उसे कैसे मालूम?" मुरली ने आश्चर्य से पूछा।

"संवाददाता ने स्वयं कहा है।"

"वे फोटो तुम्हें चाहिए?"···यों पूछता हुआ मुरली ने फोन का चोंगा हाथ में उठाया।

"फोटो माँगने नहीं आया। उन फोटों को 'भारतमणी' में छापना नहीं चाहिए—बस इतनी सी मदद करना काफी है।"

मुरली हंस पड़ा। फोन का चोंगा नीचे रखा। फिर शान्त भाव से कहा, "विप्लव पार्टी के एक नेता का इस तरह की माँग पेश करना सचमुच विस्मय की बात है। उस दिन 'भारतमणी' कार्यालय पर जैसे पत्थर मारे गये वैसे आज भी अपने कामरेडों को उकसाओगे तो वे इस कार्यालय में घुसकर जिन फोटों की माँग करते हो, उन्हें जबरदस्ती छीनकर ले जा सकते हैं। रात में इतनी दूर, इतना श्रम उठाकर आने की कोई जरूरत ही नहीं थी।"

शिवराम एकदम सूख गया।

"क्या तुम्हारा विचार है कि उस दिन की घटना मेरे उकसाने पर हुई थी?"

"उसके बारे में अब मैं कुछ कहने को तैयार नहीं। लेकिन जिन्होंने पत्थर मारे वे विप्लव पार्टी के हैं न?"

"हाँ, यह सच है। लेकिन इसमें मेरा कोई हाथ नहीं।"

"ओह! तब तो बिना लीडर के ज्ञान के कामरेड विद्रोह पर उतर गये? इस प्रान्त के नेता तुम ही हो न?"

"माफ करना मुरली! उस दिन की घटना भूल जाओ। मेरी जानकारी के बिना वह घटना घट गयी। आगे कभी ऐसा न होगा। मैं वादा करता हूँ!"

"शिवराम, तुम पर मुझे बड़ी दया आती है। ऐसी पार्टी में फंस-कर तुम पागल होते जा रहे हो।"

"पागलपन नहीं। यह तो मेरा लक्ष्य है। पार्टी में विभिन्न प्रकार के लोग रहेंगे। कहीं असंगत, अनहोनी बातें घट ही जाएँगी।"

"जो भी घटे लीडर ही जिम्मेदार है।"

"हाँ—यह स्वीकार करते हुए मैंने तुमसे क्षमा याचना कर ली है। और क्या ?"

मुरली कुर्सी से उठकर शिवराम के पास आया। उसके कन्धे पर अपना हाथ रखकर स्नेहपूर्वक कहा—"शिवराम ! नाराज न होना। जो मेरे मन में आया कहा। मानना न मानना तुम्हारी मर्जी है। लेकिन मित्र के नाते कहे विना न रहूँगा।" मुरली शिवराम के सामने मेज के एक छोर पर बैठ गया।

शिवराम ने कहा, "मैं भी मित्र के नाते ही तुम्हारी भलाई का खयाल करके यहाँ चला आया हूँ।"

"फोटो प्रकाशित न करना मेरी भलाई की बात है ?"

"हाँ। तुम उन्हें छापोगे तो कामरेड नाराज होंगे"

"ओहो ! कामरेड नाराज होकर अपने लीडर की परवाह न करके बलवा करने लग जायेंगे···शिवराम ! तुम्हारा ख्याल है कि मैं ऐसी गीदड़ भभकियों से डर जाऊँगा ?"

"डर जाओगे ऐसा नहीं कहता मुरली ! मुझे दुविधा में मत डालो, यही कहने आया हूँ। तुम्हारे स्थान पर और कोई होता तो मैं बिलकुल चिन्ता न करता। चाहे जो भी लिखता मुझे परवाह न होती।"

"शिवराम ! जैसा तुम्हारा एक लक्ष्य है, वैसा मेरा भी एक लक्ष्य है। तुम्हारे लिए विप्लवपार्टी भगवान है तो मेरे लिए वह शैतान है। मैं उसका विरोध करता ही रहूँगा।" मुरली ने दृढ़तापूर्ण आवाज में कहा।

"वह तुम्हारी मर्जी की बात है। लेकिन अब उन फोटों को प्रकाशित मत करो।"

सच्चाई को जनता के सम्मुख पेश करना पत्रिका का धर्म है। उससे मैं हाथ न खींचूंगा।"

"जनता की भलाई के लिए भी सच्चाई पर परदा डाल सकते हैं न ? उन फोटो को छपवाने से अगर शहर में हँगामा मच जाये तो—?"

"विप्लव पार्टी के विरुद्ध जनमत का उठना अच्छा ही है ?"

"विप्लवपार्टी के विरुद्ध खड़े होने का साहस किसी में नहीं है।··· सरकार में भी यह दम नहीं।"

"शिवराम ! चीन और रूस तुम्हारी मदद करेंगे इसी हिम्मत पर ऐसे बोलते हो। जब सरकार देशद्रोहियों का दमन करने का साहस नहीं रखती, तब अखबार, व जनता को ही हिम्मत के साथ आगे आना है। मैं जरूर फोटो प्रकाशित करूँगा। देखते हैं क्या होता है ?"

"सोचा था मेरे सीधे आकर कहने से तुम मानोगे ! अच्छा तुम्हारी मर्जी—" शिवराम हताश भाव से उठ गया।

"तुम खुद पार्टी की पकड़ में आकर मुसीबत उठा रहे हो···लगता है शारदा को भी फंसा लिया।" मुरली ने आहत स्वर में कहा।

"फँसाने को क्या वह नासमझ बच्ची है ? उसकी बुद्धि व चिन्तन जिस सिद्धान्त से प्रभावित होता है, उस मार्ग को उसने चुन लिया। तुम्हारा ख्याल है कि अकेले तुम्हीं चिन्तनशील हो ?" उपेक्षापूर्ण शब्दों को उछालकर शिवराम तीर-सा निकल गया।

मुरली ने फोन का चोंगा उठाकर सह-सम्पादक मुरकानन्दम् से बातें की।

"पेज मेकअप हो गया ?"

"वही हो रहा है सर ! आधे घंटे में हो जाएगा।"

"विप्लवपार्टी द्वारा की गई दंगेबाजी के जो फोटो खींचे हैं, उन्हें छपवाना मत।"

"ब्लाक लेकर मुख पृष्ठ के लिए दे दिया है।"

"कोई बात नहीं। अब उन्हें निकाल देना।"

"यस सर !"

"जरा स्वामीनाथन् को यहाँ भेजना।"

"यस सर।"

कुछ मिनटों के बाद स्वामीनाथन् कमरे में आया।

मुरली ने पूछा—"दिल्ली की सीट बुक हुई ?"

"बुक कर ली। सुना है आप ने उन फोटों को छपवाने से मना कर दिया है।" उसकी आवाज में प्रसन्नता थी।

मुरली को चुप देखकर वह आगे बोला—"सर, हमारा भी यही विचार था। फोटो को छपवा दें और पार्टी वाले गुस्से में कुछ का कुछ कर दें तो··· सर ! आप का डरना सही है···"

"शटअप !" मुरली ऊँची आवाज में चिल्लाया ! "उनसे डरकर मैंने ऐसा नहीं किया है।"

स्वामीनाथन् डर गया। त्रस्त आँखों से मुरली की तरफ देखने लगा।

"तुम फोटो उतारते हो तो उसका ढिंढोरा भी करते फिरना तुम्हारा काम है क्या ?

"सर ! मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।"

"शारदा से किसने कहा ? तुमने ही कहा था न ?"

"मीटिंग में उनसे मिला था। बातों ही बातों···"

"बस ! उसी का फल है यह ।···नहीं तो उन सभी फोटो को छपवा सकते थे। तुम्हें अपना काम देखते जाना है। अनावश्यक ऐरे-गैरे सबसे फोटो-वोटो की बात बघारने की क्या जरुरत थी ?"

"सर, आप के जान पहचान की हैं···इस विश्वास के साथ कहा था ···स्वामीनाथन् ने इतना कहकर मुरली की ओर ध्यान से देखा। उस मर्म भेदी दृष्टि से मुरली आहत हो उठा। तुनककर फट पड़ा—"जाओ, जाओ, प्लेन को देर हो जायेगी, जल्दी जाना !"

स्वामीनाथन् सिर लटकाये बाहर आया। थोडी देर के बाद मुरली अपने कमरे से बाहर आया तो बगल के कमरे में स्वामीनाथन् की आवाज कानों में पड़ी—'एडिटर को भी हमारी तरह ही फोटो छपवाने से डर लगता है। लेकिन उसे प्रकट किये बिना किसी और पर दोष लगा रहे हैं।' यह कहकर वह हंस पड़ा और पेटी लेकर बरामदे में आया।

इधर मुरली उसकी बातें सुनकर मन ही मन हंसता हुआ खड़ा था। मुरली को वहाँ पर देखते ही स्वामीनाथन् सकपका गया।

"सुनो ! दिल्ली में जाकर इस तरह की टीका-टिप्पणी न करते रहना।

केवल कान और आँख खोल कर के रखना। मुंह न खोलना।···आओ··· देर हो गयी। मैं ही तुम्हें हवाई अड्डे पर छोड़ दूंगा।" मुरली धड-धड सीढ़ियाँ उतरने लगा।

× × ×

शिवराम भारतमणी कार्यालय से निकलकर थोडी दूर पर एक घने वृक्ष की आड़ में बैठे नल्लदम्बी की ओर चला। वह बीड़ी का धुआँ निकालता बैठा था। उसे देखते ही उस नल्लदम्बी ने पूछा, "क्या कहा उसने ?"

"सहमत न हुआ।"

"धमकी न दी ?"

"वह डरने वाला नहीं है।"

"यदि फोटो प्रकाशित हो गये तो लोग पार्टी के विरुद्ध हो जायेगें। सुना है जब हमारे व्यक्तियों ने बस में आग लगायी थी, तब फोटो खींचा गया है। फोटो छप गये तो हमारे लोग पकड़े जायेंगे।" नल्लदम्वीं ने चिन्तित स्वर में कहा और बीड़ी का गहरा कश लिया।

शिवराम आगे चलने लगा। नल्लदम्बी ने उसका पीछा किया। चलते-चलते गुस्से में गुर्राया—"लगता है पत्थर की मार काफी नहीं है।"

शिवराम ने टोका—"उस दिन तुम भारी गलती कर बैठे हो। बिना मुझ से कहे क्यों यह सब करते हो ?"

"मैं क्यों कर ऐसा करता ? नेता जी ने ही ज़रा रोबदाब डाले रखने को कहा था।"

"तुम्हें मुझ से पूछना था···"

"पूछता तो तुम मना करते। मुरली तुम्हारा मित्र है।"

"मैं इस प्रान्त का नेता हूँ। पार्टी कुछ करे उसके लिए मैं जिम्मेदार हूँ। समझे !" शिवराम ने ज़रा उत्तेजित स्वर में कहा।

बिना उत्तर दिये बीडी को दूर फेंककर नल्लदम्बी ने तेजी से डगें भरीं। दोनों के कार्यालय में पहुँचते वक्त आधी रात बीत गयी थी। दोनों ऊपर जाकर खुली छत पर लेट गये। शिवराम थोडी देर चिन्तामग्न पड़ा रहा, फिर उठकर बैठ गया। तकिया उठाकर गोद में रख लिया। पास ही

चटाई पर नल्लदम्बी एक घुटना समेटे उसपर दूसरा पैर डाले चित्त लेटा हुआ बड़े मजे से बीड़ी का धुआँ उड़ा रहा था। उसकी आखें छल्लेदार धुंआ-मंडल पर टिकी थीं। थोड़ी देर कोई न बोला। गहरा सन्नाटा छाया रहा।

"विजयवाड़ा के नेता का दुश्मन कौन होगा ? उनका खून क्यों हुआ ?" एकाएक शिवराम ने मौन तोड़ा। नलदम्बी ने मुंह से बीड़ी निकाली और राख झाड़ी। फिर चाँद की ओर देखते हुए मंद दृढ़ स्वर में कहा—"दुश्मनी किस खाक की ! हमारे नेताजी को सुब्बारेड्डी पसन्द न आये। अलावा इसके विजयवाड़ा की पार्टी में रेड्डी ने फूट डालनी चाही।"

"तो···"शिवराम का कलेजा मुंह को आ गया।

"तो क्या ! पार्टी को टुकड़े होते देखते चुप रह सकते हैं ? पार्टी के लिए उसकी वलि चढ़ानी पड़ी, बस।"

शिवराम की आँखें फटी-फटी सी रह गयीं। रीढ़ की हड्डियों में फुरफुरी ने उसे कंपा दिया। लेकिन नल्लदम्बी बड़ी शान्ति से बीड़ी का धुआँ निकालता लेटा था। पिछली रात को मुरली ने उसके कानों में जो कहा, वह बात एकाएक शिवराम की दिमाग में कौंध उठी। ओह ! मुरली का अनुमान ठीक निकला है। पार्टी में रहते हुए भी वह जिस बात को भाँप न पाया, उसे मुरली ने ताड़ लिया है। शिवराम अकुलाया···ओह ! मैं कितना मूर्ख निकला ! इतनी सी बात भी समझ न पाया ? मुरली ने कहा था—'यह पार्टी का भीतरी षडयंत्र हो सकता है। इसमें जरूर वेदमूर्ति का हाथ होगा।' मुरली का अन्दाजा कितना सही निकला है !

शिवराम के आश्चर्य की सीमा नहीं थी। लगा वेदमूर्ति का मुखड़ा—आँखों के सामने आकर अट्टहास कर रहा है। भय से उसने पल भर आँखें भींच लीं।

"कभी-कभी पार्टी की भलाई के लिए ऐसा करने की मजबूरी होती है। द्रोहियों का सफाया न करें तो पार्टी का सर्वनाश हो जाएगा।" नल्लदम्बी ने चाँद को घूरते हुए खरखराते स्वर में कहा।

शिवराम गुमसुम बैठा था।

नल्लदम्बी बोला..."नेताजी के अद्वितीय साहस और अपार सामर्थ्य के

बल पर ही पार्टी यहाँ तक बढ़ी है। ओह कैसी ! तीक्ष्णता है उनमें ! शिकारी कुत्तों को गंध जैसे लग जाती है, वैसे ही इनकी पैनी दृष्टि से द्रोही बच नहीं सकते। देखते ही पहचान लेंगे।"

"सालों से तुम उनके साथ रहते हो न? इसलिए उनके बारे में तुम्हें पूरी जानकारी है।" शिवराम ने धीमी आवाज में कहा। उसका भय अब तक दूर न हुआ था।

"एक समय की बात है। मैं और नेताजी उस वक्त अज्ञातवास में थे। हर कहीं किसानों का आंदोलन जोरों से चल रहा था। विप्लव पार्टी उस वक्त कम्यूनिस्ट पार्टी से अलग न हुई थी। सरकार ने कम्यूनिस्ट लीडरों को कैद करने की आज्ञा दी थी। हम दोनों तीन महीने से तंजाऊर में गुप्तवास कर रहे थे। उस वक्त एक सब इन्सपेक्टर का खून हुआ, और उसका शरीर टुकड़े-टुकड़े करके फिंकवा दिया गया था··· यह सनसनीदार खबर तुमने अखबारों में पढ़ी होगी। याद है शिवराम !" बीड़ी को फेंककर नल्लदम्बी उत्साह से उठ बैठा।

"हाँ—हाँ—याद है। उस समय मैं विद्यार्थी था। हाँ बताओ··· खून किसने किया था?"

तंजाऊर में उस वक्त किसी मन्दिर का उत्सव चल रहा था। हम दोनों गुप्तवेश में लोगों में घुले-मिले खड़े थे। काफी भीड़ थी। थोड़ी दूर पर खड़ा एक सब-इन्सपेक्टर नेताजी की ओर एकटक देख रहा था। वह हमारे नेताजी का क्लास-मेट था। उन्होंने इनको पहचान लिया और मुस्कुराये। लेकिन नेताजी मुस्कुराये नहीं। अजनबी-सा भाव जताये अपना मुँह फेर लिया। सब-इन्सपेक्टर दूसरी तरफ मुड़ा, उसका ध्यान और कहीं गया तो नेताजी थोड़ी दूर पर छद्म वेश में खड़े कामरेड को आँखों के इशारे से सब-इन्सपेक्टर की ओर कुछ संकेत करके भीड़ में खिसक गये। मैं भी उनके पीछे चला गया।···आधे घंटे के अन्दर सब-इन्सपेक्टर का काम तमाम हो गया।"

शिवराम का मुँह वैसे ही खुला रह गया। गला सूख गया। जिह्वा तालू से चिपक गयी कि आवाज ही न निकली। सारा शरीर पसीना-पसीना हो गया। पथराई आँखों से नल्लदम्बी की ओर देखता हुआ, एक-

दो बार, सूखे अधरों पर जिह्वा फेरने लगा।

"ऐसी घटनाएँ एक-दो नहीं।···हूँ इस पार्टी को संगठित करने के लिए नेताजी ने कितना कष्ट उठाया है? कितने···खतरों का सामना किया है, यह बताना मुश्किल है शिवराम!" नल्लदम्बी फिर से चटाई पर चित्त लेट गया और जेब से बीड़ी निकालकर सुलगा ली।

सत्रह

खुली छत पर लेटे शिवराम फिर एक बार उठ बैठा। नल्लदम्बी वैसे ही चित्त लेटा आकाश पर थिरकते चाँद को निहारता लेटा था।

"विजयवाड़ा के खून का यदि पुलिस को पता लग जाए तो?"—शिवराम ने शंका प्रकट की। उसकी आवाज में शंका ही नही, भय भी था। नल्लदम्बी हँसता हुआ उठ बैठा। "अरे भई! हमारी पार्टी इतनी कच्ची है कि पुलिस के हाथ में फंस जाए! बड़ी सफाई से मामला निपट गया। चिन्ता न करना।" लापरवाही जताता हुआ वह आगे बोला—"हमारे नेताजी के पास एक लिस्ट है। जिन-जिन लोगों की गद्दारी पर उन्हें सन्देह है, उनका नाम उसमें रहेगा। जिस नाम के नीचे लाल पेन्सिल की लाइन लगाते हैं, उसका काम तीन दिनों के अन्दर तमाम हो जाएगा। नेताजी का पर्सनल सेकरेट्री दण्डयुद्धपाणी है न? सारा काम उनके जिम्मे है। सारा काम खतम करके रिपोर्ट पेश कर देंगे। नेताजी मुँह खोलकर एक शब्द भी न कहेंगे। दण्डयुद्धपाणी रोज लिस्ट को देखा करते हैं। किसी नाम के नीचे लाल निशानी देखी बस, कमर कसकर अखाड़े में उतर जाते हैं।"

शिवराम ने घृणा से मुँह सिकोड़ लिया। उसने नल्लदम्बी से पूछा,

"ऐसे हत्याकाण्डों से तुम सहमत हो ?"

नल्लदम्बी ने तकिये को गोद में रखकर, उस पर कोहनी टिकाते हुए कहा—"एक दृष्टि से देखा जाए तो यह अनिवार्य है।"

"तो भी···कैसी नृशंसतापूर्ण क्रूरता है ?" शिवराम ने ओठ बिचकाते हुए कहा। उसके दिल की कड़वाहट शब्दों में प्रकट थी।

"हाँ ! क्रूरता ही है। दस साल पहले तिरुनेलवेली में 'कम्यूनिस्ट षडयंत्र' का मुकद्दमा चला था। याद है ?"

"ओ ! जानता हूँ। उन्नीस सौ बावन में वह मुकद्दमा चला। तब मैं स्कूल में पढ़ रहा था।"

"उस वक्त हमारे नेताजी···कम्यूनिस्ट पार्टी के एक प्रमुख व्यक्ति थे। सब के सब उस समय छद्म नाम से फरारी कर रहे थे। उस वक्त नटराजन् नामक एक कामरेड के खून करने की मजबूरी पार्टी के सामने आ पड़ी।"

"तब तुम पार्टी में थे क्या ?"

"हाँ ! था। पार्टी ने आज्ञा दे दी ! मानना पड़ा। और चारा क्या था ? नटराजन् पार्टी का एक मुख्य सदस्य था। एकाएक पार्टी से अलग हो गया। लगभग पुलिस का मुखबिर बन गया। पार्टी ने उसका काम तमाम करने का निश्चय कर लिया। अंबासमुद्रम् के निकट करुणै नदी के तट पर उसकी घात लगाये बैठे थे। हमारे एक कामरेड ने किसी तरह नटराजन् को फुसला लिया और वह उनके बहकावे में आकर उनके साथ वहाँ आ गया। 'बलि के बकरे को करुणै नदी के घाट पर लाओ। वहीं पर दावत चलेगी।' ऐसा दण्डयुद्धपाणी ने एक कामरेड को लिख भेजा था। वह कामरेड नटराजन् का मित्र था।

"चाँद का दूधिया प्रकाश चारों तरफ फैला था। हमें देखते ही नटराजन् के चहरे का रंग उड़ गया। उसपर बड़ी दया आ रही थी। उसने हाथ जोड़े। प्राणों की भीख माँगते हुए गिड़गिड़ाया। उसका वह रोना-धोना व गिड़गिड़ाना अब भी मुझे याद है—शिवराम···वह दृश्य आज भी आँखों में समाया रहता है।"—बोलना छोड़कर नल्लदम्बी ने आकाश की ओर देखा। थोड़ी देर तक अतीत की यादों में खोया-खोया

सा बैठा रहा। फिर बोला—"शिवराम ! उसने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि अब की बार क्षमा करके प्राणों की भीख दे दोगे तो कहीं दूर अनजाने प्रदेश में चला जाऊँगा।···मुझे रोना आ गया। शिवराम ! जरा दूर जाके बैठ गया। जैसा तुम अब सोचते हो, वैसा ही उस वक्त मैंने सोचा था। पार्टी के लिए खून करें ? यही सवाल मेरे मर्म को भेद रहा था। मेरे देखते-देखते एक कामरेड ने उसे धक्का देकर नीचे गिरा दिया। दण्डयुद्धपाणी और एकाध अन्य कामरेड ने उसे उठने न दिया। जोर से उसे दबाते खड़े थे।

"वह रोया, चिल्लाया। 'मुझे मत मारिए ! मत मारिए' ऐसी दर्दनाक पुकार मचाता रहा। वह तिलमिलाता रहा। उन्होंने एक न सुनी। उसके लिंग को एक पत्थर पर रखकर दूसरे पत्थर से जोर की आघात की गयी। जननेन्द्रिय पर करारी चोट लगने से वह असहनीय पीड़ा से तड़पकर चिल्ला। उठा उसकी चिल्लाहट कहीं सुनाई न दे इस ख्याल से उसका मुँह बन्द कर दिया गया। थोड़ी देर में उसकी सारी तड़पन व क्रन्दन शान्त हो गया। थोड़ी दूर पर खड़ा मैं इस वीभत्स दृश्य को, अमानवीय व्यवहार को भय व घृणा से देखता खड़ा था। दण्डयुद्धपाणी ने मुझे बुलाकर कहा—'देखो ! वह अब तक जिन्दा है या नहीं।' मेरे पैर उठे ही नहीं। पेट में मथली सी हो रही थी। लेकिन मुझे आज्ञा का पलना करना था। यही पार्टी का अनुशासन है। नटराजन् के निकट जाकर उसे छुआ। वह तो कब का ठंडा हो चुका था। उसकी धोती खून में लथ-पथ थी। सिर क्या ! उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया था। सिर और धड़ को अलग-अलग स्थान में ले जाकर दफना दिया"···।"*

---

*Court judgement से ये अंश निकाले गये हैं।

A—तिरुनेलवेली सेशन्स कोर्ट—मुकदमा नम्बर ११७/५१ 'तिरुनेलवेली कम्यूनिस्ट षडयंत्र का' मुकदमा'

अभियुक्त—पोन्नु और छियासठ (६६) अन्य व्यक्ति।

जज—वी० शिवसुब्रह्मणियन्: (बाद में मद्रास होईकोट के जज बने और अण्णामलै विश्वविद्यालय के उपकुलपति की हैसियत से काम

नल्लदम्बी थोड़ा रुककर, फिर से नीलाकाश पर तैरते चाँद को अपलक देखता रहा। थोड़ी देर तक वहाँ पर श्मशान सी भयानक शान्ति व्याप्त थी ! शिवराम के दिल में तहलका सा मच गया। वह आतंकित हो उठा। भय और घृणा उसके पेट में खलबली मचाने लगी। उसकी सूनी दृष्टि नल्लदम्बी की ओर ताक रही थी। 'ओह ! ऐसी बर्बरता'··· शिवराम बुदबुदाया।

"हाँ ! उस वक्त मेरा भी यह ख्याल था। तीन दिनों तक उन्मत्त सा इधर-उधर भटकता फिरा। आँखों के समक्ष वह भयंकर दृश्य बार-बार आकर मुझे परेशान करता रहा···ओह ! मैं कितना व्याकुल हो उठा। मेरी नींद हराम हो गयी। न जाने कितनी बार मेरी नींद एकाएक खुल जाती और मैं हड़बड़ाकर उठ बैठता।···शिवराम ! कम्यूनिस्ट

किया।) २४-३-१९५२ से २३-७-१९५२ तक यह मुकद्दमा चला। फैसला सुनाने का दिन—११-८-१९५२।
सजाएँ—सोलह व्यक्तियों को आजन्म कारावास। पहला एक साल सख्त कारावास।

B—उक्त मुकद्दमे में जो फरार बाद में पकड़े गये, उनपर जो मुकद्दमा चलाया गया उसका विवरण इस प्रकार है—
सेशन्स का मुकदमा १ नम्बर ९९/५३
"तिरुनेलवेली षडयंत्र का मुकदमा"
अभियुक्त—बालदण्डायुधम् और दो व्यक्ति (ये लोग पहले मुकद्दमे के वक्त फरार थे। बाद में पकड़े गये।)
जज—पी० एस० केशवन् नम्बूतरी।
फैसले का दिन—२-११-१९५३।
सजाएँ—बालदण्डायुधम और एक को आजीवन कारावास मिला। बालदण्डायुधम् चौदह साल तक कारावास की सजा भोगकर १९७३ में दिल्ली में हवाई जहाज की दुर्घटना में मार गया। इसी दुर्घटना में कम्यूनिस्ट लीडर मोहनकुमार मंगलम् जो बाद में इन्दिरा गाँधी के मंत्रिमण्डल में मंत्री बने थे, भी मारे गये।

पार्टी के इतिहास में ये सब बिलकुल मामूली बातें हैं। रूसी कम्यूनिस्ट पार्टी में स्टालिन ने क्या कम हत्याएँ कराई हैं ? अपने साथी कामनेव, रैकाव, बुकारिन, जीनोवीप, ट्राटस्की आदि को मौत के घाट उतार दिया। चीन में माओ-त्से-तुंग के हाथों पर न जाने कितनों का खून लगा है ? खेतों में फसल उगाने के लिये जैसे घास फूस की निराई करनी पड़ती है, वैसे ही पार्टी में एकाधिकार को बनाये रखने के लिए ऐसी काट-छाँट करनी पड़ती है। पार्टी के दृष्टिकोण में इनका कोई महत्व नहीं। बिलकुल मामूली बातें हैं। विजयवाड़ा की यह घटना भी कुछ ऐसी ही है। नेताजी की लिस्ट में जिसके नाम के नीचे लाल लकीर पड़ती है, वह बच नहीं सकता।" नल्लदम्बी फिर से लेट गया।

शिवराम के रोंगटे खड़े हो गये। धीरे से पूछा—"और किस किसका नाम लिस्ट में है ?"

"कौन जाने ? वह तो रहस्य की बात है। केवल दण्डपाणी जानते हैं। लेकिन वे फौलादी आदमी हैं। अंग-अंग कट जाए, फिर भी उनके मुँह से एक शब्द न निकलेगा।"

"तुम हैदराबाद क्यों बुलाये गये ?"

"तुम्हारे हाथ में कुछ दस्तावेजों को सौंपना था, इसलिए। मेज के दराज़ में रखे हैं। कल सबेरे देख लेना। नेताजी को तुम से बड़ा प्यार है। रूस में जो अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी सम्मेलन होने वाला है, उसमें तुम्हें प्रतिनिधि के रूप में भेजने का इरादा है। शायद तत्सम्बन्धी कागज़ात हों। लिफाफे पर सील लगी है। तुम्हीं को खोलकर पढ़ना है।"

"अरे ! इसे पहले ही क्यों नहीं बताया ?"

"अभी-अभी तुमसे बोलने का मौका मिला।···मैं यहाँ आते ही हड़ताल, 'बंद' इत्यादि के इन्तजाम में लग गया न ?" नल्लदम्बी ने जम्भाई ली। उसे नींद आने लगी थी।

शिवराम तुरन्त नीचे उतर आया। मेज का दराज खोलकर लिफाफे को निकाला। टेबिल लैंप जलाकर कुरसी पर बैठ गया। मुड़कर देखा कि दरवाजा बन्द है या नहीं। वह बन्द था। उठा और खुली खिड़कियों को बन्द करके फिर कुरसी पर आ बैठा। लिफाफे पर लाख की मुहर

लगी थी। उसे हटाकर लिफाफा खोला। अन्दर विप्लववादी की मुहर लगा एक कागज था। बड़ी उतावली से पढ़ना शुरू किया। शुरू के दो तीन वाक्य पढ़ते ही उसका चेहरा खिल उठा।

लिखा था—"रूस में जो अन्तर्राष्ट्रीय विश्व कम्यूनिस्ट महासम्मेलन होने वाला है, उसमें विप्लवपार्टी के प्रतिनिधि के रूप में तुमको भाग लेना होगा। इसलिए उसका आयोजन अभी से शुरू कर दो। लौटते वक्त चीन से होकर आना पड़ेगा।" यह पढ़ते ही अब तक की सारी वेदना-व्याकुलता और बेचैनी एकदम गायब हो गयी। नये जोश और उत्साह का अनुभव होने लगा। मन ही मन वेदमूर्त्ति को धन्यवाद दिया। थोड़ी देर तक रंगीन कल्पनाओं में थिरकता रहा। रूस और चीन आँखों के सामने तैरते आये। भ्रम हुआ कि वह रूसी नेताओं और माओ से बातें कर रहा है। यों मीठी-मीठी कल्पनाओं का आनन्द लेता रहा कि जैसे एकाएक होश में आया हो, हाथ के कागज पर नजर दौड़ायी—"शारदा को पार्टी में लेने की रस्में पूरी करने के लिये एक-दो दिनों में कान्तामणी आनेवाली है। इसके बाद पार्टी का शिक्षण लेने शारदा को कान्ता के साथ उत्तर भारत के गुप्त स्थान पर भेज देना है।"

इसके बाद विजयवाड़ा काँड पर लिखा था—

"विजयवाड़ा में निराई का काम पूरा हो गया। पूंजीपतियों पर सारा दोष मढ़ना है। इसके प्रचार में तीव्रता से लग जाना है।" यह पढ़ते ही अनायास शिवराम का शरीर सिहर उठा। कुछ और सूचनाएँ भी दी गयी थीं। पूरा पढ़ने के बाद शिवराम ने उसे दराज में रखकर ताला लगा दिया। छतपर लौट आया तो देखा—नल्लदम्बी अब तक सोया नहीं था। करवटें बदलता रहा। शिवराम भी लेट गया। मगर नींद कहाँ? अपनी रूस यात्रा की सूचना पाने की खुशी, विजयवाड़ा के खून पर लगा धक्का—दोनों ने उसकी नींद भगा दी।

अगले दिन सूर्य की गर्मी शरीर पर लगने के बाद ही दोनों की नींद खुली। नल्लदम्बी नीचे जाकर 'भारतमणी' ले आया। उसमें पिछले दिन की हड़ताल व बंद से सम्बंधित फोटो को न पाकर वह सकते में आ गया। बोला—"शिवराम! फोटो छपवाया नहीं है। लगता है मुरली डर गया।"

"मुरली के बारे में तुम्हें क्या मालूम। वह ऐसी गीदड़-भभकियों से डरने वाला नहीं। देखने में बड़ा सीधा-सादा सा लगता है, मगर अन्दर से फौलादी है। सोच विचार करके एक निश्चय पर आ जाएगा तो कोई भी शक्ति उसे अपने इरादे से बदल नहीं सकती। मैंने सीधे उससे मिलकर कहा था कि फोटो का प्रकाशन मत करना। बस! मेरी बात का ख्याल रखकर उन्हें नहीं छपवाया है—मेरी धमकी या डर कर नहीं।"

"तो किसी तरह उसे पार्टी में खींच लो न?" नल्लदम्बी ने हल्के से कहा।

"असंभव है। उसका दृढ़ विश्वास है कि कम्यूनिज्म का सिद्धान्त मानव की बुनियादी प्रवृत्ति के ही विरुद्ध है। ऐसे व्यक्ति को पार्टी की तरफ कैसे झुका सकते हैं? उससे तर्क करने लगें तो हमारे लिए आफत है। अपने तर्क-वितर्क से हमें उल्लू बना देगा।"

"वह हमारे पक्ष में आ जाए तो 'भारतमणी' का बल भी हमें मिल जाएगा।"

"उस पत्रिका का लक्ष्य ही कम्यूनिस्ट सिद्धान्तों का विरोध करना है।"

"यह कब तक टिक सकेगी। 'स्वरप्रभाती' के निकलते ही इसकी पकड़ ढीली होने लग गयी। अब बहुत जल्दी ही पस्त पड़ जाएगी।"

"मुरली उतनी आसानी से हार न मानेगा। यदि 'भारतमणी' की ऐसी स्थिति आ जाए—वह मुरली व उसकी पत्रिका के लिए हानि नहीं। तमिलनाडू को इसके लिए अपमानित होना पड़ेगा।"

"भूल न जाना! वह हमारा सैद्धान्तिक विरोधी है।" नल्लदम्बी ने हँसते हुए कहा।

"होने दो! क्या हर्ज है! पत्रिका धर्म, पत्रकार की स्वतंत्रता की रक्षा करने में सबसे आगे रहनेवाली स्तरीय पत्रिका है वह। यदि तमिलनाडू को अपना गौरव रखना है तो 'भारतमणी' को मिटने नहीं देना है।" शिवराम ने आवेश के साथ कहा।

नल्लदम्बी ने उसे आश्चर्य से देखा।

"अरे! रे! लगता है तुम्हीं उसके एडिटर हो—

"पत्रिका की बिक्री का ख्याल न करके मेरी बात का ख्याल रखकर उन फोटो को नहीं छपवाया। उसकी उदारता व सज्जनता के लिए बस यही बात काफी है।" शिवराम ने गर्वित स्वर में कहा।

"जो भी हो, शिवराम! याद रखना। मुरली और 'भारतमणी' हमारे दुश्मन नम्बर एक हैं। नेताजी 'भारतमणी' पर सख्त नाराज हैं।"

इतने में फोन की घंटी बजी। शिवराम ने फोन उठाया। विजयवाड़ा के विप्लव कार्यालय से ट्रंक कॉल आया था। खबर आयी कि पिछले दिन जो हड़ताल—बंद मनाये गये उसमें पार्टी को पूरी सफलता प्राप्त हुई है। पाँच बसों में आग लगायी गयी इत्यादि, इत्यादि। फोन को रखते ही शिवराम ने नल्लदम्बी के हाथ से 'भारतमणी' ले ली। दूसरे पृष्ठ पर बड़े-बड़े अक्षरों में शीर्षक देकर, विजयवाड़ा की हड़ताल—बन्द-दंगेबाजी की सनसनीदार खबरें छपी थीं। साथ ही संपादकीय लेख भी इस बात पर लिखा गया था। शिवराम जोर से पढ़ने लगा—

···खूनी कौन है, इसका पता लगने के पहले ही इतना हल्ला व दंगेबाजी क्यों? खूनी कौन है इसका पता लगने पर, खूनी पूंजीपतियों का आदमी है, यह सिद्ध होने पर यह हल्ला मचाते तो संभव है कामरेडों को जनता की सहानुभूति मिलती। जिस दिन खून हुआ है, उसी दिन रात को खून पर अपना रोष प्रकट किये बिना, कामरेड गुमसुम रह गये। अगले दिन जब पुलिस खूनी का पता लगाने में मुस्तैदी से लगी, तब उनका इस तरह होहल्ला मचाना, दंगाबाजी करना आदि बातें हमारे ध्यान देने के विषय हैं। 'उलटा चोर कोतवाल को डाँटे' जैसी बात न हो! विप्लववादियों के अटल विश्वासों में यह भी एक है कि चीख, पुकार और जोरों से प्रचार करने पर सच्चाई छिप जाएगी। लेकिन इस बात से लोगों को सावधान रहना है···

नल्लदम्बी क्रोध से फुफकार उठा—"देखो! मुरली की सज्जनता की डींग मारी थी न? क्या लिखा है देखो! उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे! ओह! इन लोगों को बढ़ने दें तो···।"

"हम कैसे रोक लगा सकते हैं? पत्रिकाओं को लिखने की आजादी

"रूस और चीन में जैसे इन पत्रकारों और लेखकों पर दबदबा डाले रखते है, गला घोंटते रहते हैं, वैसा रखें तभी इनकी अक्ल ठिकाने आयेगी।" नल्लदम्बी ने झल्लाते हुए आगे कहा—"आजादी है आजादी !...।"

"देखते रहना ! स्वर प्रभाती को लेकर ही इसके लिए गढ्ढा खोद दूंगा। आदिमूलम् जरा मन्द बुद्धि का है। सुझाव दें तो वैसा कर लेगा।"

"तुम क्या करने वाले हो ?"

"भारतमणी को मिट्टी में मिला देने वाला हूँ। देखते रहना आदि-मूलम् की आड़ लेकर इस मुरली को राह का भिखारी बना दूंगा।" नल्लदम्बी गुर्राया।

"तैश में आकर कुछ का कुछ न कर देना। मुरली को मैं समझा दूंगा।"

"इस विषय पर तुम्हें बहुत सावधान रहना है। मुरली तुम्हारा मित्र है...इसलिए तुमने उसके प्रति लापरवाही व नरमी जतायी तो तुम्हें पार्टी को जवाब देना होगा। शिवराम ! कहे देता हूँ। इस मामले में नेताजी बड़े सीरियस हैं।"

शिवराम को चेतावनी सी देकर नल्लदम्बी ने आदिमूलम् को फोन करने के लिए चोंगा हाथ में लिया।

अठारह

नई दिल्ली में उस दिन लोकसभा की बैठक शुरू होने के एक घंटे पहले ही स्वामीनाथन् संसद भवन में पहुँच गया। लाबी में संसद सदस्य झुंडों में खड़े बातें कर रहे थे। प्रमुख नेता अशान्त व बेचैन नजर आये।

स्वामीनाथन् ने एक-दो सदस्यों से बातें कीं तो उसे बेहद निराशा हुई। कुछ सदस्य निरे गंवार और इतने मूर्ख निकले कि दुनिया की राजनीति से बिलकुल बेखबर थे। गाँधी टोपी और खद्दर का कुरता पहने बरामदे में खड़े कुछ सदस्यों के पास वह गया। उनमें से एक से पूछा—"जी ! आज कोई नई खबर है ?" उन्होंने बिना उत्तर दिये उसकी तरफ घूरा। स्वामीनाथन् ने अपना प्रश्न दुहराया। "इंगलिश···नो···हिन्दी···" हिन्दी में भी हकलाते रहे। उनको अंग्रेजी नहीं मालूम, यह जानकर स्वामीनाथन् हिन्दी में बोलने लगा। इतने में तमिलनाडू के एक सदस्य वहाँ आ गये। उनको भी अंग्रेजी नहीं आती थी। लेकिन दो चुनावों में जीतकर लोकसभा का सदस्य हो जाने के कारण उलटी-सीधी हिन्दी बोल लेते थे।

स्वामीनाथन् ने तमिल में पूछा—"आज की सभा में कोई विशेष बात है ?"

"हमेशा की बात है···बस" जोरों की हँसी के बीच में उन्होंने कहा।

"सुना है···सीमा पर चीन सड़क बना रहा है।"

"हूँ···बना ले रोड···क्या हर्ज है ?"

"हमारे लिए खतरा है न ?"

"कोई खतरा नहीं। चीन को रोटी का लाला पड़ रहा है, हमला क्या खाक करेगा ! ऊँची आवाज में चिल्लाकर अपने राजनैतिक ज्ञान पर गर्व करते हुए तमिलनाडू के सदस्य ने एक बार चारों तरफ दृष्टि डाली। स्वामीनाथन् को बड़ी हँसी आयी। अन्य सदस्यों की ओर देखा। इनके तमिल का संभाषण वे समझ न पाये। आँखें फाड़े देखते खड़े थे।

स्वामीनाथन् ने उत्तर भारतीय सदस्य से हिन्दी में पूछा—"पंच-वर्षीय योजना पर आपका क्या विचार है ?"

"योजना अत्यावश्यक है।" उन्होंने बड़ी गंभीरता से कहा।

"लेकिन विदेशों का हम पर कर्जा बढ़ता जा रहा है। सूद का बोझ भी बढ़ता है न ?" स्वामीनाथन् ने पूछा।

एक सदस्य ने टोका—"यही तो भारी झंझट की बात है। हम क्यों कर कर्जा लें ? नेहरूजी को बिलकुल समझ नहीं। अन्य देशों से मैत्री

भाव जताने के लिए इस तरह उन देशों से कर्जा ले रहे हैं। हम तो नोट छपवाते हैं न ? अनावश्यक कर्ज का बोझ क्यों बढ़ा लें ? नोटों को कुछ अधिक संख्या में निकाल लें तो काम बन जाय।"

एक सदस्य ने तमिलनाडू के सदस्य से कहा—"आपके राजाजी बड़े चालाक हैं। हमारे लिए आवश्यक धन हेतु हम खुद ही नोट छपवा लें, ऐसा उन्होंने नेहरू को सुझाव नहीं दिया है।"

एक और उत्तर भारतीय क्रोध से फुफकार उठे—"ओह! वे तो हमारी सरकार को उलटने पर कमर कसे बैठे हैं। नहीं तो जो विदेशों से कर्ज लेने से मना करते रहते हैं, वे नोटों को छपवाने की बात क्यों नहीं कहते? इसी से साफ है कि वे कितने बड़े कूटनीतिज्ञ हैं।"

तमिलनाडू के सदस्य उत्तर न दे पाये। फिर टूटी-फूटी हिन्दी में बोले—"क्या करना ? नोट छपवाने के लिए भी विदेशों से पेपर मंगवाना पड़ता है न ?"

स्वामीनाथन् का सिर चकराने लगा। ओह! यह क्या हमारे गण्य मान्य संसद सदस्य ही ऐसा ज्ञान बघार रहे हैं ? उसे विश्वास न हुआ। लेकिन याद आया कि भारत में हर वयस्क को मतदान देने तथा चुनाव में लड़ने का अधिकार है। चुपचाप वहाँ से खिसक गया।

सभा शुरू होने का समय आ गया। संसद सदस्य जल्दी-जल्दी सभा में आये। स्वामीनाथन् संवाददाताओं के लिए नियत स्थान पर जाकर बैठ गया। प्रधानमंत्री तथा अन्य मंत्रिगण अपने-अपने स्थान पर विराजमान थे। कार्रवाई शुरू हुई। स्वामीनाथन् बड़े ध्यान से टिप्पणियाँ ले रहा था। देखा पीछे की कतारों में कुछ सदस्य बैठे-बैठे ऊंघ रहे थे। कुछ जंभाईयाँ लेते इधर-उधर देख रहे थे। स्वामीनाथन् को यह सब बड़ा तमाशा सा लगा। प्रश्नों का समय आते ही सभा में थोड़ी-सी जान आ गयी। जिस प्रश्न की प्रतीक्षा में वह आया था, वह प्रश्न पूछा गया।

पहला प्रश्न था कि भारतीय सीमा पर स्थिति बड़ी नाजुक है क्या ? इसके बाद चीनी आक्रमण की कोई सूचना मिली है ? वहाँ पर स्थिति कैसी है, पंचशील का क्या हुआ—ऐसे प्रश्नों की झड़ी सी लग गयी। सुरक्षामंत्री और प्रधान-मंत्री ने प्रश्नों का उत्तर दिया। मगर उत्तर सीधे

नहीं थे। टाल-मटोलकर कुछ कहा गया कि सभा में हलचल-सी मच गयी। एक सदस्य ने उठकर ऊँची आवाज में पूछा, "भारतीय सीमा में लद्दाख प्रदेश के बीच में कारटोक नामक स्थान से लेकर यारकण्ड तक चीनियों ने सड़क बनायी है क्या ? इस सड़क कोब ने एक साल से ज्यादा हो गया है क्या ?" दोनों सवाल साफ़ और स्पष्ट थे। सवाल सीधा था इसलिए पहले सुरक्षामंत्री या प्रधानमंत्री ने तुरन्त उत्तर न दिया। सारी सभा उनके उत्तर की प्रतीक्षा में बैठी थी। कुछ क्षणों तक सभा में सन्नाटा छाया था। स्वामीनाथन् की आँखें नेहरूजी पर टिकी थीं। वे अपने सामने मेज पर रखे एक कागज को थोड़ी देर घूरते रहे। लगा उत्तर देने में वे थोड़ा हिचकिचा रहे हैं। वे आसन से उठे। उनके चेहरे के भाव से लगा कि किसी अप्रिय बात को बताने की मजबूरी में पड़े हैं। वे बोले, "एक-दो साल पहले चीनियों ने कारटोक से यारकण्ड तक सड़कें बनायी। हमें सूचना मिली है कि वह सड़क हमारे उत्तर पूरबी सीमा में लद्दाख प्रदेश के अंतर्गत एक छोर से गुजरी है। लेकिन वह जगह बहुत दूरी पर निर्जन प्रदेश है, जहां पर लोग आसानी से पहुँच नहीं पाते। इसलिए इस बात को लेकर चिन्तित होने की जरूरत नहीं।"

यह सुनते ही सभा में पूर्ववत् हलचल मच गयी।

प्रधानमंत्री फिर बोले—"जो जो मुख्य व जरूरी बातें हमारे सामने पड़ी हैं, उन्हें छोड़कर अपनी शक्ति व समय को इस ओर लगाने योग्य यह उतनी महत्त्वपूर्ण बात नहीं है। इस प्रदेश में घास-फूस भी नहीं उगता।"

तुरन्त एक गंजे सिर वाले सदस्य उठकर खड़े हो गये। "मेरे सिर में भी बाल नहीं उगते, क्या इसका अर्थ यह है कि यह फालतू व बेकार है ?"

यह सुनते ही सारी सभा हँस पड़ी। किसी कोने से एक सदस्य ने आवाज दी, "हाँ ऐसा ही लगता है।"

गंजे सिर वाले सिर पर हाथ फेरते हुए इधर-उधर देखने लगे कि किसने उन पर ऐसा ताना मारा है ?

अब पहले प्रश्नकर्त्ता फिर खड़े हो गये, पूछा, "इसका अर्थ है कि हमारे देश की सीमा तथा सुदूर प्रदेशों में जहाँ-जहाँ किसी की पहुँच नहीं है, वहाँ पर चाहे जो भी देश, प्रवेश कर अपनी सड़क बना सकते हैं ?

सैनिक अड्डे जमा सकते हैं ?"

इस प्रश्न के साथ सभा में मानो भगदड़ सी मच गयी। सभापति ने सभा में शान्ति स्थापित करने की प्रार्थना की। प्रश्नकर्त्ता अब भी शान्त न हुए। वे क्रोध पूर्ण आवाज में बोलते गये, "उस प्रदेश की निगरानी करने हमारी सीमा रक्षक पुलिस गयी, चीनियों ने उनको मना ही नहीं किया, कैद भी कर लिया। हाँ बाद में छोड़ दिया। लेकिन बात वहीं खतम हो गयीं क्या ? वह सड़क अब तक वैसी ही बनी पड़ी है। चीन का आक्रमण भी हुआ है। इस सिलसिले में हमने अब तक कोई कारवाई नहीं की है।"

एक और सदस्य ने बीच में उठकर टोका, "यह बात क्यों संसद से छिपा कर रखी गयी ? संसद से प्रधानमंत्री का विश्वास उठ गया है क्या ? संसद की मदद इस मामले में ली जा सकती थी।" उनका यह गर्जन सुनते ही फिर से सभा में हलचल, चीख, पुकार मच गयी। सदस्यगण तरह-तरह की बातें करने लगे। अध्यक्ष की बड़ी कोशिश के बाद कुछ मिनटों के लिए सभा खामोश हुई। विपक्षी लोग पूरे जोश में थे। अकेले कम्यूनिस्ट गुमसुम बैठे थे। स्वामीनाथन् मन में झुलस रहा था। प्रश्नों का सही उत्तर देने में सरकारी पक्ष को कितना समय लगता है ! झटपट उत्तर दे नहीं पाते। प्रधानमंत्री फिर से उठे तो सभा में थोड़ी शान्ति आई।

नेहरूजी के चेहरे पर थकान व चिन्ता पुत गयी थी।

"सभा की मदद लेने का मामला उतना महत्वपूर्ण है ही नहीं। हाँ, उन्होंने हमारी जानकारी के बिना ही सड़क बना ली है। इस मामले में उनसे चिट्ठी-पत्री चल रही है। आशा थी कि पत्र-व्यवहार द्वारा इस मामले का हल निकाल सकते हैं, इसीलिए इस मामले को सभा के सम्मुख पेश करने की बात नहीं आयी। सोचा था उचित मौके पर सभा में इस मामले को पेश करें।" इतना कहकर वे अपने आसन पर बैठ गये।

इसके उपरान्त भी कई सदस्यों ने प्रधानमंत्री तथा सरकार की कड़ी आलोचना की। कुछ लोगों का कहना था कि दो सालों से इस मामले को गुप्त रखना सबसे बड़ा अपराध है। अन्त में सभा विसर्जित हुई। स्वामीनाथन् ने 'भारतमणी' को लोकसभा की कार्रवाईयों की तार द्वारा खबरें

भेज दीं। साथ एक लेख भी लिखकर उसी दिन की डाक में छोड़ दिया।

मुरली ने बड़े ध्यान से उसका लंबा-चौड़ा लेख पढ़ा। स्वामीनाथन् का आक्रोश, देश की तत्कालीन परिस्थिति पर जनता के मन में उठी हुई आकाँक्षाओं की कल्पना एक हद तक मुरली समझ गया था, फिर भी इसके लिए प्रधानमंत्री को जिम्मेदार ठहराकर सारा दोष उनके सिर मढ़ना उसे उचित न लगा। यद्यपि स्वामीनाथन् ने अपने लेख में देश के प्रधानमंत्री तथा संसद पर सीधा आक्षेप नहीं किया था फिर भी इस बात पर ज़ोर दिया था कि सीमा पर जो कुछ चल रहा है, उसे संसद के ध्यान में न लाकर प्रधानमंत्री के नाते नेहरूजी ने सबसे बड़ी गलती की है। मुरली ने काँट-छाँट किए बिना लेख को प्रेस में दे दिया। 'भारतमणी' में उस लेख के प्रकाशित होते ही सरकार की तरफ से विरोध हुआ। सरकार के प्रधान सचिव मिस्टर उमापति ने मुरली को फोन किया—

"मिस्टर मुरली ! आपने प्रधानमंत्री का अपमान कर दिया है। आपके संवाददाता स्वामीनाथन् का लेख आक्षेपनीय है। हमें इस पर आपत्ति है।"

"अपमान नहीं किया है, आरोप लगाया है। इस आक्षेप को मैं भी स्वीकारता नहीं।"

"तब लेख क्यों प्रकाशित किया ?"

"भारत को जो आजादी मिली वह इस तरह स्वतंत्र चिन्तन करने और अपने चिन्तन को प्रकट करने के लिए है। यह तो मानव की बुनियादी आजादी है न ?"

सचिव ने पलटकर नाराजगी से कहा—"तो प्रधानमंत्री पर आघात करें ?"

"प्रधानमंत्री तो क्या, स्वयं ईश्वर का भी विरोध करना पड़े तो 'भारतमणी' उसके लिए तैयार रहेगा। 'भारतमणी' लेखन और चिंतन की स्वतन्त्रता को सबसे महत्वपूर्ण समझता है। भारतमणी का आदर्श, उसका प्राण यही है। सर ! आपकी धमकी में आकर मैं अपने संवाददाता की लेखन स्वतन्त्रता में दखल नहीं दे सकता।"

सचिव का मारे गुस्से के टेलीफोन पटकना सुनाई दिया।

अगले दिन विदूषक के कार्टून ने शहर में सनसनी पैदा कर दी।

प्रधानमंत्री एक भारी भरकम कुम्हड़े को चावल के कणों में छिपाने की कोशिश में लगे हैं। संसद के सदस्य आस-पास खड़े देख रहे हैं। कार्टून के नीचे लिखा था—'भारतमणी के विशेष संवाददाता की कल्पना।'

सचिव ने उस दिन भी फोन किया।

"विदूषक के कार्टून पर मंत्रीगण सख्त नाराज हैं।"

"सन्तोष की बात है। अर्थात् विदूषक का कार्टून इतना सशक्त है। कल मेरे विशेष संवाददाता का जो लेख प्रकाशित हुआ है उसके लिए यह कार्टून उपयुक्त है। मुझे कल ही लेख के साथ यह कार्टून देना चाहिए था। देरी हो गयी।"

"मिस्टर मुरली ! इसमें आपकी भलाई नहीं दीखती।"

"भले बुरे की आशा से अपनी राय प्रकट करना पत्रिका का धर्म नहीं।"

"कोरे सिद्धान्त और लक्ष्य से पेट नहीं भरेगा।"

"यदि ऐसे बेमौत मरना पड़े तो दोष लक्ष्यवादी का नहीं होगा।"

"मिस्टर मुरली ! आपका लक्ष्य, आपका विचार···सब कुछ मेरी समझ में आता है। समझता हूँ। फिर भी मित्र के नाते एक बात कहता हूँ। आपकी हठधर्मी के कारण आपको हानि उठानी पड़ेगी। सरकारी कार्यालय, वाचनालय, पुस्तकालयों में आगे से 'भारतमणी' खरीदा नहीं जाएगा—ऐसा गश्ती-पत्र भेज दिया गया है।" उमापति की आवाज में उनकी हार्दिक वेदना प्रतिध्वनित हो रही थी।

"ओह ! प्रतिशोध का श्रीगणेश हो गया है ? लेकिन ऐसा गश्ती-पत्र आमको ही भेजना है न ?"

"हाँ। हुकुम जारी करने के लिए विवश हूँ। मंत्रियों से ऐसा आदेश मिला है। मेरा क्या वश है ? आगे से सरकार की तरफ से कोई विज्ञापन भी आपकी पत्रिका को प्राप्त नहीं होगा। आप जरा अपना रुख बदल लें तो मैं इस आज्ञा को बदलने के लिए सिफारिश कर सकता हूँ।

सरकार से अनावश्यक क्यों तकरार मोल लेते हैं आप?"—उमापति के स्वर में सहानुभूति थी।

"मिस्टर उमापति! आपकी तरह मैं भी विवश हूँ। सच्चाई को आवाज देने के लिए मैं मजबूर हूँ। अगर मैं 'भारतमणी' का संपादक न होकर पाकेटमार होता तो झूठ-मूठ की गप्पें लड़ाता फिर सकता था।··· मिस्टर! आपकी सहृदयता व भलमनसाहत को समझ लिया। यह भी मालूम हो गया कि आप मेरी सहायता करने में असमर्थ हैं। प्लीज डोण्ट वरी।" मुरली ने फोन रख दिया।

असल में मिस्टर उमापति ने जो कुछ कहा था, उसने उसे चिन्ताकुल कर दिया। आगे सरकारी कार्यालय व दफ्तरों में 'भारतमणी' मना कर दी गयी है। सरकारी विज्ञापन भी नहीं मिलेंगे। 'भारतमणी' की बिक्री कम होती जा रही है, ऐसी हालत में, यह भारी धक्का भी लग गया··· मुरली उदास हो गया। पत्रिका की बिक्री कैसे बढ़ाई जाए···यह सोचते हुए आरामकुर्सी पर आँखें मूंदे पड़ा था। मन बुझा-बुझा सा था। तभी खुशी से उछलता हुआ शिवराम अंदर आया। आते ही कहा—"मुरली, बहुत धन्यवाद।···फोटो को न छपवाने के लिए···" वह सामने पड़ी कुरसी पर बैठ गया। फिर बोला—"मुरली! मुझे रूस जाना है। 'विश्व कम्यूनिस्ट सम्मेलन' में भाग लेने जा रहा हूँ।"

"ओह! अवश्य जाना है तुम्हें। लेकिन एक बात याद रखना। रूसी सरकार जो-जो दिखाती है उसे मात्र देखकर मत लौटना। वहाँ के मजदूर व किसानों से मिलकर बातें करना। तभी असलियत का पता लगेगा।"

"क्यों तुम्हारा विचार है कि वे कम्यूनिज्म के विरुद्ध बोलेंगे?"

"नहीं, नहीं···ऐसा बोलने का उन्हें उस देश में कोई अधिकार नहीं। तुम उनसे मिलोगे तो उनके चेहरे के भाव से, आंखों से तुम्हें सच्चाई की झाँकी मिलने की संभावना है। अलावा इसके तुम यह भी जान सकते हो कि रूस में मानव को व्यक्तिगत स्वतंत्रता कहाँ तक प्राप्त है? लेकिन तुम चीन जाओगे तो और भी अच्छा होगा।"

"लौटते वक्त शायद चीन से होकर ही आऊँगा।"

"हाँ जरूर जाना। देखें लौटने पर तुम्हारी अक्ल ठिकाने पर आती है कि नहीं।" मुरली ने हँसते हुए कहा।

"शायद और भी उग्रवादी बनूंगा।"

"अच्छा, वहाँ पर अपनी बुद्धि को गिरवी रखे बिना लौटो तो अच्छा रहे। वही बहुत कुछ है। ब्रेन वॉश (Brain wash) उन देशों में चलता है। सावधान रहना।"

"अरे ! मैं तुमसे एक जरूरी बात कहने आया था।" शिवराम ने आवाज धीमी कर ली। "स्वर प्रभाती के आदिमूलम् से जरा सावधान रहना।"

"क्यों ! मेरा उनसे परिचय ही नहीं। अब तक उन्हें देखा भी नहीं।"

"भारतमणी को मिटा देने का आदिमूलम् प्रयत्न करेगा।"

"कैसे मिटा सकता है ? 'स्वर प्रभाती' के प्रकाशन के बाद 'भारतमणी' की बिक्री कम हुई है···यह तो सच है, मगर···शिवराम, मेरे अपने पाठक हैं।" मुरली ने विश्वासपूर्ण स्वर में कहा।

"तरह-तरह के रोड़े अटकाये जायेंगे। कोई छल-प्रपंच चलता है—इतना जानता हूँ। लेकिन कैसे तुम्हारी पत्रिका को हानि पहुँचायेंगे, यह नहीं जानता।"

"भारतमणी पर इतना गुस्सा क्यों ?"

"तुम अक्सर पत्रकार का धर्म, कर्त्तव्य इत्यादि पर आवाज निकालते रहते हो न ? उन्हें लगता है कि 'स्वर प्रभाती' को लक्ष्य करके ही आवाजें कसते हो। उन लोगों ने 'भारतमणी' को मिट्टी में मिला देने की कसम खा रखी है।"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?"

"साजिशें चलती हैं, इसका पता है। कुछ और नहीं जानता।"

"मुझे आशा है कि लोग एक स्तरीय पत्रिका को मिटने न देंगे।"

"मुरली ! जनता पर विश्वास न रखना। आजकल स्तर का उन्हें बिलकुल ख्याल नहीं। लोगों का स्तर क्या है, इसका पता असल में आदिमूलम् को ही मालूम है। देखो न···छूटते ही डेढ़ लाख प्रतियों का

मार्केट बना लिया है।"

मुरली थोड़ा घबराया। फिर भी जन्मगत हठधर्मी और साहस ने उसे उत्तेजित कर दिया। आवेश के साथ कहा—"चाहे प्राण भी जाएँ··· 'भारतमणी' को मिटने न दूंगा।"

"मेरी भी यही कामना है। जो भी हो आदिमूलम् से जरा सावधान रहना।"

शिवराम के चले जाने के बाद बड़ी देर तक मुरली वैसे ही उदास बैठा रहा।

स्वामीनाथन् दिल्ली से वापस आ गया। 'भारतमणी' में अपने लेख को प्रकाशित पाकर वह बेहद खुश हुआ। साथ ही विदूषक के कार्टून को देखकर उसका आनन्द दुगना हो गया। शाम को कार्यालय में बातें करते वक्त मुरली ने उससे कहा—"स्वामीनाथन्! तुम्हारे विचारों से मैं सहमत नहीं हूँ। प्रधानमंत्री ने चीन सम्बन्धी बात गुम रखी है तो इसका कोई कारण अवश्य होगा। देखते रहना।"

"मगर आपका कार्टून मेरे लेख का समर्थन करता-सा लगता है।"

"हाँ, नीचे लिखा था कि संवाददाता की कल्पना है। देखा नहीं?"

यह सुनते ही स्वामीनाथन् का चेहरा सूख गया। साथ ही उसने उसकी लेखकीय स्वतंत्रता का आदर किया है, यह याद करके वह आश्वस्त हुआ।

उन्नीस

स्वामीनाथन् 'भारतमणी' कार्यालय के अन्दर दौड़ता आया। सह-सम्पादकों के कमरे में जाकर मुरकानन्दम् की मेज पर 'स्वर प्रभाती' को रखते हुए बड़बड़ाया—"जी···यह देखिए ! कल से इसमें एक नया कॉलम शुरू करने वाले हैं।"

बिना पत्रिका को हाथ में लिए मुरकानन्दम् ने उसकी ओर विस्मय-भरी दृष्टि डाली।

"सिने तारे-तारिकाओं की निजी अन्तरंग जीवन कथा धारावाहिक रूप से इसमें प्रकाशित होने वाली है। रोज सिने-तारिकाओं का 'क्लोअप' मुख पृष्ठ पर देने वाले हैं। इसके अलावा हर इतवार को सवाल-जवाब का एक और कॉलम प्रारम्भ होने वाला है। सुना है एक सुप्रसिद्ध अभिनेत्री सवालों का जवाब देंगी।" स्वामीनाथन् ने एक ही सांस में कहा।

"तो क्या ?" मुरकानन्दम् ने बड़ी शान्ति से पूछा।

"तो क्या ? जी ! हमारी पत्रिका की बिक्री गिरती जा रही है। आगे क्या हाल होगा ईश्वर ही जाने ! सर ! हम भी कुछ ऐसा कोई दिलचस्प कॉलम शुरू क्यों न करें ?···"

"इसे 'स्वर प्रभाती' समझ रखा है तुमने ? चाहे बिक्री गिर जाए, हमारा स्तर न गिरेगा।" मुरकानन्दम् ने गर्वमिश्रित स्वर में कहा।

"यही हालत बनी रही तो हमें पत्रिका को बन्द कर देना पड़ेगा।"

"भूखा मरने पर भी शेर घास नहीं चरेगा।"

"तब तो भूखों मरते रहेंगे। सर ! पत्रिका खूब चले तभी हमारे पेट में निवाले पड़ेंगे, अन्यथा कौन हमें हर महीने वेतन देगा ?"

"स्वामीनाथन् ! 'भारतमणी' मामूली नहीं। एक आदर्श पत्रिका है।

इस देश के लिए वह गौरव का चिह्न है। अगर वह मिट जाए तो लोगों के लिए यह लज्जा की बात है।"

"सर, लगता है लोगों को इसकी परवाह नहीं है। क्यू में खड़े होकर वे 'स्वर प्रभाती' ही खरीदते हैं। सर ! लोगों के स्तर को पहचान कर उसके अनुरूप हमें चलना है।"

"लोगों को ऊपर उठाना···चिन्तन के स्तर को ऊँचा करने का कर्त्तव्य हमारा है। उस महान् दायित्व को भूलकर पैसों को ही सबसे बड़ा मानें ? स्वामीनाथन् ! पैसा कमाने के कई मार्ग हैं। वेश्या भी खूब कमाती है—"मुरकानन्दम् ने जरा बिगड़कर कहा।

"सर, पैसा रंग नहीं बदलता। जिस किसी के हाथ में रहे उसका महत्व बढ़ जाता है।" स्वामीनाथन् ने उलटकर कहा।

मुरकानन्दम् का चेहरा क्रोध के मारे लाल हो गया।

"मिस्टर ! इस पत्रिका के लक्ष्य व स्तर को तुम बदल नहीं पाओगे। इस पथ पर चलने का दम है तो रहो, नहीं तो निकल जाओ।" मुरकानन्दम् चिल्ला उठे।

स्वामीनाथन् घबरा गया। विनम्रता से कहा—"जी, मेरे मन में जो आया, बता दिया। जैसे आप चाहें करें, मेरी चिन्ता है कि पत्रिका को हानि न उठानी पड़े।"

"ओहो···शायद तुम्हारा विचार है कि हमें इसकी चिन्ता नहीं।"

"हाय ! हाय ! मैंने ऐसा कब कहा था, सर।"

इस समय प्रेमा ने दरवाजा खोलकर अन्दर की ओर झाँका। "संपादक आ रहे हैं"—यह सूचना देकर अपना सर पीछे खींच लिया।

"अरे भई ! जा-जा ! अभी जो बक-झक की वैसा संपादकजी से कुछ मत कहना।" मुरकानन्दम् ने सचेत किया।

स्वामीनाथन् फीकी हँसी बिखराये कमरे से बाहर निकला।

मुरली की मेज पर एक फाईल रखकर स्वामीनाथन् एक ओर हो गया। मुरली ने उसे उलट-पुलटकर देखा। 'भारतमणी' के आय-व्यय पर लेखा परीक्षक से आयी रिपोर्ट थी। लेखा परीक्षक ने अपनी टिप्पणी में लिखा था कि 'भारतमणी' की बिक्री दिनों-दिन कम होती जा रही है,

तुरन्त उसकी बिक्री बढ़ाने की कोशिश न की गई तो एक साल के अन्दर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा।

रिपोर्ट पढ़ते ही मुरली हताश हो गया। चिन्तित भाव से सर उठाया तो स्वामीनाथन् अपने सामने खड़ा पाया। पूछा—"यह कब आया?"

"आज दोपहर को।"

"और कोई खबर है? विजयवाड़ा के खून पर···।"

"कुछ नहीं मिला है, सर।"

"पन्द्रह दिन हो गये! अब भी उस खून का कोई भेद न निकला?" मुरली गुनगुनाया।

"भारतमणी के लिए सरकार से पचास हजार का कर्जा माँगा था? सरकार की तरफ से अस्वीकृति-पत्र आज की डाक में आया है।" स्वामीनाथन् ने चिट्ठी मुरली के सामने रखी। मुरली ने उस पर एक सरसरी नजर दौड़ायी। उसके माथे पर पसीने की बूंदें उभरी थीं। चेहरा स्याह पड़ा था। बुद-बुदाया—"नई प्रिंटिन्ग मशीन का आर्डर दिया, अग्रिम रुपया भी चुका दिया है। एक महीने के अन्दर किसी तरह पचास हजार निकालना है।"

"इस बिल्डिग के मालिक चेट्टियार आये थे।"

मुरली की पलकें ऊपर उठीं।

"दो महीने का किराया आठ सौ रुपया बाकी पड़ा है। कल चैक भेज देने के लिए कहा था।"

मुरली ने कोई उत्तर न दिया। एक लम्बी आह भरकर रह गया।

"भारतमणी में जो विज्ञापन दे रहे थे, अब 'स्वर प्रभाती' में देने लग गये हैं। विज्ञापन कम मिलने लगे हैं।"

"उस बीड़ी कंपनी वाले साहब ने एक महीने के लिए विज्ञापन देने की बात कही थी। तुम उससे मिले थे?"

"हाँ, आज सबेरे गया था। दो दिन के लिए ही दियां है।"

"क्यों?"

"कहते हैं 'स्वर प्रभाती' की बिक्री अधिक है इसलिए तीस दिनों का विज्ञापन उसे दे दिया है।"

मुरली माथा टटोलने लगा ।

उसका ध्यान मेज पर पड़ी उस रिपोर्ट पर गया । लेखा-जोखा की वह रिपोर्ट देखते वक्त दिल दर्द करने लगा । हृदय में तूफान-सा उमड़ आया । 'इस अन्धे जर्जरित समाज का सर्वनाश कर देना है' ऐसे आवेश से उसकी नसें झनझना उठीं । 'ओह ! समाज को खा रहे इस घुन को । इस विषैले कीटाणु को कभी न मिटा पाऊँगा क्या ?' अवसन्नतापूर्ण यह ख्याल आते ही मुरली ने भारी थकान महसूस की ।

'इस उन्मत्त बाढ़ के विरुद्ध जूझ सकते हैं । तुम्हें धारा के साथ बहना होगा, मुरली ! तभी तुम अपना पैर जमा सकते हो । जी सकते हो···' जज राजरत्नम् के ये शब्द याद आते ही, मन कड़वाहट से इतना भर आया कि उसने नाक-भौहें सिकोड़ लीं ।

टाईपिस्ट प्रेमा अन्दर आयी और बताया कि अशोका स्टूडियो के मालिक मिस्टर नमशिशवायम् उससे मिलने आये हैं । कुछ मिनटों के उपरान्त एक मोटी, काली कलूटी आकृति अपनी बड़ी तोंद हिलाती अन्दर आयी । स्वामीनाथन् भी उसके साथ आया और उसने एक कुर्सी निकालकर मेज के सामने डाल दी ।

"मैं अशोक स्टूडियो का मालिक···नमशिशवायम् हूँ···" भारी आवाज में हिनहिनाते हुए वह कुर्सी में बैठा । मुरली आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगा । स्वामीनाथन् उसके हावभाव व सूरत देखकर, बड़ी मुश्किल से अपनी हंसी रोके खड़ा था ।

"आपसे एक मुख्य विषय पर बात करने आया हूँ" नमशिशवायम् ने खींसें निपोरी ।

"कौन सी बात है ?" मुरली ने कौतुक से पूछा ।

"हि हि···हमारे चन्द्रमोहन की बात पर···"

"चन्द्रमोहन ? कौन है वह ?"

"हि हि···यह क्या पूछ रहे हैं आप ? क्या हजारों चन्द्रमोहन हैं ? हमारे प्रसिद्ध अभिनेता चन्द्रमोहन की बात कह रहा हूँ···आपको इतना भी याद नहीं ?"···नमशिशवायम् ने अट्टहास किया । उसकी इस उन्मुक्त हँसी में थल-थल शरीर की माँसपेशियाँ हिलने डुलने लगीं ।

मुरली झुंझला उठा। फट पड़ा, "चन्द्रमोहन इस देश का कोई बड़ा नेता है, या विश्वविख्यात मेधावी है कि मैं उसे याद रखूं?"

"छोटा-सा बच्चा भी उसका नाम जानता है।"

"हाय! हाय! क्या करें...देश की यह हालत हो गयी। वह छोटा सा बच्चा महात्मागाँधी का नाम नहीं जानता, कोल्हू में पिसे देशभक्त चिदम्बरम् विल्लै का नाम नहीं जानता"...बड़बड़ाते हुए मुरली मेज पर पड़ी उस दिन की डाक को देखने लगा।

नमशिशवायम् ने क्रोध से उसकी ओर घूरा। बोला—"मैं चन्द्रमोहन के सम्बन्ध में बातें करने आया हूं।"

मुरली ने सिर उठाकर देखा। नमशिशवायम् ने पास खड़े स्वामीनाथन् की तरफ एक बार दृष्टि डाली, फिर मुरली से कहा, "आप से अकेले में बातें करनी हैं।"

स्वामीनाथन् जाने को हुआ। मगर मुरली ने इशारे से उसे रोकते हुए कहा, "कोई बात नहीं। कहिये...। ये मेरा आत्मीय है।"

"अकेले में कहूँ तो अच्छा होगा।"

"आप जो बात कहने आये हैं वह मुझसे सम्बन्धित है या 'भारतमणी' से?"

"दोनों से।"

"तब यह तो यहीं रह जाए। कहिए! आप क्या कहना चाहते हैं?"

"आप चन्द्रमोहन और शशिरेखा के विरुद्ध न लिखिएगा" नमशिशवायम् की आवाज में आग्रह था।

"व्यक्तिगत रूप से 'भारतमणी' किसी के विरुद्ध कलम नहीं उठाती। पत्रिका धर्म को वह निभाती है। काश! आप इसे समझ पाते..." मुरली फिर चिट्ठी-पत्रियों की तरफ ध्यान देने लगा।

"आप उन दोनों पर आघात करते रहते हैं।"

"जी! मैं उन पर आघात नहीं करता। उनके भद्दे अभिनय की आलोचना की है, बस!"

"यही कहने आया हूँ। इस बात पर कुछ न लिखें तो अच्छा। अब चन्द्रमोहन की बराबरी करने वाला उस फील्ड में कोई नहीं है। उनकी ऐसी

धाक है, यश और कीर्ति है, कि आपका इस तरह उन पर छींटे कसना, आलोचना करना सचमुच बड़े दुःख की बात है।"

"उनके अभिनय स्तरीय बढ़िया रहें—तब बधाई दूंगा।"

"वे लोक प्रिय हैं। जनता उनके ऐसे अभिनय के पीछे पागल है।"

"जनता जो चाहे वह कर देंगे। उनके धन दौलत के पीछे जनता पागल है तो वे उसे जनता में बाँट देंगे?"

"अनावश्यक तर्क क्यों? चन्द्रमोहन ने ही मुझे आपसे मिलने को भेजा है।" नमश्शिवायम् ने हाथ में रखी चमड़े की थैली खोलकर एक चैक बुक निकाली और मेज पर एक चैक रखा।

पास खड़े स्वामीनाथन् ने झाँककर देखा। ओह! एक लाख रुपये का चैक था वह।

"सम्पादक महोदय, लीजिए। एक लाख रुपये का चैक तैयार है। आप हमारी बात पर सहमत हों, अभी आपके नाम पर चेक काट दूंगा। चैक न चाहते हों तो नकद रकम तैयार है।"

स्वामीनाथन् विस्मय से मुँह खोले खड़ा था। मुरली ने बड़ी शान्ति से उनकी ओर देखा फिर पूछा"—लाख रुपये में मुझे खरीद सकते हैं, इस विश्वास पर आप यहाँ चले आये?" उसकी आवाज और ध्वनित व्यंग पर नमश्शिवायम् तिलमिला उठ।

"जी! आप चन्द्रमोहन और शशिरेखा पर कुछ न लिखें, बस इतना काफी है।" नमश्शिवायम् दाँत दिखाते हंस पड़े।

मुरली की आँखें मेज पर पड़ीं लेखा-जोखा की रिपोर्ट पर लगी थीं। हवा में फड़फड़ाते उसके पन्ने, मानो उसे डरा रहे थे। क्षणों तक वह उसकी ओर आँखें गड़ाये देखता रहा। माथे पर बल पड़ गये। पास खड़े स्वामीनाथन् की ओर एक बार देखा, फिर लापरवाही से पूछा—"कहो क्या कहते हो?"

स्वामीनाथन् सकपका गया। इस प्रश्न की उसे आशा न थी। आँखें फाड़कर एक बार मुरली को देखा, फिर मेज पर पड़े एक लाख रुपये के चेक को देखा। उसकी अधीरता बढ़ती गयी। "लाख रुपये!...एक-दो हजार नहीं...लाख...पूरे एक लाख! 'भारतमणी' की आर्थिक स्थिति

गिरती जा रही है,···ऐसे मौके पर इतनी भारी रकम मिल रही है।··· आखिर···चन्द्रमोहन के भद्दे अभिनय पर मौन रहना है। फू···इतनी-सी बात है।" उसने मुरली की ओर दृष्टि फिरायी। वह तो एकटक उसे देखता मुस्कुरा रहा था।

"बताओ स्वामीनाथन् ! एक लाख रुपया ले लूं मैं ?"

मुरली के प्रश्न ने उसके हृदय में घुसकर झकझोरा।

"नहीं सर···मत लीजिएगा···सर···" स्वामीनाथन् बड़बड़ाया। उसका पसीना छूट रहा था। सारा शरीर सिहर उठा। लगा एक भारी बोझ उसके हृदय से उतर गया है।

मुरली का चेहरा फूल-सा खिल उठा। उसने नमशिशवायम् की ओर देखकर मुस्कराते हुए कहा, "जी···माफ कीजिए। आपकी बात मानने में मैं असमर्थ हूँ।"

"मिस्टर ! मिस्टर ! एक लाख रुपया है"—नमस्शिवायम् स्वामीनाथन् की ओर देखकर गुनगुनाया। बेचारे स्वामीनाथन् ने मुरली की ओर असहाय दृष्टि डाली। शायद अब की बार इनकार करने का उसका मन न रहा।

"मिस्टर ! यदि 'भारतमणी' ने अपना आदर्श नीलाम किया तब आप को अवश्य खबर दूंगा।" मुरली अपने आसन से उठ गया।

नमशिशवायम् बड़ी निराशा के साथ चैक को थैली में रखकर उठ गया। "पागल कहीं के, एक अच्छे मौके से हाथ धो बैठे हैं" बड़बड़ाते हुए वह कमरे से निकल गया। स्वामीनाथन् उसको जाते हुए खड़े-खड़े देखता रहा। उसके आँखों से ओझल होते ही मुरली लपककर आगे बढ़ आया और स्वामीनाथन् के दोनों हाथ अपने हाथ में ले लिये।···"ओह ! मुझे बिलकुल आशा न थी कि तुम ऐसा कहोगे।" अतीव भावुकता से उसने उसका हाथ दबाया। स्वामीनाथन् पुलकित हो उठा। साथ ही धीमी आवाज में कहा, "सर ! एक लाख रुपया हाथ से निकल गया···।"

"लेकिन 'भारतमणी' की इज्जत, उसका गौरव बच गया" मुरली ने गर्वस्फीत स्वर में कहा। दोनों नीचे उतर आये। कार के निकट आते ही मुरली ने फिर कहा—"स्वामीनाथन् ! मैं तुम्हें बिलकुल मामूली समझता

था। अब लगता है कि मैं गलती पर था।"

धरती पर दृष्टि गड़ाये स्वामीनाथन् ने कहा—"सर! जो भी हो, इस वक्त एक लाख रुपये को ठुकराना नहीं चाहिए था।"

"अरे! मुझसे सीधी आँखें मिलाकर कहो। धरती को देखते हुए क्यों बोलते हो···स्वामीनाथन्! मनुष्य में देवता का अंश है, इस पर मुझे विश्वास है। देवत्व की वह भावना एकाएक ही फूट पड़ेगी। झट उसे पकड़ में ले लेना है। फिर से शैतान के चंगुल में फंसना नहीं है! एक लाख रुपये को ठुकरा दिया न? उस अलौकिक दैवी भावना से कभी गिरना नहीं, समझे!" मुरली उसकी पीठ को थपथपाकर कार में जा बैठा।

स्वामीनाथन् खोया-खोया-सा खड़ा था।

बीस

सरकारी सचिवालय के निकट कार छोड़कर मुरली कार्यालय में गया। प्रधान सचिव के कमरे में जाकर उनसे मिला। सचिव ने उसे देखते ही कहा—"वेरी सॉरी, मिस्टर मुरली! आपने जो लोन माँगा था वह अस्वीकृत हो गया।"

"अन्य पत्रिकाओं की माँगें स्वीकृत हुई हैं। अकेले 'भारतमणी' को क्यों नहीं दिया गया है?" मुरली ने तपाक से पूछा।

"वह तो सरकार की मर्जी। हम मजबूर नहीं कर सकते।"

"सरकार निष्पक्ष न रहे तो!

"मिस्टर मुरली! साफ़ शब्दों में कहे देता हूँ। आपका रुख सरकार के लिये बाधा बना रहता है। इसीलिए मंत्री महोदय ने आपके प्रार्थना-पत्र

को स्वीकृति देने से मना कर दिया।"

"मेरे कारण कौन-सी बाधाएं आई हैं ?"

"आप की लेखनी सरकार को मुसीबत में डाल देती है। संकटपूर्ण स्थिति का सामना करना पड़ता है। आप कभी-कभी सरकार पर करारी चोटें लगाने से नहीं हिचकते। इस पर मंत्रीगण सख्त नाराज़ हैं।"

मुरली गंभीर हो गया। उसका मुंह कड़वा हो आया, "अर्थात् सत्य को प्रकाश में नहीं लाना है। नुकताचीनी नहीं निकालनी है···है न ?···"

"मिस्टर मुरली ! कई विषयों पर जाने-जनजाने चुप रह जाना बेहतर है। अन्य पत्र-पत्रिकाएँ ऐसा ही करती हैं न ? देखिए 'स्वर प्रभाती' कैसे पापुलर हो रहा है ?"

"अर्थात् ! आपका कहना है कि झूठ-फरेब की बातें बनाकर पत्रिका को हाट की चीज जैसा बिक्री का माल बना दूं। जी ! सरकार की गलतियों का खंडन करके उसे सुधारना और लोगों के स्तर को ऊपर उठाना ही पत्रिका का धर्म है। सर ! अगर ऐरा-गैरा व्यक्ति यह सुझाव देता तो मुझे आश्चर्य न होता। लेकिन आप सरकारी अफसर हैं। ऊँचे ओहदे पर हैं। आप ऐसी बातें करें ? जी मंत्रियों का क्या निश्चय ? आज जो पद पर गया है, शायद कल न रहे। लेकिन सरकार और अधिकारी वर्ग शाश्वत् है। स्थिर हैं। सरकार के एक उच्च अधिकारी की हैसियत से एक लक्ष्य के साथ काम न करके इन अस्थिर मंत्रिगणों की कठपुतली बने उनके इशारे पर नाचना है क्या आपको ?"

मुरली की ये बातें सुनते ही प्रधान सचिव की भृकुटियाँ तन गयीं "मिस्टर मुरली, अधिकारियों और मंत्रिगणों के बीच सौजन्यता अपेक्षित है। उसे बिगाड़ने को मैं तैयार नहीं। आप अपना रुख बदल लें, आपकी प्रार्थना पर विचार किया जाएगा।" उमापति ने सख्ती के साथ कहा।

"सरकारी विज्ञापन मिलने की संभावना है ?"

उमापति ने होंठ बिचका ली। "यही नकारात्मक उत्तर है। विज्ञापन न देने का आदेश मुझे मिला है।"

मुरली वेदना भरी मुस्कुराहट के साथ उठ गया। एक लम्बी आह उसकी

छाती को चीरती निकली। कहा, "आज मेरे लिए न सही 'भारतमणी' के लिए सिफारिश कर सकते थे।"

"जो कुछ मुझसे संभव था, कर दिया।"

"मंत्री की आज्ञा की परवाह न करके, अपनी अन्तरात्मा की प्रेरणा पर आप कार्रवाई करें तो ?"

"मैं आपसे वाद-विवाद करना नहीं चाहता मिस्टर मुरली !"

उनके बोलने के ढंग पर मुरली नाराज़ हो गया। "यदि मैं आपके स्थान पर होता तो अपने आत्माभिमान की रक्षा में नौकरी से इस्तीफा दे देता। एक श्रेष्ठ कार्य के लिए संघर्ष करने में अशक्त होकर···जीने से बढ़कर···" मुरली आगे कुछ कहे बिना उनकी ओर देखकर उपेक्षापूर्ण हँसी के साथ उस कमरे से निकल गया।

उमापति चकित-सा उसे जाते देखता रहा।

सचिवालय से बाहर आकर मुरली क्लान्त भाव से कुछ मिनटों तक खड़ा रहा। शायद यह सोच रहा था कि अब कहाँ जाएँ! फिर कार स्टार्ट कर दी। पहाड़-सा बोझ उसके मन पर था। कार बड़ी धीमी गति से जा रही थी। सड़क के मोड़ पर आते ही दीवार पर चिपकाये 'स्वर प्रभाती' का विज्ञापन आँखों में चुभ गया। कार रोककर उसने देखा। अगले दिन से 'स्वर प्रभाती' में जो दिलचस्प नये-नये स्तम्भ निकलने वाले थे, उनका विवरण विस्तार से दिया गया था। एक सिने-अभिनेत्री का अश्लील चित्र भी छपा था।

मुरली के चेहरे पर घृणा की रेखाएँ उभरीं। बिसूरता दिल कड़वाहट से भर आया। ख्याल आया—इस पत्रिका ने 'भारतमणी' को कितना नुकसान पहुँचा दिया ? एक साल के अन्दर इस निम्नस्तरीय, सस्ती पत्रिका की कितनी बिक्री बढ़ गयी ? और लक्ष्य पर अटल श्रद्धा रखती 'भारतमणी' का कितना ह्रास हो गया ? जनता का स्तर व रुचि इतनी गिर गयी ? असल में लोग ऐसी सस्ती, अश्लील,गंदी बातों के पीछे पड़े हैं ? सैक्सी और अंग प्रदर्शन इतने भद्दे प्रदर्शन ही लोक-प्रिय हैं ? मुरली का दम घुटने लगा। सोचा ! क्या मैं ही दुनिया के रवैये को समझने में चूक गया ? जनता की रुचि के विरुद्ध उलटी दिशा में चल पड़ा हूँ ?

मुरली को लगा दुनिया उसे देखकर हँस रही है। पत्रिका, धर्म, संस्कृति, संस्कार आदि के प्रति मेरी आस्था अर्थहीन है। बदलते दृष्टि-कोण, बदलते वातावरण को समझे बिना, यथार्थ से मैंने आँखें मूंद ली हैं। नमश्शिवायम् के लाख रुपये को ठुकरा देना भी मेरी मूर्खता है। एकाएक शून्यता ने उसे घेर लिया।

'आज का युग सैक्स के पीछे अंधाधुंध दौड़ रहा है। दिशाहीन यह युग लक्ष्य-भ्रष्ट है। तुम्हें आशा है कि हम लोग इसकी आसुरी दौड़ पर रोक लगा सकते हैं?···" जज राजरत्नम् के ये शब्द कानों में गूंज उठे। आँखें मूंदकर मुरली ने स्टीयरिंग में मुँह छिपा लिया।

"लगता है संपादक महोदय झपकी ले रहे हैं।"

आवाज सुनकर मुरली ने सिर उठाया। देखा, शारदा हँसती हुई खड़ी थी। साथ में एक और युवती थी।

"नुक्कड़ पर कार रोके मजे से झपकियाँ लेने लग गये?" शारदा ने परिहास किया।

"नहीं···आँखें मूँदे कुछ सोच रहा था—तुम इधर कहाँ?"

"मैं और कान्तामणी इस तरफ गुजर रहे थे कि आपकी कार देखी।"

'कान्तामणी'···यह नाम सुनते ही जैसे उसे बिजली छू गयी हो। उसके शरीर में कंपन-सा दौड़ा। उसकी तरफ मुड़कर हाथ जोड़े। कान्ता बदले में बड़ी शालीनता से मुस्करायी। मुरली कार से उतर आया, "कॉलेज छोड़ने के बाद, हम अभी मिले हैं। लेकिन पत्र-पत्रिकाओं में आपकी खबरें पढ़ने को मिलती रहती हैं।" मुरली ने सहजभाव से कहा।

"लेकिन आपकी पत्रिका में मेरी खबरें नहीं रहेंगी"—कान्तामणी हौले से हँस पड़ी। उस मधुर मोहक हँसी में मोती से दाँत चमक उठे। लगा, वह हँसी मुरली को अपनी ओर खींच रही है।

"यू आर टू मच्छ फ़ार माई पेपर"—मुरली ने हँसी के बीच कहा। कान्ता खिलखिला उठी।

शारदा ने पूछा—"आप किस तरफ जा रहे हैं?

"लक्ष्यहीन यात्रा है अपनी।"

"भारतमणी के संपादक का लक्ष्य नहीं है—मुझे विश्वास नहीं होता।" कान्ता ने आँखें नचाकर कहा। उसकी आँखों की अनूठी चमक, चेहरे पर खिला मन्दहास···दोनों उस वक्त मुरली को बड़े अच्छे लग रहे थे।

"हमें घर पहुँचा देंगे। बड़ी देर से बस की प्रतीक्षा में हैं।" शारदा बोली।

"ओ! खुशी से आईये ना!" मुरली ने कार का दरवाजा खोला। दोनों पिछली सीट पर आ बैठीं। उनके बैठने के बाद दरवाजे को जोर से बन्द किया, तब देखा कि शारदा के बाएँ हाथ की अनामिका पर पट्टी बंधी है। आश्चर्य से उसकी ओर इशारा करके पूछा—"यह क्या है शारदा?"

"यह—यह तो···चाकू लग गया"—शारदा बुदबुदायी। लेकिन उसके चेहरे पर उभरी घबराहट और बदलते भाव पर जैसे ध्यान न दिया हो, वह आगे जा बैठा।

कार प्रोफसर के बंगले को तरफ जाने लगी।

"आतंकवादियों के दल में स्त्रियों का रहना अनोखी बात है।" मुरली ने रुखाई से कहा। उसकी आँखें अपने सामने के छोटे से आईने पर प्रतिबिंबित कान्ता के बिंब पर टिकी थीं।

कान्तामणी ने तुरन्त कहा—"यह कण्णकि* की जन्म भूमि है। लगता है आप इसे भूल गये।"

---

*तमिलनाडू में कई सदियों पहले की घटना है: कण्णकि, कोवलन नामक वणिक की धर्मपत्नी थी। विधि की बिडम्बना थी कि धनी वणिक कोवलन ने अपनी सारी धन दौलत लुटा दी। पत्नी को साथ लिए वह मदुरै आया था। यहाँ कुछ वाणिज्य करने का उसका इरादा था। कण्णकि के नूपुर को बेचने मदुरै के बाजार में गया। कई व्यापारियों को नूपुर दिखाये।

उस वक्त मदुरै की पट्टरानी के नूपुर चोरी हो गये थे। जिस सुनार ने रानी के नूपुर चुराये थे, उसने कोवलन पर झूठा इलजाम लगाया कि कोवलन ने ही रानी के नूपुर चुराये हैं। सुनार की बात में आकर सम्राट

"उसने गलती की। आपको भी वही करना है?"

कान्तामणी के विस्मय का ठिकाना नहीं, पूछा—"कण्णकि ने कौन-सी गलती की?"

"एक अपराध व गलती पर सारे शहर में आग लगा दी। आप लोग एक दल के लिए दुनिया में आग लगाते हैं। अकेले एक व्यक्ति के व्यक्तिगत विचारों के लिए एक पार्टी को, और पार्टी के सिद्धान्तों के लिए अनेकों को मिटाना यह कहाँ का न्याय है?

"उस दिन कण्णकि ने एक सम्राट के एकाधिकार के विरुद्ध बलवा का झंडा उठाया था, आज हम लोग पूँजीवादियों के एकाधिकार का विरोध कर रहे हैं। वर्ग-संघर्ष कण्णकि के जमाने में ही शुरू हो गया।" कान्तामणी ने भावावेश के साथ कहा।

"वर्ग-संघर्ष तभी शुरू हो गया या नहीं, यह मैं नहीं जानता। अब आप लोगों में जो पागलपन का नशा चढ़ा है, वह तो तभी शुरू हो गया।" मुरली ने कहा।

"कण्णकि का न्याय के नाम पर प्रतिशोध लेना पागलपन का नशा है क्या?" शारदा ने आक्रोश के साथ टोका।

"ओ हो···हो—भूल गया कि 'शिलपपधिकारम्' की पंडिता पास बैठी है। कॉलेज के दिनों में ही उसने 'कण्णकि' के नाम पर एक 'महिला

ने कोवलन को शूली पर चढ़ा दिया। पति के वियोग से व्याकुल कण्णाकि सीधे राजदरबार में पहुँची और न्याय की माँग की। उसने अपने नूपुर तोड़कर सिद्ध किया कि वे रानी के नहीं है। राजा ने जो दण्ड दिया है वह अन्यायपूर्ण है, अनीति है। सत्यवादी, न्यायी सम्राट अपनी भूल पर पछताता हुआ तत्क्षण प्राण छोड़ देता है। रानी भी मर जाती है। इसपर भी कण्णकि का क्रोध शांत नहीं होता। न्याय की पुकार करती हुई कण्णकि अपने सतीत्व के बल पर मदुरै शहर को जलाकर भस्म कर देती है।

तमिलनाडू में कण्णकि सतीत्व की देवी मानी जाती है। तमिल के पाँच महाकाव्यों में 'शिलपपधिकारम्' एक है जिसमें कण्णकि की यह कथा विस्तार से वर्णित है।

संघ चलाया था न ?"—मुरली परिहास के स्वर में कहकर मौन हो गया।

थोड़ी देर कोई न बोला।

शारदा ने मौन तोड़ा, "मेरे सवाल का जवाब कहाँ है ?"

मुरली ने उसकी ओर मुड़कर देखा, फिर पूछा, "कण्णकि ने मदुरै को जला डाला, इसमें गर्व करने के लिए क्या रखा है ?"

"यह घटना ही महाकाव्य में चरम सीमा है।"

"नहीं ! 'शिलपपधिकारम्' की नायिका के गौरव का पतन यहीं हुआ है। इसी घटना के द्वारा एक महाकाव्य की नायिका बनने की योग्यता से कण्णकि वंचित रह गयी।"

"महाकाव्य के इस स्थल की सबने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।"

"ओहो ! इसलिए ही वह महत्वपूर्ण बन जाता है क्या ? बड़प्पन की बात हो जाती है क्या ? आवेश में आकर कण्णकि अपना वश खो बैठी थी। अपने धर्म के समस्त सिद्धान्तों और धारणाओं को तिलांजलि देकर कैसा क्रूर, पैशाचिक कृत्य कर बैठी थी। वह जैन धर्मावलंबी थी। कर्मकांड और अहिंसा पर विश्वास करने वाली थी। देवी-देवताओं को वह मानती थी। लेकिन पति के वियोग से अकुलाते वक्त किसी मन्दिर में जाकर पूजा करने से उसने इनकार कर दिया था। पति शूली पर चढ़ाया गया है यह समाचार मिलते ही उसके ये धार्मिक विश्वास और आदर्श हवा हो गये। कण्णकि जो कर्मफल पर विश्वास करती हुई देवी-देवताओं को मानती थी, कोवलन की हत्या···उसके पूर्वकृत्य कर्म का फल है, ऐसा मानकर शान्त न हुई—सारे मदुरै में आग लगा दी उसने। एक सुन्दर नगरी को भस्मसात कर दिया। एक की मृत्यु पर समूचे शहर को आग में झोंक दिया। एक की हत्या पर हजारों को मृत्यु के घाट उतार दिया, जो बिलकुल निर्दोष थे। यह कहाँ का न्याय है ? आवेश में आये दुर्दैव जैसा पैशाचिक तांडव कर दिया उसने ! उसके इस रौद्र तांडव पर उसके अहिंसात्मक सिद्धान्त की बलि चढ़ायी गयी। एक की हत्या के बदले में पंडित राजा और उसकी पट्टरानी ने अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी थी, जिसपर भी शान्त न होकर उसने मदुरै को अग्निदेव की भेंट कर दिया। कहो !

इसे पागलपन का नशा न कहें तो और क्या कहें ?"

कान्ता और शारदा मौन बैठी थीं।

मुरली आगे बोलता गया—"कोवलन की हत्या का कारण एक सुनार था। बस इसके लिए हजारों सुनारों की नरबलि दे दी थी उसने। यही कण्णकि का बड़प्पन है ? पार्टी के लिए दुनिया को चुनौती देने वाले, उसको मिटा देने के लिए छटपटाने वाले उन्मत्तों के क्रूर कृत्य न्यायसंगत लग सकते हैं ? पार्टी के लिए लाखों लोगों का जिसने खून बहाया, उस रूसी सर्व-ग्रासी लिप्सा की तानाशाही के वारिस हैं आप लोग। वर्ग-संघर्ष ही मानव समुदाय का मुक्ति-मंत्र है, ऐसा विश्वास करने वाले आप लोगों की दृष्टि में पांडिय राजा और उसकी पट्टरानी की मृत्यु का कोई मूल्य न रहेगा। सोचेंगे···पूंजीवादी वर्ग के दो व्यक्ति मर मिटे यह तो अच्छा हुआ।" मुरली पूरी तरह तैश में आ गया था। उसके दिल की तह में ज्वालामुखी से जो-जो विचार घुमड़ते, सुलगते रहे—वे धधकते अग्निकणों जैसे फूटकर निकल पड़े। एक ही साँस में उसे यों धारावाहिक भाषा में बोलते देख दोनों युवतियाँ चकित-सी बैठी थीं।

"कण्णकि की प्रशंसा में आपको एक शब्द भी न मिला ?" खीझकर थकी आवाज में शारदा ने पूछा।

"हाँ ! एक बात है ! पांडियराजा के दरबार में आकर अपना पक्ष सुनाकर, सच्चे न्याय की माँग की ? सचमुच वह सराहनीय साहस है। लेकिन वह भी धनी पति के उल्लासमय जीवन में अपना सब कुछ लुटाकर दरिद्र बन जाने के बाद की बात है। यदि वह धनी मानी बने रहते तो उसने इतना साहस किया होता, यह तो सन्देह की बात है।"

"ओहो !···लगता है आप कण्णकि के विरुद्ध एक दल बना लेंगे···" शारदा जोर से हँस पड़ी।

"यदि ऐसा एक दल बने तो जरूर उसमें आतंकवादियों और उनकी गुप्त साजिशों के लिए जगह नहीं रहेगी।"

कान्तामणी से रहा न गया। हँसती हुई धीमी आवाज में बोली—"लगता है एडीटर साहब को क्रान्ति से भय लगता है।"

मुरली का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा—"जब स्त्रियाँ आतंकवादी

बनी क्रान्तिकारी कार्यों में भाग लें, तब पुरुषों को काहे का डर ? लेकिन 'क्रान्ति' जैसे उच्चादर्श को यों दूषित न करना चाहिए। अराजकतावादी, व देशद्रोहियों को क्रान्तिकारी कहें ?" क्रोध से फुफकारते हुए मुरली ने मुड़कर देखा।

कान्तामणी का चेहरा इतना-सा हो गया। उसी को लक्ष्य करके यह करारी चोट लगायी गयी थी। वह मर्माहत हो उठी। शारदा धर्म-संकट में थी। उसने कान्ता को इशारे से बता दिया कि मुरली से तर्क मत करना। उसे मालूम था कि मुरली से तर्क करके पार पहुँचना असंभव है। लेकिन कान्ता चुप न रही, तड़पकर बोली—"कार्ल मार्क्स को अपना पथप्रदर्शक माननेवालों को क्रान्तिकारी न मानें तो और क्या कहें ?"

मुरली ने लापरवाही से हँसकर कहा—"कार्ल मार्क्स का दिखाया वह पथ कब का बंद हो गया। उन्होंने अपनी तत्कालीन परिस्थिति को लेकर चिन्तन किया था। घबरा उठे कि सारा संसार पूँजीवादियों के पेट में जीर्ण होता जा रहा है। आज जो-जो देश अपने को उनका वारिस कह रहे हैं उनसे बढ़कर, अन्य देशों में मजदूर और श्रमिक-वर्ग खुशहाल हैं। उनको आजादी और अधिकार प्राप्त हैं। उनकी हालत बेहतर है। यदि कार्ल मार्क्स जिन्दा रहते तो रूस व चीन के नागरिक न बनते, अमेरिका, स्वीडन या जापान के नागरिक बन जाते। कान्तामणीजी ! आपके महान् चिन्तक मार्क्स कारखाने और फैक्ट्री में काम करने वाले मजदूरों की हालत पर ही सोच-विचार कर पाये, उनसे भी दयनीय स्थिति में पड़े, खेतिहरों, ग्रामीण मजदूरों व कुलियों पर सोचा नहीं। लगता है अब आप लोगों ने वह काम अपने हाथों में लिया है।···आगे खेतों की फसल और गाँवों के अमन-चैन की न जाने क्या हालत होगी ?···" मुरली ने प्रोफेसर के बंगले के अन्दर जाने के लिए कार को मोड़ा।

कान्तामणी कुछ न बोली। मन ही मन झल्ला उठी। कार पोर्टिको में रुकते ही वह झटपट उतर गयी। शारदा के उतरने के बाद मुरली ने मुड़कर कान्ता की ओर मुस्कराते हुए देखा। कान्ता का मुँह कठोर बन गया था। होंठ काटे वह खड़ी थी।

'क्रान्ति जिन्दाबाद' मुरली ने गरदन उठाकर रूसी ढंग से दाँया हाथ

ऊपर उठाया। कान्तामणी के चेहरे पर कटुता के वदले हर्ष के भाव खिल उठे। उसने भी अपना दाँया हाथ उठाया।

"क्रान्ति अलग है, दंगा अलग है। महात्मा गाँधी ने दाण्डी में नमक बनाया। वह क्रान्ति है। चिदम्बरम् पिल्लै ने स्वदेशी जहाज चलाया। वह क्रान्ति है। लेकिन स्टालिन ने ट्राटस्की की जो हत्या करायी, और आज चीन में जो हत्याकांड व दंगेबाजी चलती है, उनको क्रान्ति कैसे कहें? भारत ने ही इस महान् अन्तर को समझा है—आपके चीन और रूस ने नहीं।" मुरली के यह कहते ही कान्ता का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। तुनककर बोली—"हम कायरों का मार्ग अख्तियार नहीं करते। बन्दूक ही हमारा न्यायदण्ड है।"

"बन्दूक? बन्दूक से मानव के शरीर पर अधिकार चला सकते हैं। मगर आत्मा पर नहीं। बन्दूक जहाँ असफल रह जाती है, वहाँ लेखनी मैदान मार लेगी···" इतना कहकर मुरली ने कार स्टार्ट कर दी।

इक्कीस

यंगमेन्स क्लब में हमेशा के जैसी चहल-पहल मची थी। कार को एक तरफ छोड़कर मुरली बरामदे में आया। इधर-उधर नजर दौड़ायी। एक धनाढ्य व्यक्ति हाल में खरीदी अपने नये माडल की कार, अपने दोस्तों को दिखाकर आनन्दित हो रहे थे। जैसे अमीर घराने की कोई लड़की ढेर सारे आभूषणों से लदी, प्रदर्शन की चीज बनी खड़ी हो, वैसे ही बेजबान मोटर खड़ी थी। कार के आगे-पीछे और अन्दर जो-जो नये फिटिंग्स एक्स्ट्रा लगाये गये थे उसे कई लोग विस्मय से देखते खड़े थे। कार

के मालिक इन तमाशाईयों का तमाशा देखते एक ओर बड़ी शान से खड़े थे।

मुरली ने वरामदे से यह सब देखा। फिर एक सोफे पर जा बैठा। मन की हताशा शरीर पर उतरी थी। उसकी आँखें आप ही आप मुंद गयीं। तरह-तरह की चिन्ताएँ मन को बेचैन करने लगीं। 'भारतमणी' के भविष्य की समस्या विकराल रूप धारण किये उसे डस रही थी। समझ में नहीं आया कि इस उलझन से कैसे छूटे? वह चकराया। बैंक से जो कर्जा लिया था उसका इन्सटालमैण्ट पिछले महीने अदा न कर पाया, एक प्रिंटिंग मशीन घिस गयी थी इसलिए नई मशीन का आर्डर देकर अग्रिम तौर पर रुपये दे दिये हैं। अब क्या करें? एक अच्छी, स्तरीय पत्रिका को यों ही मिटने दें? लोग यही चाहते हैं क्या?

मुरली का मन रो रहा था। अपने कंधे पर किसी का स्पर्श पाकर मुरली ने मुड़कर देखा। उसके पीछे पाईप मुँह में दबाये जज राजरत्नम् खड़े थे। एक जबरदस्त मुस्कान लिए मुरली सीधा बैठ गया। जज साहब पास के सोफे पर बैठ गये।

"हार्दिक बधाईयाँ मिस्टर मुरली! आपके राजनीतिक लेखों का संग्रह जो अनुवादित होकर अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ है, उसकी न्यूयार्क की एक पत्रिका ने बड़ी तारीफ की है। कल लंदन की एक पत्रिका ने भी उसकी सुन्दर आलोचना की है।" जज साहब ने बड़ी खुशी प्रकट की।

"विदेशों में तारीफ होने से क्या फायदा? स्वदेश मुझे सहारा देने से हिचकता है।" मुरली ने उकताकर कहा।

"मेधावियों की अपने देश में कद्र नहीं होती। सुना है आजकल 'भारतमणी' की बिक्री बहुत कम हो गयी है। क्या यह सच है मुरली?" जज ने आत्मीयता से पूछा।

"अब तो उसकी चिन्ता है।"

"ओह! शायद इसी से इतना मुरझाये से दीखते हो! स्थिति बड़ी नाजुक तो नहीं है न?"

"निकट भविष्य में ऐसी हो जाने की संभावना है।"

"तब क्या योजना बनायी है?"

"योजना ? योजना बनाने में क्या रखा है। लगता है, अच्छे, सुरुचि पूर्ण विषयों के लिए हमारे देश में स्थान न रहेगा।"

"मुरली ! केवल तुम्ही को नहीं, हर सहृदय व्यक्ति, रसिक, तथा कला के मर्मज्ञ को यह चिन्ता लगी है। स्तरीय साहित्य, शास्त्रीय संगीत, नृत्य, जैसी ललित कलाएँ जो मानव मन को उच्च, पवित्र रसानुभूति की ओर ले जाने वाली हैं, उनकी आज कोई पूछ नहीं। हमारे देश की राजनीति व सामाजिक क्षेत्र विषाक्त होते जा रहे हैं। नेकी व ईमानदारी का कोई मूल्य नहीं। अश्लील साहित्य की आज बड़ी माँग है। देश आजाद हो गया—यह कोई बड़ी बात नहीं। मगर एक स्वतंत्र स्वायत्त शासन में देश का हाल—उसका स्तर···कैसा है, यही मुख्य बात है।" जज राजरत्नम् पाईप का लम्बा कश लेकर ढेर-सा धुआँ उगलने लगे।

"परिस्थिति हमेशा ऐसी ही नहीं रहेगी। वह बदल सकती है। गिरी हुई अवस्था में नवजागरण संभव है।" मुरली ने कहा। उसकी आवाज में जितनी दृढ़ता थी, उतना मन में विश्वास न था।

"नो —नो···मुझे विश्वास नहीं। अन्य देशों की भी यही हालत है। मुरली ! यूरोप और अमेरिका में सेक्स एक विकराल समस्या बन गया है। सारे संसार ने लगता है इस मार्ग पर चलने की कसम उठा ली है। ऐसी स्थिति में तुम हिम्मत बाँधे अपने लक्ष्य पर अटल रहते हो, इसके लिए मेरी बधाईयाँ।"

"लेकिन लगता है पैर जवाब दे देंगे अब।"

"घबराना मत। शुरू में शैतान का अट्टहास हल्ला मचा देगा। लेकिन धीरे-धीरे आप ही शान्त हो जाएगा। 'भारतमणी' भारत देश की आत्म-वाणी है, ऐसा प्रख्यात हुआ है। अपना दिल छोटा न करना। मुरली ! कर्मरत रहो। विदेशों में तुम्हारी लेखनी की धूम मची है, ऐसी हालत में तुम आत्मविश्वास के साथ संघर्ष कर सकते हो। तुम्हारे कार्टूनों ने लोगों का ध्यान खींचा है। वे बड़े मजे से उसका रस ले रहे हैं। लेकिन 'स्वर प्रभाती' जिस ढंग से खबरें देता है, उससे आज यथार्थ स्थिति का बोध होता है।···हाँ···ऐसी सनसनीदार खबरों पर परदा डालने की क्या जरूरत है?"

मुरली ने सकपकाकर उनकी ओर देखा। उसके दिल में जो बची-खुची आशा थी उसे भी जज के इस प्रश्न ने मानो डांवाडोल कर दिया था। पूछा—"तब तो आप चाहते हैं कि 'भारतमणी' में भी ऐसी खबरें निकलें?" उसकी आवाज में दीनता भरी थी।

"नो'—'नो'···मैं तुमको मजबूर नहीं करता। लेकिन ऐसी एक पत्रिका रहे तो क्या हर्ज? आज लोगों की रुचि, उनकी रसिकता बदल गयी है। इस स्टाइल पर लिखी पुस्तकों के साहित्य को गौरव प्रदान किया जा रहा है—लोग उसकी तारीफ के पुल बाँध रहे हैं···घटिया दर्जे का साहित्य ही लिट्रेचर है।"

"समाज के विघटन और गिराव को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना है क्या? यथार्थ के नाम पर एकाध व्यक्तिय की मानसिक विकृति व ग्रन्थियों पर प्रकाश डालकर, पाठकों का ध्यान उस ओर जबरदस्ती खींचने की आवश्यकता क्या है? मुझे इन वातों पर विश्वास नहीं है।"

"मेरे विचार में इस प्रकार के लेखन द्वारा समाज की वास्तविक स्थिति का परिचय मिलता है। मुरली! हमारे देश की प्राचीन संस्कृति, कला की मान्यताएँ, पुरानी रूढ़ियाँ हमारे लिए सत्य, शाश्वत हैं। उनको हम प्राणों के समान अपनाये बैठे रहें तो क्या लाभ? आज हम बदलती हुई परिस्थिति में उससे कितनी दूर हट गये हैं, हमारी कैसी अनोखी स्थिति है, इसे जानने के लिए 'स्वर प्रभाती' जैसी पत्रिकाएँ ही मापदण्ड हैं।"

"पंगु बना हाथ और कितना पंगु हो गया है, इसे नाप तोलकर देखने की क्या जरूरत है?" मुरली ने घृणा भरी आवाज में कहा।

"कम से कम इतना तो जान लें कि विषैले कीटाणुओं से पीड़ित समाज कैसे सड़ता जा रहा है।" राजरत्नम् की हँसी में परिहास था।

जले पर नमक छिड़काने के समान मुरली के दग्ध हृदय को राज-रत्नम् के शब्दों ने और भी दुखा दिया। उसकी आँखों में व्यक्त वेदना को समझकर जज राजरत्नम् ने कहा—"मुरली! यह न समझना कि मैं इस घटिया, अश्लील पत्रिका की दाद दे रहा हूँ। आज की यथार्थ स्थिति को समझाना चाहता हूँ।···सिनेमावाले असलियत के नाम पर गंदी व सैक्सी बातें लिखनेवाले अध-कचरे गन्दे लेखकों, आदिमूलम् की तरह जैसी सिने-

तारिकाओं के अर्धनग्न चित्रों का 'ब्लो अप' देकर पत्रिका का सौदा करने वालों इत्यादि ने हमारी चिरन्तन संस्कृति व सभ्यता को मिट्टी में मिला दिया है। इतना ही नहीं, ये युवा दिलों को विषाक्त करके धन कमाने पर तुल गये हैं। काश ! अब भगवान ही इस देश की रक्षा करे।" जज साहब ने निराशा की आह भर ली।

एक सर्वर सोडे की वोतल और गिलास ले आया और बड़े अदब से मेज पर रखकर चला गया। जज ने कोट पाकेट से छोटी-सी शराब की बोतल निकाली और गिलास में उड़ेलते हुए मुरली की ओर देखकर मुस्कुराये। शराब की तीखी गंध से मुरली का दम घुटने लगा और उसने मुंह सिकोड़ लिया।

"मुरली ! तुमने कभी एक बड़े आदमी के बारे में कहा था।·याद है ? "तत्वज्ञानी जैसे दार्शनिकता बघारता है मगर मूर्ख-सा जीवन बिताता है' सच है मुरली, तुम्हारी वह उक्ति मेरे पर भी ठीक जंचेगी।"···यह कहकर जज साहब जोर से हँसने लगे।

मुरली ने विस्मय से उनकी ओर देखा। बाएँ हाथ में पाईप लिये दाएँ हाथ से सोडे को शराब में मिलाते हुए वे बोले—"मिस्टर ! हाथी के दाँत दिखाने के और, खाने के और ! करनी और कथनी अलग-अलग हैं। वॉट डू यू से ? करनी और कथनी और ! नब्बे फीसदी ऐसा जीवन ही बिताते हैं। है न ?" शराब का गिलास उठाकर उन्होंने एक घूंट पी।

मुरली ने मुँह बनाकर कहा—"दुरंगा जीवन बिताने के पक्षपाती हैं आप ?"

"नो-नो ! मैं ऐसा नहीं कहता ! कहता हूँ कि इस तरह जीने की मजबूरी है आज। दो महीने पहले 'भारतमणी' में लिखा था—'मानव देवता का अंश है।' आई अग्री विद यू, लेकिन मानव के मन में शैतान की भी गुंजाइश है। चुपके-चुपके उस शैतान की भूख मिटाने को बलि चढ़ानी पड़ती है। बाहर देवता और अन्दर शैतान बनकर जीना अनिवार्य हो जाता है। मुरली ! हर एक अपने-अपने स्वधर्म पर, स्वेच्छा से जीना छोड़ दे, तो यह सारा समाज, समूचा मानव समुदाय बरबाद हो जाएगा। हर कोई सबकी आँख बचाकर, गुप्त रूप से अपनी-अपनी कुत्सित वासना

और दमित इच्छाओं को तृप्त कर लेता है। यह उसकी लाचारी व मजबूरी है। मुरली ! हर कोई महात्मा नहीं बन सकता।" जज साहब ने गिलास खाली करके मेज पर रख दिया। पाईप उठाकर मुँह से लगा लिया और धुएं के छल्ले निकालने लगे। मुरली उनकी ओर ताकता रह गया। सोचा—'ऐसे विचार और धारणाओं को लिए ये अपराधियों को कैसे दंड दे पाते हैं ?' लेकिन कहा जाता है ये अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा देने वाले हैं। जज के आसन पर बैठे राजरत्नम् और क्लब में यों सोफे पर आराम से बैठे राजरत्नम् में कितना अन्तर है ?"

बगल के कमरे से रेडियो से खबरें आ रही थीं—

"विप्लव. क्रान्तिकारी पार्टी के लीडर 'कालिनाथ' मिल के मजदूरों को हड़ताल करने के लिए भड़का रहे हैं। अगले महीने की दसवीं तारीख को हड़ताल होनेवाली है। विप्लव पार्टी ने किसान, और मजदूरों से कहा है कि वे फसल की कटाई न करें।"

यह वार्ता सुनते ही जज साहब के चेहरे पर घृणा उभर आयी। बोले—"सौ सालों के उपरान्त हमारे देश ने जिस लेबर एक्ट पर अमल करना था, उसका अभी इस देश में अमल हो रहा है। उसी का फल है रोज ब रोज ऐसे झंझटों का सामना करना पड़ता है। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है मुरली ! अमेरिका को लो। सुसंपन्नता है, धन-धान्य से भरपूर है वह देश। कोई कमी, कोई अभाव नहीं। कारण उस देश में पहले गुलामी की प्रथा अमल में थी। अमेरिका की ही बात नहीं। आज आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्र में जो देश सबसे आगे हैं, जिनकी आश्चर्यजनक प्रगति हुई है, वे देश भी पहले गुलाम थे। गुलामी की नींव से ऊपर उठे हैं वे। एक पिछड़ा हुआ देश जो उन्नति की ओर अग्रसर है, प्रगतिशील और पूर्ण रूप से विकसित राष्ट्रों में जो 'लेबर एक्ट' है, उसे अपने देश में अमल करा दे, तो विकास और उन्नति की गुँजाईश कैसी ? मुरली ! बताओ न, श्रमजीवियों का स्वर्ग कहे जाने वाले चीन और रूस में इस तरह की हड़ताल और बन्द कहीं संभव है ?"

"पिछड़े देश में ऐसे अधिकारों को देकर अमल कराना खतरे की बात है—इस पर हमारे लीडरों ने विचार किया होगा।"

"मुरली !···हमारी चिराकाँक्षित आजादी जिसके लिए हम तरसते रहे, वह मिल गयी। इस आनन्द की मस्ती में हम बहुत-सी गलतियाँ कर बैठे। आराम से सोच-समझकर चिन्तन-मनन करके एक निष्कर्ष पर आने का मौका न रहा। परिस्थिति भी कुछ ऐसी ही थी। इसके अलावा 'हीरो वर्शिप' हमारा सबसे बड़ा अभिशाप है। हमारे नेतागण जो भी करें, वही सही है, ऐसा लोगों में विश्वास है। वे आँख मूंद लेते हैं। नेहरू जैसे कुछ नेताओं पर रूसी क्रान्ति की उपलब्धियों का प्रभाव था। उस रंगीन काल्पनिक जगत की स्वप्निल मादकता में जो विचरते रहे, उन्हें दुनिया की गति-विधियों का, जीवन के यथार्थ व वास्तविकता को समझने का मौका ही न रहा। जाने अनजाने जो संविधान व कानून बनाये गये, अब हमारे देश के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहे हैं। आज की परिस्थिति में इससे पिंड छुड़ाना असंभव है।"

"हड़ताल करना जन्मसिद्ध अधिकार बन गया। अब उस अधिकार से वंचित कैसे करें ?"—मुरली ने पूछा।

जज साहब ने कहा—"मुरली ! अधिकार माने क्या है, इसे पहले समझना है। गहराई से इसे न समझना हीं आज की विकट परिस्थिति का कारण है। हर व्यक्ति को अपना कर्त्तव्य अदा करने को जो पूरी आजादी प्रदान की जाती है, वही अधिकार है। लेकिन खेद की बात है कि इस देश में नागरिक के अधिकार व हकों पर भाषण झाड़ने वाले किसी भी पार्टी के लेबर-लीडर ने इस बुनियादी सत्य को महसूस नहीं किया है। इस बात पर कभी सोचा नहीं। हर कोई अपना-अपना काम, अपना फर्ज, ठीक तरह अदा करता है ? हमें धोखा तो नहीं दे रहे हैं, ऐसा—घरों में काम करने वाले छोटे-मोटे नौकर से लेकर मिल के मजदूर तक सबकी आँखों में तेल डालकर निगरानी करनी पड़ती है, काम लेना पड़ता है। यदि हर कोई अपना-अपना काम पूरी जिम्मेदारी व ईमानदारी से कर लें, किसी के दबाव व निगरानी की जरूरत न पड़े, तभी इस देश की उन्नति होगी। अधिकार की माँग करने के पहले कर्त्तव्य का ख्याल करें। तभी देश की खुशहाली संभव है। नहीं तो···नेवर-नेवर···" जज साहब तैश में आ गये थे।

"इस देश का नागरिक अपनी जिम्मेदारी महसूस न करेगा ?

"मुझे विश्वास नहीं होता। आज का लेबर एक्ट फैक्ट्री एक्ट, और राजनीतिज्ञों की अधिकार लिप्सा, स्वार्थपरता जब तक बनी रहेगी—तब तक ऐसा परिवर्त्तन संभव नहीं है। देश की प्रगति व उन्नति होने पर मजदूर व श्रमिक-वर्ग को अपनी जिम्मेदारियों से पूर्णतया अवगत होने के बाद जिन कानूनों को अमल में लाना चाहिये था, उन्हें अभी अमल में लाके देश की प्रगति और औद्योगिक उन्नति में रोड़ा अटका दिया गया है! एक व्यक्ति का तन, मन व बुद्धि के परिपक्व होने के बाद जो आजादी देनी है, उसे छोटे बालक को दे दें तो वह आदमी बनेगा ? अबोध बालक के हाथ में बन्दूक दे देने की बात है।"

मुरली ने कहा—"आप बड़े निराशावादी लगते हैं।"

"अपने दिल की वात कहता हूँ! वयस्क मताधिकार और भाषावार प्रांतों का बंटवारा न होता तो देश की आशातीत प्रगति हुई होती।"

"ओह! गाँधीजी वयस्क मताधिकार दिलाने के पक्ष में थे न ?"

"हाँ! आजादी की भावना को जागृत करने के लिए ऐसे प्रचार की आवश्यकता उस वक्त अनिवार्य रही होगी। लेकिन आजादी मिलने के उपरान्त थोड़ा सोच समझकर काम लेना था। जो समाज थोड़ा प्रगतिशील है, जहां लोगों को बुनियादी शिक्षा, सोचने समझने का सामान्य ज्ञान, राजनीति का स्पष्ट चिन्तन करने की शक्ति है, वहीं पर वयस्क मताधिकार लाभदायक सिद्ध होगा। हमारे लिए यह अवांछित है। चुनाव असल में यहाँ हास्यास्पद स्थिति में होते हैं। यूरोप के प्रगतिशील देशों में भी अभी हाल में ही महिलाओं को मतदान का अधिकार दिया गया है। स्विटज़रलैण्ड में अब भी स्त्रियों को मतदान देने का अधिकार नहीं है। मुरली! हमने बड़ी जल्दी कर दी। अब लौट नहीं सकते। हाथ से तीर निकल चुका है। यदि किसी निःस्वार्थ ताकतवर नेता की डिकटेटरशिप इस देश में हो, तभी यह संभव होगा।"

मुरली कुछ न बोला।

"आज की परिस्थिति सबको पेसिमिस्ट···निराशावादी बना रही है। जिस दिन राजनीतिज्ञ वोट की चिन्ता करना छोड़ कर देश की चिन्ता

करेंगे, तभी इसका विमोचन होगा, अन्यथा नहीं।"

"मुझे भविष्य में पूरी आशा है—विश्वास है।" मुरली ने दृढ़तापूर्ण स्वर में कहा।

राजरत्नम् ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा। "ओह ! मुरली ! 'स्वर प्रभाती' की बिक्री और बढ़ते ही 'भारतमणी' को दबा देगी, ऐसी आशंका की इस घड़ी में भी तुम्हें इस देश के लोगों पर विश्वास है ?"

"हाँ—जरूर है।"

"लेकिन एक बात कहे देता हूँ मुरली ! चाहे कोई भी बात हो। असीम विश्वास करके न बैठो। खासकर मानव समुदाय पर विश्वास रखने से आखिर में धोखा खाना पड़ेगा।" जज साहब इन शब्दों के साथ उठ गये। उनके चले जाने के बाद भी मुरली थोड़ी देर वहीं बैठा रहा। उनके विचार और तर्क ने उसे गोरख-धंधे में डाल दिया। वे बड़े चिन्तक और तत्वज्ञानी के रूप में विख्यात थे। उनके विचारों में गहराई और शब्दों में जोर था। मुरली उनके विचारों पर सोचने लगा। वह जितना सोचता गया, उतनी ही उसकी उलझन बढ़ती गयी। लगा अनजाने पथ पर, आँखों पर पट्टी बाँधे वह मार्ग ढूँढने का पागलपन तो नहीं कर रहा है ?

कोई भाड़ में जाए उसे क्या ? संस्कृति, सभ्यता इत्यादि का बोझ ढोने को वह क्यों अनावश्यक रूप से परेशान हो रहा है ? आज 'स्वर प्रभाती' लोक प्रिय हो गया है। लोगों को उसने कितना प्रभावित कर लिया है ? एक लाख रुपये पर उसने लात मार दी है। जज साहब से इसका जिक्र करता तो वे जरूर उसे 'पागल' कहते। उसकी हँसी उड़ाते। 'भारतमणी' को स्तरीय, व उच्चादर्श की पत्रिका बनाए रखने से किसको लाभ है ? असल में लोगों को इन बातों की बिलकुल परवाह नहीं है।

मुरली चकराया। सोफे से उठकर कार की ओर चला।

मुरली कार्यालय में पहुँचा। कार्यालय के बाहर लाल रंग के नियॉन बल्बों में लिखे''''भारतमणी' के साईन बोर्ड को देखते वक्त लगा वे उसकी ओर देखकर मानो गरज रहे हैं। 'भारतमणी का अपना एक लक्ष्य है, सिद्धान्त है, स्तर है। इसको नीलामी पर चढ़ाने का किसी को अधिकार नहीं।' वे लाल-लाल अक्षर मारे गुस्से से खून के प्यासे पशु से मानो गुर्रा

रहे थे। मुरली उन लाल नियॉन बल्बों को थोड़ी देर अपलक देखता रहा। धीरे-धीरे दिल का बोझ कम होता जा रहा था। उसकी उलझन दूर होने लगी। मुरली थोड़ा आश्वस्त हुआ।

कार्यालय के अन्दर प्रवेश करते ही देखा सब अपने-अपने काम में लगे थे। रात को जो-जो समाचार प्रेस में देना था, उनके बारे में पूछ ताछ की।

"कालीनाथ मिल में काम करता है न? उस आदमी से आज मुलाकात हुई। आपने ही उसे मिल में नौकरी दिलायी थी।" स्वामीनाथन् ने कहा।

"कौन? वेलायुदम्? उसे वहाँ पर नौकरी दिलाने में मेरा कचूमर निकल गया। मिल मालिक उस वक्त उसे नौकरी न देते तो उसका सारा परिवार भूखों मर जाता। लेकिन आज वह कृतघ्न बना···"

"बात ऐसी नहीं है सर! हड़ताल करने का उसका मन नहीं है। कहता है कोई भी राज़ी नहीं। लेकिन यूनियन लीडर मजबूर कर रहे हैं।"

"विप्लव पार्टी का नल्लदम्बी ही उनकी यूनियन का लीडर है न?···"

"हाँ सर! वही है। नल्लदम्बी और उसके साथियों के डर से सब लोगों को हड़ताल करनी पड़ती है। हड़ताल का नोटिस भी दे चुके हैं।"

"कारण क्या बताते हैं?"

"सुना है एक मजदूर को काम से निकाल दिया है। इसके विरोध में हड़ताल हो रही है।"

"वह काम से क्यों निकाला गया?"

"वह आदमी कामचोर था। अपना काम ठीक तरह से नहीं करता था, मिल के स्टोर से दो बंडल सूत की चोरी की। स्टोर के मैनेजर ने पूछ-ताछ की तो उनसे मर्यादाहीन व्यवहार किया। इसलिए उसको डिसमिस कर दिया है।"

"यूनियन की डिमाण्ड क्या हैं?"

"डिमाण्ड तो यही है कि मजदूर फिर से काम पर लिया जाए। सुना है कल एक मजदूर ने कहा है कि हम हड़ताल न करें। हमारी माँग में न्याय नहीं है। जिसने चोरी की है, उसे फिर से नौकरी पर लेने की माँग

उचित नहीं है। शाम को उस आदमी को कुछ मजदूरों ने मार-पीटकर अधमरा करके रास्ते पर छोड़ दिया।"

"अच्छा ! इन खबरों को इतनी मुख्यता न दो। देखें आखिर क्या होता है—बाद में इसपर विचार करें। अच्छा कोई और खास खबर है ?"

"चन्द्रमोहन ने फोन किया था।"

"क्या बात है ?"

"आपसे मिलना चाहते हैं।"

"तुमने क्या कहा ?

"कहा कि आप नहीं हैं।"

"मिल नहीं सकते—ऐसा तुम्हीं कह देते तो अच्छा होता। यह शख्स आकर दो लाख का सौदा करेगा। स्वामीनाथन् ! उन दिनों रुपये-पैसे का बोलबाला न था, इसलिए शैतान ने ईव के हाथ में 'सेव' दिया। उसी 'सेव' के फल ने आज रुपये का रूप लिया है। वह फिर से फोन करे तो कह देना कि मैं मिल नहीं सकूँगा।"

स्वामीनाथन् ने उसकी ओर अनुकंपा की दृष्टि से देखा। कुछ कहना चाहा, मगर मुरली की आँखें देखते ही एकदम चुप्पी साध ली। मुरली मुस्कुराया। बोला—"जानता हूँ तुम क्या कहना चाहते हो। सेव तुम्हें खींचता है। चाहे तुम ईव बन जाओ। मुझे आदम बनाने की कोशिश न करना।" मुरली कुरसी से उठ गया।

"प्रोफेसर का फोन आया था। आपके आते ही फोन करने को कहा है।"

मुरली ने फोन उठाकर प्रोफेसर को डायल किया।

"मुरली ! तुम्हारी ही प्रतीक्षा में बैठा हूँ। जल्दी आओ। प्लीज़"—कमलस्वामी गिड़गिड़ाये। उनकी आवाज में ध्वनित घबराहट और चिन्ता ने मुरली को चौंका दिया फोन का चोंगा पटककर धड़धड़ाता सीढ़ियाँ उतरने लगा।

स्वामीनाथन् चकित सा खड़ा देखता रहा।

बाईस

पोर्टिको में कार छोड़कर मुरली एक-एक दो-दो करके सीढ़ियाँ लाँघता अन्दर गया। उसके बरामदे में पहुँचने के पहले ही प्रोफेसर अन्दर से बाहर आ गये। उनकी सूरत देखते ही मुरली हक्का-बक्का रह गया। उनका चेहरा सफेद पड़ गया था। काटो तो खून नहीं। आँखों में भय था। शरीर में कंपन। उनको क्या हो गया? वे मुरली के निकट आए। उनके मुंह से एक शब्द भी न निकला। सूनी आँखों से पल-भर उसे ताकते रहे। फिर एक चिट्ठी को उसके हाथ में थमाकर सोफे पर लुढ़क गए। दिग्-भ्रमित-सा खड़ा मुरली उस पत्र को लेकर दीवार पर लगे लैंप के नीचे जाकर पढ़ने लगा। लिखावट से मालूम हो गया कि वह शारदा की चिट्ठी है। उसका माथा ठनका। अनजाने भय और घबराहट ने उसे विमूढ़ बना दिया। एक बार प्रोफेसर की ओर मुड़कर देखा।

चिट्ठी बेहद संक्षिप्त थी। वह उसे मोड़ते हुए प्रोफेसर के पास आ बैठा। उन पर उसे बड़ी दया आ रही थी। उनकी चिन्ता व बेचैनी उससे छिपी न थी। लेकिन उनकी तरह वह परेशान न हुआ। धीरे से कहा—"मुझे इसकी प्रतीक्षा थी।"

"तो मुझे क्यों नहीं बताया?"—वेदना भरे स्वर में प्रोफेसर ने पूछा।

"इतना मालूम था कि वह विप्लववादी पार्टी में शामिल होने वाली है। लेकिन···वह आपको छोड़कर चली जाएगी, इसकी आशा नहीं थी।" लम्बी आह भरता हुआ मुरली अब खड़ा हो गया। फिर कहा—"उसे ढूंढकर मैं ले आऊँगा।"

"इस वक्त कहाँ जाकर ढूंढोगे? उसने लिखा नहीं कि वह कहाँ जा

रही है ।"

"अभी आधे घण्टे में आ जाऊँगा ।" मुरली ने बिदा ले ली ।

मिनटों में वह शिवराम के यहाँ पहुँच गया। रात के दस बज गये थे। शिवराम भोजन कर रहा था, उसकी माँ परोस रही थी। मुरली ने तेजी-से उसके सामने जाकर कड़कती आवाज में पूछा—"शारदा कहाँ है ?" मुरली की आवाज से उसका क्रोध और अधीरता को समझकर शिवराम ने मुस्कुराकर कहा—"खड़े क्यों हो ? बैठो न ! मां, एक और थाली परोसकर लाना।"

मुरली जल उठा—"खाना फिर खा लूंगा । पहले यह बता•••शारदा कहाँ है ?"

"वह कोई बच्ची है, कहीं खो जायेगी ! इतनी घबराहट•••क्यों•••" शिवराम ने बड़ी शान्ति से कहा।

"उधर प्रोफेसर एकदम टूट गए हैं। उसने चिट्ठी में लिखा है कि वह पार्टी में शामिल होकर कहीं जा रही है, उसकी तलाश न करें•••बेचारे प्रोफेसर की वेदना का क्या कहना ?"

"मुझसे पूछें तो मैं क्या जानूं ?" शिवराम ने लापरवाही से कहा। शिवराम की मां ने बीच में टोका—"उस लड़की का क्या हुआ। अभी आठ बजे कान्ता और वह दोनों यहाँ से गयी थीं ना ?"

मुरली ने हर शब्द पर जोर देते हुए कहा—"तुम जानते हो कि वह कहाँ है।"

"जानने से क्या होता है ? पार्टी की कार्रवाईयाँ रहस्य की बातें हैं। फिर तुम एक पत्रकार हो।"

"मैं अपने लिए तुम्हारे पास नहीं आया, प्रोफेसर के लिए आया हूँ।"

"उनसे बताना कि उसके प्राणों को कोई खतरा नहीं है।

"एक पितृहृदय की वेदना को तुम काहे को समझते ? हूँ•••तुम्हारे सिद्धान्त के अनुसार पारिवारिक स्नेह, ममता, प्यार सब कुछ बुर्जुआओं की कल्पना है न ? लगता है अपनी माँ के प्रति भी ऐसा ही बर्ताव करोगे।" घृणा से मुंह सिकोड़ते हुए मुरली ने कहा—"वे तुम्हारे गुरु हैं, बस•••इस का ख्याल करके उनका दिल मत दुखाना। वह जिस पार्टी में चाहे रहे।

लेकिन ममता का बन्धन न तोड़ो।"

"मुझसे कहने से क्या लाभ ? शारदा से कहना।"

"बता दो कहाँ है वह ?"

"वह कहाँ रहेगी···कहाँ-कहाँ जाएगी···यह सब पार्टी का मामला है। मेरा नहीं।"

"उसे लौटा ले जाने के लिए मैं नहीं आया हूँ। प्रोफेसर पर क्या बीत रही है, इतना उससे बताने आया हूँ। बता दो कि वह कहाँ है।" मुरली ने अनुनयपूर्ण स्वर में कहा।

"तुम लाख मनाओ···मैं बता नहीं सकता। मुरली ! मुझे माफ कर दो। प्रोफेसर से कहना कि वे घबरायें नहीं। एक-दो महीनों में शारदा उनके पास वापस आ जाएगी। डरने की कोई बात नहीं।"

"तुम उसका पता नहीं दोगे तो मुझे पुलिस की मदद लेनी पड़ेगी।"

"ओह—हो—हो···" शिवराम ऊँची आवाज में हँसने लगा—"पुलिस ओ-हो पुलिस···।"

शिवराम के अट्टहास पर मुरली तिलमिला उठा। शिवराम की माँ ने थाली लाकर रख दी—"बेटा, बैठो न ! खाते-खाते जी भरकर बातें करलो···।" उसने मुरली से स्नेहपूर्ण स्वर में कहा।

मुरली चुपचाप खड़ा शिवराम को आग्नेय नेत्रों से देखता रहा। अन्त में पूछा—"कहो तो, आखिर तुम्हारा इरादा क्या है ?"

शिवराम ने पूर्ववत् लापरवाही जताते हुए कहा—"कह दिया न, यह पार्टी का मामला है। मैं कुछ नहीं कह सकता।"

"भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारी पार्टी···।" गरजता हुआ मुरली वहाँ से तीर-सा निकल गया।

कार की रफ्तार तेज थी। विप्लव पार्टी कार्यालय के निकट आते ही मुरली को थोड़ा संदेह हुआ। उसने कार रोक दी। गाड़ी से उतर कर दरवाजे पर जाकर घंटी बजायी। थोड़ी देर बाद नल्लदम्बी दरवाजा थोड़ा-सा खोले बाहर की तरफ झाँका।

घना अंधेरा छाया था। दोनों एक-दूसरे को पहचान न पाए।

"क्या चाहिये आपको ?" नल्लदम्बी ने कठोरता से पूछा। मुरली

ने पूछा,—"कान्तामणी हैं इधर ?"

"आप कौन हैं ?"

"मेरा नाम मुरली है।"

"ओह ! 'भारतमणी' के एडिटर ?—कान्तामणी से क्यों मिलना है ?"

"उनसे कुछ बातें करनी हैं।"

"वे यहाँ नहीं हैं।"

"और कहाँ मिल सकता हूँ ?"

"रात के दस बजे ऐसी कौन-सी जल्दी आ पड़ी है ?"

"कह दिया न ? उनसे कुछ बातें करनी हैं।"

नल्लदम्बी ने बिना उत्तर दिये धड़ाम से दरवाजा बन्द कर लिया।

जैसे मुंह पर थप्पड़ लगा दिया हो। मुरली भोंचक्का-सा खड़ा था। तूफान-सा क्रोध उमड़ आया। मगर किस पर दिखायें ! उसका सारा आक्रोश कार पर उतरा। वह जोर से गरजती हुई निकली।

मुरली ने वापस आकर देखा, प्रोफेसर वैसे ही सोफे पर निढाल पड़े थे। कार से उसके उतरने के पहले ही वे हड़बड़ाकर उठ गये—"मुरली ! बताओ ! शारदा कहाँ है ?" उनकी भयभीत दृष्टि मुरली के चेहरे पर टिकी थी।

"शिवराम से मिलने गया था। उसने शारदा का पता देने से इंकार कर दिया।"—मुरली ने सीढियों पर चढ़ते हुए कहा।

"बात को इतना गुप्त रखने की अब क्या जरूरत पड़ी ? वह जिस पार्टी में चाहे शामिल हो जाए। मैं थोड़े ही मना करने वाला हूँ।" प्रोफेसर की आवाज में मन की अकुलाहट प्रतिध्वनित हो उठी।

"घबराइए मत। शिवराम भी ऐसे ही कॉलेज में पढ़ते वक्त एकाएक गायब हो गया था। पार्टी का मैम्बर होने पर, पार्टी का शिक्षण व दीक्षा लेने के लिए उनको कहीं गुप्त स्थानों पर भेज देते हैं। शारदा भी कहीं भेज दी गई होगी। अब आराम कीजिए। कल हम दोनों जाकर शिवराम से मिलें। शायद आपको देखकर उसका मन पसीजेगा।" मुरली ने उनको आश्वासन दिया।

अगले दिन दोनों पार्टी के दफ्तर में गये। उस वक्त शिवराम और नल्लदम्बी दोनों वहाँ पर थे।

शिवराम ने प्रोफेसर को देखते ही कहा, "माफ कीजिए सर, शारदा ने आज सवेरे पाँच बजे शहर छोड़ दिया है।"

"आज सवेरे ? तब वो कल रात कहाँ थी ?" मुरली ने तड़पकर पूछा।

"कल रात इस कार्यालय में थी।" यह कहकर शिवराम हँस पड़ा।

"यहाँ थी ? कल मैं यहाँ भी आया था ?" मुरली ने निराशा भरी आवाज में कहा। शिवराम ने नल्लदम्बी की ओर देखा। नल्लदम्बी ने शरारत भरी मुस्कुराहट के साथ सिर हिलाया, फिर कहा—"इन्होंने कान्ता के बारे मे पूछा था।"

शिवराम ने कहा—"वे दोनों यहीं ठहरी थीं। आज सवेरे ही चली गईं।" मुरली ने नल्लदम्बी पर क्रोध भरी दृष्टि डाली। नल्लदम्बी ने हँसते हुए कहा—"शारदा के बारे में पूछते तो भी वही उत्तर मिला होता।"

मुरली ने घृणा से मुँह फेर लिया।

"कहाँ गयी है ?" प्रोफेसर ने उत्सुकता प्रकट की।

"माफ कीजिए सर, यह सब बताने का मुझे अधिकार नहीं। धीरज रखिए। दो महीने में शारदा वापस आ जाएगी।"

पार्टी कार्यालय से लौटते वक्त दोनों मौन थे। बेटी का पता न मिलने की निराशा प्रोफेसर को सता रही थी। पिछली रात शारदा की तलाश में पार्टी आफिस का द्वार खटखटाने पर भी उससे मिल न पाया, इसके दुख में मुरली जल-भुनकर खाक हो रहा था। उसका दिल भारी हो गया। बार-बार आहें भरता रहा। मुरली ने वह दिन प्रोफेसर के साथ बिताया। रात में बड़ी देर तक दोनों सो न पाए। शारदा के चले जाने पर मानो प्रोफेसर गूँगे हो गये थे। दोनों में अधिक बातें भी न हुईं। उनके इस मौन पर मुरली चिन्तित हो उठा। दोनों बिस्तर पर करवटें बदलते रहे।

प्रोफेसर की वेदना को वह समझ गया था। ममता का बंधन कितना दृढ़, कितना गहरा है। वह मनुष्य को कितना हिला देती है—इसे मुरली ने अपनी आँखों से देखा। सोचा—उसका अपना कोई नहीं है। न घर न बार। उससे प्यार करने, स्नेह दिखाने, उसका ख्याल करने वाला कोई

नहीं है, अपना अकेलापन मुरली को खलने लगा।

लगा दुनिया व लोगों से वह कोसों दूर है। अपना कोई नहीं, सब पराये हैं। प्रसूति घर में ही ममतामयी माँ का आँचल उसके सिर से हट गया। अपने दुर्भाग्य पर वह अपने आपको कोसने लगा। 'जननी जन्मभूमि···' मन ही मन गुनगुनाया।

प्रोफेसर एकाएक उठ बैठे और मुरली से पूछा—"मुरली! शारदा मुझ से नाराज़ है क्या? उसने तुम से कुछ कहा था?"

मुरली भी उठ बैठा—"नहीं तो।"

"नहीं···मुझसे उसे नफरत सी हो गयी है, नहीं तो ऐसे घर छोड़कर भाग जाती? जैसे कारागृह से कोई कैदी भाग निकलता है, वैसे ही चली गई है न? चरित्रहीन पिता की छाया में रहने से घिन आयी होगी।" कमलस्वामी ने लंबी आह भर ली। थोड़ी देर चुप रहने के बाद बोले—"उसको मैंने बड़े प्यार से पाला। कोई कमी, कोई अभाव न रखा। उसकी बुद्धि, शिक्षा व प्रतिभा पर कितना विश्वास रखा था। मेरी कमजोरी पर वह मुझे क्षमा कर सकती थी। ऐसा कौन सा बड़ा अक्षम्य अपराध किया था मैंने? उसने मुझे समझने की कोशिश क्यों नहीं की?··· नो-नो···उसे घर से भागना नहीं चाहिए था···नो···" प्रोफेसर का गला भर आया।

"उसके पत्र से इसका भान नहीं होता कि उसे आपसे घृणा है। लिखा है—पार्टी में काम करने वह जा रही है, इस पर आप सहमत न होंगे, इसीलिए आपसे कहे बिना जा रही है। पार्टी का नशा चढ़ा है। बस! और कुछ नही।" मुरली ने सान्त्वना दी।

प्रोफेसर बुदबुदाये—"यह सब शिवराम की करतूत है।" जैसे उनके धीरज का बाँध टूट गया हो तकिये में मुँह छिपाकर रो पड़े। उनका दुख मुरली से सहा न गया। उसका दिल फटा जा रहा था। मगर करें क्या?

अगले दिन कार्यालय से उसने विप्लव पार्टी कार्यालय को फोन किया। मालूम हुआ उस दिन बड़े सवेरे प्लेन से शिवराम चला गया है। वह रूस जा रहा है। कुछ दिनों पहले आदिमूलम् के सम्बन्ध में शिवराम ने जो चेतावनी दी थी, वह उसके दिल में खटकती रही। किसी भी हालत

में 'भारतमणी' के कारण 'स्वर प्रभाती' की कोई हानि होने की संभावना नहीं है। उल्टे उसकी बिक्री दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है। ऐसी हालत में 'भारतमणी' से आदिमूलम् ने दुश्मनी ठान ली है—इसका कारण क्या हो सकता है···यही मुरली की समझ में न आया। इन सबके पीछे नल्लदम्बी का हाथ है, यह मुरली को मालूम न था। शिवराम ने भी इसके बारे में कुछ नहीं कहा था। उसके लक्ष्य-पथ में कितनी प्रतिरोधात्मक शक्तियाँ मुंह बाये खड़ी हैं, इसका ख्याल आते ही मुरली हताश हो गया।

पास खड़ा स्वामीनाथन् शाम की डाक में आई चिट्ठियों को देख रहा था।

मुरली ने पूछा—"कोई नई खबर है?"

"रूस में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी महासम्मेलन में भाग लेने आज भारत से कई प्रतिनिधि जा रहे हैं। उनमें शिवरामजी भी हैं।"

"और कुछ?"

"अगले हफ्ते कालीनाथ मिल में हड़ताल होगी। समझौते की बातें सफल नहीं हुईं। विप्लव पार्टी ही मजदूरों को भड़का रही है। शिवरामजी रूस चले गये, इसलिए नल्लदम्बी उनके स्थान पर प्रान्तीय लीडर बने हैं।"

"विज्ञापन सम्बन्धी बातें···"

"सर! शशिरेखा ने प्रोड्यूसरों को हमें विज्ञापन देने से मना कर दिया है।"

"तो क्या?"

"प्रोड्यूसरों ने विज्ञापन देने से साफ इनकार कर दिया है। जो पहले दिया था उन्हें भी वापस ले लिया।"

"उल्लू के पट्ठे!···शशिरेखा ने कहा तो इनकी बुद्धि कहाँ चरने चली गयी?" मुरली क्रोध से चिल्लाया।

"उसने कह दिया कि 'भारतमणी' को विज्ञापन देंगे तो उनकी फिल्मों में वह एक्टिंग नहीं करेगी।"

"हूँ···फील्ड में अकेली यही है एक्टिंग करने वाली! यह नहीं तो सिने-जगत का सूर्यास्त हो जाएगा?"

"आज इसी का मार्केट है सर। इसलिए प्रोडयूसर इसके पीछे भागते हैं···। इससे हमें साल में एक लाख रुपये की हानि उठानी पड़ेगी।"

"कलैवाणी स्टूडियो को फोन करके पूछो कि चेट्टियार हैं ?"

स्वामीनाथन् ने स्टूडियो को फोन करके बताया, "चेट्टियार हैं।"

तुरन्त मुरली स्टूडियो में गया। कलैवाणी स्टूडियो कार्यालय में चेट्टिचार एयर कण्डिशन्ड़ कमरे में बैठे थे।

उनके सामने मेज पर लेखा-जोखा रिपोर्ट थी। मुरली को देखते ही बहियों को दराज में रखते हुए उसने उसका स्वागत किया।

मुरली ने छूटते ही कहा—"आपका विज्ञापन नहीं मिला है। क्या मामला है, यह जानने आया हूँ।"

मायाण्डी चेट्टियार ने दाँत दिखाये। सिर पर हाथ फेरा। फिर कहा—"आजकल···बिजनेस थोड़ा डल है···बाद में देखें क्या होता है।"

"चेट्टियार ! इक—तारा खोलकर रख लें तो अच्छा। शशिरेखा के कारण आपने हमें विज्ञापन नहीं दिया है, है न ?"

"हि···हि···हि···आपने ताड़ लिया है।"—चेट्टियार फिर से हँस पड़े।

उनकी हँसी पर मुरली बिफर उठा। बड़ी मुश्किल से अपने को संयत कर खुद मुस्कुराने की कोशिश की। कुछ क्षणों तक उन्हें घूरता रहा। "सिनेमा—फिल्म चौंसठ कलाओं का केन्द्र स्थान···कलाओं का मूलस्रोत ! ओह ! आज इस सिनेमा जगत में कला की कैसी दुर्गति होती जा रही है। कला के नाम पर···" मुरली आगे सोच न पाया।

मायाण्डी चेट्टियार सिने-जगत के बेताज सम्राट थे। मगर कला से उनमें कोसों की दूरी थी। कलात्मक अभिरुचि, रसात्मक अनुभूति, कला की मर्मज्ञता···तिल के बराबर भी उनमें न थी। हाड़ के बाजार में ताड़ी की दुकान खोले बैठे रुपये को खनखनाकर गिनने वाले की चतुराई उनके चेहरे पर टपकती थी, न कि एक कलाकार की संस्कारिकता, व सूक्ष्मता।

"सिनेमा, सिनेमा के अभिनेताओं के अभिनय, इत्यादि की खरी आलोचना, सच्चाई को बताना पत्रिका का धर्म है। इस दिशा में आप लोगों को प्रोत्साहन मिले आपकी इन्डस्ट्री की उन्नति होगी।" मुरली ने

कहा ।

"हाँ-हाँ...मगर...इस शशिरेखा के मामले में आपको थोड़ी होशियारी से काम लेना था।"

"यह कोई सौदा-सुलफ है ? जो सच है वही हम लिखेंगे ।"

"ओह ! यह कौन-सी बड़ी सचाई है मिस्टर ! 'स्वर प्रभाती' को देखिए। हर दिन शशिरेखा के बारे में सनसनीदार खबरें निकलती रहती हैं। हर हफ्ते 'सवाल जवाब' के स्तम्भ में वही जवाब देती है। आपका ख्याल है कि 'स्वर प्रभाती' झूठ बघारता है ?" चेट्टियार तड़ककर बोले। ...कुछ मिनिटों के बाद फिर कहा—"आपको विज्ञापन देने में मुझे कोई एतराज़ नहीं। लेकिन एक शर्त है। शशिरेखा या उसकी फिल्मों पर छींटाकशी नहीं होनी है। इतना आप कर नहीं सकते ?"

"हम तो उसके भद्दे एक्टिग और निरसतापूर्ण, अश्लील दृश्यों का ही खंडन करते हैं।"

"इन बातों से आपका क्या मतलब ? लोगों को वही अश्लीलता पसन्द है। शशिरेखा को एक्टिग करने की क्या जरूरत है। परदे पर आना काफी है। सीटी बजाने हजारों दर्शक एकत्रित हो जायेंगे। जी ! उन्हीं रसिक महाजनों के भरोसे हम फिल्म निकालते हैं। आपके आदर्शों पर फिल्म लें तो हाथ में खप्पर लेना पड़ेगा।" चेट्टियार की आवाज में हल्की झुंझुलाहट थी।

मुरली बौखला उठा। इन्डस्ट्री में जिनका नाम सबसे पहले लिया जाता है, अगर वे एक ही अभिनेत्री से इतना डरें अन्य प्रोडयूसरों का क्या कहना ? वह मौन बैठा था। कुछ न कहा। अन्त में चेट्टियार ने कहा—"भारतमणी में हमारी फिल्मों का विज्ञापन प्रकाशित होना हमारे लिए गौरव की बात है। लेकिन अब हम विवश हैं। शशिरेखा की बात रखने की मजबूरी है। आप उससे मिलकर बातें कर सकते हैं।"

यह सुनते ही मुरली जल उठा। कठिनाई से अपना क्रोध पीकर वहाँ से निकल गया। असल में उसे इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि हर धंधे व पेशे में उन्नति करने के लिए, यश व नाम पाने के लिए, कड़ी मेहनत व निपुणता अपेक्षित है...लेकिन अभिनय के क्षेत्र में...लगता

है उसकी उतनी जरूरत नहीं। जिसे एक्टिंग करना नहीं आता, उसने एक्टिंग फील्ड में कितना रोब जमाया है!…मुरली का सारा गुस्सा लोगों पर उतरा…ओह! लोग कितने गिर गये हैं? सचमुच लोगों की रुचि इतनी घटिया, इतनी भ्रष्ट हो गयी है?

मुरली का दिल रो उठा।

तेइस

मुरली की कार फर्राटे से सड़क के मोड़ पर मुड़ी और एकाएक उसकी गति धीमी हुई। कालीनाथ मिल का मजदूर वेलायुदम् जा रहा था। मुरली ने उसके पास जाकर कार रोक दी। कार को देखते ही वेलायुदम् दौड़ा आया। मुरली ने कहा—"सुना है अगले हफ्ते हड़ताल करने वाले हैं?"

"हाँ! हां! यूनियन लीडर ज़ोर दे रहे हैं।"

"और मजदूरों का क्या हाल है?"

"किसी का हड़ताल करने का मन नहीं। मगर नल्लदम्बी ने हठ पकड़ी है। न जाने कितने दिन हड़ताल रहेगी? तब तक भगवान ही हमारे बाल-बच्चों की रक्षा करें! मुरली! आपकी मदद से मुझे यह नौकरी मिली। लगता है विप्लव पार्टी वाले मुंह की कौर छीन लेंगे।" वेलायुदम् की आँखें भर आयीं।

"आप सबको एक-मत होकर इसका विरोध करना था।"

"सो कैसे? विप्लव दल वाले मजदूर हमारी हड्डी-पसली तोड़ देंगे ये लोग हमें चैन की साँस नहीं लेने देते। नल्लदम्बी बड़ा बदमाश है।"

मुरली को उसपर बड़ी दया आयी। वह उसका बचपन का साथी था। उन पुरानी यादों के पन्नों को उलटते हुए मुरली ने कार स्टार्ट कर दी।

वेलायुदम् के पिताजी मुरली के पिता के यहां मुनीम थे। प्रारंभिक शिक्षा से लेकर हाईस्कूल तक दोनों क्लास-मेट थे। दोनों में गहरी मित्रता थी। स्कूल के बाद कई सालों तक दोनों की मुलाकात न हुई। कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद पत्रिका शुरू करने के इरादे से धन लेने मुरली गांव गया था। गाँव की जमीन जायदाद को बेचकर धन संग्रह करना चाहता था। तभी वेलायुदम् से मिला। वह गरीबी में कठिनाई से अपना परिवार संभाल रहा था। पत्नी उसकी आडम्बरप्रिया थी। उसकी फिजूलखर्ची के मारे वह बेचारा कांटों में घिसतटा जा रहा था। मुरली ने उस पर तरस खाकर मद्रास में कालीनाथ मिल में नौकरी पर लगवा दिया। घरवाली···ठीक न रही···तो क्या करेगा बेचारा—वेलायुदम् की दयनीय स्थिति पर सोचता हुआ वह घर पहुँचा।

कालीनाथ मिल में हड़ताल शुरू हुए एक महीना हुआ होगा। मिल मैनेजमेण्ट और यूनियन लीडर एक समझौते पर न आ पाये। स्थिति बड़ी नाजुक थी। किसी भी क्षण दंगा शुरू होने की आशंका थी। मीटिंगों में नल्लदम्बी का जोशीला भाषण और प्रचार मजदूरों में आवेश भर रहा था। सरकार मिल मैनेज़मेण्ट को मजदूरों की माँग पर सोचने के लिए विवश कर रही थी। उसने इसका बिलकुल ख्याल न किया कि मजदूरों की माँग न्याय संगत नहीं है। 'भारतमणी' लगातार मजदूरों की अन्यायपूर्ण माँगों पर प्रकाश डालते हुए, इस हड़ताल में विप्लव पार्टी के योगदान पर खुल्लमखुल्ला लिख रहा था। उसने मिल मालिकों को प्रोत्साहित किया कि वे अन्याय के सम्मुख कभी न झुकें।

अन्त में एक दिन मैनेजमेण्ट और लेबरलीडरों की बैठक हुई। मिल के कार्यालय में समझौते की बातें हुई। मिल के बाहर सैकड़ों मजदूरों की भीड़ लगी थी। लेकिन पुलिस भीड़ को संभालने को वहाँ पर मौजूद न थी। आँखों देखी रिपोर्ट लेने के लिए मुरली ने स्वामीनाथन् को घटना-स्थल पर भेजा था। स्वामीनाथन् ने अपना स्कूटर एक पान की दूकान

पर छोड़कर देखा कि परिस्थति कैसी है। वातावरण गरम था। लोग मनमाने ढंग से चीख-पुकार मचा रहे थे। मिल के अन्दर बातें हो रही थीं। इधर बाहर उपस्थित भीड़ क्षण-क्षण उत्तेजित हो रही थी। स्वामीनाथन् पान की दुकान के पीछे खड़े एक इमली के पेड़ पर चढ़कर उसके घने डालों की छाया में आराम से बैठ गया। यहाँ से भीड़ और मिल साफ नजर आ रहा था। कंधे पर झूलता कैमरा एक डाल में लटकाकर उसने अपनी दृष्टि पैनी कर ली। धूप बड़ी तेज थी।

तीन बजे के लगभग मिल के कम्पाउण्ड का गेट खुला। नल्लदम्बी बाहर आया। उपस्थित लोगों से कहा कि समझौते की बात टूट गयी है, इसलिए हड़ताल को ज़ारी रखना है। तुरन्त भीड़ में भगदड़-सी मच गयी। स्वामीनाथन् ने इधर-उधर देखा। एक पुलिस वाला भी नज़र न आया। थोड़ी देर में मैनेजमैण्ट के कुछ लोग कार में बाहर निकले। उनके द्वार पर आते ही मजदूर ऊँची आवाज़ में चिल्ला उठे—"मुर्दाबाद..." मुर्दाबाद" की ध्वनि से सारा वातावरण गूँज उठा।

कार भीड़ को चीरती हुई निकली। थोड़ी दूर जाते ही भीड़ में से किसी ने उस पर एक पत्थर मारा। कार के पिछली तरफ का शीशा टूट कर बिखर गया। अगला पत्थर आने के पहले ही कार तेजी से निकलकर आँखों से ओझल हो गयी। भीड़ में और हल्ला मच गया। स्वामीनाथन् का कैमरा डालियों की आड़ में से, वहाँ पर जो कुछ बीत रहा था, उसकी फिल्म उतारता रहा।

थोड़ी देर के बाद मिल के जनरल मैनेजर की कार बाहर आयी। गेट के बाहर आते ही मजदूरों ने उसे घेर लिया। मैनेजर ने कार के अन्दर बैठे-बैठे उनसे कुछ कहने की कोशिश की। तभी भीड़ में से किसी ने मैनेजर के सिर को लक्ष्य करके एक बड़ा पत्थर तान कर मारा कि चोट खाकर वे सीट में बेहोश लुढक गये। खून का फव्वारा फूट निकला। स्थिति की भयंकरता समझकर ड्राइवर ने मैनेजर की जान बचाने के इरादे से जोर-जोर से हार्न बजाते हुए कार की रफतार तेज कर दी। एकाएक कार की रफतार तेज होने से जो कार को पकड़े व थामे खड़े थे धक्का खाकर गिर पड़े। इतने में पत्थरों की बौछार शुरू हो गयी। कार क

रफ्तार और बढ़ी। वह भीड़ को चीरती हुई तीर सी निकली कि एक मजदूर गाड़ी के पहिए के नीचे आ गया। उसकी टाँग टूट गयी।

आन्दोलनकारी भीड़ और भी उन्मत्त हो उठी।

इस मौके पर नल्लदम्बी ने अपने साथियों को इशारे से कुछ बताया। तुरन्त वे लोग ऊँची आवाज में नारे बाजी करते हुए गेट के अन्दर घुसने लगे। अब धक्का-मुक्की करती हुई भीड़ ने मिल कम्पाऊण्ड के अन्दर घुसकर वहाँ कार के अन्दर डरे बैठे मिल के प्रधान इन्जीनियर को घेर लिया। भीड़ ने उन्हें कार से उतरने न दिया। कार को धक्का देकर बाहर ले आये। देखते-देखते उसमें आग लगा दी। कार धू-धू कर जलने लगी। आग की लपटों के बीच में से इन्जीनियर ने बाहर आने की कोशिश की। एक ने उस पर लाठी मारकर कार के अन्दर ही धकेल दिया।

भीड़ पैशाचिकता पूर्ण आवेश में चिल्ला रही थी। स्वामीनाथन् पेड़ पर बैठा काँपते दिल से इस सबकी फिल्म उतार रहा था। उसके शरीर में कंपकंपी सी दौड़ी। डर के मारे कलेजा मुंह को आ गया। उसकी आँखों के सामने एक बेकसूर आदमी जलाया जा रहा था। लेकिन वह कुछ करने में असमर्थ था। उन्मत्त भीड़ के नृशंसतापूर्ण क्रूर-कृत्य ने उसे इतना भयभीत कर डाला कि उसने एक हाथ से डाली को कसकर पकड़ लिया ताकि कहीं वह गिर न जाये।

इतने में एक लॉरी में पुलिस आ गयी। एक पुलिस अफसर भी साथ था। उनको देखते ही स्वामीनाथन् को थोड़ी हिम्मत हुई और वह नीचे उतर आया। आते ही तड़पकर अफसर से कहा—"सर ! लगता है स्थिति हाथ से निकल गयी है। आप तो चुप खड़े देख रहे हैं?"

"क्या करें ?"···अफसर ने अपनी विवशता जतायी।

"बीस पुलिस वाले इस भीड़ को संभाल नहीं सकते ?"

"क्यों नहीं ! दस आदमी काफी हैं।···लेकिन हम लाठी का प्रयोग करें, सरकार हम पर एक्शन लेगी।" अफसर ने मुँह पर का पसीना पोंछते हुए कहा।

"सरकार की चिन्ता क्यों ? आपको अपना फर्ज अदा करना है, बस।"

"ठीक है। फर्ज अदा करेंगे, लेकिन असेम्बली में हम पर फब्तियाँ कसी जाती हैं। सरकार हुकुम दे···अभी पाँच मिनट में यह सारा हल्ला शान्त हो जायेगा। सर, एक बात कहे देता हूँ। इस तरह कैमरा के साथ आपका यहाँ खड़ा रहना खतरे की बात है। यह उन्मत्त भीड़ कैमरा छीनकर आपकी खबर ले लेगी···कहीं चले जाइए···—जल्दी करना···" पुलिस अफसर तेजी से चले गये।

स्वामीनाथन् अपना स्कूटर लेकर थोड़ी दूर गया और एक मकान के कम्पाऊण्ड के अन्दर उसे छोड़कर फिर मिल की तरफ आया। देखा मिल में आग लगी है जल्दी-जल्दी पान की दूकान के पीछे जाकर, इमली के पेड़ पर चढ़कर देखा। कालीनाथ मिल आग की लपटों में भस्म होता जा रहा था। आग बुझाने जो फायर ब्रिगेड आया था, भीड़ ने उसका रास्ता रोक लिया। कम्पाऊण्ड के बाहर इन्जीनियर की कार अब भी जल रही थी।

कुछ मिनटों के अन्दर भीड़ मिल में घुस गयी। तभी पुलिस कार के निकट आ पायी। जलती कार के दरवाजे को खोलने की उन्होंने कोशिश की। किसी तरह दरवाजा तोड़कर इन्जीनियर को बाहर निकाला। इन्जीनियर नहीं उसका प्रेत ही बाहर आया। आधे घंटे में और दो लॉरियों में सशस्त्र पुलिस आयी। उच्च पुलिस अफसर भी आये। लाठी का प्रयोग करके मिल के अन्दर घुसे मजदूरों को भगाया गया। दो बार आकाश की तरफ गोलियाँ चलायीं कि भीड़ छंट गयी। इन सबके बाद आग बुझाने वाले बड़ी मुस्तैदी से अपने काम पर उतरे।

शाम को सात बजे के लगभग उस क्षेत्र में पूर्ण शान्ति विराजमान थी। पुलिस पहरे पर खड़ी थी। इन्जीनियर की कार अब भी धुआँ उगलती वहीं खड़ी थी। स्वामीनाथन् अतीव निराशा व दुख के साथ पेड़ से उतरा। इधर-उधर देखा। कोई नहीं था। सारा प्रदेश निर्जन था। मिल के आसपास बन्दूक ताने पुलिस खड़ी थी। स्वामीनाथन् अंधेरे में छिप-छिपकर उस घर में पहुँचा जहाँ उसका स्कूटर था। वहीं से उसने 'भारतमणी' कार्यालय को फोन किया और स्कूटर लेकर कार्यालय की तरफ जाने लगा। सड़क के मोड़ पर आते ही दूर पर एक जुलूस को आते देखा। पेट्रोमैक्स लैंपों

की रोशनी में एक भारी जुलूस नारे लगाता आ रहा था। तुरन्त स्कूटर को पास के मकान के कम्पाऊण्ड में छोड़कर स्वामीनाथन् एक ओर खड़ा हो गया।

"कालीनाथ मिल मैनेजर !"

"मुर्दाबाद"

"पूँजीवादी वर्ग"

"मुर्दाबाद"

"मजदूर का पैर जिसने तोड़ा"

"उस मैनेजर से बदला लो"

"हम बदला लेंगे"

"खून का बदला खून"

"जरूर लेंगे"

नारेबाजी ने उस गली को चौंका दिया। जुलूस में आगे एक मजदूर को कुरसी पर बिठाये ले जा रहे थे। उस मजदूर के पैरों पर पट्टी बंधी थी। कुरसी पर बैठा वह मजदूर युद्ध-क्षेत्र में विजय प्राप्त वीर योद्धा जैसा चारों तरफ कटाक्ष करता हुआ बड़ी शान से जा रहा था। स्वामीनाथन् ने पहचान लिया कि यह वही मजदूर है जो मिल मैनेजर की मोटर से धक्का खाकर गिरा था। तुरन्त उसे मैनेजर की याद आ गयी। बेचारे ने पत्थरों की मार खायी थी न ?

जुलूस उसे पार करके चला गया। तुरन्त स्वामीनाथन् ने पास के टेलिफोन बूथ पर जाकर मिल मैनेजर के घर फोन किया। फोन में एक लड़की ने रोते हुए जो खबर सुनायी थी उसे सुनते ही स्वामीनाथन् काठ मारा सा रह गया।

दूर वह नारा अब भी सुनाई दे रहा था।

"मजदूर का पैर जिसने तोड़ा"

"उस मैनेजर से बदला लो"

"इंकलाब जिन्दाबाद…"

"इंकलाब !"

"जिन्दाबाद !"

चौबीस

एक मजदूर की टांग टूट गयी इसलिए अगले दिन और कई मिलों और कारखानों में हड़ताल हुई। एक भारी जुलूस निकालकर मजदूर सरकारी सचिवालय पहुँचे। जुलुस के आने की खबर पाते ही कई मंत्रीगण अपना-अपना आसन छोड़कर दौड़े आये। वह लंगड़ा बना मजदूर एक कुरसी पर बिठाया गया था। एक मंत्री ने हृदयस्पर्शी भाषण दिया—

"यह सरकार मजदूरों की, श्रमजीवियों की सरकार है। आप लोगों पर जो जुल्म व अत्याचार हुआ है उसे देखकर हमारा दिल तड़प उठता है। विश्वास रखिए, हम जरूर इस पर एक्शन लेंगे।" मंत्री महोदय ने उस मजदूर की पट्टी बँधी टाँग पर अपना हाथ फेरा। उपस्थित भीड़ गगन भेदी नारे लगाते हुई विसर्जित हुई। ठीक उसी वक्त शहर के लोग गली-गली में इकट्ठे होकर 'भारतमणी' को ध्यान से पढ़ रहे थे।

'भारतमणी' उस दिन ज्यादा पन्नों के साथ प्रकाशित हुआ था। उसमें नौ फोटो निकले थे। एक फोटो में कार में बैठे कालीनाथ मिल मैनेजर के सिर पर कोई पत्थर मार रहा है। दूसरे में बेहोश मैनेजर सीट में लुढक गये हैं। खून से लथपथ। एक और तस्वीर में पुलिस, जल भुनकर धुआँ निकलती कार में से काले बने एक अधजले शरीर को बाहर खींच रही थी। लगभग सभी फोटो में ऐसे ही भयंकर, बीभत्स दृश्य थे। पुलिस चुपचाप खड़ी दिखायी पड़ी। जिन्होंने उन फोटों को देखा उनके मन में प्रीति ही नहीं घृणा व क्रोध भी उमड़ आया। मुरली के संपादकीय लेख को पढ़कर बहुत से लोगों ने सन्तोष की साँस ली कि आज के इस दूषित परिवेश में भी नीति और न्याय का पक्ष लेने वाली एक पत्रिका है।

संपादकीय लेख में उसने लिखा था—स्थिति बड़ी नाजुक है, इससे

सरकार बेखबर नहीं थी। मिल के मैनेजमैन्ट ने समझौते की बातें शुरू करने के पहले ही पुलिस और मंत्री को फोन करके प्रोटैक्शन माँगा था। लेकिन पुलिस बड़ी देर के बाद आयी। सरकार के पक्षपातपूर्ण व्यवहार के कारण कालीनाथ मिल आग का शिकार हो गया। इन्जीनियर और मैनेजर मौत के घाट उतारे गये। पुलिस विवश व लाचार थी, यह तो फोटो में कठपुतले जैसे खड़े पुलिसवालों को देखने से ही जान सकते हैं। इन हत्याओं के लिए सरकार ही जिम्मेदार है। मजदूर के वोट अधिक संख्या में हैं, उनका बहुमत है इसलिए वे जो चाहे करें, मनमानी करें, यह तो चीन व रूस में न्याय संगत हो सकता है, लेकिन हमारे लोकतंत्री देश के लिए यह घटना लज्जाजनक है। फोटो में गुनाहगार साफ दिखाई देते हैं। इस आधार को लेकर, अपराधियों को पकड़कर कानूनी कारवाई होगी ऐसा हमें विश्वास है। आखिरी एक बात है। एक स्त्री के लिये अपने सतीत्व की लाज रखना सबसे पहला धर्म है। वैसे ही देश पर शासन करने वाले राजनीतिक नेताओं का देश की भलाई का ख्याल रखना, सबसे पहला कर्त्तव्य है। स्वार्थ लाभ के लिए इस महान् लक्ष्य की उपेक्षा करें तो···

राजनीतिज्ञों के जाल में फंसे श्रमजीवियों को एक विषय की याद दिलाना चाहता हूँ। हड़ताल करना···केवल मजदूरों का स्वत्वाधिकार नहीं है। यदि उद्योगपति भी इस दिशा में सोचने लगे तो···

मुरली के संपादकीय लेख ने लोगों में तहलका-सा मचा दिया। असैम्बली में खलबली मच गयी। मंत्रीगण इस बात पर सख्त नाराज थे कि 'भारतमणी' ने उक्त घटनाओं को फोटो सहित प्रकाश में ला दिया है। असैम्बली में विपक्षी दल के लीडर ने 'भारतमणी' में प्रकाशित फोटो और विवरण को दिखाकर आवेशमय भाषण दिया। मन्त्रिगण लाजवाब रह गये। गरमागरम सवाल पूछे गये। सरकार असमंजस में पड़ गयी। अन्त में सारा दोष पुलिस के मत्थे मढ़कर चैन की साँस ली।

कालीनाथ मिल की दंगेबाजी के समय लिये फोटो में से असली गुनाहगारों के फोटो को एनलार्ज करके 'भारतमणी' रोज प्रकाशित करती रही। यही नहीं गुनाहगारों को रंगे हाथ पकड़ना सरकार का कर्त्तव्य है, अपराधियों को सजा दी जाए, ऐसा रोज लिखती थी। सरकार मुसीबत में

पड़ गयी। गुनाहगारों को पकड़ लें तो मजदूरों के गुस्से का पात्र बनना पड़ेगा। यदि उन्हें छोड़ दें तो जनता की घृणा, व अनीतिपूर्ण शासन है, ऐसी बदनामी होगी। आखिर कोई चारा न पाकर गुनाहगारों को पकड़ा और उसपर नालिश दायर की। तुरन्त विप्लवपार्टी के मजदूरों ने मुकद्दमा वापस लेने के लिए हल्ला मचाया। एक मजदूर ने सरकारी कार्यालय के सामने अनशन का व्रत किया। बीस अपराधियों में अठारह व्यक्ति विप्लव के मजदूर थे। गुनाहगारों को पकड़ने में 'भारतमणी' के फोटो ने मदद की···इस बात पर नल्लदम्बी मुरली पर बेहद नाराज़ हो गया था। मिल में आग लगने से तीस लाख रुपये की हानि हो गयी थी इसलिए मिल को हमेशा के लिए बंद करने का मिल मालिकों ने निश्चय कर लिया।

एक दिन मुरली प्रोफेसर से मिलने गया। प्रोफेसर ने बड़े उत्साह से उसका स्वागत किया। शारदा के गृह त्याग के उपरान्त मुरली ने आज ही उनके चेहरे पर प्रसन्नता देखी थी।

"मुरली ! शारदा का पत्र आया है। मगर वह कहाँ है, उसका क्या पता है, यह मालूम नहीं। मुरली ! मेरे प्रति उसकी बड़ी लगन है। लिखा है—तबियत का ख्याल रखिए। मुझसे कहे बिना चली गयी इस बात पर क्षमा याचना की है। तुम्हारे बारे में भी पूछा है।"—प्रोफेसर एक ही साँस में बोलते गये। मुरली ने कोई उत्सुकता न दिखायी। शारदा ने उसके बारे में पूछा है, यह सुनकर भी गुमसुम बैठा था।

"पूछा है मुरली आपसे मिलने आते हैं क्या ? लिखा है तुम्हारा सहारा ही मुझे तसल्ली देगा—देखो न ? शारदा मेरा कितना ख्याल रखती है···।"

मुरली का मन रो उठा—सबको तसल्ली देने वाला मैं हूँ—मेरा सहारा देने वाला कौन है ? लेकिन प्रकट में उसने कुछ न कहा। थोड़ी देर इधर-उधर की बातें करने के बाद उनसे बिदा लेकर क्लब की तरफ चला। उसका मन अशान्त था। नये छापेखाने की मशीन के लिए पचास हजार की जरूरत थी। समझ में नहीं आया कि पैसे का क्या प्रबन्ध करे ? कार्यालय में उप-संपादकों को अब तक वेतन नहीं दिया गया है। पत्रिका की बिक्री दिन ब दिन कम हो रही थी। सिनेमा व सरकारी विज्ञापन न

मिलने से 'भारतमणी' की आमदनी कम हो गयी। अब तो पचास हजार चाहिए। किससे माँगे? पहले सोचा था प्रोफेसर से मांगे। मगर शारदा के कारण मन इतना दुखी हो गया था कि माँगने का इरादा छोड़ दिया।

क्लब में हमेशा की तरह चहल-पहल थी। मुरली को देखते ही जज राजरत्नम् उसकी ओर तेजी से आये। उनके चेहरे को देखते ही मुरली समझ गया कि वे काफी परेशान हैं। वे उसे एकान्त में ले गये और बड़बड़ाये—"मुरली! तुम्हें कहाँ-कहाँ ढूंढ़ता फिरूँ?···तुम्हारा संवाद-दाता अब मेरे बंगले पर है।"

मुरली की समझ में न आया कि बात क्या है। "सुना है—चार-पाँच व्यक्ति स्वामीनाथन् का पीछा कर रहे थे। स्टेशन की तरफ आते वक्त मैंने खुद इसे देख लिया। स्वामीनाथन् मेरी गाड़ी रोककर, उसमें चढ़ गया। लगता है वे विप्लव पार्टी की आसामी होंगे।"

"ओह! कल स्वामीनाथन् अदालत में गवाही देने वाला है। फोटो उसी ने लिये हैं न? वह गवाही देने न पाये···इसके लिए···।"

"हाँ हाँ···स्वामीनाथन् ने भी यही कहा था। रेलवे स्टेशन से बाहर निकलते ही किसीने इनकी ओर इशारा किया। तुरन्त चार-पाँच व्यक्ति कहीं से आ धमके। शंकित होकर इन्होंने तेजी से डग भरने शुरू किये। उन लोगों ने पीछा किया। सड़क निर्जन पड़ी है, कोई नजर नहीं आता। घबराकर स्वामीनाथन् भागने लगा। उन्होंने भी दौड़ लगायी। इत्तिफ़ाक से मेरी कार उस तरफ से आयी। मेरी गाड़ी देखते ही आपके रिपोर्टर ने हाथ बढ़ाकर गाड़ी रुकवायी। झट कार में आ बैठे और घबराये स्वर में अपनी जान बचाने की प्रार्थना की। वह कौन हैं यह मैं नहीं जानता, मगर खतरे में उनकी मदद करना अपना कर्त्तव्य मानकर घर ले आया। रास्ते में उन्होंने सारी बातें बता दीं। उनको बंगले में छोड़कर यहाँ आया। आपको फोन किया···जवाब न मिला।"

"मैं प्रोफेसर के यहाँ गया था। स्वामीनाथन् आपके बंगले में है?"

"हाँ! उन्हें कैसे बाहर जाने दूँ? जान का खतरा है।"

"पुलिस को फोन करें?"

"फायदा क्या?"

"गवाही देने तक वह सुरक्षित रहें। धन्यवाद ! आपको कष्ट दिया है। कितना श्रम उठाना पड़ा है आपको ?"

"आपके संवाददाता वड़े होशियार हैं। न जाने कालीनाथ मिल के दंगे के वक्त उन फोटो को कैसे उतारा है। उसे छोड़िए मत !…" जज ने स्वामीनाथन् की तारीफ की फिर पूछा—"आजकल प्रोफेसर कहीं दिखाई ही नहीं पड़ते। तबियत ठीक नहीं है क्या ?"

"नहीं ! नहीं ! कालेज में थोड़ा काम ज्यादा है।" मुरली ने शारदा का पार्टी में शामिल होना, उसका गृह-त्याग इत्यादि बातें जानबूझकर ही नहीं बतायीं। शारदा के घर छोड़ने की बात अव तक रहस्य ही वनी थी।

जज साहब ने शरारती मुस्कान के साथ आँखें नचाते हुए पूछा, "कॉलेज का काम है या प्राइवेट एंगेजमेण्ट ?"

मुरली को उनका परिहास अच्छा न लगा। गुमसुम ही रह गया।

थोड़ी देर में मुरली क्लब से निकल गया। सीधे कार्यालय में गया। देखा गेट के बाहर वेलायुदम् खड़ा है। कार के हेडलाइट की रोशनी में उसकी दुरावस्था साफ नजर आती थी। फटी-पुरानी धोती, रूखे उलझे बाल दीनता-भरी आँखें। मुरली ने कार रोक दी। वेलायुदम् ने कहा—"मुरली ! तुम्हारी इन्तजार में खड़ा हूँ।"

"क्यों इधर खड़े हो ! अन्दर जा सकते थे ?" मुरली ने स्नेहपूर्ण आवाज में कहा।

"इस हालत में अन्दर आना कैसे ?…मुरली ! तुमसे…एक बात कहनी है…" जैसे आगे कुछ कह न पाया हो, वह मौन हो गया। फिर संभलकर बोला—"हड़ताल करने के कारण…इस महीने वेतन न मिलेगा…।"

"जिन्होंने आप लोगों को हड़ताल करने के लिए भड़काया, उन लीडरों से पूछा क्यों नहीं ?"

"उनसे कौन पूछे ? लीडर लोग टैक्सी में घूमते फिरते हैं। बिस्कुट खाते हैं, बढ़िया कूल-ड्रिंक्स पीते हैं। असल में हम लोग भूखों मरते हैं।…" वेलायुदम् की आवाज में विरक्ति थी।

मुरली ने समझ लिया। झट जेब में से पचास रुपये निकालकर उसके

हाथ में थमा दिये। "अभी इसे रख लो। जरूरत पड़े तो···संकोच न करना।"

वेलायुदम् की आँखों से निकली धारा मुरली की कलाई पर गिरकर छितरा गयी थी।

"अरे! यह क्या? तुम रो रहे हो! मर्द होकर आँसू बहाते हो?··· घबराओ नहीं! और कहीं नौकरी पर बिठा दूंगा।···हाँ तुम्हारी पत्नी कैसी है? सुधर गयी या अब भी···।" वेलायुदम् का हाथ थामकर मुरली ने पूछा।

"अब भी वह घर में नहीं है। सिनेमा चली गयी। चन्द्रमोहन की नयी फिल्म निकली है न?"···आँसुओं के बीच में वेलायुदम् ने हँसने की कोशिश की।

मुरली फट पड़ा—"अरे! कैसे बुद्धू हो तुम! घरवाली पर रोक नहीं लगा पाते?"

"क्या करूँ? दो-तीन बार हाथ उठाया। चीख-पुकार मचाकर उसने सारे मुहल्ले को सिर पर उठा लिया। जो चाहे कर लो। मेरी बेइज्जती न हो···इस कारण छोड़ दिया।" वेलायुदम् ने उदास स्वर में कहा।

अगले दिन सबेरे मुरली जज राजरत्नम् के बंगले पर गया। स्वामीनाथन् तैयार खड़ा था। दोनों सीधे अदालत में गये। रास्ते में स्वामीनाथन् ने पिछले दिन की सारी बातें सविस्तार बतायीं। फिर जेब में हाथ डालकर एक लिफाफे को बाहर निकाल के मुरली की ओर बढ़ाया। बाएँ हाथ से स्टीयरिंग को पकड़े दायें हाथ से मुरली ने लिफाफा खोला तो उसमें से एक चैक निकला। मुरली चकित-सा रह गया। उसके नाम पूरा पचास हजार का चैक था। मुरली ने धड़कते दिल से देखा···जज राजरत्नम् के हस्ताक्षर थे। उसने विस्मय से मुड़कर स्वामीनाथन् की ओर देखा।

"जज ने आज सवेरे मेरे पास भेजा। वे आपको दें तो शायद आप लेने से इनकार कर देंगे···इस ख्याल से···"

"उनको कैसे मालूम कि मेरा हाथ तंग है?" मुरली की आवाज में सख्त नाराज़गी थी।

"माफ़ कीजिए सर। कल रात बड़ी देर तक वे मुझ से बातें करते रहे थे। 'भारतमणी' का हालचाल पूछा। बातों ही बातों में मैंने नई मशीन का जिक्र किया। जज साहब ने कहा—"उनको सूद की जरूरत नहीं। अपनी सुविधा पर आप इसे लौटा सकते हैं।"

"जरूरत है तो मैं खुद माँग न लेता···" मुरली का गुस्सा अब तक शान्त न हुआ था।

"माफ कीजिए सर, मैंने माँगा न था। आर्थिक स्थिति के बारे में पूछा था, मैंने असली हालत बता दी। इसके अलावा मैंने कुछ न कहा था। आज सबेरे उन्होंने इसे मेरे हाथ में देकर आपके पास पहुँचा देने को कहा। उन्होंने कहा था कि वे आपके अच्छे मित्र हैं—इसीलिए मैंने सारी बातें बता दीं।"

मुरली की आँखें एकाएकभर आयीं। जज राजरत्नमजी की उदारता-पूर्ण सज्जनता औरअपने प्रति उनकी श्रद्धा व ममता ने उसे पानी-पानी कर दिया। तुरन्त उनसे मिलने के लिए वह विह्वल हो उठा।

स्वामीनाथन् को अदालत में छोड़कर बाहर निकलते ही मुरली को 'स्वर प्रभाती' का पोस्टर दिखाई पड़ा। मोटे अक्षरों में लिखा था—

"विवाहिता तरुणयुवती अपने गुप्त प्रेमी के साथ लापता हो गयी।··· कालीनाथ मिल के मजदूर पति-पत्नी की तलाश···।"

पोस्टर पढ़ते ही मुरली ने घृणा से ओंठ बिचका दिये। उस सनसनीदार खबर ने उसके दिल में असीम कड़वाहट भर दी।

अदालती कारंवाई पूरी होने पर स्वामीनाथन् को ले जाने वह फिर आया। स्वामीनाथन् की सुरक्षा के लिए दो पुलिस वाले साथ बिठाये गये थे। सबको लेकर वह 'भारतमणी' कार्यालय में गया। कार्यालय में स्वामी-नाथन् को छोड़कर मुरली क्लब में गया। पुलिस वाले बिदा लेकर चले गये। क्लब में जज राजरत्नम् एकान्त में बैठे गहरी चिन्ता में मग्न थे।

मुरली दो डगों ही में उनके पास पहुँच गया।

"सबेरे स्वामीनाथन् ने एक चैक दिया···लेकिन मैंने नहीं कहा था···"चैंक निकालने के लिए मुरली ने जेब में हाथ डाला। जज राजरत्नम् ने झट उसका हाथ पकड़ लिया।

"नो-नो—रख लीजिए···मैं सब कुछ जानता हूँ। मिस्टर मुरली···" मित्रों में अनौपचारिकता क्यों ?"

"मैं—मैं तो···"

"आई नो। आई नो आपने नहीं माँगा है, न माँगेंगे। लेकिन अपना हाल मुझ से छिपाने की क्या जरूरत थी ? मुझे आपने पराया मान लिया··· यही दुख की बात है।" जज का स्वर सचमुच उदास हो आया था।

"आपको अनावश्यक श्रम ! असल में ऐसी कोई दिक्कत नहीं···।"

"नथिंग मिस्टर मुरली ! इसमें दिक्कत की क्या बात है ? स्वामीनाथन् ने मुझ से कोई बात नहीं छिपायी। आप का पेपर पैसे की तंगी के कारण···कठिनाईयों में से गुजर रहा है। एक अच्छे सत्कार्य में पैसे को लगाना है। उसी में पैसे की सार्थकता है। अपनी कठिनाईयों को दूसरों से छिपाना अच्छा है। मगर निकट के मित्रों से भी छिपाना है क्या ?"

मुरली की आँखें भर आयीं। भावुकतावश वह कुछ बोल न पाया। कुछ मिनटों के बाद जेब से एक और कागज निकाला, "यह प्रोमिसरी नोट लीजिए। आपको इनकार नहीं करना है" मुरली ने आग्रहपूर्वक कहा। जज ने उस दस्तावेज की तरफ़ घूरते हुए कहा—"इसकी अपेक्षा मैंने नहीं की है मुरली।"

"इनाम में कुछ लेना अच्छा नहीं।"

"जब चाहें रुपये लौटा सकते हैं।"

"प्रोमिसरी नोट हाथ में रहे तो जल्दी ही कर्जा चुका देने की जागरूकता रहेगी।"

"मैंने कर्जा नहीं दिया है।"

"मैं इनाम नहीं लूंगा। मुरली की आवाज में दृढ़ता थी।"

"इनाम मैंने थोड़े ही दिया है। अपने मित्र की सहायता करते हुए अपना कर्तव्य अदा कर रहा हूँ। बस ! इसे 'इनाम' क्यों कहते हैं आप ?"

"तो भी···।"

'ऑल राईट'—"यह न लूं तो आपका मन शान्त न होगा···" जज ने मुरली के हाथ से वह प्रोमिसरी नोट ले लिया। मुरली को अहसास

हुआ कि उसके दिल से बड़ा बोझ उतरा है।

थोड़ी देर बातें करके मुरली उनसे बिदा लेकर चला गया।

मुरली की ईमानदारी, मूक होकर वेदना को सह लेने का उसका अदम्य साहस, उसका आत्माभिमान और आदर्शवादिता से जज राजरत्नम् बेहद प्रभावित हुए थे।

× × ×

सवेरे कार्यालय में प्रवेश करते ही मुरली को सबसे पहले जो खबर मिली थी वह वेलायुदम् की आत्म-हत्या की खबर। तुरन्त 'स्वर-प्रभाती' के पोस्टर में छपी खबर याद आयी। उसका माथा ठनका! शायद वह युवती वेलायुदम् की पत्नी है? तभी सड़क की तरफ से आलोड़ित सागर-सा शोरगुल सुनाई पड़ा। तुरन्त आसन छोड़कर बरामदे में आया। सड़क पर विप्लव पार्टी का जुलूस जा रहा था। जुलूस के आगे चार लोग एक शव को कंधों पर लिये आ रहे थे। शव विप्लव पार्टी के झंडे से ढका था।

"क्रान्ति—"

"जिन्दाबाद।"

"मजदूर वेलायुदम् को जिसने मौत के घाट उतारा है।"

"वह पूंजीवादी वर्ग—"

"मुर्दाबाद।"

"मजदूर वेलायुदम्—"

"जिन्दाबाद।"

"पूंजीवादी शोषण का शिकार बना—।"

"वेलायुदम् जिन्दाबाद—"

"त्यागी वेलायुदम्।"

"जिन्दाबाद।"

"क्रान्ति—"

"जिन्दाबाद।" सारा वायुमण्डल इन नारों से झनझना उठा।

मुरली सकपका कर रह गया। जुलूस 'भारतमणी' कार्यालय के सामने से गुजरते वक्त देखा। शव का मुंह खुला था। वह वेलायुदम् ही था। जुलूस श्मशान की तरफ जा रहा था। व्यथित-सा मुरली अपने कमरे में

लौटा तो देखा—उस दिन की डाक मेज पर ढेर-सी पड़ी थी। उनमें एक लिफाफे पर पाँच रुपये के दस नोट थे। वह दंग रह गया। वेलायुदम् ने मुरली की मदद के लिए धन्यवाद प्रकट करते हुए लिखा था।

"मजदूरों की भलाई का जरा भी ख्याल किये बिना, विप्लव पार्टी के लीडरों ने अपनी पार्टी के प्रचार के लिए श्रमजीवियों को हड़ताल करने के लिए भड़का दिया तो उनको विवश होकर हड़ताल करनी पड़ी। हड़ताल के कारण मुझे भूखों मरना पड़ा, उस वक्त भी विप्लव पार्टी ने मेरी कोई मदद न की। गरीबी को मैंने सह लिया। लेकिन मेरी पत्नी ने जो अपमान-जन्य कार्य किया है, वह मुझसे सहा न गया। उसने मेरे मुंह पर कालिख पोत दी थी। मुरली ! मैंने हृदय को पत्थर बना लिया था। लेकिन आज 'स्वर प्रभाती' ने मेरी इज्जत मिट्टी में मिला दी। मेरा गौरव, मेरी इज्जत लुट गयी ! मेरी इज्जत उतारी गयी है···इस हालत में मैं कैसे जीऊँ ? दुनिया को, समाज को, कैसे मुँह दिखाऊँ ? मेरा पारिवारिक मामला चार लोगों की हँसी का पात्र बन गया···। मुरली 'स्वर प्रभाती' जिसने मेरी यह गति करायी है, उसे ईश्वर के दरबार में जवाब देना पड़ेगा। मेरी आत्म-हत्या का दोषी 'स्वर प्रभाती' है। तुमने जो रुपये दिये उसकी अब जरूरत नहीं। तुम्हारी सहृदयता के लिए धन्यवाद। रुपयों को वापस भेज रहा हूँ···।"

मुरली अपने को रोक न पाया। फफक-फफक कर रो पड़ा। कपोलों पर आँसू-धारा बह निकली।

उसका सारा दुख व सन्ताप 'स्वर प्रभाती' और विप्लव पार्टी की ओर क्रोध के रूप में बदल गया। एक व्यक्ति के निजी-जीवन के अन्तरंग मामलों को इस तरह सड़कों पर खींच लाना पत्रिका का धर्म है क्या ?" मन ही मन बुदबुदाते हुए उसने हाथ में कलम उठा ली।

अगले दिन 'भारतमणी' को पढ़ते ही 'स्वर प्रभाती' के मालिक आदिमूलम् की आँखें लाल हो गयीं। वेलायुदम् के फोटो के साथ, मुरली को लिखा उसका पत्र भी उसमें प्रकाशित था। साथ ही मुरली का संपादकीय लेख आग उगल रहा था।

"आत्महत्या—जिसके लिए पत्रिका जिम्मेदार है" के शीर्षक से

प्रकाशित लेख में 'स्वर प्रभाती' को दोषी ठहराया गया था। इसे पढ़ते ही हजारों पाठकों के निन्दात्मक-पत्र 'स्वर प्रभाती' के दफ्तर में आने लग गये। विप्लव पार्टी की धमकी व दबाव में आकर जिसने हड़ताल की, भूखों मरा, उसकी बेमौत की मौत का उस पार्टी ने अपने दल के प्रचार के लिए कैसे लाभ उठाया, जुलूस निकाला, और श्मशान में एक पब्लिक मीटिंग करके कैसा जोशीला भाषण दिया, यह सब बातें जानकर आम जनता दंग रह गयी।

आदिमूलम् ज्वालामुखी-सा उबल पड़ा। 'भारतमणी' को नेस्तनाबूद करने का भयंकर आक्रोश जाग उठा। मुरली से कैसे बदला लें—इस चिन्ता में तीन दिन बीत गये। मगर उसे कोई रास्ता न सूझा। वे माथा ठोंक रहे थे कि नल्लदम्बी और सिनेएक्टर चन्द्रमोहन उनसे मिलने आये। उनको देखते ही आदिमूलम् का चेहरा खिल उठा।

पच्चीस

मास्को नगरी के एक मुहल्ले में बने एक विख्यात होटल के कमरे में शिवराम बिस्तर पर करवटें ले रहा था। नवम्बर की सर्दी उसकी कल्पना से ज्यादा थी। गत तीन दिनों से उसे जो स्वागत, आदर-सत्कार प्राप्त हुआ था, उसने उसे उत्साहित और आनन्दित कर दिया था। कमरे में मन्द प्रकाश फैला था। रात के दो बज गये मगर आँखों में नींद कहां? उसको कमरे में आते-आते एक बज गया था। तब तक कहीं उसके स्वागतार्थ मीटिंग, भाषण, पार्टी, और भेंटवार्ताएँ चलती रहीं। शरीर काफी थक गया था, लेकिन मन में जो गुदगुदाहट महसूस हो रही थी, उसने उसे

सोने न दिया। भारी कम्बल को हटाकर वह बिस्तर से उतरा और छत के बरामदे पर आ खड़ा हो गया। कमरे से निकलते ही जाड़ा ज्यादा महसूस हुआ। ऊन के ओवरकोट से शरीर को कसकर लपेट लिया। गले का बटन लगा लिया। मुंडेर के पास खड़े होकर मास्को नगरी की शोभा देखने लगा।

हलकी महीन चादर से फैले कुहरे के कारण कुछ साफ नजर न आया। सारे शहर में निस्तब्धता छायी हुई थी। सड़कें सूनी-सूनी लग रही थीं। हर गली, हर सड़क एकदम निर्जन थी। मुंडेर थामकर खड़े शिवराम की आँखों के सामने अतीत के वे दृश्य उभर आये। उसकी कल्पना के पंख खुल गये। इन्हीं सड़कों पर क्रान्तिकारी वीरों ने मार्च किया था। एक सत्ताधारी शासक की ताकत व साम्राज्य को तहस-नहस करके, श्रमजीवियों की सत्ता को संस्थापित करके इन सड़कों पर जो भयानक संघर्ष हुए उनकी याद आते ही उसके रोंगटे खड़े हो गये।

इतिहास की वे घटनाएँ कितनी महत्वपूर्ण हैं। जैसे इतिहास के पन्ने आंखों के समक्ष उलटते जाते हों, वे सारी घटनाएँ चलचित्र-सी घूमती गयीं। लगभग एक सौ पचास साल पहले की बातें हैं।

नेपोलियन के नेतृत्व में फ्रान्सीसी सेनाएँ···मास्को नगरी की सड़कों पर भड़क रही हैं। सैनिक इधर-उधर घूमते फिर रहे हैं। लेकिन सारा नगर एकदम खाली पड़ा है। घरों में, गली कूंचों में, बाजार में, कहीं भी एक भी रूसी नजर नहीं आता। फ्रान्सीसी वीर सैनिक एकदम निराश व उदास हैं। इधर-उधर मारे-मारे फिरने पर भी भूख मिटाने को एक कौर भी उन्हें नहीं मिलता। रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं। बेचारे भूख से विह्वल हैं। शहर छोड़ने से पहले रूसियों ने फलदार पेड़ों को भी काट गिराया था। फल ! फूल, पत्ते तक नहीं मिलते।

शून्य निर्जन नगरी भाँय-भाँय कर रही थी। मारे गुस्से के नेपोलियन खौल रहा था। जन-संचार रहित मास्को नगरी उसकी खिल्ली उड़ा रही थी। घोर निराशा व अतीव क्रोध ने उसे उन्मत्त बना दिया था। शिवराम ने सोचा—शायद नेपोलियन ने भी इसी तरह किसी ऊँची इमारत पर खड़े होकर निर्जीव निस्तब्धता में निश्चल पड़ी मास्को नगरी

को देखा होगा। हजारों मील लम्बा सफर। असंख्य कठिनाईयाँ। जबर-दस्त मुकावला। अन्त में मास्को पर विजय। विजय-दुंदुभि बजाते नगर में प्रवेश किया तो देखा···वह विराट नगरी एकदम सूनी, व खाली पड़ी है। कहीं भी एक सूरत नजर नहीं आयी। शिवराम ने सोचा···नेपोलियन की मनोदशा कैसी रही होगी? एक दिन एकदम आधी रात के वक्त मास्को में आग लग गयी। फ्राँसीसी सेना दहल जाती है। उसका दम घुटने लगता है। खलवली-सी मच जाती है। तीन महीनों के उपरान्त··· निराश व हताश फ्राँसीसी फौजें सर्दी में सिकुड़ती, थर-थर कांपती हुई मास्को से बाहर निकलने लगती हैं। मास्को में प्रवेश करते समय जो उत्साह व उमंगें थीं, वह अव कहाँ? भयंकर सर्दी पड़ रही है। ओलों की वर्षा-सी होती है। तीर-सी लगती हवा से हड्डियाँ झनझना उठती हैं।

फ्रान्सीसी फौजें जो मास्को नगरी से वापस हो रही हैं···उन्हें कहीं किसी आड़ में से लुक-छिपकर कितनी ही आँखें देखती रहती हैं।···लग-भग एक सौ पच्चीस साल के बाद हिटलर ने मास्को का द्वार खटखटाया वह भी जाड़े का मौसम ही था। नेपोलियन कम से कम तीन महीने मास्को में ठहरा था, मगर बेचारे हिटलर ने दरवाजा खटखटाया जरूर ···लेकिन उल्टे पाँव लौटना पड़ा था उसे।

शिवराम ने चारों तरफ दृष्टि दौड़ायी। कुहरा और भी घना हो आया था। सर्दी उसके मोटे ऊन के कोट को चीरकर शरीर को बेध रही थी। रूसी सर्दी की कड़ायी उसे महसूस हुई। सोचा—ओह! कड़ाके की भयंकर सर्दी ने नेपोलियन और हिटलर को यहाँ से भगा दिया है। हाँ, वह सर्दी सचमुच महत्वपूर्ण थी। उसने इतिहास को ही बदल दिया है। अभी-अभी उसका आरम्भ हुआ है। और एक महीना गुजरा···सर्दी असहनीय हो जाएगी। शिवराम के लिए सर्दी, जाडा यह सब नया अनुभव था। "आज मैं संसार भर के श्रमजीवियों की दृष्टि में स्वर्ग भूमि सी लगती मास्को नगरी में एक आलीशान होटल की सबसे ऊपरी मंजिल पर खड़े होकर इस महान नगरी का दिग्दर्शन कर रहा हूँ?' यह ख्याल आते ही वह गर्व से फूल उठा। दुनिया भरके मुस्लिमों के लिए मक्का नगरी जितनी पुनीत व पवित्र है, वैसे ही कम्यूनिस्टों के लिए मास्को है। लेकिन हर

व्यक्ति अपनी जननी जन्मभूमि को भूलकर मास्को पर मोहित हो जाता है न ! यही शिवराम के लिए पहेली की बात बनी थी। भले ही आज विश्व की कम्यूनिस्ट पार्टियों के कर्ता-धर्ता मास्को के लीडर हों, उन्हीं के मातहत पार्टी का संचालन हो, किन्तु हर व्यक्ति अपनी मातृभूमि का तिरस्कार कर, एक पराये देश के नेतृत्व को शिरोधार्य करे, यह शिवराम के लिये मान्य न था।

भारत से हवाई जहाज पर सफर करते वक्त बंगाली और केरलीय कामरेडों ने जो कुछ कहा था, वह अब भी उसकी स्मृति में कुरकुरा रहा था। उनके विचार में मास्को का यह सफर ही मानव जन्म लेने की सार्थकता थी। कम्यूनिस्ट सिद्धान्तों को अपना लें तो क्या अपनी संस्कृति, संस्कार व मातृभूमि के प्रति अपनी भक्ति को तिलाँजलि दे देनी है?

"हमारे लिए कम्यूनिस्ट सिद्धान्त मान्य हैं। उन सिद्धान्तों पर हमें श्रद्धा है, न कि मास्को की लीडरशिप पर। जिस किसी भी सिद्धान्त को हम अपनाएँ, अपनी संस्कृति व सभ्यता के अनुरूप उसे स्वीकारना है, उसे अपने ढाँचे में ढाल लेना है। सिद्धान्त के नाम पर हमें अपने आपको दाँव पर नहीं लगाना है।" शिवराम ने जरा उत्तेजित होकर कहा था। तुरन्त नक्सलवाड़ी से आये एक बंगाली कामरेड फट पड़े..."कामरेड शिवराम अब तक बुर्जुआ भावुकता के फेर से नहीं छूटे हैं। भारतीय संस्कृति, संस्कार व सभ्यता एक पारावार के समान हैं। इसमें रहते हुए किसी और सिद्धान्त पर हम कभी सोच नहीं सकते, स्वीकार नहीं सकते। हर सिद्धान्त को यह अखण्ड भारतीय संस्कृति स्वाहा कर लेगी। इसके संस्कार की जबर्दस्त पकड़ से अपने को छुड़ाकर हम अलग रहें, तभी श्रमजीवियों के वर्ग संघर्ष पर सोच सकते हैं। लगता है हमारे कामरेड अब तक उस संस्कृति के माया जाल से अपने को छुड़ा नहीं पा रहे हैं।"

केरलीय कामरेड ने बीच में टोका—"एक साँस्कृतिक क्रान्ति मचा दें हम। चीन में वही हो रहा है। वहाँ पर साँस्कृतिक क्रांति हो रही है।

पार्टी के सिद्धान्तों का शिवराम ने गहरा अध्ययन किया था। फिर वेदमूर्त्ति ने वर्गवाद, पूँजीवाद इत्यादि पर साम्यवादी दृष्टिकोण की शिक्षा दी थी। फिर भी अपनी मातृभूमि की, संस्कृति व सभ्यता की

उपेक्षा करना उसके लिए कठिन लग रहा था। एक बार वेदमूर्त्ति ने कहा था—"शिवराम ! मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि यह संस्कृति, सभ्यता इत्यादि बातें अपने तत्कालीन परिवेश व परिस्थिति के अनुरूप मनुष्य के द्वारा बनायी जीवन प्रणाली व तौर-तरीके के अलावा कुछ नहीं है। आज के इस परिवेश में मानव जाति की मुक्ति के लिए कम्यूनिज्म का साँस्कृतिक दृष्टिकोण ही उपयुक्त है। ऐसी हालत में पुरानी संस्कृति को त्यागने में क्या हानि है ? हम जो कपड़ा पहनते हैं, वह हम पर फिट नहीं होता है तो उसे उतार फेंककर नया पहन लेते हैं न ? ठीक वैसी ही बात है।"

वेदमूर्त्ति के इस तर्क से शिवराम प्रभावित नहीं हुआ। विश्व कम्यूनिस्ट महासम्मेलन में भाग लेने जो-जो उसके साथ आये उन कामरेडों की बातें, उनका वह उत्साह, बहसों से वह ऊब गया था। उसका मन बेचैन था। लेकिन दुनिया के रंगमंच पर एक खास स्थान रखनेवाले, एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त के केन्द्रस्थान को जा रहा हूँ···इस ख्याल ने उसे इतना अभिभूत कर दिया था कि वह उत्कंठित हो उठा। अन्य प्रतिनिधि-गण इतना उल्लसित हो उठे मानो अपने नूतन गृहप्रवेश में भाग लेने जा रहे हों। कम्यूनिस्ट सिद्धान्तों पर उनका लगाव तथा सैद्धान्तिक नशे पर वह खुश था, मगर उस नशे में अपने स्वत्व को खो देना उसे बिलकुल पसन्द न आया।

मास्को शहर के हवाई अड्डे पर उतरते ही, भारतीय प्रतिनिधियों का जो शानदार स्वागत किया गया था, उसे देखकर वह विस्मय विमुग्ध रह गया। दुनिया के कोने-कोने से प्रतिनिधिगण आये थे। पाँच प्रतिनिधियों के लिए सहायक के रूप में कई सहायक नियुक्त थे। शिवराम के दल का ओमनस्की नामक युवक गाईड बना था। वह उन्हें लेने स्वयं हवाई अड्डे पर आया था।

रूसी कम्यूनिस्ट पार्टी में ओमनस्की का खास स्थान था। उसकी गंभीर आकृति, स्निग्ध दृष्टि, और बातें करने के ढंग ने शिवराम को आकर्षित कर लिया। वह अंग्रेजी में बड़ी सरलता से बातें करता था, इसलिए भाषा की कोई दिक्कत न हुई। लेकिन वह जो कुछ बोलता है,

सोच समझकर बोलता है, हर शब्द पर ध्यान देता है। यह समझने में शिवराम को देर न लगी।

ओमनस्की के सौजन्यतापूर्ण व्यवहार व मित्रभाव ने शिवराम को उत्साहित कर दिया था। एकरोज़ महा सभा की बैठकें पूरी होने के बाद ओमनस्की उसे मास्को नगर दिखाने ले गया। स्टालिन जो रूस के सर्वेसर्वा रहे, उसके डिक्टेटर बने, दुनिया की राजनीति के मंच पर अपनी धाक जमायी थी, दुनिया के विभिन्न भागों में कम्यूनिस्ट पार्टी की जड़ें जमायीं थी, उस महामहिम जोसेफ़ स्टालिन का नामो-निशान मास्को में कहीं न पाकर शिवराम के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। स्टालिन के निधन के उपरान्त उनका युग हमेशा के लिए खत्म हो गया, इस भावना को पुष्ट करते हुए रूसी नेताओं ने स्टालिन की शिलाओं को हटा दिया था। मास्को के रैंड स्क्वैयर में एक खाली पीठ को देखकर शिवराम से रहा न गया, पूछा—"इस पीठ पर जो शिला थी वह कहा हैं ?"

उत्तर आया—"म्यूज़ियम में है।"

"किस की शिला थी वह ?"

"स्टालिन की !"

"ओह ! ऐसी बात है ? लेकिन आज आप लोगों की इतनी ख्याति और आधिक्य की धाक दुनिया में फैली है, रूस का नाम सुनते ही पूंजीवादी देश आतंकित हो उठते हैं तो इसका कारण स्टालिन ही थे, इससे आप इंकार करते हैं क्या ?"

दोनों उस वक्त स्ववैयर के पास फुटपाथ पर जा रहे थे। शिवराम के प्रश्न का उत्तर देने में ओमनस्की जरा हिचकता रहा। कोट में हाथ डाले वह चुपचाप चलता रहा। कुछ मिनटों बाद बोला—"शायद आपका कहना ठीक होगा। मगर उनका आधिपत्य, आतंक और ताकत की मदान्धता आवश्यकता से अधिक रही होगी।"

शिवराम ने टोका—"ऐसी तीव्रता और शक्ति संपन्नता उस परिस्थिति में अनिवार्य रही होगी। देश को उसकी जरूरत रही होगी। यदि वे उतना दबदबा न रखते तो शायद रूस की इतनी उन्नति न हुई होती।"

ओमनस्की ने इसका कोई उत्तर न दिया। केवल मुस्कुराया।

उस मुस्कुराहट में जान न थी। लगा भयत्रस्त भावना व आशंका है। ओमनस्की ने पूछा—"भारत में कम्यूनिस्ट पार्टी का भविष्य कैसा है ?"

शिवराम समझ गया कि ओमनस्की बात बदलना चाहता है। एक बार मुड़कर उस खाली पीठ की ओर देखा, फिर कहा—"स्टालिन जैसा एक सशक्त नेता भारत में हो, भविष्य आशाजनक रहेगा।"

ओमनस्की ने देखा बातें घूम-फिर कर स्टालिन पर केन्द्रित हो रही हैं। उसने चुपके से एक बार चारों तरफ देखा। पास में कोई नहीं, यह देखकर आराम की साँस ली। वह शिवराम को मास्को के आसपास की मुख्य जगहों पर ले गया। हर जगह रूसी लोगों को स्वस्थ, ताजे, और चुस्त देखकर शिवराम फूला न समाया। रूस की उन्नति, उसकी विकास योजनाएँ व परिकल्पनाओं का ओमनस्की ने विस्तार से वर्णन किया। उसने बताया कि रूसी लोग मेहनती हैं। कठिन परिश्रम करने से जी नहीं चुराते। शिवराम हर बात को बड़े ध्यान से सुनता व देखता रहा। उसे लगा रूसी लोग चाहे जितना भी स्वस्थ व चुस्त नजर आयें, एक अनबूझ शोक की छाया व उदासी उन चेहरों पर छायी है। ओंठों पर हँसी, आँखों में चमक, शरीर में ताजगी होने पर भी हृदय की अतल गहराई में, किसी अज्ञात कोने में अकथित कोई अभाव, कोई कमी चिपकी रहती है।

काम का वक्त पूरा होने पर स्त्री-पुरुषों की युगल जोड़ियों को घर लौटते देखकर शिवराम ने पूछा—"कामरेड ! शादी पर आप का क्या विचार है ?

"शादी···प्रेम···लव···यह सब बुर्जुआ वर्ग की आलस्यपूर्ण जीवन प्रणाली है। भोगवाद है। बुर्जुआ वर्ग की शादी उस वर्ग द्वारा स्वीकृत वेश्यागिरी है। एक दृष्टि से देखा जाए तो वह व्यभिचार है।" ओमनस्की ने हर शब्द पर जोर देकर कहा था।

.. . . ..चक्का-सा रह गया। फटी-फटी आँखों से उसकी ओर ···फिर सड़क पर गुजरती युगल जोड़ियों को देखा। फिर शंकित स्वर में पूछा—"तब तो रूस में विवाह का अन्त हो गया है ?"

"नहीं ! विवाह का यहाँ बड़ा आदर है कामरेड, एक पुरुष का एक स्त्री के साथ वैवाहिक जीवन बिताना ही यहाँ के विवाह का अर्थ है।"

"बुर्जुआ वर्ग का विवाह भी यही है न ?"

"ओह !···वह अलग बात है कामरेड ! बुर्जुआ वर्ग के विवाह और श्रमजीवी वर्ग के विवाह में भारी अन्तर है।" ओमनस्की ने सिर हिलाते हुए कहा।

"क्या अन्तर है ? मेरी समझ में नहीं आता।" चकराये शिवराम ने पूछा।

ओमनस्की थोड़ी देर कुछ सोचता रहा फिर कहा—"कामरेड ! आप बुर्जुआ मैंटिलिटी से सोच रहे हैं। एक अबोध बच्चे के हाथ की तूलिका और एक कुशल चित्रकार के हाथ की तूलिका में क्या अन्तर है ? बच्चा मनमाने ढंग से रेखाएँ खींचेगा। चित्रकार की रेखाओं द्वारा कला को सुन्दर आकार मिलेगा। बुर्जुआ का विवाह और श्रमजीवी वर्ग के विवाह का अन्तर यही है।" यह कहकर ओमनस्की ने बड़े गर्व के साथ शिवराम की ओर देखा। शिवराम कुछ समझ न पाया। सोचा था फिर से इसी बारे में प्रश्न करूँगा। लेकिन जो भी पूछे···ओमनस्की इन रटे रटाये शब्दों को तोते की तरह दुहराता रहेगा, यह सोचकर मौन रह गया।

एक दिन शाम को जब दोनों कमरे में लौट आये तब द्वार पर एक युवती को देखा। वह शिवराम से मिलने आयी थी। ओमनस्की ने शिवराम से उसका परिचय कराया। उसका नाम था अन्ना सोनिया। वह भी रूसी कम्यूनिस्ट पार्टी की मुख्य सदस्य थी। चौड़ा सा मुख, बड़ी-बड़ी आँखें, घनी भौहें, हट्टा कट्टा शरीर, खरखराती आवाज—यह सब देखकर शिवराम थोड़ा सहम गया। वह उससे छः अंगुल लम्बी थी। नारी सुलभ सरलता, कोमलता, लज्जा व मधुरता का उसमें बिलकुल अभाव था। देखने में वह मर्दनुमा थी। लेकिन शिवराम से उसने जो बातें कीं··· उससे मालूम हुआ कि वह मित्रता के योग्य है।

अगले दिन से ओमनस्की के बदले अन्ना सोनिया शिवराम को शहर दिखाने ले गयी। उसके विचार व शब्दों में ओमनस्की से ज्यादा स्पष्टता व दृढता थी।

आज के रूस की आश्चर्यजनक प्रगति का जिक्र करते हुए उसने क्रान्ति के पहले रूस की दर्दनाक स्थिति का हृदयस्पर्शी चित्रण किया। ज़ार के

शासन में देश की कैसी बुरी स्थिति हो गयी थी। उस दयनीय स्थिति से देश कैसे ऊपर उठा, कितने साहस के साथ प्रगति के पथ पर कदम बढ़ाया है, इत्यादि को फिरा-फिरा कर कहती रही। बातों के बीच में पूंजीवादी देशों की दुर्व्यवस्था की निन्दा करना न भूली। शिवराम उसके साथ रूस के विभिन्न प्रदेशों में गया। जहाँ वह गया, श्रमजीवियों ने उसका हृदय से स्वागत किया। उनके स्नेह और सौजन्यता पर शिवराम गद्‌गद् हो उठा। उसकी आँखो के सामने एक ऐसा भव्य चित्र उभर आया, जिसमें यह सारा संसार श्रमजीवी वर्ग के शासन में आ गया था। कम्यूनिस्ट सिद्धान्त और कम्यूनिस्टों ने अपनी महत्वपूर्ण साधना द्वारा विश्व इतिहास में जो स्थान पाया है, उसपर रूसी मिट्टी में खड़े होकर विचार करते वक्त शिवराम भावावेश में आ गया। लेकिन अन्ना सोनिया के बिना जब कभी वह अकेले में घूमने निकला, तभी देखा लोग उससे बातें करने से कन्नी काटते हैं। उसकी समझ में न आया कि ऐसा क्यों हो रहा है? विदेशियों को देखते ही जैसे कुष्ठ रोगी को देख लिया हो, मुँह सिकोड़कर वे हट जाते थे। एक दिन अन्ना सोनिया से इसके बारे में पूछा तो उसने कहा, "हम चाहते हैं कि अपने विशिष्ट व्यक्तित्व को हम बनाए रखें। इसमें कोई दखल न दें। अन्य देशों के राजनीतिक सिद्धान्त, व विदेशियों की निकट संपर्कता की हमें आवश्यकता नहीं। हमारा चिन्तन-मनन, कर्म सब कुछ क्रान्ति के पथ पर अग्रसर है। इस स्थिति में हम अन्य लोगों की चिन्तन धारा व संपर्कता से अपने को दूर रखना चाहते हैं। मेल मिलाप हमें अपेक्षित नहीं है।"

अन्ना सोनिया के इस उत्तर से शिवराम को पूरा आश्वासन न मिला, फिर भी अपने आपको समझा लिया कि क्रान्ति के पथ पर अग्रसर एक प्रगतिशील राष्ट्र में ऐसा नियंत्रण व अनुशासन अमल में लाना न्याय-संगत है।

छब्बीस

विश्व कम्यूनिस्ट महा सम्मेलन के पूरे होने के बाद विभिन्न देशों से आये प्रतिनिधिगण देश की सैर करने निकले। उनको कहाँ-कहाँ जाना है, क्या-क्या देखना है, इसकी लंबी सूची सरकार ने स्वयं तैयार करके दे दी। पाँच-पाँच व्यक्ति की टोली में बंट गये और देश का भ्रमण करना शुरु किया। शिवराम के साथ अन्ना सोनिया थी। वोलंगा नदी के तटों पर बने कई कारखाने, औद्योगिक केन्द्र, कृषि शालाएँ व अनाज के भंडार दिखाने वह उसे ले गयी।

शिवराम ने सबको ध्यान से देखा। साथ आये कामरेड रूस की आश्चर्यजनक उन्नति, रूसियों के अथक परिश्रम और हर क्षेत्र में उनकी प्रगति पर विस्मय प्रकट कर रहे थे। लेकिन शिवराम की तीखी दृष्टि से उस सारे परिवेश में व्याप्त अभाव बच न पाया। बाहरी दुनिया से रूसी लोग कितने कट गये हैं यह जानते ही वह चौंक उठा। दो-तीन स्थानों में मजदूरों की सभा में वह निमंत्रित किया गया। उनके प्रश्नों को सुनते ही वह सन्न रह गया। उन्हें बाहरी दुनिया का ज्ञान नहीं के बराबर था। उनके विचार में उनका रूसी देश दुनिया भर में सर्वोन्नत ही नहीं सर्वश्रेष्ठ भी था। यही नहीं, दुनिया के अन्य देश उनकी दृष्टि में हेय व तुच्छ थे। इस तरह के कई भ्रमात्मक तथा भ्रान्तिपूर्ण विचारों और भावनाओं से उनके कान भर दिये गये हैं, यह जानकर वह निराश हुआ। बाहरी दुनिया रूसी लोगों की दृष्टि से जानबूझकर छिपायी गयी है, विदेशों में प्रकाशित अखबारों का उन्हें बिलकुल पता नहीं, इत्यादि बातें जानकर वह हैरान रह गया।

शरडाव शहर के मजदूरों ने उसके स्वागतार्थ एक मीटिंग का

आयोजन किया था। उस वक्त मजदूरों ने उससे कई सवाल पूछे। मजदूर अंग्रेजी न जानते थे इसलिए अन्ना सोनिया ने दुभाषिये का काम किया। एक मजदूर ने पूछा—"कामरेड ! भारत में मजदूरों के अपने निजी कारखाने कितने हैं ?"

इस प्रश्न ने शिवराम को चक्कर में डाल दिया। कुछ मिनटों तक माथे पर उंगलियाँ फिराते हुए सोचता रहा। अन्ना सोनिया की आँखें उसी पर टिकी थीं। उपस्थित मजदूरों की उत्सुकतापूर्ण दृष्टि उसी की ओर लगी थी। शिवराम ने अन्त में कहा "मेरे देश में अब तक इतनी प्रगति नहीं हो पायी है···लेकिन आशा है कि निकट भविष्य में यह संभव होगा।"

"ओ ! श्रमिक वर्ग पूंजीपतियों का गुलाम बना हुआ रहता है ?" एक मजदूर ने परिहास पूर्ण स्वर में कहा।

"नहीं।" शिवराम ने इनकार करते हुए कहा—"बात ऐसी नहीं है। हमारे देश में श्रमिक की सुरक्षार्थ कई कानून व विधि-विधान बने हैं। जब कभी पूंजीपति लोग इन नियमों को तोड़ने लगते हैं, मजदूर हड़ताल कर देते हैं।"

'हड़ताल' यह सुनते ही उपस्थित भीड़ में सनसनी-सी फैल गयी। एक मजदूर आश्चर्य के साथ चिल्ला उठा—"हड़ताल ?" जैसे कोई अनहोनी बात सुन ली हो। वह फटी-फटी आँखों से उसे देखता खड़ा था।

इसके बाद शिवराम ने भारतीय श्रमजीवी वर्ग की असली हड़ताल पर प्रकाश डालते हुए कई बातें विस्तार से बतायीं। मजदूरों के लिए क्या-क्या अधिकार दिये गये हैं। उनको कैसी स्वतंत्रताएँ प्राप्त हैं आदि बातें विस्तार से बतायीं। लेकिन अन्ना ने उसका सही अनुवाद न किया। थोड़ी हिचकती रही। खासकर मजदूरों की आजादी के बारे में शिवराम ने जो कुछ कहा था, उसे छोड़ दिया। लगा कि वह झटपट मीटिंग को खतम करना चाहती है। उसने कह दिया, "कामरेड्स ! अब समय होगया है आप लोग जा सकते हैं। आपने जो स्नेह व उत्साहपूर्ण स्वागत किया इस पर हमारे भारतीय कामरेड बहुत खुश हुए हैं हम आशा कर सकते हैं कि हमारे ध्येय व सांस्कृतिक प्रगतिशीलता का सन्देश ले जाकर ये लोग अपने देश

के श्रमिक वर्ग को मुक्ति दिलायेंगे ।"

अन्ना सोनिया के एकाएक ऐसा कहते ही उपस्थित भीड़ एकदम निराश हो गयी । फिर बड़ी खामोशी के साथ यंत्रवत् विसर्जित हो गयी ।

शिवराम सकते में आ गया । अन्ना के इस व्यवहार पर वह बौखला उठा । अन्य देशों की निजि हालत व व्यवहार को इस तरह छिपाने की क्या जरूरत है...यह प्रश्न उसके दिल में कांटे सा खटकता रहा । भारतीय मजदूरों को हड़ताल व बन्द करने का अधिकार है, यह जानते ही रूसी मजदूरों को जो आश्चर्य हुआ यह देखकर वह व्याकुल हो गया । एक तरह से यह खबर उनके लिए···शॉक था । श्रमजीवियों की स्वर्ग भूमि रूस में मजदूरों को हड़ताल करने का अधिकार नहीं है ?···बुनियादी अधिकारों व आजादी से वे वंचित हैं ?···? शिवराम का दिल रो उठा । पूछा, "हमारे भारत में हर व्यक्ति को चिन्तन, लेखन व बोलने की आजादी है । भारतीय श्रमिक वर्ग को पूरी आजादी है ।"

अन्ना ने इसका कोई उत्तर न दिया ।

शिवराम फिर बोला—"यह तो आश्चर्य की बात है कि रूस में मजदूरों को हड़ताल करने का हक नहीं ।" उसके स्वर में ध्वनित कड़वाहट अन्ना से छिपी नहीं थी । बोली, "कामरेड ! श्रमिक वर्ग आजाद है, महज इस बात को लेकर हम श्रमिकों की सुख संपन्नता का अन्दाजा लगा सकते हैं ? हमें ऐसी आजादियों पर विश्वास नहीं । कम्यूनिस्ट सिद्धान्तों को पूरी तरह अपनाते वक्त ये सब बातें अनिवार्य है—यह आप भली-भांति जानते होंगे ।"

शिवराम आगे कुछ न बोला । जैसे अपने आपको समझा रहा हो 'कोरी आजादी एक व्यक्ति की सुखसंपन्नता के लिए काफी है ?···एक वेश्या को गृहिणी से ज्यादा आज़ादियां हैं । लेकिन एक स्त्री का गौरव व इज्जत उसकी सुख-संपन्नता की दृष्टि से आंका जाए तो···?' पार्टी में प्राप्त शिक्षण, कम्यूनिस्ट सिद्धान्तों पर उसका अटल विश्वास, आदि ने उसके मन में यह धारणा पैदा कर दी थी कि कम्यूनिज्म की सैद्धान्तिक प्रणाली और चिन्तन ही सर्वश्रेष्ठ है । फिर भी रूस का यह अनुभव काँटा-सा उसके दिल में खटकता रहा ।

रूसी यात्रा पूरी करके ब्लाडिवास्टाक शहर से चीन जाने के पहले रात के वक्त अन्ना सोनिया उससे मिलने आयी। उससे मिलते ही उत्साह के साथ बोली,—"कामरेड ! रूसी यात्रा के अनुभव को आप अपने साथ ले जा रहे हैं, आपके देश में श्रमजीवी वर्ग की उन्नति व प्रगति में यह बड़ी मदद देगी।"

झट शिवराम ने ज़रा हिचकते हुए कहा—"ओह ! अनुभव···हां—अच्छा अनुभव प्राप्त हुआ। लेकिन मेरे देश में यह काम आ सकता है··· यह तो संदेह की बात है।"

शिवराम के यह कहते ही अन्ना सोनिया हड़बड़ाकर उठी और खिड़की के पास जाकर इधर-उधर देखा। फिर धीरे से खिड़कियाँ और दरवाजे बन्द करके लौट आयी। शिवराम चकित दृष्टि से उसे देखता रहा।

"हमारी बातें कोई सुन न ले इसलिए मैंने दरवाजा बन्द कर दिया।" यह कहकर अन्ना सोनिया ने शिवराम से पूछा—"आपने यह क्यों कहा कि यह अनुभव आपके देश में काम न आएगा ?"

"व्यक्ति-स्वातंत्र्य रहित सुख-संपन्नता निर्जीव शरीर के समान है। ब्रिटिश से आजादी प्राप्त करने के लिए हमने कितना संघर्ष किया था। हमारी आजादी की लड़ाई सचमुच महत्वपूर्ण है।" शिवराम ने कहा।

अन्ना सोनिया के चेहरे पर उदासी घिर आयी।

"क्रान्ति के बादआपके देश ने जो उन्नति की है उसे देखकर मैं चकित रह जाता हूँ··· लेकिन···लेकिन···कागजी फूल से मन को तृप्ति मिलती है क्या ? उसमें पूर्णता को पा सकेंगे ?"

अन्ना ने कोई जवाब न दिया। लम्बी आह भरकर रह गयी।

"आपके देश में आते वक्त मेरे मन में न जाने कितनी उमंगें भरी थीं। बड़े इत्मीनान से बड़ी-बड़ी आशाएँ लेकर आया था।···लेकिन ओह ! अब लौटते वक्त मेरा मन बुझा-बुझा सा लगता है।"

"कामरेड ! आप भाग्यवान हैं।" अन्ना के मुंह से अनायास ये शब्द निकल गये। अगले क्षण घबराकर उसने द्वार की ओर देखा। वह अब भी बन्द था। थोड़ा आश्वस्त होकर उसने लम्बी साँस ली।

शिवराम ने कहा—"मैं अपने साथ आपकी मीठी मधुर स्मृतियाँ ले जा रहा हूँ, जो मेरे दिल में हमेशा हरी-भरी रहेंगी। मेरे साथ रह कर आपने मेरी मदद की है। आपको बहुत बहुत धन्यवाद।" बिदा लेते समय शिवराम ने उसे भारत आने का न्यौता दिया। अन्ना सोनिया की आँखें भर आयीं। उसने हँसने की कोशिश की। वह हंसी बेजान-सी लगी, उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में मूक दृष्टि यह बता रही थी कि वह जो कुछ कहना चाहती है, उसे कहने में असमर्थ होकर दिल ही दिल में दबा रही है।

अगले दिन व्लाडीव्रास्टक हवाई अड्डे पर अन्ना सोनिया भी आयी थी। उसे रूसी मिट्टी में छोड़कर जब शिवराम ऊपर उड़ने लगा, उसकी सजीली आँखों में चमकते अश्रुकणों को उसने देखा। उसके हृदय में दया उमड़ आयी। लगा अपने किसी प्रिय मित्र को कारागृह में छोड़कर वह जा रहा है। खिड़की के पास बैठा वह बड़ी देर तक हाथ हिलाता रहा। उसका दिल बोझिल हो गया। आजादी से पंख फड़फड़ाती आकाश पर थिरकती चिड़िया को देख किसी पिंजड़े में बंद चिड़िया की मायूसी, अन्ना सोनिया की उन बड़ी-बड़ी आँखों में छायी-सी उसे दिखाई दी। यह देखकर शिवराम का दिल भर आया। धरती पर खड़ी उसकी सूरत आँखों से ओझल होने के बाद भी वह उसके बारे में सोचता रहा। अन्ना सोनिया में दिल लुभाने वाली खूबसूरती न थी। नितान्त मामूली होने पर भी उसके सहज सरल स्वभाव, मित्रतापूर्ण व्यवहार, तथा स्नेहशीलता ने उसे आकर्षित कर लिया था। रोज रात को उसे कमरे में पहुँचाने वह उसके साथ आती, थोड़ी देर उसके कमरे में बैठे दोनों बातें करते रहे। शिवराम के बारे में जानने के लिए वह उत्सुक थी। शिवराम अपनी माँ, अपने गाँव, निजी जीवन की बातें सुनाता। अन्ना बड़ी तन्मयता से उसकी बातें सुनती। शिवराम के अंतरंग को टटोलकर, उसके आदर्श, आशा व अरमानों को जानने में अन्ना बड़ी दिलचस्पी दिखाती। दोनों में इतनी निकटता हो गयी थी कि शिवराम अपना दिल खोलकर बातें करता था। अन्ना में उसने आत्मीय बन्धु को पाया था। इन्हीं दिनों में उसने जान लिया था कि अन्ना सोनिया की बाह्य आकृति लौह प्रतिमा सी कठोर व सुघटित होने

पर भी उसके धड़कते दिल में नारी सुलभ कोमलता, आशा व अरमान भरे पड़े हैं।

एक दिन की बात है—ब्लाडीवास्टक शहर के एक होटल में बैठे बातें कर रहे थे, तभी शिवराम ने उसके वैवाहिक जीवन के बारे में पूछा था। तुरन्त ताजा फूल सा खिला वह चेहरा मुरझा गया। आँखें सजल हो गयीं। तड़पकर शिवराम ने कहा—"क्षमा कीजिएगा, शायद मैंने गलती कर दी हो···।"

अन्ना ने शोकपूर्ण मुस्कान के साथ कहा—"कामरेड ! मैं शादीशुदा हूँ। लेकिन···लेकिन···अकेली रहती हूँ।"···आगे वह कुछ बोल न पायी। उभरते रुदन से उसका गला भर गया। कहीं अपना वश खो न बैठे, इस ख्याल से उसने अपना चेहरा दूसरी तरफ फेर लिया।

कुछ मिनटों के बाद अपने को संयत कर, शिवराम की ओर देखते हुए धीमी आवाज में कहा—"मेरे पति साईबेरिया में न जाने कहां पड़े हैं !"

"ओह !" शिवराम समझ गया। आगे कुछ पूछने का साहस उसमें न रहा। दयार्द्र दृष्टि से उसकी ओर ताकता रहा। उन आँखों की उदासी ने उसे हिला दिया।

"वे एक बहुत अच्छे लेखक हैं। लेखन स्वातन्त्र्य पर उन्हें विश्वास था। इस पर जोर देते थे।" इतना कहकर वह मौन हो गयी। उसके चेहरे से साफ मालूम होता था कि वह पुरानी यादों में खो गयी है। उन आँखों में नारी की ममता और बिछोह की अकुलाहट प्रतिबिम्बित हो रही थी।

शिवराम ने बात बदलने के इरादे से कहा—"मेरा मुरली नाम का एक मित्र है। प्रतिभाशाली लेखक है वह। राजनीतिक सिद्धांतों पर लिखे उसके ग्रंथ विदेशों में भी काफी प्रख्यात हैं। लेखन स्वातंत्र्य उसके लिए इतना मुख्य है कि उसके लिए प्राण भी देने पड़ें तो वह देने को तैयार है।"

अन्ना कुछ न बोली। ठंडी आह भर ली। फिर पूछा—"आपकी कोई सहेली नहीं ?"

"है, मेरे साथ कॉलेज में पढ़ी थी। उसे भी मैंने विप्लव पार्टी में शामिल कर दिया। अभी वह कहीं पार्टी का शिक्षण ले रही है।" शिवराम ने गर्वस्फीत स्वर में कहा।

"आप दोनों हमेशा के लिए अभिन्न रहें।"

अन्ना सोनिया का यह आशीष लेकर शिवराम ने रूस से बिदा ले ली।

उसका मन अब साईबेरिया के किसी अज्ञात कोने में पड़ी अन्ना के लिए बिसूरती आत्मा के लिए रो रहा था। प्यार, ममता, इच्छा, कामना, ...भूख...भूख केवल पेट की होती है? मानव मन की स्वाभाविक प्रकृतियाँ, दया, माया, ममता, स्नेह, वात्सल्य, प्रेम जो अजस्र धारा से प्रवाहित रहते हैं, वे सब अर्थहीन हैं? अगर इन भावनाओं के वश होकर किसी पर अपना दिल लुटा देना कायरता है तो—पार्टी के सिद्धान्तों पर अपने को लुटा देना कायरता नहीं?

पीकिंग पहुँचने तक शिवराम का मन इस प्रकार की चिन्ताकुलता के भंवर में पड़ा ऊहापोह करता रहा। पीकिंग में उतरने के बाद ही एक तरह से वह अन्ना की चिन्ताओं से मुक्त हुआ।

हवाई अड्डे पर चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी की कार्यकारिणी समिति के उपसचिवों में से एक मिस्टर चिनबो उसका स्वागत करने आए थे। उसके सीढ़ियों से उतरते ही उन्होंने उसको बाँहों में भर लिया। शिवराम उमंग-पूरित स्वर में चिल्ला उठा—"हिन्दी-चीनी भाई भाई!" चिनो बिबना उत्तर दिये मुस्कुराये।

शिवराम चीन में सात दिन रहा। चिनबो उसे विभिन्न स्थानों पर ले गए। हाँगको शहर में, जहाँ पहले-पहले कम्यूनिस्टों ने क्रान्ति का झंडा ऊंचा किया था, उस कारखाने को देखते ही शिवराम भावावेश में आ गया। वहाँ की मिट्टी उसने सिर पर लगा ली। पचास साल पहले इसी कारखाने में विप्लव की चिनगारियाँ फूट पड़ी थीं। उन चिनगारियों को जिस महान नेता सन्यातसेन ने धू-धू करके जलती ज्वाला बनाया था, उनकी समाधि पर झुकते वक्त वह रोमाँचित हो उठा। चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी ने शिवराम को मुख्य नेताओं से मिलने का सारा प्रबन्ध कर

दिया था।

शिवराम की कल्पना में जो चीन था और वह जिस चीन को आँखों से देख रहा था इन दोनों में बड़ा अन्तर है, यह जानते ही वह हैरान रह गया। सोचा था, कम्यूनिज्म के अधिकार में आते ही चीन भूलोक का स्वर्ग बन गया होगा। लेकिन अब क्या देखता है—निस्तेज चेहरे, निर्जीव भयत्रस्त आँखें, भूख-प्यास से पीड़ित हड्डियों के ढाँचे, तिसपर कम्यूनिस्ट अधिकारियों द्वारा किया जा रहा दमन। शिवराम बेहद निराश हो गया। चीन में क्या हो रहा है, यह वह समझ न पाया। चीन की प्रगति व उन्नति पर चिनबो जमीन आसमान एक कर रहे थे। शिवराम उन्हें सुनता रहा मगर उसकी तेज दृष्टि चीन की वास्तविक स्थिति को देखकर अकुलाती रही। चीन जो आज दुनिया के रंगमंच पर अन्य राष्ट्रों को आतंकित कर रहा था, अपना दबदबा डालने की कोशिश में था, उसी चीन की प्रजा मूक पशु-सी, निर्जीव प्राणी-सी, निरुत्साहित होकर घूमती फिरती नजर आई। उनकी इस दयनीय स्थिति पर वह दुखी हुआ। फिर भी उसने अपने आपका समाधान कर लिया कि सदियों से मानव समुदाय को जिस पूंजीवाद ने अपने पैरों से रौंदकर निर्ममता से बेड़ियाँ पहनाये रखा था, उस पूँजीवादी शोषण को जिस देश ने क्रान्ति का झँडा उठाकर बगावत करके मिट्टी में मिला दिया है, वहाँ पर शुरू-शुरू में कुछ ऐसी मुसीबतें और कठिनाईयाँ जरूर रहेंगी। सोचा—'चीन के पास कोई जबरदस्त शक्ति है। नहीं तो संसार उससे इतना आतंकित क्यों होता है? इस देश को ऐसी शक्ति अद्वितीय नेता माओ-त्से-तुंग ने प्रदान की है। इसमें उसने नई जान फूंक दी है। माओ का ख्याल आते ही शिवराम रोमाँचित हो उठा। जहां भी जाए माओ की तस्वीरें, चित्र, व फोटो ही दिखाई दे रहे थे। दीवारों पर माओ की सूक्तियाँ, उनके चिन्तन के पोस्टर लगाये गये थे। हर कोई उस तरफ़ से गुजरते वक्त 'माओ' की तस्वीर के सम्मुख सिर झुकाने से न चूकता था। ऐसी प्रतिभा थी उनकी!

शिवराम कई शहरों और गाँवों में गया था। देखा बौद्ध मठ, विहार, ऐतिहासिक महत्व रखने वाली इमारतें, व प्राचीन पुरातत्व के चिह्न केवल खंडहर के रूप में बिखरे पड़े थे। उन खंडहरों के वैभव पर

उसका दिल रो उठा, पूछा—"ये सब ऐसे टूटे-फूटे क्यों पड़े हैं ? इन भग्नावशेषों में अतीत का गौरव, पुरातत्व की गरिमा छिपी है न ? इनको सुरक्षित क्यों नहीं रखा गया है ? ये चीन की प्राचीन सांस्कृतिक उन्नति के चिन्ह हैं न ?"

यह सुनकर चिनबो जोर से हँस पड़े—"कामरेड ! चीन ने केवल प्रशासनिक क्षेत्र में ही क्रान्ति नहीं की है। कल्चरल रिवोल्यूशन हमारे नेता माओ के चिन्तन की उपलब्धि है। यह एक महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी योजना है, बुर्जुआ वर्ग की संस्कृति व सभ्यता, विदेशियों का कोई चिह्न चीन की मिट्टी में नहीं रहना है। उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना ही उनकी योजना है।

"अब 'लाल सेना' इस सांस्कृतिक क्रान्ति को कार्यान्वित कर रही है। मंदिर और मठों को गिराना, बुर्जुआ वर्ग के दूषित धर्म, सम्प्रदायों को मटियामेट करना ही साँस्कृतिक क्रान्ति का लक्ष्य है। आप जो देख रहे हैं, वह लाल सेना की करामात है।" चिनवो ने गर्वस्फीत स्वर में कहा।

शिवराम उन ध्वंसावशेषों को भारी मन से देखता खड़ा था।

चिनबो आगे बोले—"आपका भारत बड़ी उपजाऊ मिट्टी है, कामरेड ! वहां पर कम्यूनिज्म खूब लहलहा उठेगा। हमें आशातीत सफलता मिलेगी, इसमें कोई सन्देह नहीं। आपका देश आजाद हुआ तो पहले हम थोड़ा सा सहम गये थे। डर था कि शायद कम्यूनिज्म वहाँ पर पनप न पायेगा। लेकिन आपके भारतीय नेतागण बड़े बुद्धिमान हैं। उन्होंने भारत को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित कर दिया तो हमने आराम की साँस ली। आगे जब वयस्कों को मताधिकार दिया गया तो हमारे हर्ष का ठिकाना नहीं रहा। कामरेड ! जनता से धर्म जितना विछिन्न होता जाएगा, उतना कम्यूनिज्म का सिद्धान्त उनको अपनी ओर खींचता जाएगा।"

शिवराम ने उदास स्वर में कहा—"भारत में कम्यूनिज्म उतने व्यापक रूप में लोगों को प्रभावित कर नहीं पा रहा है।"

"कामरेड ! जरा सब्र कीजिए ! इसमें धीरज रखने की जरूरत है। हताश क्यों होते हो। निकट भविष्य में चीन आपकी सहायता को आ जाएगा। वह दिन अधिक दूर नहीं है। कामरेड ! हमारे माओ का चिन्तन

भारत के कोने-कोने में गूँज उठेगा। कम्यूनिज्म अब तक भारत की मिट्टी में पनप नहीं पाया, तो कारण क्या है? भारत का हिन्दु धर्म, और हिन्दुओं की साँस्कृतिक सभ्यता ही इसका जबरदस्त कारण है। इनको मिटाना है तो हिंसा व बलात्कार के द्वारा ही यह संभव होगा। हजारों-हजारों सालों से जो जो अंधविश्वास लोगों के मन में जड़ पकड़ चुके हैं, जो विश्वास उनके खून में समा गया है, उसे मिटाना है, इसके लिये हिंसात्मक तरीका ही एक मात्र अस्त्र है। उसी को हमें अपनाना है। भारत में भी 'कल्चरल रिवोल्यूशन' शुरू करना है। कामरेड ! धर्मनिरपेक्ष राज्य में यह काम थोड़ा आसान होगा। हमने उसके लिए भी योजनाएँ तैयार कर रखी हैं।"

उतावले होकर शिवराम ने पूछा—"कौन सी योजना है?"

"अभी नहीं बता सकता। बहुत जल्दी ही चीन भारत से अपना संपर्क बढ़ा लेगा। समय आपको सब कुछ बता देगा।"

"कामरेड माओ से मैं मिल सकता हूँ?" शिवराम ने उत्सुकतावश पूछा।

चिनबो ने कहा—"कोशिश करूँगा।"

चीन में शिवराम बहुत से चीनी नेताओं से मिला। बातें की। मगर चीन के उस अद्वितीय नेता माओ से मिलने की इच्छा अब तक पूरी न हुई थी। भारत में कम्यूनिज्म का सैद्धान्तिक शिक्षण लेते वक्त माओ के चिन्तन और उनकी गोरिल्ला युद्ध प्रणालियों के बारे में पढ़कर वह खूब प्रभावित हो गया था। इसलिए अपने आदर व विस्मय के पात्र बने उस महान् व्यक्ति से मिलने के लिए इतना परेशान हुआ तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। मिलन की आकाँक्षा ने उसे पागल बना दिया था।

चीन से निकलने के एक रात पहले चीनी कम्यूनिस्ट कार्यालय में जो दावत दी गयी थी उसमें शिवराम बुलाया गया था। दावत जहाँ पर दी गई थी उस हॉल के चारों तरफ माओ की तस्वीरें सजायी गयी थीं। शिवराम के बाँई तरफ चिनबो बैठे थे। दाँई तरफ चीन के प्रधानमंत्री चू-एन-लाय विराजमान थे। चिनबो शिवराम के कानों में फुसफुसाये—"कामरेड ! तुम्हारी चिराकाँक्षा पूरी होनेवाली है। माओ यहाँ पधारने वाले हैं।" यह सुनते ही शिवराम अधीर हो उठा। विश्व इतिहास में

जिन्होंने अपने लिए विशिष्ट स्थान बना लिया था, उस महान् नेता से मिलने वाला हूँ, यह ख्याल आते ही वह थोड़ा सहम-सा गया था। दिल धकधक करने लगा। दावत के बाद एक विशाल कमरे में सब लोग आ बैठे। कमरे के बीच में माओ का बड़े आकार का एक फोटो टंगा था। कमरे में आते ही हर कोई उसके फोटो के सम्मुख सिर झुकाकर फिर अपने आसन पर बैठता। शिवराम ने भी उनका अनुकरण किया। सैकड़ों से ज्यादा लोग वहाँ पर एकत्रित थे, फिर भी वहाँ पर गहरा सन्नाटा छाया था। शिवराम को लगा उस वातावरण पर आतंकपूर्ण भय का दबाव है। सब आँखें द्वार पर टिकी थीं। थोड़ी देर में हल्की सी आहट हुई। द्वार पर एक दुबली पतली आकृति दीख पड़ी।

चिनबो ने धीमी आवाज़ में कहा—"ये नेता लिन्बियो हैं।" लिन्बियो के पीछे नेता माओ-से-तुंग आये। बड़े अदब के साथ सब आसन से उठे। मुख्य अधिकारियों से बातें करते हुए माओ शिवराम की तरफ से गुजरते वक्त उसे देखकर मुस्कुराये। पास खड़े चिनबो ने बड़ी भव्यता से शिवराम का परिचय कराया तो माओ ने अपना हाथ बढ़ाया। दोनों ने हाथ मिलाया। माओ के हाथ का स्पर्श लेते ही शिवराम रोमाँचित हो उठा। अनजाने ही उसके मुँह से निकल गया—"हिन्दी चीनी भाई-भाई।" यह सुनते ही पल भर माओ का चेहरा काला पड़ गया। फिर पूर्ववत् मुस्कुराहट फैल गयी।

माओ मंच पर आ बैठे। भाषण शुरू हुए। कई नेताओं ने ज़ोरदार भाषण दिया। उन्होंने माओ को महान् चिन्तक के रूप में चित्रित किया। उनकी चिन्तन धारा की प्रशंसा की। ढलती उम्र में भी यदि माओ इतने ताजे व स्वस्थ दीखते हैं, तो उनके क्रान्तिकारी विचार व चिन्तन ही इसके कारण हैं, ऐसा जोश के साथ बताया। थोड़ी देर में सभा समाप्त हुई। कमरे पर आते वक्त रात के एक बज गये। शिवराम को अपना माओ से मिलना, नेताओं के भाषण सब कुछ सपना सा लग रहा था। उसे अपने भाग्य पर गर्व हो रहा था।

अगले दिन सवेरे चिनबो उसे हवाई अडडे पर ले जाने आये। उन्होंने फरमाया—"हमारे महान् नेता माओ ने आपको अपनी शुभकामनाएँ भेजी

हैं। आपके द्वारा आपके देश को एक शुभसन्देश भेज रहे हैं।" इतना कहकर उन्होंने अपने हैण्डबैग से एक छोटा-सा लिफाफा उठाकर शिवराम की ओर बढ़ाते हुए फिर कहा—"एक बड़ी जिम्मेदारी आपको सौंपी जा रही है।"

शिवराम ने उसे हाथ में लेकर देखा, लिफाफे पर कोई पता न लिखा था। आश्चर्य से पूछा—"किसको देना है ?"

"अपने नेता वेदमूर्त्ति के हाथ में सौंप देना। यह बड़ा गुप्त सन्देश है। माओ आप पर पूरा भरोसा करके इस जिम्मेदारी को आपके हाथ में सौंप रहे हैं।"

शिवराम फूलकर कुप्पा हो गया। कहा—"कामरेड ! मैं नेता के विश्वास को बनाए रखूंगा। जैसे भी हो इसे अपने नेता वेदमूर्त्ति के हाथ में सौंप दूंगा।"

चिनबो ने फिर चेताया—"कामरेड ! ये बड़े रहस्य की बात है। रास्ते में कोई गड़बड़ी हो तो तुरन्त इसे जला देना। किसी भी हालत में यह दूसरे के हाथ में नहीं जाने पाये।"

पीकिंग हवाई अड्डे से निकलते वक्त शिवराम काफी थक गया था। उसे अपने शरीर से ज्यादा अपना मन उदास व भारी लग रहा था। उसका यह सफर सफलतापूर्वक पूरा हुआ था, इसमें कोई सन्देह नहीं। मगर उसका मन बेहद निराश हो गया था। उसका सारा उत्साह ठंडा हो गया। गहरी वेगवती धारा में बड़े उल्लास व मस्ती से कूदने वाला कुशल तैराक घुटने तक का पानी पाकर जितना निराश होगा…वैसी घोर निराशा जनित वेदना से व्यथित होकर शिवराम भारत लौटा।

नई दिल्ली के हवाई अड्डे पर अपनी प्रतीक्षा में खड़े वेदमूर्त्ति को देखते ही वह अपना सारा दर्द भूल गया। बड़े उत्साह के साथ उनसे गले मिला। उन्होंने उसे अपने आलिंगन में भर लिया।

जन्मभूमि की मिट्टी का स्पर्श एवं अपने प्रिय नेता का आलिंगन शिवराम को बड़े अच्छे लग रहे थे। उसने पलभर बड़ी शान्ति का अनुभव किया।

सत्ताईस

स्वामीनाथन् भारतमणी कार्यालय में लगाई जा रही नई मशीन की देखभाल कर रहा था। प्रेमा जो बगल के कमरे में टेलिप्रिन्टर पर आती खबरों का नोट ले रही थी, अपना काम पूरा करके प्रिन्टिंग मशीन के कमरे में आयी। स्वामीनाथन् एक सोफे पर पाँव फैलाये आराम से बैठा था। उसके हाथ में 'भारतमणी' का ताज़ा एडीशन था। उसमें प्रकाशित कार्टून ने उसका ध्यान खींच लिया। दस गुंडे शासन रूपी औरत का चीर-हरण कर रहे थे। शासन अर्थात् सरकार चीख पुकार मचा रही थी। प्रेमा ने पास आकर उस कार्टून को देखा।

स्वामीनाथन् ने पूछा—"कार्टून कैसा लगता है ?"

"फैन्टास्टिक···मगर···"

"अगर-मगर—क्यों ? विदूषक का कार्टून विदेशों में भी काफी प्रख्यात हो चुका है। इनकी कार्टून-पुस्तिका की बड़ी माँग है।"

प्रेमा ने उपेक्षा से कहा, "लेकिन स्वदेश में इनकी पूछ कहाँ ?"

"क्या करें ? यहाँ अक्ल की कमी है···" हल्के गुस्से के साथ स्वामीनाथन् ने कहा।

प्रेमा ने इसका कोई जवाब न देकर नई मशीन की ओर देखते हुए कहा—"अब नई मशीन की जरूरत है ?"

सिर घुमाकर उसकी ओर देखते हुए स्वामीनाथन् ने पूछा—"आप लोग नई-नई साड़ियाँ क्यों लेती रहती हैं ?"

"नई मशीन से कोई बड़ा लाभ होनेवाला है, ऐसा मुझे प्रतीत नहीं होता।" कनखियों से उसकी ओर कटाक्ष करते हुए प्रेमा ने कहा।

सबेरे इतना जल्दी सह-संपादक काम पर न आते थे। प्रेमा यों ही मुँह

लड़ाने वहाँ पर आयी है, यह जानकर स्वामीनाथन् ने चुप्पी साध ली और मशीन के काम में लगे कारीगरों को देखने लगा।

प्रेमा चुप न रही—"सर, इस मशीन का दाम कितना है?"

"पचास हजार!"

"हाय राम! इतनी पूंजी, कोई लाभ? कम से कम ब्याज भी निकल सकता है क्या?"

"देखो! तुम्हारा काम है टाईप करना, टेलिप्रिन्टर की खबरें लेना···बस! आय-व्यय का हिसाब लगाने वाले और लोग हैं। तुम चिन्ता न करो।" झल्लाकर स्वामीनाथन् ने कहा।

"हो भी तो क्या फायदा? हमारे वेतन की चिन्ता तो हमी को करनी है, है न?"

"क्यों? तुम्हारा वेतन तो कल ही मिल गया न?"

"हाँ! दूसरी तारीख के बदले बारहवीं तारीख को मिला है।"

"अकेली तुम्हीं को नहीं। सबको ऐसे ही मिला है। अब नई मशीन लगा लें, पहली तारीख को ही वेतन मिल जाएगा।"

"मुझे इसकी आशा नहीं। नई मशीन से आर्थिक संकट का क्या सबन्ध? 'भारतमणी' की बिक्री एकदम गिर गयी न?" प्रेमा ने लापरवाही से कहा।

स्वामीनाथन् नाराज तो हुआ मगर कहा कुछ नहीं।

प्रेमा ने फिर कहा—"अगले महीने से शायद मैं काम पर न आऊँगी।"

स्वामीनाथन् ने विस्मय से उसकी ओर देखा—"क्यों शादी पक्की हो गयी?"

"नहीं-नहीं, एक और जगह काम मिल गया है।"

"क्यों? एक सौ पचास जो यहाँ मिलता है, काफी नहीं?"

"स्वर प्रभाती ने इससे ज्यादा देने का वायदा किया है।"

"छिः छिः वह भी कोई पत्रिका है?"—स्वामीनाथन् ने घृणा से मुंह सिकोड़ा।

"पत्रिका चाहे जैसी भी हो? वेतन ही हमारे लिए मुख्य है।"

स्वामीनाथन् मौन रहा।

"सर ! अगले महीने से वहाँ पर जाने का मैंने निश्चय कर लिया है। आप सहमत हों··· आपको भी ले लेंगे। दो सौ ज्यादा मिलेगा।"

"जो कुछ यहाँ मिलता है, वही मेरे लिए काफ़ी है।" स्वामीनाथन् ने इतना कहकर दूसरी तरफ मुँह फेर लिया। आगे इससे बातें करने से कोई फायदा नहीं, यह जानकर प्रेमा वहाँ से हट गयी।

दोपहर घर लौटते वक्त स्वामीनाथन् का मन प्रेमा ने जो कुछ कहा था, उसी पर सोचता रहा। 'भारतमणी' की आर्थिक स्थिति उससे छिपी नहीं थी। पिछले दो महीने से वेतन मिलने में देर हो जाती थी। इसका भी निश्चय नहीं कि नई मशीन लगाने से 'भारतमणी' की बिक्री बढ़ेगी। स्वर प्रभाती से लोहा लेना मुश्किल है। उसके साथ होड़ लगाना है तो तमिलनाडू के पाठकों का स्तर ऊपर उठाना है या 'भारतमणी' को स्वर प्रभाती के बराबर स्तरहीन होकर लोगों का ध्यान आकर्षित करना है। लोगों का स्तर ऊँचा उठे, कम से कम दो-तीन पीढ़ियों तक यह संभव नहीं। लेकिन 'भारतमणी' को सस्ता और आकर्षक बना सकते हैं। अगर उसे अधिकार दिया तो दो—तीन महीनों के अन्दर 'स्वर प्रभाती' कोमुँह की खानी पड़ेगी, इसमें कोई सन्देह नहीं। लेकिन मुरली की हठधर्मी पहाड़-सी खड़ी है मार्ग में। क्या करें? स्वामीनाथन् अपने को विवश और निरुपाय पा रहा था।

दोपहर को वह कार्यालय जाने को तैयार हो रहा था कि दो व्यक्ति उससे मिलने आये।

एक ने पूछा—"आप ही 'भारतमणी' के संवाददाता—मिस्टर स्वामीनाथन् हैं?"

"हाँ···आप कौन है?"

"हम लोग 'स्वर प्रभाती' से आये हैं। मैं उसका मैनेजर हूँ। ये सह-संपादक हैं।

स्वामीनाथन् ने दोनों को सोफे पर बिठाया और खुद उनके साथ बैठ गया।

एक ने कहा—"मिस्टर आदिमूलम् ने हमें भेजा है?"

आँखों में प्रश्न के साथ स्वामीनाथन् ने विस्मय से भौंहें ऊपर उठायीं।

"आपकी प्रतिभा व लेखन से मिस्टर आदिमूलम् काफी प्रभावित हैं। अगर आप 'स्वर प्रभाती' में आ जाएँ तो···।"

"अब मैं 'भारतमणी' में काम कर रहा हूँ" स्वामीनाथन् ने बात काटी।

"हाँ-हाँ—यह तो मालूम है। 'स्वर प्रभाती' को और व्यापक बनाने की योजना है। इसलिए मिस्टर आदिमूलम् ने हमें आपके पास भेजा है।"

"मुझे इसके लिए क्या करना है ?"

"हम लोग आप जैसे होनहार व्यक्ति की खोज में हैं। आप हमारी पत्रिका को अपनी सेवा प्रदान करें तो···"

स्वामीनाथन् ने फिर टोका। "प्रतिभाशीलता और 'स्वर प्रभाती' में क्या सम्बन्ध है ? 'भारतमणी' जैसे एक स्तरीय नेशनल जनरल चलाने के लिए बुद्धि व प्रतिभा की आवश्यकता है। सिनेतारिकाओं की सनसनीदार खबरें और झूठी-मूठी वार्त्ताएँ लिख-छापकर मशहूर होने में बुद्धिमानी की क्या जरूरत है ? जिसे चाहें नौकरी पर लगा सकते हैं।"

यह सुनते ही दोनों लाजवाब होकर उसकी ओर ताकते रह गये। फिर संभलकर मैनेजर ने कहा—"आपकी पत्रिका के तीन व्यक्ति स्वर प्रभाती' में काम करने पर सहमत हो गये हैं। अगर आप भी आना चाहें तो महीने में पाँच सौ देने को हम तैयार हैं।"

स्वामीनाथन् चौंक पडा। दो सौ पचास देना 'भारतमणी' के लिए मुश्किल हो रहा है, ये लोग पाँच सौ देने को तैयार हैं। सो कैसे ? सह-संपादकों में तीन व्यक्ति 'भारतमणी' को छोड़ने को तैयार हो गये हैं, यह जानकर उसे धक्का-सा लगा। पल भर मुरली का चेहरा उसके सामने आया। हठात् पूछ लिया, 'आप लोग 'स्वर प्रभाती' का सचमुच विस्तार करना चाहते हैं या 'भारतमणी' को बर्बाद करने पर तुले हैं ?

मैनेजर के चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट फैली। बोले—"आखिर दोनों एक ही बात है।"

स्वामीनाथन् ने आँखें तरेरकर उनकी ओर देखा। मैनेजर तनकर बैठे और बोले—"मिस्टर ! अब हम सीधी बात पर आयें। असल में यह

एक व्यापार है। लोगों का स्तर ऊपर उठाने, तथाकथित संस्कृति, संस्कार इत्यादि का आलाप करने का हमारा कोई इरादा नहीं। पत्रकारिता पूरे का पूरा व्यापार है। बिज़नेस में प्रोफिट कितना मिलता है, यही मुख्य है। लोगों के बीच में हमारे माल की बड़ी माँग है। मिस्टर, आपसे मैं कुछ छिपाना नहीं चाहता। आपका भविष्य बड़ा उज्ज्वल है। हमारी पत्रिका में काम करने पर आप सहमत हों, पाँच सौ देने को हम तैयार हैं। जैसे भी हो एक साल के अन्दर 'भारतमणी' का नामोनिशान हम मिटा देंगे। आपके एडीटर मुरली ने यह क्या कर डाला है? किसी ऐरे-गैरे ने आत्म-हत्या कर ली तो सारा दोष हमारे सिर पर थोप दिया। तभी हमने निश्चय कर लिया कि 'भारतमणी' को मिट्टी में मिलाकर ही दम लेंगे। कहे देता हूँ, अभी उससे अलग हो जाना आपके लिए अच्छा है।"

स्वामीनाथन् भौंचक्का-सा उनकी बातें सुन रहा था। उसका हृदय काँप उठा। समझ गया कि 'भारतमणी' के खिलाफ भयंकर षडयंत्र चल रहा है। लगा आदिमूलम् का धन पैशाचिक नृत्य करके बलि माँग रहा है। एक सस्ती स्तरहीन पत्रिका अपने पैसे के बल पर 'भारतमणी' जैसी स्तरीय पत्रिका का गला घोंट देगी? तमिलनाडू के लोग ऐसा करने देंगे? स्वामीनाथन् का दिल रो उठा—'ओ तमिलनाडू! तुम्हारी नींद अब तक नहीं खुली?' स्वामीनाथन् का हृदय फटा जा रहा था। वह चुपचाप धरती पर दृष्टि गड़ाये बैठा था।

मैनेजर ने फिर कहा—"ऑल राइट! मिस्टर स्वामीनाथन्! हम छः सौ देने का तैयार हैं। अच्छा मौका है। हाथ से निकलने न देना।"

अब स्वामीनाथन् ने सिर उठाकर उनकी तरफ देखा—मेरे यहाँ पैसे का कोई मतलब नहीं। आप छः हज़ार दें तो भी मैं 'भारतमणी' को छोड़ने को तैयार नहीं हूँ। जब मैं नौकरी की खोज में भटक रहा था, मिस्टर मुरली ने मुझे सहारा दिया। अब उनको मेरी बड़ी जरूरत है। उनका साथ देना मेरा कर्तव्य है।" स्वामीनाथन् आसन से उठ गया।

दोनों बड़ी निराशा के साथ उठे। मैनेजर हार न मानने वाले थे बोले—"भारतमणी, दिन-पर-दिन मरता जा रहा है, अभी उससे अलग हो

जाना बुद्धिमानी है।"

"इस मौके पर ही मुझे उसका साथ देना है। यही मेरा अन्तिम निर्णय है।" स्वामीनाथन् ने हाथ जोड़ दिये।

स्वामीनाथन् जब मुरली के कमरे में आया, मुरली फोन पर सहकारी उप-सचिव मिस्टर उमापति से बातें कर रहा था।

"मिस्टर मुरली ! जो भी हो। आपको यों सरकार की इन्सल्ट नहीं करनी थी। मंत्रीगण तथा असेंम्बली आपसे सख्त नाराज हैं।" उमापति ने कहा।

"जो असमर्थ हैं उसके क्रोध का मुझे डर नहीं। मैंने एडीटोरियल में सरकार बिलकुल निष्क्रिय व असमर्थ हो गयी है ऐसा साफ-साफ लिखा था न ?"

"शायद सरकार की शक्ति से आप परिचित नहीं।"

"ओ ! अच्छी तरह परिचित हूँ। दस गुंडों की एक पार्टी का झंडा उठाकर हल्ला मचा था तो आपकी सरकार ने मुकद्दमा वापस ले लिया। सरकार को न्याय से ज्यादा वोट की फिक्र है।"

"आपने लिख दिया 'सरकार माने दस गुंडों की धमकी।' आज तक किसी ने सरकार का ऐसा अपमान करने का साहस नहीं किया है। यही नहीं कार्टून भी आपत्तिजनक है। आपको इसकी सफाई देनी पड़ेगी।"

"सफाई की क्या जरूरत है ? मैंने संपादकीय लेख में सारी बातें साफ-साफ लिख दी हैं। तमिल में ही लिखा है। हर कोई पढ़ सकता है। 'भारतमणी' ने कोई झूठी बात नहीं बतायी है। कालीनाथ मिल में हत्याएँ हुईं, आग लगायी गयी, इस पर सरकार ने कौन-सा एक्शन लिया है ? 'भारतमणी' में प्रकाशित फोटो से गुनाहगारों का साफ पता लगा, रंगे हाथ पकड़े गये तो विवश होकर उन पर मुकद्दमा दायर किया था। फिर क्या हुआ ? हत्यारों पर कौन-सी कारवाई की गयी ? पार्टी का नाम लेकर दस-पाँच गुंडों ने हल्ला मचाया, दो-एक ने अनशन करने की धमकी दी, सारे प्रान्त में हलचल मचाने की चेतावनी दी···तो बस सरकार ने चुपचाप मुकद्दमा वापस ले लिया। दस-पाँच गुंडे लाठी और पत्थर लेकर, पार्टी का झंडा लिये शोर मचायें तो बस जो चाहे कर सकते हैं, ऐसी दशा होने

पर शासन की बागडोर उन गुंडों के हाथ में है या मंत्रीमंडल के हाथ में, यही सवाल उठता है। मिस्टर ! एक नादान बच्चा भी इसे समझ सकता है। इतनी सी बात मंत्रीगण समझ नहीं पाते ?"

उमापति ने झल्लाकर कहा—"आप सरकार की इन्सल्ट कर रहे हैं।"

"मैं सच कह रहा हूँ।"

"सरकार को गुंडा कहना इन्सल्ट नहीं तो और क्या है ?"

"मैंने कहा गुंडों के हाथ में सरकार की बागडोर है।"

"आपको इसका जवाब देना पड़ेगा।"

"पहले मंत्रीमंडल को जनता व न्याय के सम्मुख जवाब देना पड़ेगा। कालीनाथ मिल में हुए हत्याकाँड, आगजनी, बाजार में पत्थरों की मारा-मारी इत्यादि, अराजकता के लिए पहले आपके मंत्रीगण जवाब दें, फिर मुझसे सफाई माँग लें। जो सरकार कानून व अमन-चैन को बनाये रखने में असमर्थ है, उसे मुझसे जवाब-तलब करने का क्या हक है ?"

दूसरी तरफ़ से फोन के चोंगे को धड़ाम से रखने की आवाज़ आयी। मुरली ने हँसते हुए फोन रख दिया।

सामने स्वामीनाथन् खड़ा था।

"कालीनाथ मिल डायरेक्टरों को एक पत्र टाईप करना है। मिल पर हुई हत्याओं पर मिल मालिकों को अदालत में मुकद्दमा दायर करना है। जब सरकार अपने कर्तव्य से चूक जाती है, तब बाधित व्यक्ति को मुकद्दमा चलाने का अधिकार है।"

"सर···" स्वामीनाथन् ने धीमी आवाज में कहा—"जब सरकार ने खुद मुकद्दमा वापस ले लिया है तो हमें उसके पीछे पड़ने की क्या जरूरत है ? मुकद्दमा दायर करके विप्लव पार्टी की दुश्मनी क्यों मोल लें ?"

मुरली गुस्से में गरज उठा—"यह मंत्रीमंडल आज रहेगा···कल नहीं रहेगा···इसका क्या ठिकाना। मगर राज्य में कानून व अनुशासन भंग नहीं होना चाहिए। प्रशासन के कानून कायदे का कोई मूल्य नहीं, तो क्या होगा ? वोट के लालच में एक मुकद्दमे को सरकार वापस ले लेगी, तो जिनका बहुमत है वे मनमानी करना शुरू कर देंगे। जिसकी

लाठी उसकी भैंस की हालत हो जाएगी न ?"

"यह तो ठीक है—मगर।"

"मैं एक पत्रकार हूँ। पत्रकारिता के कुछ धर्म हैं। लोगों की आजादी व भलाई का ख्वाल रखना पत्रिका का परम कर्तव्य है। स्वामीनाथन् ! 'भारतमणी' में काम करते हुए ऐसी बातें कहने में तुम्हें शरम नहीं आती ?" मुरली फुफकार उठा।

स्वामीनाथन् ने कोई उत्तर न दिया। उसकी समझ में न आया कि इस जिद्दी आदमी को कैसे समझायें ?

"प्रेमा को बुलाओ !"

स्वामीनाथन् थोड़ा हिचकता खड़ा था।

"मेरी बात सुनी ना ?"

स्वामीनाथन् जो अब तक धरती पर आँखें गड़ाये खड़ा था, झट सिर उठाकर एक बार मुरली की ओर देखकर तेजी से चला गया।

मुरली का मन कई प्रकार की चिन्ताओं से पीड़ित था। विश्व कम्यू-निस्ट सम्मेलन में भाग लेने शिवराम को गये एक साल से ज्यादा हो गया था मगर वह वापस नहीं आया था। कहीं से दो चिट्ठियाँ आयीं। मुरली को लिखा था कि माँ का ख्याल रखना। मुरली समझ गया पार्टी के कार्यों के सिलसिले में शिवराम अज्ञातवास कर रहा है।

सरकार ने विप्लव पार्टी को गैर कानूनी घोषित नहीं किया है, तब यह गुप्तवास क्यों ?

अज्ञातवास करने के दो कारण हो सकते हैं। या तो पार्टी को सरकार ने गैरकानूनी घोषित करना है या गुप्त रूप से पार्टी किसी षड्यंत्र में लगी है। जनतांत्रिक देश में ऐसी अराजकता को पनपते देख मुरली चिन्तित हो उठा। सवेरे वह शिवराम की माँ से मिलने गया था। तब शारदा भी वहाँ थी। केरल में पार्टी का शिक्षण लेने के बाद उसको घर लौटे छः महीने हो गये थे। अब पार्टी के कार्यों में तीव्रता से भाग ले रही थी। मुरली को देखते ही शिवराम की माँ रो पड़ी—"मुझे तो भूल गया। उस निर्मम को इस बेचारी का भी ख्याल न आया।" शारदा को गले लगाकर आँसू बहाने लग गयी। मुरली ने बड़ी तसल्ली दी। उसे शान्त करने की

कोशिश की, मगर कुछ फायदा न हुआ।

मुरली को शिवराम पर ढेर-सा गुस्सा आया।

शिवराम का ऐसे अज्ञातवास में रहना स्वयं शारदा के लिए विस्मय की बात बनी थी। पार्टी के कार्यों से कभी-कभी ऐसे लापता होना पड़ेगा, यह तो वह जानती थी। फिर भी मुरली के सवाल ने उसे डरा दिया। शिवराम के घर से बाहर आते ही मुरली ने पूछा—"शिवराम जिन्दा भी है?"

शारदा शीघ्र कोई उत्तर न दे पायी। पल भर को चकरा गयी। सारा शरीर पसीने से तर हो गया। संभलकर पूछा—"ऐसा क्यों पूछते हैं आप?"

"रूस से वह दिल्ली लौट आया यह तो मालूम है। इसके बाद उससे कोई सूचना नहीं मिली है। लगभग एक साल हो गया है। माँ को भी भुला दे···ऐसी पार्टी का नशा बुद्धि को भ्रष्ट कर देगा।"

शारदा मौन रही। उसके मन में अब चिन्ता सवार हो गयी। मुरली ने आगे कहा—"सीमा पर चीन की गड़बड़ी है। ऐसे वक्त विप्लव पार्टी वालों का अज्ञातवास···आशंकित होना पड़ता है। शायद देशद्रोहपूर्ण कार्यों में लगे हों?"

शारदा ने झट कहा—"शिवराम ऐसा काम कभी न करेंगे?"

"पार्टी के हुकुम को मानना ही पड़ेगा। पार्टी का अनुशासन कठोर है।"

"ऐसी नौबत आने पर वे पार्टी का विरोध करने से न हिचकेंगे।"

मुरली ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा। पूछा—"तुम्हें उस पर इतना विश्वास है?"

शारदा ने सिर हिलाकर हामी भरी। मुरली ने उसे दयार्द्र आँखों से देखते हुए अविचलित स्वर में कहा—"तब तो उसे खोने के लिए तुम्हें तैयार रहना है।"

शारदा चौंक पड़ी। ओंठ काँप उठे। गला भर आया। बड़ी मुश्किल से उसने आँसुओं को रोका।

"पार्टी के विरुद्ध विचार प्रकट करना पार्टी किसी भी हालत में

स्वीकार न करेगी। उसका अनुशासन भयंकर है। प्रतिज्ञा लेकर जो पार्टी के परिवेश में आ जाता है, फिर कभी उस मार्ग से अलग नहीं हो पायेगा। अगर कोई ऐसा ख्याल रखे तो वह जिन्दा नहीं रह सकता।"

मुरली के ये शब्द सुनते ही शारदा की आँखें भर आयीं। मुरली न देख ले इस ख्याल से उसने दूसरी ओर मुँह फिरा लिया।

शिवराम के घर से वापस आने पर मुरली और भी अशान्त हो गया। आज स्वामीनाथन् पर उबल पड़ा था, इस बात पर भी उसका मन पछताने लगा। उसे इतना गुस्सा क्यों आया? कब से वह इतना बेसब्र हो गया, इसी चिन्ता में सारा दिन बीत गया।

रात के दो बजे मुरली 'भारतमणी' कार्यालय से बाहर आया तो देखा स्वामीनाथन् सीढ़ियों से उतर रहा था। मुरली को देखते ही उसके लिए रास्ता छोड़कर एक तरफ खड़ा हो गया। मुरली ने कहा—"स्कूटर को यहीं छोड़ दो। मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें घर पर छोड़ दूंगा।"

स्वामीनाथन् ने कहा—"नहीं सर, मैं स्कूटर से चला जाऊँगा।"

"तुमसे बातें करनी हैं—मेरे साथ आओ।" दोनों एकसाथ नीचे आये। मुरली ने हठात् कहा—"स्वामीनाथन्! तुम्हें मेरी पत्रिका का आदर्श पसन्द नहीं तो साफ कह देना।"

"मुझे पसन्द है—मगर लोकरुचि भिन्न है।"

"मुझे आशा है कि हम जनता की रुचि को बदल सकते हैं।"

"मेरी दृष्टि में अब तक किसी पत्रिका को सफलता नहीं मिली है।"

"एक पत्रिका लोगों को अपने सस्ते, स्तरहीन विचारों से गिरा सकती है तो एक पत्रिका उन्हें ऊपर नहीं उठा सकेगी?"

"एक जिन्दा आदमी को मार सकते हैं, मगर निर्जीव शरीर में प्राण फूंक सकते हैं मुझे विश्वास नहीं।"

"लेकिन मुझे विश्वास है।"

"हमारी पत्रिका की बिक्री कैसे बढ़नी है?"

"उसके लिए मैंने योजना बना ली है। कुछ विदेशी पत्रिकाओं से मैंने सम्बन्ध स्थापित किया है। आगे से अच्छे-अच्छे लेख व साहित्यिक समालोचनाएँ हमें मिलती रहेंगी। नये-नये वैज्ञानिक आविष्कारों से

सम्बन्धित लेख भी प्रकाशित कर पायेंगे। जज राजरत्नम् के प्रयत्न से यह योजना यथाशीघ्र सफल हो जाएगी। स्वामीनाथन्! देखते रहना! एक साल में 'भारतमणी' की बिक्री पहले जैसी हो जाएगी।"

स्वामीनाथन् मौन खड़ा था। दोपहर 'स्वर प्रभाती' के मैनेजर ने जो कुछ कहा था, वह उसके कानों में गूँज रहा था।

मुरली ने कहा—"कोई स्टैनो टाईपिस्ट हो तो बताना। प्रेमा अगले महीने से काम पर न आयेगी।"

"क्यों? क्या बात है?" स्वामीनाथन् ने तटस्थ रहने की कोशिश की।

"कहती है, उसके पिताजी नौकरी करने से मना करते हैं।"

स्वामीनाथन् ने धीमी आवाज में कहा, "स्टैनो ही नहीं, और तीन उपसंपादकों को भी ढूँढ़ना होगा।"

"क्यों? क्या बात है?" चौंकता-सा मुरली पूछ बैठा।

'स्वर प्रभाती' में एक सौ रुपया ज्यादा देते हैं। प्रेमा भी अगले महीने से वहीं जाने वाली हैं।"

"सच है?"

"स्वर प्रभाती के मैनेजर ने इनको फोड़ लिया है।"

"ओह! कैसी नीचता है?" मुरली फुफकार उठा।

"जहाँ वेतन अधिक मिलता है, वहीं पर जायेंगे न?"

मुरली ने गुस्से के साथ उसकी तरफ देखा, "तो वेतन ही मुख्य है?"

"हर कोई आपके जैसा आदर्शवादी नहीं बन सकता।"

मुरली के हृदय में ये शब्द तीर से लग गये। स्वामीनाथन् की ओर सन्देह की दृष्टि से उसने देखा।

"स्वर प्रभाती' के मैनेजर तुमसे भी मिले थे न?"

"हाँ···मुझे छः सौ देने की बात कही थी।"

"जाइए···सब चले जाईए···" मारे गुस्से के मुरली आगे बोल न पाया। कार का द्वार खोलकर अन्दर जा बैठा।

"सब लोग जा सकते हैं। तुम भी चाहते हो, तो जा सकते हो—मुझे कोई चिन्ता नहीं। लेकिन याद रखना—'भारतमणी' का प्रकाशन बन्द नहीं होगा। पत्रिका के रूप में न सही, हस्तलिखित पत्रिका के रूप में

'भारतमणी' प्रकाशित होती रहेगी।"

मुरली ने जोर से कार का दरवाज़ा बन्द किया। अगले क्षण कार हवा से बातें करने लगी।

अट्ठाईस

आधी रात बीत गयी। लगभग दो बज गये होंगे। गुण्टूर की गर्मी अब तक कम न हुई थी। शिवराम खुली छत पर चटाई बिछाये लेटा था। उससे जरा दूर हटकर सीतम्मा लेटी थी। चढ़ती जवानी थी। उम्र लगभग पच्चीस की होगी। रंग काला होने पर भी शरीर में लावण्य था। वह चित्त लेटी आकाश पर थिरकते चाँद को निहार रही थी।

शिवराम ने ज़रा चिढ़े स्वर में तेलगु में कहा—"तुम अन्दर जाके लेट जाओ।"

सीतम्मा ने लहराते स्वर में कहा, "नहीं—अन्दर बड़ी उमस है। मैं यहीं लेटी रहूँगी।"

तुरन्त शिवराम अपनी चटाई समेटकर अन्दर चला गया।

सीतम्मा की खिलखिलाकर हँसने की आवाज सुनाई पड़ी। मुँह सिकोड़ते हुए खिड़की के जरिए एक बार उसे देखा फिर वह चटाई पर आ लेटा। सचमुच कमरे के अन्दर बड़ी उमस महसूस हो रही थी। इसलिए नींद न आयी। अतीत की स्मृतियाँ उसे अकुलाने लगीं। उसे अपने आप पर हँसी आ रही थी। सीतम्मा के साथ वह गृहस्थी चला रहा है। यह कैसी मजाक की बात है। उसने कल्पना में भी नहीं सोचा था कि उसे एक ऐसा नकली जीवन बिताना पड़ेगा।

यदि सीतम्मा के स्थान पर शारदा होती···उसने वेदमूर्त्ति से बहुत कुछ कहा था। उनसे विनती की थी। मगर उनका पत्थर का हृदय पसीजा ही नहीं। लाज शरम छोड़कर शारदा के प्रति अपनी मुहब्बत के बारे में उनसे दिल खोलकर बातें कीं तो भी वे टस से मस न हुए। शिवराम को देखकर परिहास से हँस पड़े—"शिवराम ! सोचा नहीं था कि इतने मामूली व औसत आदमी निकलोगे। शारदा के पीछे तुमने अपना दिल लुटा दिया है, यह खबर आयी तो मुझे विश्वास न हुआ था। लेकिन अब तुम्हीं इसे स्वीकार कर रहे हो···शिवराम ! मुझे पूरा-पूरा विश्वास है कि तुम मेरे उत्तराधिकारी बनोगे। लेकिन एक लड़की के मोह में तुम इतना गिर जाओगे, इसकी मुझे बिल्कुल आशा नहीं थी।" वेदमूर्त्ति ने कठोर आवाज में कहा था।

क्रोध से लाल बनी उनकी मुख-मुद्रा अब भी शिवराम की आँखों के सामने आकर उसे अधीर बना रही थी। वह बिस्तर से उठ बैठा। खिड़की के जरिए खुली छत दिखाई दे रही थी। सीतम्मा ने करवट बदली। अर्ध-निद्रित अवस्था में उसके कपड़े अस्त-व्यस्त पड़े थे। यौवन से भरपूर उसके शरीर का उतार-चढ़ाव व अंगों की कमनीयता उजली चाँदनी में बड़ी आकर्षक लग रही थी। उसका आँचल एक तरफ खिसक गया था। अध-खुली छाती शिवराम की आँखों में कौंध उठी। चाँदनी रात की मादकता, एकान्त और सामने पड़ी युवती का मदभरा यौवन शिवराम की नस-नस में अपूर्व नशा भरने लगा था। जान-बूझकर ही वेदमूर्त्ति ने उसे उसके पास भेजा था। स्त्री के संपर्क के लिए व्याकुल होते वक्त उसके शारीरिक ताप को मिटाने के लिए सीतम्मा वहाँ पर भेजी गयी थी। लेकिन शिवराम ने बड़े संयम से अपने को रोक रखा था। उसका मन शारदा पर आसक्त था। वही उसकी वेदना की दवा थी। गुण्टूर आने के पहले वेदमूर्त्ति से कितना तर्क-वितर्क किया था उसने ! मगर कोई फायदा न निकला।

चीन से लौटने के बाद वह नई दिल्ली में कुछ दिन रहा। चीन से लाये पत्र को पढ़ते ही वेदमूर्त्ति का चेहरा खिल उठा। शिवराम अन्दाज़ा न लगा पाया कि चिट्ठी में क्या खबर है। इतना तो जान लिया कि चीन और विप्लव पार्टी में निकट संपर्क है। रूस और चीन की हालत देखकर

वह कितना निराश हो गया है, यह सुनकर वेदमूर्त्ति मुस्कराये। बोले—"शिवराम ! कम्यूनिज़्म के सिद्धान्त व विचारों का तुमने गहरा अध्ययन किया है। यह तो सही है, मगर यथार्थपूर्वक तुम्हें चिन्तन करना है। व्यावहारिक दृष्टिकोण चाहिए। परंपरागत बुर्जुआ के चिन्तन की पकड़ से तुम अपने को छुड़ा नहीं पाते हो। पार्टी के प्रशासन की तुलना सांस्कृतिक महत्ता से मत करना। शिवराम, हमारी चिन्तन प्रणाली स्वयं एक विशिष्ट सिद्धान्त है, संस्कार है। यह किसी देश या खण्ड का नहीं। सारे विश्व का सार्वभौमिक सिद्धान्त है।"

उनके तर्कवाद से वह काफी प्रभावित हुआ, मगर उसके दिल में जो-जो शंकाएँ घुमड़ती रहीं वे दूर न हुईं। विदेश से लौटे दस दिनों के बाद कलकत्ते में विभिन्न राज्यों के लीडरों की गुप्त सभा हुई। विश्व कम्यूनिस्ट सम्मेलन में जिन्होंने भाग लिया था उन प्रतिनिधियों की रिपोर्ट पर विचार-विमर्श होने के लिए वेदमूर्त्ति ने इस मीटिंग का प्रबन्ध किया था। कलकत्ते के पार्टी कार्यालय में रात के नौ वजे मीटिंग शुरू हुई। शिवराम के साथ जिन्होंने सम्मेलन में भाग लिया था, उन्होंने रूस व चीन में जो-जो क्रान्तिकारी परिवर्त्तन हुए थे उन पर जोशीला भाषण दिया। अन्त में शिवराम बोलने के लिए उठा। वेदमूर्त्ति की दृष्टि उसी पर लगी थी, लेकिन शिवराम किसी की ओर देखे बिना, माईक के सम्मुख खड़े होकर बोलने लगा। सबकी दृष्टि उसी पर थी। उसका भाषण सुनने के लिए सब उत्सुक थे। मगर उसका भाषण उनकी आशाओं के बिल्कुल विपरीत था। भूलकर भी उसने चीन व रूस की प्रशंसा में एक शब्द भी न कहा। उलटे यह बताया कि रूस व चीन में उसकी बुनियादी शंकाओं का सही समाधान न मिला, जिस पर वह बहुत हताश हो गया है। यह सुनते ही सब लोग सकते में आ गये। वेदमूर्त्ति का चेहरा गुस्से से लाल हो रहा था। अकेले कलकत्ते के लीडर नरेन्द्र देव प्रसन्नता से उसकी बातें सुन रहे थे। अन्त में शिवराम ने कहा—"कामरेड्स ! मेरी यात्रा बड़ी निराशाजनक है। यहाँ के श्रमिकों से वहाँ का श्रमिक वर्ग मेहनती है। वे लोग कठोर परिश्रम करते हैं। यहाँ से बढकर वहाँ बड़े-बड़े कारखाने व फैक्ट्रियाँ हैं। वहाँ क्रान्तिकारी परिवर्त्तन हो गये हैं, जिनकी अब यहाँ

आशा नहीं है। विश्व में रूस को बड़ा आदर व सम्मानपूर्ण ऊँचा स्थान मिला है, जो भारत को नहीं है। लेकिन—चीन व रूस में, जो श्रमिकवर्ग की स्वर्गभूमि कही जाती है, एक चीज न मिली जिसकी मुझे खोज थी।"

शिवराम ने थोड़ा रुककर सामने बैठे हुए नेताओं की ओर ध्यान से देखा। सबकी तेज दृष्टि उसे भेद रही थी। कमरे में दम घुटनेवाली शान्ति व्याप्त थी। शिवराम आगे बोला—"वह चीज थी आजादी। हाँ मैं व्यक्तिगत आजादी को देखने के लिए लालायित था। मैं हर जगह उसे ढूँढता रहा। लेकिन उसे देख न पाया। वहाँ पर केवल उसी का अभाव है। यहाँ पर एक मामूली मजदूर को जो आजादी व अधिकार हैं, वैसी आजादी व बुनियादी हक उस स्वर्गभूमि में नहीं मिलते। व्यक्ति की आशा और अरमान, मानवीय अनुभूतियाँ व भावनाएँ वहाँ पर पार्टी के एकाधिकार की पकड़ में दम तोड़ रही है। कामरेड्स ! अपनी इस यात्रा में मेरा मन कब उल्लसित हुआ था यह जानकर आपको आश्चर्य होगा। नई दिल्ली की मिट्टी पर जब अपना पाँव रखा और स्वतंत्र वायुमण्डल में जी भरकर साँस ली, तभी मैं खुश हुआ। कामरेड्स ! हम भूखों मर सकते हैं, मगर विना आजादी के जी नहीं सकते। मेरे इस भ्रमण पर मेरे मन में जो विचार आये उसे आपके सम्मुख पेश करना चाहता हूँ। हमारी पार्टी, हमारी अपनी है। इस देश की है। हमें रूस व चीन का मुखापेक्षी रहने की जरूरत नहीं। हमारे देश की संस्कृति व सभ्यता के अनुरूप अपनी पार्टी के नियमों में परिवर्त्तन करके हमें अपने को रूस व चीन की पकड़ से छुड़ाकर स्वतंत्र रूप से पार्टी का संचालन करना है। रूस व चीन को पथदर्शन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। हम चाहे बगावत का झंडा उठाएँ, गोरिल्ला युद्ध करें। वह हमारी अपनी समस्या है, अपने देश से सम्बंधित मामला है। इसमें रूस व चीन को दखल देने का कोई अधिकार नहीं। हमारे देश की अन्दरूनी बातों, राजनीति में विदेशियों को दखल देने दें तो सारा देश विषाक्त हो जाएगा। फिर उससे हम अपने को मुक्त कर न पायेंगे। यहाँ पर जो कुछ घटे, वह भारतीय ढंग से, भारतीय संस्कृति के विरुद्ध न हो। उसमें इस मिट्टी की सोंधी बू हो, न कि रूसी या चीनी गंध। हममें स्वतंत्र रूप से चिन्तन करने की शक्ति है। माओ-त्से-तुंग के

चिन्तन की हमें जरूरत नहीं।"

केरल के लीडर ने टोका—"यदि आपके चिन्तन व सिद्धान्त को जनता स्वीकार न करे तो ?"

"उसे लोकप्रिय बनाना, जनता को प्रभावित करना हमारा कर्त्तव्य है। इसके लिए विदेशियों को अपने अधिकार जताने दें? हमारी पत्नी हमारी बात नहीं मानती, तो पराये को बुलाकर उस पर जोर जबरदस्ती करने दें?" शिवराम ने केरलीय लीडर को क्रोध पूर्ण आँखों से देखते हुए पूछा। तुरन्त नरेन्द्र बोस ने तालियाँ बजायीं। चार-पांच लीडरों ने उनका अनुकरण किया। नेता वेदमूर्त्ति ने मारे गुस्से के नरेन्द्र बोस की ओर आँखें तरेरकर देखा। फिर शिवराम की तरफ घूरने लगे।

शिवराम बोलता गया—"मास्को का यह सम्मेलन रूसी नेताओं के लिए सचमुच बड़ी सफलता है! रूसी नेताओं के बोलने के ढंग व दृष्टिकोण से यह स्पष्ट था कि संसार भर के मार्क्सवादियों के लिए वे ही अधिष्ठाता व सर्वेसर्वा हैं। रूसी जनता के मन में भी ऐसी भावना को जगाने में उन्हें बड़ा अच्छा लगता है। यह डिक्टेटरशिप, सत्ताधारी भावना ही मेरे दिल में खटकती रहती है।"

इस वक्त नेता वेदमूर्त्ति उठ खड़े हुए और कहा—"शिवराम! वाद-विवाद करने के लिए हम यहाँ जमा नहीं हुए हैं। तुमने अपने दिल की बात प्रकट कर दी बस। बैठ जाओ! मैं इसका उत्तर दूँगा।"

शिवराम तुरन्त वहाँ से हट गया। वेदमूर्त्ति बोलने लगे—"हमारे मालिक मुख्तार कोई नहीं है। यह सही है कि हमें रूस व चीन का मुखापेक्षी रहने की कोई जरूरत नहीं। विश्व भर के श्रमजीवी वर्ग के लिए हमारी पार्टी संघर्ष कर रही है, न कि किसी एक देश की प्रेरणा से या मजबूरी से। कार्लमार्क्स ने जिस पथ का प्रदर्शन किया था, उसी पथ पर, उसी चिन्तन धारा पर हम अग्रसर हो रहे हैं। माओ-त्से-तुँग का चिन्तन भी इसी मार्ग का अनुकरण कर रहा है। मार्क्स न चीन के हैं न रूस के। लेकिन उनके चिन्तन के पथ पर रूस और चीन आगे बढ़ रहे हैं। हम लोग भी मार्क्स के अनुगामी हैं, न रूस के न, चीन के।"

नरेन्द्र देव ने टोका—"लेकिन माओ···रूसी नेताओं को परिवर्त्तन वादी कहते हैं न ?"

"यह माओ का अपना विचार है। आज माओ ने जिस मार्ग को अपनाया है, वह नया नहीं है। स्टालिन ने जिस तरीके को अख्तियार किया था वही है यह। लेकिन स्टालिन के बाद जो आये उनके चिन्तन व विचारों में नया परिवर्त्तन आया। लेकिन माओ ने इस परिवर्त्तन को स्वीकार नहीं किया। आज हम लोग क्यों रूस व चीन पर निर्भर हैं? पूंजीवादी देश ही इसका एकमात्र कारण हैं। समस्त पूंजीवादी देशों की सम्मिलित शक्ति मार्क्सवादियों के विरुद्ध एकत्रित होने के समय हम सहायता के लिए चीन व रूस की मदद की आकाँक्षा करते हैं। अगर हम गृहयुद्ध शुरू कर दें और बन्दूक की नोक पर शासन को हथिया लें, फिर हमें रूस की मदद व चीन के चिन्तन की जरूरत नहीं। तब तक हमें इन दोनों देशों का मुखापेक्षी रहना पड़ेगा। कामरेड्स शिवराम ने जो विचार प्रस्तुत किये हैं, उनपर अवश्य ध्यान दिया जाएगा।

"हमारे देश को बुर्जुओं की पकड़ से छुड़ाने के कार्य में तीव्रता से भाग लेने का समय निकट आ रहा है।"

इन शब्दों के साथ वेदमूर्त्ति अपने आसन पर बैठ गये।

पंजाब से आये गुरनामसिंह कुछ कहने के लिए उठे, मगर वेदमूर्त्ति ने उनकी तरफ कड़ी दृष्टि डालते हुए बैठ जाने का इशारा किया तो वे गुमसुम अपनी जगह पर बैठ गये।

मीटिंग के खत्म होते वक्त रात का एक बज गया था। शिवराम थका-माँदा सा कमरे में लौट आया। उसका मन बिलकुल हताश था। अपने भाषण में वेदमूर्त्ति का रोक लगाना, मन में खटकता रहा। पार्टी के नेता की हैसियत से उनकी तानाशाही पर वह झुँझला उठा, मगर उनकी उपस्थिति में उसे झुकना ही पड़ा, सामना कर न पाया। यदि कर सकता होता, तो अपने इस अण्डरग्राऊण्ड जीवन के लिए शारदा को साथ ले आया होता···

छत पर किसी की आहट पाते ही शिवराम की विचार शृंखला टूट गयी। देखा सीतम्मा अपने बिस्तर पर बैठी खिड़की के जरिए उसे अपलक

निहार रही है।

"भीष्मजी को नींद न आयी। अन्दर पड़े-पड़े क्यों घुट रहे हैं आप—आईए न छत पर···" सीतम्मा ने लरजती आवाज में कहा।

सचमुच चाँदनी की उजियाली में उसका रूप मनमोहक लग रहा था। बैठे-बैठे अपने दोनों हाथ उठाकर अंगों को मरोड़ती हुए उसने अंगड़ाई ली। उसकी वह अदा, अंगों की लचक, मदमाता यौवन शिवराम की आँखों में चुभ गया।

"मैं उधर आऊँ ? थोड़ी देर बतियाते रहें···" सीतम्मा ने हंसते हुए कहा कि उसके मोती के से दाँत चमक उठे।

शिवराम हक्का-बक्का रह गया। घबराये स्वर में बोला—"नहीं-नहीं तुम वहीं पर पड़ी रहो।"

उसके डर और घबराहट को देख सीतम्मा हँसने लगी।

शिवराम ने पूछा—"हँसती क्यों हो ?"

"कुछ नही···" सीतम्मा फिर से चटाई पर लंबी हो गयी। चाँद को देखती हुई उंगलियों के नखों को कुतरने लगी।

सीतम्मा शिवराम के लिए अग्नि परीक्षा थी। यदि वह न होती तो वह इतना चंचल व व्याकुल न होता। हर रात उसके लिए कड़ी परीक्षा थी। तन्हाई, सीतम्मा का आकर्षक यौवन, किसी तरह उसे अपनी ओर खींचने की उसकी तीव्रता, उसके हाव-भाव उसे आतंकित कर रहे थे। उसे इसका भय था कि किसी भी क्षण वह बुद्धि भ्रष्ट कर, अपना सन्तुलन खो बैठेगा। दिन भर वह पार्टी के रहस्यपूर्ण संगठन, प्रचार व मंत्र-णाओं में लग जाता था, लेकिन रात को थका-माँदा घर लौटता तो मन की बेकरारी उसे सताने लगती। यह आँख-मिचौनी के खेल कहीं सीतम्मा जीत न ले, इसका भय था। चाहे जितना भी विरक्त रहने की कोशिश करे, संदर्भ और परिस्थिति का यह संयोग उसे बेचैन कर रहा था।

वेदमूर्त्ति को उससे ऐसा बदला न लेना चाहिए था। उसे अपनी इच्छा पर शारदा से शादी करने देते और उसे यहाँ भेज देते तो कितना अच्छा हुआ होता। लेकिन वेदमूर्त्ति प्रेम व विवाह के कट्टर विरोधी थे। मार्क्सवादियों के लिए प्रेम व मुहब्बत मना था।···

शिवराम ने जब अपने प्रणय के बारे में कहा तब वेदमूर्त्ति की आँखों में अवर्णनीय घृणा व उपेक्षा उतर आयी थी। उसकी ओर ऐसे देखा जैसे किसी घिनौने जन्तु को देखते हों। उस दृष्टि की क्रूरता शिवराम के लिए इतनी असह्य हो रही थी कि वह तिलमिलाकर रह गया।

दिल्ली में एक दिन रात को उनसे इस बात पर चर्चा हुई। वेदमूर्त्ति ने कहा—"देश भर में विप्लव मचाने का मौका आ गया है। दस पन्द्रह मुख्य लीडरों को अण्डरग्राऊण्ड भेजकर क्रान्ति फैलाने के काम में लगाने का इरादा है। जगह-जगह पर इसका संगठन होना है।"

"सारे देश में एकसाथ विप्लव मचाना संभव है?" आशंकित स्वर में शिवराम ने पूछा।

"क्यों नहीं। अब पूरी योजना तैयार है। अण्डरग्राऊण्ड रहने वाले लीडरों को अपना अलग-अलग दल बनाकर इस आंदोलन को संगठित करने के कार्य में लग जाना है। मजदूरों और किसानों को क्रान्ति के लिए उत्तेजित करना है। देश भर में, हर क्षेत्र में हड़ताल व बन्द का आन्दोलन शुरू करने की व्यवस्था करनी है। हड़ताल एक जगह पर प्रारम्भ होकर दावाग्नि सी हर जगह फैलती जाएगी। सारे देश में विप्लव के नारे गूँज उठेंगे। यह कोई हल्का काम नहीं है। पूरी जिम्मेदारी के साथ हर कामरेड को जी जान से इस कार्य में लग जाना होगा। प्रचार व प्रसार ही पार्टी की रीढ़ है। उसका प्राण है।"

"हड़ताल करें तो श्रमिकों को भूखों मरना पड़ेगा न?"

"आन्दोलन शुरू करते ही पूंजीपतियों के अड्डे व बैंकों को लूटना होगा। क्रान्ति में अच्छे बुरे का कोई ख्याल नहीं। धनियों को लूटना, पूँजीपतियों का दमन करना, जन-आन्दोलन का लक्ष्य होगा। किसान जमीन पर अधिकार जमा लेंगे। जमीन-जायदाद हथिया ली जाएगी। मजदूर मिल व कारखानों को अपने कब्जे में ले लेंगे। श्रमजीवी वर्ग, किसान व मजदूर, जवान लोग और विद्यार्थियों को फोड़कर अराजकता खड़ी करना बहुत आसान है। हर कहीं हिंसा व बलात्कार का आतंक मचा देना बहुत जरूरी है। आतंकवादी विप्लव पार्टी का नाम लेते ही लोग थर-थर काँप उठें, भयभीत हो उठें···ऐसा आतंक मचाना है। हमें गली-गली लड़ना

होगा। दिक्कतों का सामना करने से नहीं डरना है। श्रमिक वर्ग के क्रान्तिकारी दल जगह जगह पर ऐसे व्याप्त हों कि पुलिस का कोई वश न चले, ताकि देश भर में आतंक फैल जाए और लोग भयभीत हो उठें। तोड़-फोड़ का कार्य शुरू हो। टेलि-कम्यूनिकेशन, यातायात के साधनों को नष्ट कर दिया जाए तो देश भर में खलबली मच जाएगी। तहलका-सा मच जाएगा। सरकारी शासन-तंत्र स्तम्भित हो जाएगा। ऐसी विद्रोहपूर्ण परिस्थिति व संगठित मोर्चा के परिणामस्वरूप शासन पर हम कब्जा जमा लेंगे—शिवराम! कल से तुम्हें अण्डरग्राऊण्ड होना है।" वेदमूर्त्ति के हर शब्द में आत्मविश्वास और दृढ़ता थी।

शिवराम ने पूछा, "मुझे कहाँ जाना है?"

"तुम्हें तेलुगु मालूम है। तुम गुण्टूर जाना। अन्य बातें वहाँ के कार्यकर्त्ता संभाल लेंगे।"

"तब तो मैं गाँव जाकर दो-तीन दिनों में गुंटूर जाऊँगा।"

"ऐसा क्यों?" वेदमूर्त्ति ने झल्लाकर पूछा।

"एक बार माँ से मिलना है।"

"तो अब तक माँ, परिवार, नाते-रिश्ते के मोह-माया से तुम छूटे नहीं हो?" सख्ती के साथ वेदमूर्त्ति ने पूछा।

शिवराम ने कहा—"अच्छा! मैं सीधे गुंटूर जाऊँगा।"

"गुंटूर में तुम्हारे साथ गृहस्थी चलाने नेल्लूर से सीतम्मा आयेगी। विजयवाड़ा में ऐसी बनावटी गृहिणी बनने का उसे अनुभव है।"

"यदि शारदा को मेरे साथ रहने दें तो···" यह कहते हुए शिवराम के चेहरे पर विलसित लज्जा व हर्ष वेदमूर्त्ति की कड़ी दृष्टि से न बचे।

"गृहस्थी चलाने को एक स्त्री। वह चाहे शारदा हो, या सीतम्मा! इसमें क्या हर्ज?"

वेदमूर्त्ति की आवाज में ध्वनित कटुता व अवहेलना को समझे बिना शिवराम ने कहा—"शारदा मेरी परिचिता है।"

"घुमा-फिराने की क्या ज़रूरत? तुम्हें शारदा से मुहब्बत है। मैं जानता हूँ। शिवराम, तुम अब भी अपने ही बारे में सोच रहे हो, होनेवाले महान् आन्दोलन की तुम्हें बिलकुल परवाह नहीं" कड़ाके के साथ

वेदमूर्त्ति ने कहा ।

शिवराम घबरा गया। भावावेश में आकर बोला—"जी ! मैं पार्टी के लिए अपने प्राण भी न्यौछावर करने को तैयार हूँ।"

"मगर तुम्हारा मन स्त्री के मोह में चकरा रहा है।"

"शारदा और मेरे बीच में जो···।"

"जानता हूँ। कहोगे मुहब्बत है। कुत्ता सड़क पर कुतिया के पीछे-पीछे दौड़ लगाता फिरता है न ! वह इससे भिन्न नहीं। स्त्री और पुरुष के बीच में स्वाभाविक रूप से होने वाली कुलबुलाहट है, भूख है। इस बात को इतना महत्त्वपूर्ण समझना नादानी है···।"

"लेकिन···।"

"तुम क्या कहने वाले हो यह मुझे मालूम है। शिवराम ! बुर्जुआ वर्ग कल्पना कर सकता है कि इसमें कोई अलौकिकता व पुनीत भावना है। लेकिन तुम बुद्धिवादी हो, समत्व की घोषणा करने वाली पार्टी के लीडर हो। तुम्हारे ये विचार मूर्खता के अलावा कुछ नहीं हैं। प्रेम···मुहब्बत··· निरा स्वार्थ की भावना है। किन्हीं युगल जोड़ियों में यह भावना स्फुरित होकर सिमट जाती है। यह कितनी बेहूदगी की बात है। शिवराम, अपने मन और दृष्टि को व्यापक व विशाल बनाकर सबसे मुहब्बत न कर पाये ? दुनिया भर के श्रमजीवी तुम्हारी प्रेमिकाएँ हैं। प्रेम संकीर्ण नहीं, व्यापक है। अपना मन किसी एक के पीछे न लुटा देना, सिद्धान्त और कर्म के साथ अपने जीवन को तन्मय कर दो।"

शिवराम का दिमाग चकरा गया। कोई उत्तर न सूझा। उसके कंधे पर हाथ रखकर हलके से दबाते हुए वेदमूर्त्ति ने कहा—"शिवराम ! आखिर एक लड़की के प्रति होनेवाली भावना को इतना महत्त्व देने की क्या जरूरत है।"

शिवराम तड़पकर बोला—"मेरी भावना इतनी सस्ती नहीं।"

वेदमूर्त्ति ठहाका मारकर हंस पड़े—"तब तो शारदा के प्रति तुम्हारा प्रेम शारीरिक/लगाव नहीं, मानसिक है, है न ?"

शिवराम ने सिर हिलाया—

"ठीक है। तब तो तुम दोनों को विवाह नहीं करना है। तुम दोनों

का प्रेम मानसिक ही रहे।"

"जी···"शिवराम विह्वल हो उठा। पल-भर शरीर में कंपकंपी-सी दौड़ गयी।

"जो प्रेम मानसिक है उसके लिए विवाह की आवश्यकता नहीं है न? तुम शारदा को अपनी बहन समझ लेना। शिवराम! तुम्हारा प्रेम तो शारीरिक नहीं। वह प्रेम है—काम वासना नहीं।" वेदमूर्त्ति ने बड़ी शान्ति के साथ हर शब्द पर जोर दिया। उनके अधरों पर शरारती मुस्कान थी।

शिवराम पसीना-पसीना हो गया। मुँह से कोई शब्द न निकला। बड़ी दयनीय दृष्टि से उनकी ओर देखा।

वेदमूर्त्ति खिलखिलाकर हंस पड़े, फिर बोले—"प्रेम आलसियों की कल्पना का जादू है। शारीरिक भूख, काम लिप्सा का परिमार्जित सुन्दर शब्द है। शरीर की इस भूख को मिटाने एक और शरीर चाहिए। वह शरीर शारदा का हो या सीतम्मा का···क्या फर्क?"

"विश्वइतिहास में मुहब्बत का महत्वपूर्ण स्थान है—" शिवराम आहत स्वर में बड़बड़ाया।

"एक लड़की के लिए लाखों की जिन्दगी को जिन मूर्खों ने कुरबान किया, उन साम्राज्यवादी मूर्ख सम्राटों की कहानियों से अब हमारा कोई मतलब नहीं। वे नारी की मुहब्बत में पड़कर जो विमूढ बने थे, असल में वे पागल नहीं तो और क्या थे?"

"नैपोलियन भी जोस पाईन की यादों में डूबा था।"

"उसका मन इतना कमजोर रहा इसलिये वही उसके पतन का कारण बना। कहो! अब तुम्हें एक नारी की जरूरत है न?"

"यदि वह शारदा हो तो!"

"जरूरत को पूरा करने में शारदा और सीतम्मा में कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"

"मुझे इसकी जरूरत नहीं।"

"तब तो तुम सीतम्मा को छूना मत। लेकिन वही तुम्हारी पत्नी बनकर तुम्हारे साथ गृहस्थी चलाने गुण्टूर जायेगी। गोविन्द रेड्डी और नल्लदम्बी के साथ बनावटी गृहस्थी चलाने का उसे अनुभव है।"

"बनावटी गृहस्थी की जरूरत नहीं। मैं अकेले ही रह जाऊँगा।"

"नहीं, यह नहीं हो सकता। तुम अकेले रहोगे तो तुम पर दूसरों को सन्देह होगा। एक स्त्री के साथ गृहस्थ बने रहोगे तो और लोग तुम्हारी तरफ अधिक ध्यान न देंगे। अलावा अण्डरग्राऊण्ड रहते वक्त कामलिप्सा भभक उठे, वही भूख पार्टी के काम में बड़ी बाधा बन जाएगी। भूख मिटाने को शरीर चाहिए। वह न रहे तो अगल-बगल में रहने वालियों पर कटाक्ष की नौबत आ जाएगी। ऐसे मौके पार्टी की रहस्यपूर्ण कार्रवाईयों के लिये भयंकर खतरा बन जायेंगे। समझे शिवराम ! इसीलिए गुप्त जीवन बिताते वक्त कामरेड्स के साथ पार्टी एक स्त्री को जरूर भेज दिया करती है। पार्टी के नियम व विधानों में यह भी एक मुख्य विधि है।" वेदमूर्त्ति ने शिवराम की पीठ थपथपाते हुए कहा।

अण्डरग्राऊण्ड जीवन पर पार्टी के कानून-कायदों की, विधि नियम के पालन की मजबूरी पर विचार करते हुए शिवराम दिग्भ्रमित रह गया। लेकिन पार्टी के अन्दरूनी दल के संचालन, संगठन में इतनी सख्ती और कठोर नियमों का पालन अनिवार्य है यह महसूस होने पर उसका मन थोड़ा शान्त हुआ। फिर भी शारदा की संगति व साहचर्य न मिलने का दुःख उसके दिल को जलाता ही रहा।

जब वेदमूर्त्ति ने कहा—"हो सकता है तुम सयमी हो। तुम में वैराग्य है। फिर भी सब पर विश्वास नहीं कर सकते। अलावा यह कहना भी कठिन है कि इस बात पर एक व्यक्ति का मन व वैराग्य कब तक टिक सकता है? अन्डरग्राउन्ड रहने वालों की बुनियादी जरूरतों की पूर्ति के लिए साधनों को प्रदान करना पार्टी का कर्तव्य है। ऐसे साधनों में 'स्त्री' भी एक है।"

शिवराम ने अरुचि से मुंह मोड़ लिया।

"तुम्हें इच्छा हो या न हो, सीतम्मा तुम्हारे साथ रहेगी। उसके साथ तुम्हें गृहस्थी चलानी पड़ेगी। उसकी तुम्हें जरूरत है या नहीं—यह प्रश्न नहीं है। वह तुम्हारे साथ रहे—यही पार्टी की आज्ञा है।" वेदमूर्त्ति ने कठोर आवाज में कह दिया। शिवराम बिना उत्तर दिये सुदूर जाने की तैयारी में लग गया।

इन पुराने विचारों में अकुलाता हुआ शिवराम थोडी देर में सो गया

एकाएक छाती पर कुछ बोझ सा महसूस हुआ तो चौंककर देखा। सीतम्मा उसके गले में हाथ डाले उससे सटकर लेटी थी। उसकी गरम साँस उसके कपोलों को गरमाने लगी, उसके दोनों हाथ उसे कसते जा रहे थे। पलभर उस मादक स्पर्श में वह खो सा गया था। उस पलभर की कमजोरी का सीतम्मा ने पूरा फायदा उठाने की कोशिश की। यद्यपि शिवराम का मन उन क्षणों की मादकता में डोल गया था, फिर भी उसकी बुद्धि जागृत हो गयी। सर्पिणी-सी अपने बाहुपाश में उसे लपेटे पड़ी सितम्मा को उसने हठात् अपने से अलग करके दूर धकेल दिया। सीतम्मा मुरझायी-सी एक तरफ लुढ़क गयी। शिवराम उठकर छत पर आ गया। कमरे से निकलने से पहले उसने कहा—"आगे से तुम ऐसा बर्ताव करोगी तो पार्टी आफिस को रिपोर्ट कर दूंगा। सावधान रहना।"

शिवराम चटाई बिछाकर खुली छत पर आ बैठा। तभी मुर्गे के बांग देने की आवाज आयी।

उन्तीस

गुण्टूर में तालुका आफिस के पास शिवराम ने पान की एक दुकान खोली थी। उस छोटी-सी दुकान में पान, बीड़ी से लेकर दुनिया-भर की राजनीतिक खबरें मिलती थीं। शिवराम उस दुकान में बैठे-बैठे पार्टी के रहस्यपूर्ण कार्यों में लगा रहता। षड्यंत्रपूर्ण प्रचारकार्य को सफल बनाने के लिए मिल के मजदूरों से उसने अपना संपर्क बढ़ाया। श्रमिक वर्ग को क्रान्ति के लिए तैयार करना, रातों-रात दीवारों पर पोस्टर लगाना, मिल मजदूरों के लीडरों से गुप्त मंत्रणाएँ करके उन्हें विध्वंसक कार्यों के लिए उत्ते-

जित करना, इत्यादि कार्यों में शिवराम व्यस्त था। गुण्टूर के आस-पास के कसाव व कुलियों से मिलकर, उनके मन में जमीन के मालिकों के विरुद्ध भावना को भड़का कर, जमीन सम्बन्धी तकरारों को बढ़ा दिया था। इस तरह उस वातावरण को बगावत के लिए तैयार करने में उसकी प्रबन्ध शक्ति अद्‌भुत थी। विप्लव पार्टी कार्यालय से समय-समय पर जो ताकीद मिलती थीं, उन्हें अमल कराने में उसने बड़ी तीव्रता दिखायी।

पार्टी नेताओं का अण्डरग्राउण्ड ज़ीवन कठोर नियम व शमन-दमन से अनुशासित था। अन्डरग्राउन्ड माने एक अपरिचित शहर या गाँव में छद्म नाम जीवन बिताना है। छद्म नाम पर वे लोग किसी न किसी छद्म में बने रहेंगे, और गुप्त रूप से पार्टी के काम करते रहेंगे। उनके जिम्मे बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य सौंपे गये थे। मिल के मजदूर, किसान लीडरों से वे गुप्त रूप से सभाएँ करके क्रान्ति प्रचारों से उनमें नई उत्तेजना भर देते थे। क्रान्तिकारी संदेशों के परचों को बाँटना, पोस्टर लगाना, इत्यादि कार्यों को गुप्त रूप से वे संचालित करते थे। दूसरों को सन्देह न हो इसके लिए छद्मजीवियों के साथ ही पत्नी के रूप में एक स्त्री रहा करती थी। आज एक लीडर की पत्नी के रूप में यहाँ रहने वाली एकाएक किसी और स्थान पर किसी और की पत्नी बनने के जिए भेजी जाएगी। अण्डरग्राऊंड रहने वाले लीडरों तक संदेश पहुँचाने, चिट्ठी-पत्री ले जाने के लिए दो-तीन कामरेड नियत रहते थे। इनको क्यूरियर कहा जाता था। ये लोग चिट्ठी-पत्रियों को सीधे गुप्त लीडरों को नहीं दे पाते थे। चिट्ठी व संदेश ले जाने व देने फलाँ स्थान रहेगा। इसको 'कान्टेक्ट प्लेस' कहते हैं। यह किसी सार्वजनिक स्थान पर छोटी सी पान की दुकान, कारखाना, लुहार की छोटी दुकान आदि हो सकती है। क्यूरियर को अन्डरग्राऊन्ड रहने वाले लीडरों का नाम व स्थान का बिलकुल पता न रहता था। लिफाफे के ऊपर भी कोई और छद्म नाम रहता। कान्टैक्ट प्लेस में से इन चिट्ठियों व सन्देशों को जो पाते थे, वे ही ऐसे छद्म नामों से परिचित रहते थे। अन्डरग्राऊन्ड जीवन के साहसिक, रोमाँचकारी कार्यक्रमों ने शिवराम को काफी उत्साहित कर दिया था। क्रान्ति को फैलाने में पूरे जोश के साथ वह लगा था। केवल सीतम्मा का साहचर्य उसे अखरता था।

पिछली रात की नींद उचट जाने से सवेरे उसे थकावट सी लगी थी। उसका मन उदास था। वह कैसे सीतम्मा के उस गाढालिंगन से अपने को छुड़ा पाया, यह सोचकर उसे आश्चर्य के साथ घबराहट भी हो रही थी। कहीं सीतम्मा उस पर हावी न हो जाए, यह डर भारी बोझ-सा उसे सता रहा था। अण्डरग्राऊण्ड जीवन का खतरनाक खेल, उसके लिए कोई समस्या न थी। उसमें उसे बड़ा मजा आता था। केवल सीतम्मा का वह मदमाता यौवन, सुडौल शरीर और अनायास अपनी ओर उसे खींच देने वाला उसका चुलबुलापन ही उसके लिए भारी प्रश्न बने थे।

सवेरे दुकान पर आते ही उसने 'भारतमणी' को देखा। मुरली के संपादकीय लेख ने उसका ध्यान आकर्षित किया। कालीनाथ मिल पर घटे हत्याकाँड व अग्निकाँड से सम्बन्धित अभियुक्तों पर चलाये गए मुकद्दमों को सरकार द्वारा वापस लेने की आलोचना करके मुरली ने जो कुछ लिखा था उसे पढ़कर शिवराम मन ही मन खुश हुआ। पार्टी के लिए क्रान्ति फैलाने पर भी लूट-खसोट व हत्या से उसे सख्त घृणा थी। नल्लदम्बी का षड्यंत्र व उत्तेजना इसके पीछे काम करती होगी, इसमें उसे जरा-भी सन्देह न रहा। 'सरकार माने दस गुंडे' शीर्षक लेख और विदूषक के कार्टून ने भी उसे काफी प्रभावित कर दिया। खासकर संपादकीय लेख को उसने कई बार पढ़ा।

मुरली के इस साहस और प्रतिभाशील लेखनी पर वह विस्मय विमुग्ध हो उठा। बेसहारा छोड़ी उसकी माँ की मुरली बड़ी श्रद्धा व लगन से देखभाल कर रहा है, यह ख्याल आते ही शिवराम का हृदय कृतज्ञता से भर गया। नल्लदम्बी के छल प्रपंचों के कारण 'भारतमणी' पर न जाने क्या-क्या मुसीबतें घिर आयेंगी, यह सोचते ही उसकी बेकरारी बढ़ती गयी। शिवराम नहीं चाहता था कि 'भारतमणी' जैसी एक स्तरीय पत्रिका का गला घोंटा जाय। मुरली के विचार व सिद्धान्त विप्लव पार्टी के सिद्धान्तों के विरुद्ध होने पर भी उसकी देश भक्ति, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, जनजीवन को स्तरीय बनाने की आकाँक्षा इत्यादि विशिष्ट गुणों की शिवराम उपेक्षा न कर पाता था। खासकर रूस व चीन की यात्रा के बाद वहाँ की तानाशाही का आँखों देखा अनुभव प्राप्त करने के उपरान्त

जनतंत्रात्मकता के प्रति शिवराम की श्रद्धा बढ़ने लगी थी। मानव के राजनीतिक विकास व उन्नति में जनतंत्रात्मकता ही चरमोत्कर्ष है, ऐसा उसने गहराई से महसूस किया। इस पर उसने वेदमूर्त्ति के साथ चर्चाएँ कीं। लेकिन उनके उत्तर ने उसे लाजवाब कर दिया।

कलकत्ते में उस गुप्त समिति की मीटिंग के उपरान्त उस रात की घटना उसे याद आयी—

रात के तीन बजे पंजाब के नेता गुरनामसिंह तथा बंगाल के नेता नरेन्द्र बोस उससे मिलने आये थे। तीनों में रात भर बातें होती रहीं। नरेन्द्र बोस ने वेदमूर्त्ति की तानाशाही का विरोध किया। गुरनामसिंह ने कहा—"पार्टी के नियम व कानून में परिवर्तन लाना लाज़मी है। उन्होंने यह भी बताया कि किन-किन बातों में पार्टी को अपने दृष्टिकोण व सिद्धान्तों में परिवर्तन लाना है।"

शिवराम ने सशंकित होकर पूछा—"यदि लीडर न माने तो···"

"उनको मानना है। हमारे पक्ष में मेरे अलावा और छः प्रान्तों के लीडर हैं। उन सबका यही ख्याल है कि पार्टी में रूस व चीन का आधिपत्य न हो।" नरेन्द्रबोस ने कहा।

शिवराम ने कहा—"मुझे विश्वास नहीं होता कि नेता इस पर सहमत होंगे।"

नरेन्द्रबोस फट पड़े—"सहमत न हों, तो पार्टी में हमें अपना दल बना कर उनका विरोध करना है।"

गुरनामसिंह ने फरमाया—"शिवराम ! पार्टी का संचालन इस ढंग से चले तो जनता का विश्वास प्राप्त करना मुश्किल हो जाएगा। भारतीय संस्कृति व संस्कार मार्क्सवादी हिंसात्मक सिद्धान्तों के बिल्कुल विरुद्ध हैं। व्यक्तिगत स्वतंत्रता को जो सिद्धान्त नकारता है, वह इस मिट्टी में जड़ें न जमा पायेगा। इसलिए पार्टी में परिवर्तन अवश्य होना है।"

"यदि आप लोग आखिर तक अपनी बात पर अड़े रहें तो मैं आपका साथ दूंगा।" शिवराम ने दृढ़तापूर्वक कहा।

अगले दिन कलकत्ता से दिल्ली पहुंचते ही सबसे पहले वह वेदमूर्त्ति से मिला। उसे देखते ही वे मारे गुस्से के फुफकार उठे—"तुम पार्टी की उन्नति करने आये हो या चौपट करने ?"

शिवराम हक्का-बक्का रह गया। पलभर कुछ सोच न पाया। फिर संभलकर कहा—"मेरे मन में जो विचार आये···उन्हें···।"

"तुम्हारे मन में जो कुछ आता है उसे बताने के लिए ही मैंने तुम्हें मंच पर बुलाया था ? पार्टी में आने के बाद पार्टी का सिद्धान्त ही तुम्हारा तन, मन सब कुछ है। उससे विरक्त होने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं।" वेदमूर्त्ति ने सिंहनाद किया।

शिवराम थोड़ी दूर चुप खड़ा था। फिर साहस बटोरकर सिर उठाया और बोला—"आपको मुझे विदेश नहीं भेजना चाहिये था। वहां पर मुझे जो-जो निराशाजनक अनुभव मिले उन्हें दिल ही दिल में दफना देना मेरे लिए असंभव है। पार्टी की भलाई के नाते ही मैंने अपने विचारों को व्यक्त किया था।"···फिर आगे कहा—"उन देशों में पार्टी के कार्यकर्ताओं को भी आजादी नहीं है। जब कभी माओ के फोटो का सामना पड़ जाए तो आतंकित होकर झुकते हैं, लेकिन उनके दिलों में माओ के प्रति न श्रद्धा है, न आदर। सब कुछ कोरा शिष्टाचार है और कुछ नहीं। रूस में स्टालिन की शिला को भी हटा दिया गया है। माओ की भी यही हालत हो सकती है। भय और आतंक के बल पर कब तक शासन की बागडोर थाम सकते हैं !"

वेदमूर्त्ति ने शिवराम की बातें ध्यान से सुनीं। उनके चेहरे पर थोड़ी नरमी आ गयी थी। शायद उन्होंने महसूस किया होगा कि पार्टी के सिद्धान्तों को लेकर शिवराम बेहद उलझ गया है। आश्वासनपूर्ण शब्दों के द्वारा ही उसका दिल बदल सकते हैं। वे उसे देखकर मुस्कुराये।

"शिवराम ! हर बात को ध्यान से देखने की तुम्हारी प्रतिभा पर मैं मुग्ध हूँ। लेकिन जो कुछ तुम देखते हो उस पर तीव्रता से चिन्तन करने से चूक जाते हो। सिद्धान्त, उसकी योजनाएँ तथा कार्य प्रणाली को पार्टी के सिद्धान्त व तौर तरीकों से तुलना करके तुम्हें देखना है। तभी तुम्हारी सारी उलझन सुलझेगी। मार्क्सवादी लीडर अब तक जिस पथ का अनुकरण करते आये हैं उसे तुम गलत मानते हो ? तुम्हारी दृष्टि में रूस की वह महान् क्रान्ति अर्थहीन है ? क्रान्ति की उपलब्धियों का तुम्हारी दृष्टि में कोई मूल्य नहीं ? आज दुनिया के राजनीतिक रंगमंच पर चीन का इतना

महत्त्वपूर्ण स्थान लेना तुम्हारे विचार में कोई महत्त्व नहीं रखता?"

"रूसी क्रान्ति की उपलब्धियों से मुझे इनकार नहीं।" शिवराम ने कहा, "मगर क्रान्ति की सफलता के लिए जो हिंसा व नृशंसतापूर्ण अत्याचार हुए उन्हें कभी भूल सकेंगे? स्टालिन के आतंकवाद व उत्पीडन पर आज रूस में खुल्लमखुल्ला विवेचन हो रहा है। स्टालिन की भयानक शक्तिमता के शासन में पार्टी के कितने लीडरों और जनरलों की बात लें। सामूहिक खेती की योजना को अमल कराने में दस लाख रूसियों की दो सालों के अन्दर बलि देनी पड़ी थी। आप चाहते हैं हमारे देश में भी इसी नृशंसता से अपने सिद्धान्तों को संस्थापित कर नरबलि चढ़ायें?"

शिवराम के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व को उसकी वेदना भरी आवाज समझकर वेदमूर्ति ने शान्त स्वर में कहा—"यह एक संग्राम है, युद्धक्षेत्र में लड़ते वक्त जो कुछ घटता है उसकी छानबीन करना अर्थहीन है।"

"आज रूसी लोग इलजाम लगाते हैं कि स्टालिन बड़ा अत्याचारी था। वे भारी गलती कर बैठे हैं। कल हम पर हमारे देश के लोग ऐसा आरोप न लगायेंगे?"

यह सुनते ही वेदमूर्त्ति का चेहरा तमतमा उठा। अपने को बड़ी मुश्किल से संयत करके बोले—"एक आदर्शवादी जो अपनी मंजिल की ओर अग्रसर है उसे अन्य लोगों की आलोचना की परवाह करने की जरूरत नहीं। सिर पर जो नेता के स्थान पर है, उसे इन बातों में माथा-पच्ची करने की कोई जरूरत नहीं। नेता इन सब बातों से परे है। शिवराम! हमारे लिए हमें अपनी मंजिल ही मुख्य है। साध्य ही हमारा ध्येय है। साधन व मार्ग की हमें चिन्ता करने की जरूरत नहीं। शिवराम, जहाँ तक हमारा सवाल है, इस देश में हमारा संघर्ष अब तक अपने ध्येय तक नहीं पहुँचा है। अब हमें युद्ध क्षेत्र के मोर्चे पर ध्यान देना है, बस। और कुछ नहीं।"

शिवराम अकचकाकर रह रहा। फिर पूछा—मार्क्सवाद क्या लोकतंत्रात्मक तरीकों पर अमल नहीं कर सकता?···लोकतंत्रात्मक सोशलिज्म संभव नहीं है?"

वेदमूर्त्ति खिलखिलाकर हँस पड़े, फिर बोले—"लोकतंत्रात्मक

सोशलिज़्म ?…शिवराम ! यह कोरा शब्दजाल है। कल्पनावादियों की आलंकारिक शब्दावली है। राजनीतिक स्टन्ट है। 'बाँझ माँ' कहना कितना बेहूदा लगता है ? लोकतंत्रात्मक सोशलिज़्म वैसी ही अनहोनी बात है। लोकतंत्र, और सोशलिज़्म असल में दो ध्रुव हैं। दो ध्रुव कभी मिल सकते हैं ? लोकतंत्र बुर्जुआ वर्ग का अड्डा है, सोशलिज़्म मार्क्सवादियों का। आज सारा संसार पूरी ताकत लगाये वर्ग संघर्ष में मोर्चा-बन्दी कर रहा हैं। ऐसी हालत में तुम्हारे ये विचार दिल्लगी की बात नहीं तो और क्या हैं ? शिवराम ! लोकतंत्र की सोशलिज़्म के रूप में कायापलट करना, तेनाली रामन का गधे को घोड़े में बदलने जैसा है।"

"लोकतंत्र में जनता अपनी आवाज उठा सकती है।" शिवराम ने हार न मानी।

"नानसेन्स ! जनता ? वह तो बकरियों का बेड़ा है। एक आदमी व्यक्तिगत रूप से बुद्धिमान हो सकता है, मगर बेड़े में सोचने, समझने की शक्ति नहीं। जनता की भावनाओं को उत्तेजित करने की कला में जो दल समर्थ है, उसी के हाथों में शासन सत्ता रहेगी। इसके अलावा उस शासन में जनता की आवाज की गुँजाईश कहाँ ?"

"लेकिन एक दल, आम जनता की आंखों में हमेशा के लिए धूल झोंककर वोट नहीं पा सकता।"

"शासन की बागडोर थामने के लिए जितने लोगों की अर्थात् बहुमत की जरूरत पड़ेगी, उतने लोगों को मतिभ्रष्ट करके एक विशाल देश पर शासन करना आसान बात है। जिसको बहुमत प्राप्त है, वही शासन करता है अल्पमत की पूछ कहाँ ? फिर जिस देश में अनेक दल व पार्टी होती है वहाँ यह काम और भी आसान बनता है। शिवराम ! जहाँ पर मतदाता हैं वहाँ पर दस दल रहें। एक दल को अपने बहुमत के लिए केवल ग्यारह व्यक्तियों को मूर्ख बनाना काफी है। अधिकार उसके हाथ में आ जाएगा। बाकी निन्यानवें अकलमन्दों की परवाह करने की कोई जरूरत नहीं। लोकतन्त्र से बढ़कर डिक्टेटरशिप एक दृष्टि से सुगमता पूर्ण शासन करने का मार्ग है। डिक्टेटरशिप में किसी एक का बुद्धिमान होना काफी है।"

"अगर समस्त लोगों को शिक्षित कर दें ?"

"शिवराम ! तुम्हारी दलीलें कहीं साध्य हैं ? जिन नेताओं ने देश को अंग्रेजों की मुट्ठी से आजाद करने का आन्दोलन चलाया, वे लोग भी आम जनता को शिक्षित बनाने की बात एकदम भूल गये। परतंत्र देश को मुक्ति दिलायी, लेकिन अशिक्षा से नहीं । बहुमत के हाथों में अधिकार का बल था, बहुमत की शक्ति से परिचित थे, इसलिए बहुमत को प्राप्त करने में ही उनका पूरा ध्यान लगा था। बहुमत असल में थोड़े से नेताओं के इशारों हर चलती बकरियों का बेड़ा है। जनता भी शासन व सत्ता के अधिकारी बनने वालों से बुद्धि, प्रतिभा, नेकनीयती आदि की अपेक्षा नहीं करती। जिस में वाक्पटुता है, वाक्चातुर्य है, उसी के पीछे तालियाँ बजाती है। शिवराम ! जानते हो, कभी मुझे लोकतंत्र पर अटूट विश्वास था। लेकिन मुझे तो इसका आभास बहुत पहले हो चुका था कि लोकतंत्र मुर्ख-विमूढ़ जनता पर मूर्खों का मूर्खता पूर्ण शासन के अलावा और कुछ नहीं।" वेदमूर्त्ति की आवाज में घृणा व गुस्सा था।

"आम जनता अपनी इच्छा पर अपना शासन संस्थापित कर ले तो क्या हर्ज है ?"

"शिवराम ! लोकतंत्र में सचमुच जनता का शासन चलता है ? वह तो बहुमत प्राप्त इनेगिने नेताओं के हाथों में है। जनता के विचार व चिन्तन को वहाँ क्या स्थान है ? उनका यह लोकतंत्र वास्तव में एक 'हम्बक' है, 'धोखा-धड़ी' है। इतना भी अब तक लोग समझ नहीं पा रहे हैं। सचमुच जनता का शासन होता तो आज श्रमजीवी व किसान ही मंत्री बने होते। बहुमत के नेता नहीं।"

"जनता को मतदान देने का अधिकार है न ?"

"हाँ-हाँ···मतदान···हो···हो···हो···" वेदमूर्त्ति जोर से हँस पड़े। इतना हँसे कि उनकी आँखों में पानी आ गया। अपनी कुरसी से उठकर कमरे में चहलकदमी करने लगे। फिर शिवराम की तरफ घूमकर बोले—"मतदान देने का अधिकार होने से क्या लाभ ? भारतीय जनता के लिए लोकतंत्र एक बड़ा तमाशा है। झूठ-फरेब, हो-हल्ला, चीख पुकारों से भरे इन चुनावों में सत्य का दम घुट जाता है, मतदान बेकार, निष्फल हो जाता है। शिवराम ! हमारे देश में अशिक्षित लोगों की संख्या अधिक है। सोच

समझकर चिन्तन करनेवालों की संख्या बहुत कम है। इन लोगों से जो चुने जाते हैं, वे ही देश पर शासन करते हैं। ऐसा कोई नियम नहीं है कि जो हुकूमत करते हैं, वे सुशिक्षित हों, विचारशील व अनुभवी हों। हर राजनीतिक दल चुनाव में खड़े होने के लिए अपने दल के लोगों में से प्रतिनिधियों को चुनता है। इस हालत में दल में जिसका दबदबा है, वही योग्य है। अलावा इसके, अक्लमन्दी, प्रतिभा, कार्य कुशलता की ज़रूरत नहीं। इस रीति से जो-जो प्रतिनिधि चुनावों में जीतते हैं, उनमें से एक को अपना नेता बनाने की मजबूरी है। अर्थात् बहुमत के नाम पर शक्तिशाली अल्पमत के हाथ में अधिकार आ जाता है। असल में वह इकाई है। तुम्हीं सोचो शिवराम ! ऐसी विषम परिस्थिति में जनता को अपने मनचाहे या लोकप्रिय योग्य व्यक्ति को अपने नेता के रूप में चुनने का मौका कहाँ? थोड़ा रुककर लंबी साँस-लेते हुए उन्होंने कहा—"···इन चुनावों में मतदान के बल पर अपनी विजय का झंडा फहराते हुए जो-जो असेम्बली, लोकसभा, या राज्य सभा के माननीय सदस्य बनकर जाते हैं वे ज्यादातर ज्ञानशून्य रहते हैं। परराष्ट्रीय व्यवहार, विदेशी राजनीति, अर्थशास्त्र तथा देश की आर्थिक समस्याएँ, औद्योगिक विकास व उन्नति, देश की सुरक्षा इत्यादि महत्त्वपूर्ण मामलों पर उनका ज्ञान काला अक्षर भैंस बराबर है। पार्टी के नेता के इंगित पर नाचते रहेंगे, हाथ ऊँचा करते रहेंगे। देश की मौजूदा हालत से उनका कोई मतलब नहीं। शिवराम··· आज भारत में जो जनतंत्रात्मक-शासन चल रहा है, उसकी असली दशा यही है। एक मामूली चपरासी की नियुक्ति के लिए फलानी योग्यता व शिक्षा की आशा करने का नियम लागू है। देश के शासन की बागडोर अपने हाथ में लेने वालों में किसी योग्यता की अपेक्षा नहीं करते। हमारा जनतंत्रात्मक शासन विधान चाहे वह मूर्ख, नालायक व अशिक्षित भी क्यों न होवे, उसे स्वीकार करता है। शिवराम ! बताओ ! एक विशाल देश और जनता पर ऐसा ही शासन नियामक बना रहे? एक महत्त्वपूर्ण विराट वर्ग-संघर्ष के आन्दोलन के भागीदार बने तुम जैसे व्यक्ति को ऐसे शासन का मोह है?" वेदमूर्त्ति ने शिवराम के कंधे पर हाथ रखते हुए शान्त स्वर में पूछा।

शिवराम सन्न रह गया। विश्व के अधिकांश देश जिस शासन प्रणाली पर संचालित हो रहे हैं, उसे वेदमूर्त्ति ने कोरी मूर्खता व अर्थहीन प्रणाली सिद्ध कर दिया है। यह देखकर वह चकित सा रह गया। उसकी समझ में न आया कि इसका क्या जवाब दें ?

"दस मूर्खों' के लोकतंत्रात्मक शासन को स्वीकार करने के बदले एक बुद्धिमान प्रतापी की डिक्टेटरशिप के सम्मुख झुकना बेहतर है। हमारे देश के जनतंत्रात्मक प्रशासन में रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, स्वार्थपरता का नग्न ताण्डव हो रहा है। शिवराम! इस देश की जनता पर लोकतंत्र जबरदस्ती से लादा गया है। जनतंत्रात्मकता की योग्यता व परिपक्वता को हमारे देश की जनता ने अब तक प्राप्त नहीं किया है। इस देश में प्रचलित सामाजिक कुरीतियाँ, वर्ण-भेद, जाति-भेद इस बुर्जुआ वर्ग के लोकतंत्री शासन द्वारा कभी दूर नहीं होंगे।"

"चुनाव के नियमों और संविधान में परिवर्त्तन करा दें तो जनतंत्र की कमियों को दूर कर सकते हैं न ?"

"शिवराम ! तुम्हारी दलीलें सही नहीं हैं। मानव वर्ग के विकास व उन्नति के लिए चुनाव सही रास्ता नहीं है। खासकर आज की विकट परिस्थिति में भारतीय जनता के लिए जनतंत्र शासन बिलकुल अनुपयुक्त है। शिवराम ! बन्दूक की नोक पर जो अधिकार निकलता है, वही शक्तिशाली है। बुर्जुआओं की चुनाव पद्धति द्वारा जो अधिकार प्राप्त होता है, वह पौरुषहीन है। शिवराम ! विद्रोह व क्रान्ति ने विश्व इतिहास को महत्त्वपूर्ण मोड़ दिया है। इस देश में इस्लाम का प्रवेश, मुगलों का शासन, अंग्रेजों का आधिपत्य चुनाव द्वारा नहीं हुआ, अस्त्र शस्त्रों के ज़ोर पर, सेना की ताकत पर हुआ था। ज़ोर-ज़बरदस्ती के द्वारा ही सत्ता की जड़ें जम सकती हैं। जनता को धोखा देना आसान है। आजादी नहीं, अजादी की छाया से, उसकी झाँकी से वे अभिभूत हो जायँगे, मस्त हो जायेंगे लेकिन एकाध व्यक्ति इस धोखे में न आयेंगे। ऐसे बुद्धिमानों का काम तमाम कर देना है। यही एकाधिकार डिक्टेटरशिप का मूल तत्त्व है। इसे अच्छी तरह समझ लेना।" वेदमूर्त्ति ने अधिकारपूर्वक कहा।

शिवराम उन्हें निर्निमेश देखता रहा। वेदमूर्त्ति के जोशीले शब्द प्रवाह

में वह अपना वश खो बैठा था। कुछ सोंचने समझने की शक्ति उसमें शेष न रही। लेकिन अकेले बैठे चिन्तन करते वक्त तानाशाही की भयंकरता ने उसके सम्मुख प्रलय नृत्य किया। अन्ना सोनिया का उदास चेहरा बार-बार सामने आकर उसे बेचैन कर रहा था। माओ के चित्र के सम्मुख सिर झुकानेवाले उन चीनी कामरेड्स की संत्रस्त दृष्टि उसे सताती रही।

सोचा—मुरली ने एक बार कहा था, "मनुष्य को सोचने, चिन्तन करने, अपने चिन्तन को प्रकट करने, उसे कार्यान्वित करने की आजादी चाहिए।" इन शब्दों में कितनी सच्चाई है।

उसने कहा था—"जनतंत्रात्मक देश में जेलखाना एक निर्दिष्ट स्थान है, मगर तानाशाही के शासन में पूरा देश स्वयं एक जेलखाना है।" ओह ! यह कितना सच है ! शिवराम ने उन तानाशाही देशों में अपनी आँखों से इस भयंकरता को देखा है। अपनी आज़ादी खोकर केवल पेट भरने में लोगों को आत्मतृप्ति मिल जाएगी क्या ?

'भारतमणी' को हाथ में लिए इन्ही विचारशृंखलाओं में डूबा शिवराम साईरन की आवाज पाते ही चौंक पड़ा। दोपहर बारह बजे उसे किसान संघ के नेता से मिलना था। यह याद आते ही वह दुकान बन्द करके निकल गया।

शिवराम गुण्टूर में लगभग डेढ़ साल रहा। वेदमूर्त्ति के हर आदेश को सर आँखों पर मानकर पूरा करता रहा। गुण्टूर प्रान्त के किसान व मजदूरों को संगठित करके किसी भी क्षण विद्रोह व संघर्ष में लगने के लिये तैयार रखा था। उसकी संगठन शक्ति अद्भुत थी। वह भलि-भाँति जानता था कि वेदमूर्त्ति देश के अन्दर गृह-कलह व विद्रोह फैलाने की तैयारियों में लगे हैं। लेकिन विद्रोह का विस्फोट कब कहाँ पर होगा, यह कोई नहीं जानता था। वह गुप्त रहस्य था।

एक दिन रात को शिवराम के पास गजकाएक का बड़ा बंडल आया। बंडल के ऊपर लिखित साँकेतिक चिह्नों द्वारा मालूम हुआ कि वह पार्टी के प्रधान कार्यालय से भेजा गया है। गठरी को खोलते ही ऊपरी हिस्से पर सिगरेट के कुछ विज्ञापन पड़े थे। उसके नीचे पार्टी के परचे व पोस्टर सुरक्षित रूप से रखे गये थे। शिवराम हड़बड़ाकर उनको पढ़ने लगा।

वे पूरे के पूरे चीन के प्रचार के पर्चे थे। पोस्टरों में माओ के विचार व सूक्तियाँ छपी थीं।

'चुनाव सही रास्ता नहीं। किसानों का विद्रोह ही एकमात्र रास्ता है।'

'अधिकार बन्दूक की नोक से निकलता है।'

'आजाद सेना आ रही है। महान् चिन्तक व नेता माओ-त्से-तुंग आपके रक्षक हैं। आपको डरने की जरूरत नहीं।'

'उनके विचारों का प्रसार व प्रचार कीजिए।'

'वर्ग-संघर्ष ही आजादी का मार्ग है। विद्रोह करती विप्लव सेना के कंधे से कंधा भिड़ाने के लिए तैयार रहिए।'

इस प्रकार बहुत से परचे थे। शिवराम उन्हें देखकर भौंचक्का रह गया। गुण्टूर प्रान्त में गत डेढ़ साल से उसने कठिन परिश्रम के बल पर जो विद्रोह पूर्ण परिस्थिति का संगठन खड़ा किया था, वह चीनी सेना के इस मिट्टी में पदार्पण करने की पूर्व तैयारियाँ हैं, यह जानकर वह काँप उठा। यह सारी भूमिका चीनियों के आक्रमण के लिए है। शिवराम जैसे सैंकड़ों कामरेड्स विभिन्न क्षेत्रों में अण्डरग्राउण्ड हैं। उन्होंने भी जगह-जगह पर श्रमजीवियों के विद्रोही दलों का संगठन किया होगा। नेता वेदमूर्त्ति ने विद्रोह के विस्फोट की जो योजना बनायी है, उसका संचालन चीनियों के हाथों में है क्या ?

शिवराम वेदना से व्यथित हो उठा।

घोर निराशा ने उसे घेर लिया। दो महीने के बाद मद्रास में गुप्त रूप से पार्टी की कार्यकमेटी की मीटिंग होने वाली थी। शिवराम ने उसमें अपने खंडनात्मक विचारों को प्रकट करने का निश्चय किया।

उन पर्चों व पोस्टरों में उसने आग लगा दी। सीतम्मा उसकी इस करतूत के कारण को समझने में असमर्थ-सी होकर जलते हुए पर्चों को उत्सुक नयनों से देखती खड़ी थी।

तीस

उस दिन रात को बड़ी देर तक मुरली स्वामीनाथन् की प्रतीक्षा में बैठा था। भारत की सीमा पर चीनी सेना के आक्रमण पर सनसनीदार खबरें टेलिप्रिन्टर में आ रही थीं। चिन्ताकुल बैठा मुरली घड़ी में दस बजने पर चौंक पड़ा, अब तक स्वामीनाथन् का लौट कर न आना उसे विस्मय में डाल रहा था। उस दिन शाम को शारदा उससे मिलने कार्यालय में आयी थी। उसके निकलते वक्त आठ बज गये थे। रात में उसे अकेले भेजने का मन न किया तो मुरली ने स्वामीनाथन् को उसे घर तक पहुँचाने के लिए भेजा। स्वामीनाथन् मुरली की कार लेकर गया था, लेकिन अब तक न लौटा था। मुरली ने शारदा को फ़ोन किया।

शारदा ने कहा, "वे मुझे घर पहुँचाकर उलटे पाँव लौट गये—कहीं गप्पें लड़ाते होंगे।"

"हाँ—हाँ वह ज़रा बातूनी है।" मुरली ने हामी भरी।

"ज़रा नहीं बहुत।"

"क्यों? तुम से बक-झक की?"

"कार में आते वक्त उसने कहा था—दो ध्रुवों का मिलना अकेले यहीं पर घटा है। और वे दो ध्रुव हम दोनों हैं।"

"फिर?"

"फिर कहा—अकेले रहने से आप इतने जिद्दी बने रहते हैं। अगर कोई साथिन मिल जाए तो आप राह पर आ जायेंगे।"

"ओहो! उसने मेरे लिए एक साथिन भी ढूंढ ली?"

" हाँ···हाँ···वह साथिन और कोई नहीं मैं ही हूँ। उसका कहना है कि अकेले मैं ही आप पर रोक-टोक लगाकर राह पर ला सकती हूँ।" यह

कहकर शारदा के खिलखिलाने की आवाज फ़ोन पर सुनाई पड़ी।

मुरली मौन रहा।

शारदा ने उस तरफ से कहा—"देखिए न, आप के संवाददाता कितने समर्थ हैं ?" वह हंस पड़ी।

मुरली ने लम्बी सांस ली। फिर पूछा—"तुमने क्या कहा था ?"

"पूछा था, संवाददाता के काम के साथ-साथ यह दलाली भी कब से चलती है ? इसके बाद वह गुमसुम हो गया। हाँ···कहिए न ! आप अपने लिए एक साथिन कब ढूंढने वाले हैं ?"

"ढूंढ ली है।"

"सच ? कब ? वह कौन है ? मुझ से कहा तक नहीं।"

"वह तो 'भारतमणी' है !"

दूसरी तरफ शारदा के हंसने की आवाज सुनाई पड़ी। लम्बी आह के साथ मुरली ने फोन रख दिया।

उस दिन शाम को शिवराम का नाम लेते ही शारदा को अधीर और विह्वल होते उसने देख लिया था। उसकी भावनाएँ उससे छिपी नहीं थीं। दो दिन पहले प्रोफेसर से बातें करते वक्त उन्होंने जो कहा था वह अब उसे फिर याद आया।

"न जाने वह शिवराम कहाँ पड़ा है ? जल्दी लौट आए तो शारदा को उसके हाथ में सौंपकर मैं निश्चिंन्त हो जाऊँगा।" प्रोफेसर ने हलकी झल्लाहट के साथ कहा।

"क्यों ? शारदा आप के लिए बोझ बन गयी है क्या ?"

"नो-नो···वह तो उसी की याद में घुलती चली जा रही है। पार्टी के काम से अक्सर बाहर चली जाती है। लगता है उसे इस घर में रहना पसन्द नहीं है। शायद उसे मुझ से नफ़रत सी हो गयी है।" कमलस्वामी ने दर्द भरे स्वर में कहा।

"शारदा कभी आपसे नफरत कर सकती है ?"

"स्त्री का दिल कौन जाने ? शायद मेरे आचरण पर उसे घृणा आयी होगी। उसका इस तरह निरुत्साहित रहना मेरे लिए असहनीय है। मैं उसका पिता हूँ, इस ख्याल से कोरा शिष्टाचार निभा रही है। अलावा इसके मेरे

प्रति उसे न स्नेह है न ममता। मुरली ! लगता है एक पिता अपनी लड़की से इससे ज्यादा आशा नहीं कर सकता।" दिल की वेदना उनके शब्दों में प्रतिध्वनित हो रही थी।

"शायद आप किंग लियर-सी कल्पना करते हैं।"

"लड़कियों का हर पिता किंग लियर ही है।"

मुरली ने टोका—"ऐसे पिता भी होंगे जिनकी कार्डीलिया जैसी बेटी हो।"

"विरले ही होंगे। यदि ऐसी बेटी हो भी तो भी कार्डीलिया को जैसा पिता मिला, वैसा दामाद मिलता है ?"

"शिवराम एक जेन्टिलमैन है।"

प्रोफेसर कुछ न बोले। चुरुट का धुआँ उड़ाते रहे। कुछ मिनटों के बाद मुरली की तरफ घूमकर पूछा, "कब तक यों अकेले रहने का विचार है ?"

प्रश्न अप्रत्याशित था। मुरली ने संभलकर कहा, "मैं अकेला कहाँ हूँ ? 'भारतमणी' मेरे साथ है"—मुरली के अधरों पर नीरस मुस्कान झलक पड़ी। मुरली का दिल भारी था। उसने शारदा को तहे दिल से प्रेम किया था। प्रणय में मिले भारी धोखे से उसे जो धक्का लगा था, उसकी करारी चोट से वह संभल गया था। फिर भी जब कभी उसकी आहत भावनाओं पर चोट लगती वह तिलमिला उठता था। मगर उस दर्द को लम्बी आह भर कर प्राणों में समा लेने की आदत सी हो गयी थी।

अब भी वह शारदा की यादों में खोया सा बैठा था। उसकी खुली आँखों में निराशा छायी थी। टेलीफोन की घंटी बज उठी तो वह होश में आया। अस्पताल से एक डाक्टर ने फोन किया था। स्वामीनाथन् का रास्ता काटकर कोई उसे मार पीटकर अधमरा छोड़ गया। मोटर की भी बड़ी बुरी हालत हो गयी है। स्वामीनाथन् के बाएँ हाथ की हड्डी टूट गयी है। सिर पर सख्त चोट लगी है, लेकिन जान का कोई खतरा नहीं।"

मुरली दस मिनट में अस्पताल पहुँच गया। एक अलग कमरे में स्वामीनाथन् लेटा था। अभी-अभी उसे होश आया था। हाथ और सिर

पर पट्टी बंधी थी। मुरली को देखते ही उसका चेहरा खिल उठा। मुरली उसके पास जा बैठा।

"घबराओ नहीं। डाक्टर ने कहा है कि कोई खतरा नहीं है।"

"सर मुझे अपनी चिन्ता नहीं है—केवल आपके बारे में···" स्वामी-नाथन् का गला भर आया।

"तुम क्या कहते हो?"

"यह चोट मुझ पर नहीं, आप पर लगने वाली थी। मगर अदला-बदली हो गयी।"

मुरली चौंक पड़ा—"क्यों? क्या हुआ?"

"शारदा जी को बंगले पर छोड़कर लौट रहा था। रास्ते में चार-पाँच व्यक्तियों ने रास्ता रोक लिया। वे लोग मोटर साईकिलों पर आये थे। गली के मोड़ पर मैंने कार रोक दी। वे चारों व्यक्ति मुझ पर टूट पड़े। हर एक के हाथ में लाठी थी। एक ने कार का दरवाजा खोलकर मुझे बाहर घसीट लिया। सब मिलकर मुझ पर वार करने लगे। बाएँ हाथ से मैंने उन्हें रोकने की कोशिश की। लेकिन सिर पर चोट लगते ही मैं बेहोश हो गया। उन्होंने सोचा होगा आसामी ने दम तोड़ दिया है···"

"मोटर साईकिलों का नम्बर जानते हो?"

"नहीं। गली में उतनी रोशनी नहीं थी। उन व्यक्तियों को पहचानना भी मेरे लिए मुश्किल है। किसी ने कहा—"आगे से साला चन्द्रमोहन की तरह दुम दबाकर रह जाएगा···अर्धमूर्छित दशा में केवल इतना ही सुन पाया।"

"उस दिन उस लाख रुपये के चैक को ले लेने के लिए तुमने मुझे विवश किया होता तो तुम पर यह विपत्ति न पड़ती···।" मुरली ने गद्गद् स्वर में कहा। जो अपने पर गुजरनी थी उस विपत्ति को स्वामीनाथन् ने झेल लिया है, यह ख्याल आते ही मुरली की आँखें भर आयीं।

"सर! वह सिनेमावाला आपका कत्ल करने पर तुल गया है। आपको सावधान रहना है। अब किस तरह आये···?" स्वामीनाथन् ने घबराये स्वर में पूछा।

"तुम्हारा स्कूटर था न ? उसीसे आया।"

"अब अकेले मत जाना। वह सिनेमावाला सिनेमा में ही नायक है। निजी जीवन में खलनायक है, विलेन है।"

मुरली को 'भारतमणी' कार्यालय में लौटते वक्त आधी रात गुजर गयी थी। सह-संपादक अपने काम में व्यस्त थे। मुरली ने जब उनको स्वामीनाथन् पर गुजरी विपत्ति की खबर सुनाई तो वे लोग दिग्भ्रमित रह गये। सवेरे के एडीशन में इस खबर को विस्तार से देने का आदेश देकर मुरली घर लौटा। वह बुरी तरह थक गया था। तन और मन में असह्य वेदना हो रही थी। बिस्तर पर निढाल हो गया। मगर नींद न आयी। वेदना उसके दिल को भारी बोझ सी दबा रही थी। स्वामीनाथन् के प्रति उसके दिल में विशेष ममता व स्नेह था। अपने कारण उसे इतना दुःख झेलना पड़ा, यह उसे बुरी तरह कचोटता रहा। स्वामीनाथन् पर ढेर-सी सहानुभूति उमड़ आयी। मुरली जानता था कि 'भारतमणी' में विश्वास और एतबार के साथ काम करने वाला केवल वही एक है।

'भारतमणी' पर विपत्तियाँ घिरती आ रही हैं, इस विचार से उसका मन अधीर हो उठा। एक वक्त 'स्वर प्रभाती' धन का लालच देकर 'भारतमणी' के सह-संपादको को अपनी तरफ खींच रहा था। मुरली इस बात पर चिन्तित न था। लेकिन एक अभिनेता के धृष्टतापूर्ण व्यवहार ने उसे भारी आघात पहुंचा दिया। 'भारतमणी' की बिक्री को बढ़ाने के लिए विविध प्रबन्धों में वह पूरे तन मन से लगा था, ऐसे वक्त विभिन्न दिशाओं से उस पर होती करारी चोटों से वह आक्रान्त हो उठा। उसका विश्वास टूटने लगा। अतीव निराशा में उसमें सोचने की शक्ति भी न रही। बिस्तर पर पड़ा बड़ी देर तक अंधकार को घूरता रहा। फिर सो गया।

मुरली नींद से जागा तब दस बज गये थे। चिन्ताकुल चित्त की सारी थकावट शरीर पर उतरी थी कि उसे लम्बी नींद की आवश्यकता हो आयी। एक हफ्ता बीत गया। उस दिन सवेरे कार्यालय में जाते ही देखा—तीन उप-संपादक, तीन प्रूफ रीडर्स और टाईपिस्ट प्रेमा के इस्तीफे उसकी प्रतीक्षा में मेज पर पड़े थे। वे काम पर न आये थे। पर सूखे, पंछी उड़ गये···मुरली भचकचाकर रह गया। आगे क्या करें कुछ समझ में न आया। सारे शरीर में

कंपकंपी-सी फैल गयी। वह चकराया। कार्यालय में पूरी खामोशी फैली थी। मुरली कुर्सी पर धड़ाम से बैठ गया। ऐसी शून्यता ने उसे बाहों में भर लिया कि सोच समझ की शक्ति व ताकत उसमें शेष न रही। बड़ी देर तक वैसा ही अचल बैठा रहा। सर के ऊपर बिजली का पंखा तेज रफ्तार में था, तो भी मुरली का शरीर पसीने से तर हो गया।

थोड़ी देर के बाद वह संभलकर उठा और उस कमरे में आया जहाँ टेलीप्रिन्टर था। वह यंत्र अब खामोश खड़ा था। फिर सह-संपादकों के कमरे में गया। वहाँ भी सन्नाटा छाया था। अनजान, अनबूझ भय उसकी नस-नस में फैलता उसके पेट में खलबली मचाने लगा। कमरे के द्वार पर आँखें मूंदे क्षण-भर खड़ा रहा। भ्रम हुआ कि चारों तरफ से भयंकर शून्यता ने उसे आ घेरा है। धीमी गति से वह अपने कमरे में लौट आया। बरामदे पर खड़े चपरासी से चाय लाने का आदेश देकर कुर्सी में आ बैठा।

कल 'भारतमणी' का प्रकाशन कैसे होगा? एक लोकप्रिय स्तरीय पत्रिका को रोक दे? झल्लाकर सोचा—इन लोगों को ऐसी स्तरीय, उमदे विचारों की पत्रिका की, क्या जरूरत है? सिनेमा के अभिनेता, अभिनेत्रियाँ व 'स्वर प्रभाती' ही काफी है···वही इनका पथ दर्शन करें···।"

अकथनीय वेदना से मन चिल्ला उठा—"उठो! 'भारतमणी' कार्यालय पर ताला लगाकर चले जाओ।" मुरली तड़पकर कुर्सी से उठा। तभी बगल के कमरे से टेलिप्रिन्टर की खटखटाहट सुनाई पड़ी। मुरली चौंक पड़ा। सोचा—यह नहीं हो सकता···यह केवल मेरा भ्रम है। ध्यान से सुना। हाँ, टेलिप्रिन्टर ही काम कर रहा है। हड़बड़ाकर वह बगल के कमरे की ओर लपका। यह क्या? स्वामीनाथन् टेलिप्रिन्टर से खबरें ले रहा था। उसके कंधे पर झूलते कपड़े की पट्टी पर बाँया हाथ निष्क्रिय पड़ा था। अब तक पट्टी न खुली थी। मुरली को देखते ही वह आसन से उठकर उसकी ओर बढ़ा। मुरली ने पूछा—"अस्पताल से तुम्हें बाहर आने की अनुमति मिल गयी?"

"नहीं। मैं खुद ही चला आया। यों ही दफ्तर को फोन किया था। मालूम हुआ कि कोई काम पर नहीं आया है। इस्तीफे का क्या कारण बताया है उन्होंने?"

"लिखा है कि यहाँ पर काम करने से उन्हें डर लगता है। तुम्हारी जो गति करायी गयी है वह किसी भी क्षण उन पर भी गुज़र सकती है। अपनी सुरक्षा के ख्याल से इस्तीफा दे रहे हैं।"

"मगर असली कारण यह नहीं। 'स्वर प्रभाती' के पैसे के लालच ने इन्हें मजबूर किया है। वे अब 'स्वर प्रभाती' में होंगे। सोच रखा था एक दिन यह घटना घटेगी।"

"लो ! यह चाबी लो। द्वार बन्द करके आना। हम भी चले जाएँ।" मुरली ने चाबियों का गुच्छा स्वामीनाथन् की ओर बढ़ाया।

"सर···क्या ताला लगाने के लिए मैं अस्पताल से दौड़ा आया हूँ ? चाहे सभी चले जायें या रहें, हमारी पत्रिका का प्रकाशन कभी बन्द न होगा।" स्वामीनाथन् भावावेश में आ गया था।

"तुम और कितने दिनों तक संभाल पाओगे। तुम्हारे यहाँ रहने से ही तुम पर मारपीट हुई है।" मुरली ने दर्द-भरे स्वर में कहा।

"सर !" स्वामीनाथन् ने दृढ़तापूर्ण स्वर में पूछा—"इन लुच्चे-लफंगों के डर से हम अपने लक्ष्य से हाथ धो बैठें ? मुझे भी उन नीच व्यक्तियों में एक मान लिया जो पैसे के लालच में भाग गये ?"

मुरली की आँखें सजल हो आयीं। अतीव भावुक हो उसने स्वामीनाथन् के दोनों हाथ अपने हाथ में ले लिये। कृतज्ञता से उसका हृदय लबालब भर आया था।

"सर ! दो प्रूफ रीडर मिलें तो काफी हैं। हम संभाल लेंगे।" विश्वास के साथ स्वामीनाथन् ने कहा।

दो घंटे के अन्दर वह अपने दो मित्रों को प्रूफ़ दिखाने के लिए ले आया। मुरली में नया विश्वास आ गया। छापेखाने के मजदूरों ने पूरा सहयोग देने का वादा किया। हमेशा के जैसे अगले दिन सूर्योदय के साथ-साथ 'भारतमणी' का प्रकाशन हो गया। मुरली और स्वामीनाथन् दिन रात कार्यालय में ही रहकर काम संभालने लगे।

एडिटिंग, कापी-रीडिंग, मेकअप आदि काम उन दोनों ने अपने जिम्मे ले लिया। कभी-कभी जरूरत पड़ने पर मुरली ने कंपोजिंग भी किया। इस तरह पाँच दिनों तक बिना आराम किए दोनों को कठिन परिश्रम करना

पड़ा। छठे दिन नये उप-संपादक काम पर लगाये गये। ये लोग नये व अनुभवहीन थे, इसलिए स्वामीनाथन् ने पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली।

पूरे छः दिनों के उपरान्त मुरली को थोड़ा आराम मिला। रात के दो बजे वह कार्यालय से घर लौटा। मगर बड़ी देर तक सो न पाया। तरह-तरह की चिन्ताएँ उसे सताती रहीं। अकेला स्वामीनाथन् टिमटिमाती रोशनी में मर रहा था।

सवेरे दरवाजा खटखटाने की आवाज पाकर उसकी नींद खुली। द्वार खोलते ही उसे अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ।

शारदा और शिवराम उसके सामने खड़े थे।

इकत्तीस

डेढ़ साल के बाद मुरली शिवराम को देखता है। शिवराम की हालत देख कर वह चकित सा हो गया। शरीर सूखकर दुबला हो गया था। चेहरे पर हमेशा की वह तेजस्विता नहीं रही। उल्टे गहरी चिन्ता की काली छाया उसे घेरे सी लगी। शिवराम के आगमन पर शारदा भी फूली नहीं समायी। उसकी आँखों में अनोखी चमक और चेहरे पर विलिसत हर्ष मुरली की आँखों से न बच पाये।

'भारतमणी' कार्यालय में दोनों मित्रों की बड़ी देर तक बातचीत हुई। शिवराम के राजनीतिक विचारों में आये परिवर्तन को देखकर मुरली सन्न रह गया। यह कैसे संभव हुआ? यह उसकी समझ में न आया।

शिवराम ने कहा—"मुरली! आगे से विप्लव पार्टी के सिद्धान्त

तुम्हारे लिए स्वीकार्य रहेंगे।"

मुरली आँखें फाड़कर उसे देख रहा था।

"आगे से विप्लव पार्टी चीन व रूस की मुखापेक्षी न रहेगी।"

मुरली ने तिरस्कार से कहा—"वे तो आपके मालिक हैं।"

"उनके स्वामित्व से पिंड छुड़ाने के प्रयत्न चल रहे हैं। पार्टी इस देश के संविधान को मानकर संवैधानिक तरीके से अपना काम करेगी।"

यह सुनकर मुरली हँस पड़ा। फिर कहा—"इस देश के संविधान व कानून को तोड़ना ही विप्लव पार्टी का लक्ष्य है न ? उस लक्ष्य में परिवर्तन ? बड़े मजे की बात है यह। व्यक्तिगत आजादी को मान्यता देने वाले संविधान और आपकी पार्टी में जमीन-आसमान का अन्तर है।"

"यदि बुनियादी सिद्धान्तों में ही परिवर्तन हो जाए तो ?"

"बुनियाद को जड़ से उखाड़ दें फिर इमारत का क्या होगा।"

"नई बुनियाद बना लें तो ?"

"क्या यह संभव है ?"

"संभव है मुरली ! इसका प्रबन्ध बड़ी तीव्रता से हो रहा है। आगे से पार्टी राष्ट्रीय भावना से अनुप्राणित रहेगी। जनतंत्रात्मक पथ पर इसके कार्यक्रम रहेंगे।"

मुरली की हंसी में अविश्वास भरा था। "शिवराम ! तुम धोखे में हो। लोकतंत्र की कब्र के ऊपर ही सोशलिज्म भवन का निर्माण संभव है। इस बुनियादी तत्व को तुमने समझा नहीं ? शिवराम ! तुम गधे को घोड़ा बनाने का स्वप्न तो नहीं देख रहे ?"

"नहीं मुरली ! मुझे पूरा यकीन है कि लोकतंत्र का गला घोंटे बिना सोशलिज्म पर अमल कर सकते हैं। श्रमजीवी वर्ग का पूरा सहयोग हमें मिल जाए तो यह संभव हो जाएगा।"

"लोकतंत्रात्मक देश में सोशलिज्म के सिद्धान्तों को अमल करायें तो धीरे-धीरे लोकतंत्र का दम घुट जाएगा और अन्त में सोशलिज्म का एकाधिकार ही शेष रह जाएगा। चाहें तो आपकी डिक्टेटरशिप को छिपाने के लिए जनतंत्र का मुखौटा डाल सकते हैं।" मुरली ने अपने तर्क पर बल दिया।

शिवराम ने हारकर कहा—"अब तुमसे वाद-विवाद में पड़ना नहीं चाहता। तुम अपने तर्कवाद से मुझे उलझा दोगे। मुझे अपने विचारों पर विश्वास है।"

'भारतमणी' कार्यालय से शिवराम साईकिल पर पार्टी कार्यालय की ओर जा रहा था। उसका मन अशान्त था। अगले कुछ दिनों में मद्रास शहर में विप्लव पार्टी की गुप्त समिति की जो बैठक होनेवाली है, उसी की चिन्ताओं ने उसके चिन्तन को घेर लिया था। उस बैठक में परिवर्तनवादी जो विचार पेश करने वाले हैं, उस पर विचार करते वक्त वह निश्चित रूप से एक निर्णय पर आ न सका कि पार्टी ऐसे बुनियादी सिद्धान्तों के परिवर्त्तन के लिए अपने को तैयार कर लेगी या वेदमूर्त्ति के जबर्दस्त व्यक्तित्व व आधिपत्य के सम्मुख त्रस्त होकर झुक जाएगी। यद्यपि छः प्रान्तों के नेताओं ने उसका साथ देने का वादा किया था, तो भी उसके दिल की तह में अनजाने भय का दबाव था।

कार्यालय के बाहरी दरवाजे पर अन्दर से ताला लगा था। दरवाजा खटखटाने पर नल्लदम्बी ने द्वार खोला। शिवराम कमरे के एक कोने में पड़े पोस्टरों को देखते ही चौंककर बुदबुदाया—"ओहो ! ये यहाँ भी आ गये हैं ?"

"हाँ···इन्हें रातों रात गली-गली में चिपका देना है।" नल्लदम्बी ने उत्साहित होकर कहा।

"नहीं—इसकी जरूरत नहीं। इन्हें जला दो।"

"प्रधान कार्यालय के आदेश पर हमें चलना है।"

"मुझे मालूम है···मैं जो कहता हूँ···वह करो !"

गुस्से के साथ नल्लदम्बी ने कहा, "तुम जो कह रहे हो, जरा सोच समझ के कहना।"

"ये सब चीन के पोस्टर हैं। इसकी हमें जरूरत नहीं।"

"जरूरत है या नहीं, इसका निर्णय करने का हमें अधिकार नहीं। यह पार्टी का हुक्म है।" नल्लदम्बी चिल्ला उठा।

"चाहे वह पार्टी का हुक्म ही हो ! हमें अपनी अन्तरात्मा के आदेश पर चलना है।" शिवराम ने दृढ़ता से कहा।

"शिवराम ! तुम नेताजी के क्रोध के पात्र बन रहे हो। पहले ही वे तुम पर और शारदा पर नाराज़ हैं।"

"क्यों कर ?"

"तुम दोनों का हमारे दुश्मन मुरली से मिलना जुलना उन्हें पसन्द नहीं।"

"हूँ—फिर ?"

"अलावा यह शिकायत उनके कानों तक पहुँची है कि पार्टी के विरुद्ध आप दोनों षड़यंत्र कर रहे हैं।"

"मुझे धमकी दे रहे हो ?" शिवराम क्रोध से फुफकारा।

"मैं क्यों धमकी दूं ? नेताजी से मुझे जो सांकेतिक सूचनाएँ मिली हैं, उससे मुझे इसका पता लगा है।"

"कौन-सा षंडयंत्र ?"

"अर्थात् तुम दोनों पार्टी के बुनियादी सिद्धान्तों में परिवर्त्तन लाने के प्रयत्न में लगे हो। इस सिलसिले में अन्य प्रान्तों के लीडरों से आपकी गुप्त मंत्रणाएँ चल रही हैं।"

"सिद्धान्तों में कमियाँ रहें तो उन्हें बदलने में क्या हर्ज ?"

"सिद्धान्तों के बारे में निर्णय करने का अधिकार अकेले लीडर को है। वे ही निर्णायक हैं। तुम जैसे मामूली लीडर नहीं।" तिरस्कार भरे स्वर में नल्लदम्बी ने कहा। उसकी आवाज में ध्वनित अवहेलना और घृणा को देखकर शिवराम वौखला उठा।

"मैं किसी का गुलाम नहीं।" वह जोर से चिल्ला उठा।

"चाहे तुम किसी के गुलाम न हो, मगर पार्टी के सिद्धान्तों के हम बंदे गुलाम हैं। अपने खून से हस्ताक्षर करके हमने प्रतिज्ञा की है, आशा है तुम इसे भूले न होगे।" नल्लदम्बी ने गंभीर होकर कहा।

यह सुनते ही शिवराम ने थोड़ा नरम होकर नल्लदम्बी की ओर आँखें गड़ाकर देखा फिर कहा—"हां, पार्टी के सिद्धान्त हम लोगों से महत्त्वपूर्ण हैं। लेकिन···लेकिन···अगर उन सिद्धान्तों में ही कोई कमी रहे तो···नल्लदम्बी ! व्यक्ति के लिए सिद्धान्त होते हैं, सिद्धान्तों के लिए व्यक्ति नहीं।"

"सिद्धान्तों पर विचार करने व निर्णय पर आने का अधिकार केवल प्रधान लीडर को है।"

"यदि हम प्रधान लीडर को मजबूर करें, तो…?"

"शिवराम ! तुम आग से खेलते हो। शारदा ने इस प्रान्त के कार्य-कर्त्ताओं की बुद्धि भ्रष्ट करके उनको फोड़कर, कईयों को अपने पक्ष में खींच लिया है। यह सब तुम्हारी प्रेरणा से हो रहा है। अण्डरग्राऊण्ड रहते समय बाहर किसी से संपर्क नहीं बढ़ाना है। इस कठोर नियम का भंग करके, तुमने शारदा से पत्र-व्यवहार करके उसे इस प्रकार के षड़यंत्र रचाने के लिए प्रेरित किया है। पार्टी को तोड़ने व फूट डालने के प्रपंच में आप दोनों लगे हैं…"

"बस…करो।…यह अपनी मर्जी की बात है। तुम कौन हो पूछने-वाले ? इस प्रान्त का नेता मैं हूँ। यहाँ पर पार्टी के प्रचार व प्रसार के कार्य की जिम्मेदारी मेरी है।" शिवराम आपे से बाहर हो गया।

नल्लदम्बी के अधरों पर परिहास की हंसी खिल उठी। उसने उपेक्षा की दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए तिरस्कारपूर्ण आवाज में कहा, "तुम्हें इसके लिए प्रधान कार्यालय को जवाब देना पड़ेगा।"

"मैं दे दूंगा। अगले महीने की बैठक में मैं अपनी सफाई देने वाला हूँ।"

"बैठक में तुम शामिल होगे, तभी न ?"

"क्यों ?" शिवराम ने हड़बड़ाकर पूछा।

"तुम्हें बुलावा न दिया जाए तो ?"

"ओह…" शिवराम धक्का खाकर लड़खड़ाया-सा रह गया। उसकी आँखें नल्लदम्बी को घूरती रहीं। फिर आशंकित स्वर में पूछा—"ऐसा होना संभव है !"

"क्यों नहीं। सब कुछ संभव है।" "नल्लदम्बी ने ज़ोर देकर कहा।

"यह तानाशाही है।…इसका अन्त जरूर करना है। उस बैठक में इन सब बातों का अन्त हो जाएगा।" शिवराम आवेश में बड़बड़ाया। उसकी साँस तेजी से चलने लगी। चेहरे पर पसीने की बूंदें उभर आयीं। शरीर में हल्का कंपन सा दौड़ा। वह समझ न पाया कि उसकी घबराहट का कारण उसका क्रोध है, निराशाजनित झल्लाहट है या मन की गहराई

में क्षण-क्षण फैलता अनजाना भय है। जो भी हो वह अपना सन्तुलन खो बैठा था। कुपित दृष्टि से नल्लदम्बो की ओर देखा।

"इन पोस्टरों का क्या करने वाले हो ?" नल्लदम्बी ने पूछा।

"देखते रहना।" यह कहकर शिवराम ने मेज के दराज़ से दियासलाई निकाली और उन पोस्टरों में आग लगा दी।

नल्लदम्बी इस अग्निकाँण्ड को देखता खड़ा था। शिवराम को रोका नहीं। ज्वाला भभक उठी। कागज जलने की दुर्गन्ध कमरे में फैल गयी। नल्लदम्बी बड़ी खामोशी से जलते हुए पोस्टरों पर दृष्टि गड़ाये खड़ा था। शिवराम ने गुस्से में आकर आग लगा दी, मगर मन में कुलबुलाते आतंक से बेचैन हो रहा था।

इस यज्ञकुण्ड में वह अपने सिद्धान्तों को चढ़ाकर उन्हें विशुद्ध व सुडौल बना रहा था ? या अपने साहस और वैराग्य की बलि दे दी उसने ?...या अपने शेष जीवन का बलिदान कर बैठा है...?

चटकती ज्वाला को देखते हुए नल्लदम्बी ने कहा, "तुमने पहले भी गुण्टूर में इस तरह पोस्टर जला दिये। अब यह दूसरी बारी है।" प्रज्वलित आग की लपटों में नल्लदम्बी का चेहरा गुस्से में कुंकुम-सा लाल होकर डरावना लग रहा था।

"गुण्टूर की बात का तुम्हें कैसे पता ?" हक्का-बक्का सा होकर शिवराम पूछ बैठा।

"इतना भी न जानता तो पार्टी की उन्नति व ताकत यहाँ तक बढ़ती ?" उसकी आवाज़ में कठोरता व तिस्कार और भी भयानक लगा।

"जा-जा...दिल्ली...दिल्ली को खबरें भेज दो कि मैं ने यहाँ अग्नि-काँड मचाया है...जाओ" शिवराम बड़बड़ाया।

कोने पर पड़ी गरम राख की ओर से हटकर नल्लदम्बी की दृष्टि पूरे ज़ोर से शिवराम की दृष्टि से टकरायी। उन आँखों में कौंधता विकराल क्रोध और उबलती घृणा ने शिवराम के दिल में अवर्णनीय त्रासदी भर दी। शिवराम की ओर देखते हुआ उसने अतीव शान्ति व दृढ़ता से कहा, "दिल्ली तक जाने की कोई जरूरत नहीं, पार्टी के सहस्रों नयन हैं।" इतना कहकर वह तेजी से कमरे से निकल गया। अकेले उस कमरे में

शिवराम थोड़ी देर तक मौन खड़ा था। एक बार मुड़कर उस राख की ढेरी की ओर देखा। किसी हत्यारे को अपने हाथ से की गई लाश को देखते वक्त मारें दहशत से जो घबराहट व भय लगेगा वही हालत अब शिवराम की हो रही थी। वह हतप्रभ-सा खड़ा था। उस कमरे में अकेले खड़े रहने में उसे डर लगने लगा। तेजी से कमरे के बाहर आया। कार्यालय के दरवाजे पर ताला लगाकर वह शारदा के बंगले की ओर चला।

× × ×

'भारतमणी' कार्यालय में मुरली अपने कमरे में बैठा पत्रिका के आय-व्यय का हिसाब देख रहा था। पत्रिका का आडिट करके आडिटर ने जो रिर्पोट दी थी उसे भी एक बार पढ़कर देखा। उन्होंने चेतावनी दी थी कि पत्रिका की बिक्री काफी मात्रा में नहीं बढ़ती तो निकट से भारी हानि उठानी पड़ेगी। स्पष्ट लिखा था—'हैवी लॉस'। मुरली ने भौहें सिकोड़ीं और हताश भाव से कुरसी पर पीठ टिका ली। उसे अब अच्छी तरह मालूम हो गया था कि जनता किस प्रकार की पत्रिका का स्वागत करती है। उसकी रुचि किस ओर है ? उसका मन किस आकर्षण के पीछे पागल है। यह उससे छिपा नहीं था। एक दिन उसने स्वामीनाथन् से पूछा, 'स्वर प्रभाती' से 'भारतमणी' की बिक्री बढ़ने की कोई संभावना है।

"क्यों नहीं सर, छः महीने के लिए 'भारतमणी' को मेरे हाथ में सौंप दीजिएगा। फिर देखना ! इस असंभव बात को संभव करके दिखा दूंगा।" स्वामीनाथन् ने उत्साहित होकर कहा।

मुरली ने विस्मय से उसकी ओर देखा। हाथ की पट्टी अब तक न खुली थी। पट्टियों के झूले में पड़े हाथ को आगे पीछे हिलाते हुए बड़े जोश के साथ उसे बोलते देखना, बड़ा तमाशा ही नहीं दयनीय भी लगा था।

"तुम क्या-क्या करोगे ?" मुरली ने पूछा।

सबसे पहले जिन बातों से जनता का कोई मतलब नहीं, उन खबरों को प्रकाशित न करूँगा।"

"कौन-कौन सी खबरें इस कोटि में आयेंगी ?"

"हमारी पत्रिका में प्रकाशित विषयों में नब्बे प्रतिशत से आम जनता का कोई मतलब नहीं। इस देश की राजनीतिक स्थिति, प्रशासन सम्बंधी

समस्याएँ, आर्थिकदशा, शिक्षा की उन्नति इत्यादि महत्वपूर्ण विषयों से संम्बन्धित वार्त्ताओं की ओर जनता को ज़रा भी दिलचस्पी व रुचि नहीं है। सर ! आज हमारी जनता के दिलों को जिसने आकर्षित किया, जिसके नशे में वे चूर है वह विश्व की राजनीति नहीं। सिनेमा, तिलस्म, ऐय्याशी व जासूसी कहानियाँ हैं। इनके दिल व दिमाग पर जिसकी धाक जमी, है, जो इन पर हावी हो चुके हैं, वे इस देश के अप्रतिम नेतागण बुद्धिजीवी चिन्तक नहीं, चलचित्र के अभिनेता और अभिनेत्रियाँ हैं।"

दोनों हथेलियों पर मुंह टिकाये मुरली बड़े ध्यान से उसकी बातें सुन रहा था।

स्वामीनाथन् ने अपनी बात चालू रखी—"सर ! अगर मैं पत्रिका चलाता तो रोज पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर किसी अभिनेत्री का ब्लोअप छपवाता। इसका ध्यान रखता कि वह चित्र अर्धनग्न सा रहे। पत्रिका के आखिरी पृष्ठ पर किसी स्टार की दिनचर्या पर या सिने जीवन के अनुभवों पर एक कॉलम रोज लिखता। सिनेतारिका के प्रश्न व उत्तर का एक रसीला अंश हर इतवार को प्रकाशित होता। अलावा हफ्ते में दो बार सिनेमा के सितारे-तारिकाओं की भेंट, मुलाकात की चटपटी बातें, पत्रिका के बीचों-बीच किसी सिनेमा के लव-सीन के फोटो अवश्य छपवाता। पत्रिका के अन्य पृष्ठों में खून-हत्या, व्यभिचार, बलात्कार, गुप्त प्रेमियों के साथ लड़कियों का लापता होना, इत्यादि सनसनीदार खबरें मिर्च-मसाले के साथ प्रकाशित करता। हफ्ते में एक बार अश्लीलता से भरी जासूसी कहानी···को···"

"बस-बस···रुक जाओ···" मुरली बौखलाकर चिल्ला उठा।

"यह सब मसाला न दें तो जनता हमारी पत्रिका खरीदना बन्द कर देगी। ।"

"भले ही बन्द कर दे।"

"सर···हम किस के लिए पत्रिका निकाल रहे हैं ?"

"जनता के लिए।"

"वह जनता जो चाहती है वही हमें देना है न ?"

"वे नग्न-चित्रों को चाहते हैं ! कहो हम छपवाएँ ?" गुस्से से मुरली

आग बबूला हो रहा था।

"ओ ! बड़ी माँग रहेगी—ढेर से टके मिलेंगे ! यदि जनता में उसी की माँग हो तो हमें ऐसा छपवाना पड़ेगा, यदि कानून अनुमति दें तो ऐसा करने में कोई आपत्ति नहीं···" हंसते हुए स्वामीनाथन् ने कहा।

"बन्द करो अपनी बकवास" कहकर मुरली मौन हो गया। उसका दिल कड़वाहट से भर गया।

अब सोचा—स्वामीनाथन् के शब्दों में कोई दोष नहीं। लेकिन मनुष्य की कुत्सित भावनाएँ और विकृत वासना को उभारकर पैसा कमाने के नीचतापूर्ण कृत्य में लगने को मुरली की ईमानदारी और नेकनीयती सहमत न हुई। उसे अच्छी तरह मालूम था कि उसकी हठधर्मी के कारण ही 'भारतमणी' घाटा उठा रही है। वह चकराया। पत्रिका को एकदम बन्द करने का मन न रहा। उसे इसकी आशा थी कि एक न एक दिन जनता की रसिकता व सुरुचि जाग पड़ेगी, उनका स्तर ऊँचा होगा उनकी चिन्तन शक्ति बढ़ेगी···लेकिन वह दिन कब आयेगा ? कभी आयेगा क्या ?

उस दिन शाम को शिवराम आया। अभी कुछ दिनों पहले उसका बुरा हाल हो गया था। पहले का सा उत्साह व स्फूर्ति न रही। बोलते-बोलते वह एकदम मौन हो जाता था। कभी-कभी उनकी बातों का कोई सिलसिला न रहता। कभी चिन्तामग्न होकर खोया सा बैठा था। मुरली ने देखा कहीं कोई हलका-सा खटका भी हो, शिवराम चौंक पड़ता था। उसकी इस दशा पर मुरली को बड़ी दया आयी। एक दिन उसने सीधे पूछ लिया, "शिवराम ! आजकल तुम्हें क्या हो गया है ? इतना बेचैन क्यों हो। कोई मदद चाहिये तो बताना ! करने को तैयार हूँ। बताओ न ?"

"और कुछ नहीं। पार्टी का मामला है। पार्टी में आमूल परिवर्त्तन लाने की कोशिशें चल रहीं हैं। सीमा पर चीनियों का आक्रमण हो रहा है। ऐसी नाजुक हालत में विप्लव पार्टी देशद्रोह पूर्ण कृत्यों में लगी है···यह कलंक नहीं लगना है।" शिवराम की आवाज में ध्वनित चिन्ता व जिम्मेदारी की भावना को देखकर मुरली सकते में आ गया। विप्लव पार्टी वाले के दिल में स्वदेश के प्रति कितनी श्रद्धा है, यह सोचकर विस्मित हुआ।

इतने में स्वामीनाथन् तेजी से कमरे में आया। आते ही बोल उठा—

"सर, विप्लव पार्टी के दो प्रान्तीय नेताओं की सन्देहास्पद स्थिति में मृत्यु हुई है···ऐसी खबर आयी है।"

यह सुनते ही "ओह" ऐसा चीखता हुआ शिवराम आसन से उठ गया।

"उन दोनों में एक बंगाल के नरेन्द्र बोस और दूसरे पंजाब के गुरनाम सिंह हैं। अब तक पता नहीं लगा है कि आत्महत्या है, या हत्या की गयी है ?"

"मृत्यु कब हुई थी ?" मुरली ने चिन्तित स्वर में पूछा है।

"आज सबेरे कलकत्ते में नरेन्द्र बोस की लाश पार्टी कार्यालय के पास पड़ी थी। शाम को अम्बाला में गुरनामसिंह अपने घर के निकट मरे पड़े थे। विप्लव पार्टी लीडरों का कहना है कि दोनों ने छत से कूदकर आत्म-हत्या कर ली है।"

यह सुनते ही शिवराम का शरीर एकबार ज़ोर से काँप उठा। खुला मुँह खुला ही रह गया। उसकी निस्तेज आँखों में समाये भय को, थर-थर काँपते शरीर को देखकर मुरली स्तम्भित रह गया। थोड़ी देर तक शिवराम उन्मत्त-सा भावशून्य आँखों से आँख फाड़कर देखता रहा। उसके पैर लड़-खड़ाये। शरीर से पसीने की धारा छूटने लगी। थोड़ी देर जड़वत् खड़ा रहा, फिर मुरझाया सा कुर्सी पर लुढ़क गया।

स्वामीनाथन् की ओर देखकर इशारा किया कि पानी चाहिए। उसमें कुछ बोलने की शक्ति ही न रही। स्वामीनाथन् ने दौड़कर कमरे के कोने में रखे मटके से पानी लाकर दिया। शिवराम ने एक ही साँस में गट-गट पी लिया। अब भी उसका कंपन दूर न हुआ था। अतीव थकावट से उसने अपनी आँखें भींच लीं।

चिन्ताकुल मुरली दयापूरित आँखों से उसे देखता हुआ पास बैठा था।

बत्तीस

भारतीय लद्दाख प्रदेश की सीमा पर चीनियों का आक्रमण शुरू हो गया था। भारतीय सरकार, और चीनी सरकार के बीच जो पत्र व्यवहार चला, उससे कोई फायदा न निकला। उत्तरपूर्वी सीमा पर (नेफ़ा) दोनों देशों के बीच में जो 'मैकमोहन' सीमा रेखा बनी थी, उसे भी पार करके चीनियों के भारत के अन्दर प्रवेश करने के समाचार आ रहे थे।

न्यूज एजेन्सी द्वारा टेलिप्रिन्टर से जो खबरें आ रही थीं, उन्हें चिन्ता-ग्रस्त मुरली संग्रह कर रहा था। भूटान की पूर्वी सीमा पर भी मोर्चा-बन्दी हो रही है, यह खबर पाते ही उसकी व्याकुलता बढ़ गयी। दुश्मन बड़ी मुस्तैदी से लड़ रहा था। ऐसे मौके पर प्रधानमंत्री लंका भ्रमण करने जा रहे हैं, यह जानकर मुरली सकते में आ गया। देश पर भारी खतरा आ पड़ा है, मगर देश के प्रधानमंत्री देश के बाहर जा रहे हैं, यह आश्चर्य की बात थी। इस नाजुक मौके पर 'भारतमणी' की तरफ से एक संवाददाता का दिल्ली में रहना अच्छा होगा, ऐसा मुरली ने सोचा।

शाम को वह क्लब गया। जज राजरत्नम् अपनी आदत के अनुसार अकेले चिन्तामग्न बैठे थे। मुरली उनके पास जा बैठा। उसे देखते ही उनका चेहरा खिल उठा। उन्होंने उत्साह से अपना हाथ बढ़ाकर उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया, बोले—"मिस्टर मुरली, आप से मिले बहुत दिन हो गये। लगता है बड़े व्यस्त हैं। चीन ने धावा बोल दिया है। अब खबरों का कोई अभाव न रहेगा।"

'हिन्दी चीनी भाई-भाई' का नारा लगाते हुए पीठ में छुरी घोंप दी उसने।"

"पीठ में छुरी घोंपना भी एक प्रकार की कूटनीति है। विश्वइतिहास

के ज्ञाताओं के लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। लेकिन एक देश के शासन की बागडोर थामने वालों की समझ में इतनी सी बात न आयी कि पीठ में भी छुरी घोंपी जा सकती है···यही आश्चर्य की बात है। इससे भी बढ़कर और आश्चर्य की बात यह है कि पीठ में छुरी घोंपने वाले की गुप्त मदद करने वाली देशद्रोही राजनीतिक पार्टियों पर अब तक प्रतिबन्ध नहीं लगा है।" फिर न जाने क्या सोचा हो राजरत्नम् ने एकाएक पूछा—"सुना है प्रोफेसर की बेटी की शादी होने वाली है और दामाद विप्लव पार्टी का है?"

मुरली ने सिर हिलाया।

"तब तो शादी कराके बेटी और दामाद को हनीमून के लिए चीन भेज सकते हैं।" यह कहकर वे खिलखिलाकर हँस पड़े। मुरली ने बात बदलनी चाही, कहा—"आपके रुपये और छः महीने में लौटा दूंगा।"

"पैसे की चिन्ता न करें मिस्टर मुरली, 'भारतमणी' की प्रगति हो तो अच्छा। आजकल बिक्री कैसी है?"

"अब तो चीनी आक्रमण के कारण बिक्री बढ़ गयी है लेकिन पत्रिका की बिक्री के लिए दुश्मन सीमा पर धावा बोलते रहे?"

"लोगों में जागरण तभी संभव है जब दुश्मन दरवाज़ा खटखटाते रहें। गिरी दशा में आजाद रहने के बदले, सुसंस्कृत गुलाम बने रहें तो क्या हर्ज?" जज ने विरक्ति से कहा।

मुरली ने प्रतिवाद नहीं किया।

थोड़ी देर तक दोनों में बातें होती रहीं। मुरली के कार्यालय में लौटते वक्त रात के आठ बज गये। शारदा उसकी इन्तजार में बैठी थी। उसकी घबराहट और व्याकुलता देखकर मुरली का दिल धक् से रह गया।

"मुझे···मुझे···बड़ा डर लगता है मुरली! शिवराम की बड़ी बुरी दशा है। वे पहले जैसे नहीं हैं।" घबराये स्वर में शारदा बुदबुदायी।

"उस पर कौन सी चिन्ता सवार है?" शारदा का उदास चेहरा देखकर उसे दया आयी।

"पार्टी की ही चिन्ता है। और क्या? दो दिन पहले नरेन्द्र बोस और गुरनामसिंह की आत्महत्या की खबरें मिलीं थीं न? तब से उनकी

हालत और खराब हो गयी है। पार्टी में जो लोग परिवर्तन लाना चाहते थे, उनमें से दो व्यक्ति न रहे तो इतना घबराने की क्या जरूरत है ? मुरली ! मुझे यकीन नहीं होता कि यह वही शिवराम है जिसने बड़े साहस और धैर्य के साथ आन्दोलनकारियों के बीच में जाकर प्रिंसिपल को छुड़ाया था ।"

"सीधा आक्रमण हो, डरने की कोई बात नहीं शारदा ! चाहे जितने भी लोग आयें शिवराम छाती तानकर खड़ा रहेगा—लेकिन छल प्रपंच का सामना कैसे हो ?"

"आप···आप यह क्या कह रहे हैं ?" शारदा ने अधीर होकर पूछा। उसकी आवाज लड़खड़ा रही थी।

"विप्लव पार्टी के उन दोनों लीडरों ने आत्महत्या कर ली है—इस बात पर तुम यकीन करती हो ? बताओ।"

"नहीं तो—फिर···क्या ?"

"पार्टी में घास-फूस हटाने की प्रक्रिया चल रही है। साफ शब्दों में कहूँ तो पार्टी के अन्दर पार्टी के सैद्धान्तिक विरोधी जो हैं उनका काम तमाम किया जा रहा है।"

"हाय···तब तो···" शारदा आगे कुछ बोल न पायी। उसका चेहरा एकदम पीला पड़ गया। भयभीत दृष्टि से मुरली की ओर ताकती रह गयी। उन बड़ी-बड़ी आँखों में छाया भय और आशंका को देखकर मुरली विचलित हो गया। शारदा की आँखें सजल थीं। अधर ऐसे फड़फड़ा रहे थे कि किसी भी क्षण वह रो पड़ेगी। उसके निस्तेज उदास मुखड़े को देखते ही मुरली का दिल पसीज गया।

कालेज के दिनों में इसी मुखड़े का दर्शन कर वह कितना हर्षित व उल्लसित हो उठता था ? उन बड़ी-बड़ी काली आँखों की चमक···फुदकती चिड़िया सी मस्ती घुटनों तक झूलती लंबी वेणी, अनोखी मिठास भरी बातें···वह ठगा-सा रह जाता था। उसे देखते ही उसके दिल में उथल-पुथल मच जाती थी।

लेकिन···लेकिन···वह सब अब सपने की बातें बन गयी हैं··· सोचा—चाहे वह कहीं भी रहे, किसी की भी रहे···हमेशा सुखी रहे।

उसका चेहरा ताजे फूल सा खिला रहे···हाँ···शारदा को उसके दिल के दर्द का, उसकी मूक यातना का बिल्कुल पता नहीं था। अब भी उसके दिल में क्या बीत रहा है, उससे वह अपरिचित थी। न उसने समझा, न उसने समझाया था। अब तो वह उसके सामने, बड़ी-बड़ी आँखों में अथाह, गहरी, वेदना लिए एक और के लिए, बिसूरती खड़ी है।

मुरली ने जैसे झटका खाया हो, संभलकर बोला—"शारदा! शिवराम से कहो कि वह पार्टी से अलग हो जाय।"

"लेकिन उन्हें इसपर सहमत कैसे होना है?"

"पार्टी में जब इस तरह के छल-प्रपंच और गुप्त षडयंत्र चल रहे हैं, तब उसीसे चिपके रहने से क्या लाभ? पार्टी से निकल आने का यही अच्छा मौका है।"

"आप कहें तो शायद मानेंगे।"

"तुम्हारी बात को जो नहीं मानता···वह मेरी बात पर थोड़े ही ध्यान धरेगा···" मुरली ने मुस्कुराते हुए कहा।

शारदा के चेहरे पर यह सुनते ही लज्जा की लाली छा गयी। उन काली कजरारी आँखों में शरमायी दृष्टि लहरा उठी। मन्द मुस्कान लिए खड़ी उस अलौकिक सौंदर्य की धनी का मुरली तटस्थ दर्शक सा पल भरे भरे दिल से रसास्वादन लेता रहा।

"अच्छा! मैं मनाकर देखूंगी।" शारदा कुर्सी से उठ गयी।

"यही अच्छा मौका है। शिवराम का विश्वास डोल गया है। उसके दिल को बदलना अब आसान है।"

शारदा ने कहा—"मेरा सबसे पहला काम उन्हें पार्टी से छुडाना है।"

"पार्टी से अलग होने पर आप दोनों को मेरी मदद करनी पड़ेगी।"

शारदा ने विस्मय विस्फारित नेत्रों से मुरली की ओर देखा। एक बच्चे की सी मासूमियत उन आँखों में भरी थी। मेज पर दोनों हाथ टिकाए खड़ी उसकी बड़ी-बड़ी चमकदार काली आँखें उसे निगल रही थीं। पल भर मुरली की आँखें उन आँखों में झाँककर छटपटायीं। पल भर की बात थी। अगले क्षण वह संभल गया, बोला—"हाँ! तुम दोनों को 'भारतमणी' की सेवा में लग जाना होगा।"

शारदा खिलखिलाकर हँस पड़ी। उस कलकल ध्वनि से सारा कमरा मुखरित हो उठा। मुरली निर्निमेष उसे देखता रहा।

"पिताजी भी अक्सर यही कहते रहते हैं। हम दोनों से कहते हैं कि पार्टी से अलग होकर, हमें आपके साथ पत्रकारिता में लगना चाहिए।" शारदा ने प्रफुल्लता से कहा—"तुम्हारा भी यही विचार है। तो पार्टी से छूटते ही आपकी शरण में आ जायेंगे।" उत्साह से वह किलक पड़ी। अब उसकी सारी उदासी और घबराहट काफूर हो चुकी थी। मुरली अपनी गाड़ी में उसे खुद बंगले तक लौटाकर आया तो देखा शिवराम उसके कमरे में बैठा था।

मुरली छूटते ही बोला—"अभी-अभी शारदा को घर छोड़कर आया हूँ मैं।"

"शारदा ? यहाँ आयी थी ?"

"हाँ···तुम्हारे लिए आयी थी।"

"मेरे लिए ?"

"हाँ—कहती है—मुझे तुम्हें पार्टी से अलग होने के लिए राजी कराना है।"

शिवराम मुस्कुराया, फिर कहा—"पार्टी से अलग होना इतनी आसान बात नहीं है। तुम जानते हो कि पार्टी से मेरा कितना निकट का सम्बन्ध है।···मुरली ! मुझे इसका डर है कि मैं अनजाने ही एक भारी द्रोहपूर्ण कार्य कर बैठा हूँ।"

"क्या कहते हो तुम ?"

"चीन से लौटते वक्त माओ-त्से-तुंग ने वेदमूर्त्ति के हाथ में देने के लिए मेरे पास एक गुप्त पत्र दिया था। मुझे अब सन्देह होता है कि शायद उसमें हमारे देश की सुरक्षा के लिए खतरे का कोई सन्देश रहा होगा।" शिवराम ने दुख भरी आवाज में कहा।

"तुमने चिट्ठी को खोलकर नहीं देखा ?"

"देखा था। मगर समझ नहीं पाया। सांकेतिक भाषा में कुछ लिखा था। उस समय मुझे कोई शुब्हा न हुआ। सोचा था, पार्टी के सम्बन्ध में कोई बातें होंगी।"

"पार्टी के उन लीडरों की मृत्यु के वारे में कोई खबर मिली ?"

"कहते हैं आत्महत्या कर ली है। लेकिन उन्होंने क्यों आत्महत्या कर ली यह तो मेरी समझ में नहीं आता। कायरों की तरह प्राण छोड़े हैं उन्होंने..."

"हाँ ! मुझे भी यकीन नहीं होता कि यह आत्महत्या है ?"

"चाहे हत्या ही क्यों न हो ! इन सब कार्यवाईयों से पार्टी में जो परिवर्त्तन होने वाला है उसे रोक न सकेंगे। लेकिन पार्टी में सैद्धान्तिक परिवर्त्तन लाने के लिए जिन्होंने कमर कस ली थी उनमें ये दोनों बहुत मुख्य हैं।"

"शिवराम, तुम भी सावधान रहना। शारदा को तुम्हारी बड़ी चिन्ता है।" मुरली ने कहा।

"आफत हर घड़ी हमारे सिर पर छायी है। इस डर से जीते जी मरते रहें ? शीघ्र ही वेदमूर्त्ति से लोहा लेना पड़ेगा। मेरे पक्ष में भी बहुत से लोग हैं। मुरली ! चाहे जो कुछ भी हो पार्टी में सुधार अवश्य लाऊँगा। देखते रहना !"—शिवराम ने चुनौती भरे स्वर में कहा।

"दुश्मन का सीधा मुकाबला हो तो संभाल सकते हैं। पीछे से वार करें तो ?" शंकित स्वर में मुरली ने पूछा।

"देख लो" शिवराम ने कमर की पट्टी में खोंसे रिवाल्वर को दिखाया।

मुरली रिवाल्वर को घूरता रहा।

"मुरली ! हर मौके के लिए मैं तैयार हूँ। तुम पर मेरा पूरा भरोसा है। माँ का ख्याल रखना।" शिवराम की आँखें भर आयीं।

"कैसी बातें करते हो शिवराम !..."

"जब तक यह रिवाल्वर मेरे पास है—कोई मुझे हाथ नहीं लगा सकता। स्वयं वेदमूर्त्ति के लिये यह चुनौती देगी ? मुरली। एक पार्टी का, अपने देश का विश्वासघाती बनने से, उस पार्टी का मिट जाना अच्छा है। लेकिन विप्लव पार्टी का सर्वनाश करना मैं नहीं चाहता। उसके सिद्धान्तों पर मुझे विश्वास है, आदर है। मुरली देखते रहो ! एक न एक दिन लोकतंत्रात्मक संवैधानिक पद्धति द्वारा पार्टी के महान् लक्ष्यों को इस मिट्टी

में अमल कराता हूँ या नहीं !"—रिवाल्वर को कमर की पट्टी में छिपा-कर शिवराम जाने को तैयार हो गया।

"शिवराम ! अपने इस सैद्धान्तिक संघर्ष में शारदा को भूल न जाना।"

"वह तो मेरे लक्ष्य के पथ की साथिन है। मेरे हाथ में हाथ मिलाए चलेगी।"—इतना कहकर शिवराम तीर-सा कमरे के बाहर चला गया।

मुरली उसे जाते देखता रहा। न जाने क्यों अनजाना भय उसके मन में समाया जा रहा था। वह घबरा उठा।

'भारतमणी' कार्यालय से निकला शिवराम विप्लव पार्टी के कार्यालय में गया। वहां नल्लदम्बी उसकी प्रतीक्षा में था। उसे देखते ही एक लिफाफा उठाकर उसके हाथ में दिया।

"क्या है ?" लापरवाही से शिवराम ने पूछा।

"प्रधान कार्यालय से आया है। मुझे जो आदेश मिला, उसमें तुम्हारे नाम यह भी था।"

"तुम्हें कौन-सी आज्ञा मिली है ?"

"पहले अपने पत्र को पढ़ लेना, बाद में बताऊँगा।"

शिवराम वे लिफाफा खोलकर चिट्ठी निकाली और दीप की रोशनी में खड़े होकर पढ़ा। उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया। चिट्ठी को फाड़-कर रद्दी की टोकरी में फेंक दिया।

"इस आज्ञा की कॉपी मेरे नाम से भी आयी है।" नल्लदम्बी ने शान्ति से कहा।

शिवराम ने उसकी तरफ घूरा।

"इस आज्ञा के अनुसार तुम्हें अपने प्रान्तीय नेता के पद से इस्तीफे लिखकर मुझे देना है।"

"नहीं ! यह नहीं होगा। वेदमूर्त्ति ने लीडर का स्थान मुझे नहीं दिया है। मैं इस पद के लिए चुना गया हूँ। जिन्होंने मुझे चुना है वे कहें—तब इस्तीफा दूंगा।"

"यह प्रधान कार्यालय की आज्ञा है।"

"जानता हूँ। नल्लदम्बी ! ऐसी तानाशाही और मनमानी आगेन

चलेगी। पार्टी के सदस्यों के विचारों का आदर हो तभी कोई नेता के स्थान पर टिक सकेगा।" शिवराम की आवाज में गरमी आ गयी।

"जो अखिल भारतीय नेता हैं, उन्हें एक प्रान्तीय नेता को पदवी से निकालने का पूरा अधिकार है।"

"उस नेता को पदवी से उतारने का अधिकार सदस्यों को भी है।"

"तुमने अपने खून से हस्ताक्षर करके प्रतिज्ञा ली है।"

"हाँ। उसे भूला नहीं, याद है। पार्टी के लिए अपने प्राण भी न्यौछावर करने की प्रतिज्ञा ली है मैंने, न कि एक व्यक्ति की डिक्टेटरशिप के सामने झुकने की।"

"वेदमूर्त्ति के खिलाफ आवाज उठाना तुम्हारी भलाई की बात नहीं।"

"वेदमूर्त्ति का नहीं, उनके सिद्धान्तों का विरोध करता हूँ मैं।"

"सिद्धान्तों पर चर्चा करने का यह समय नहीं है।"

"क्यों?"

"हमारी पार्टी के लक्ष्य पूरा होने का समय निकट आ रहा है। ऐसे मौके पर हम सब को नेता की आज्ञा का पालन करना ही अच्छा है।"

"ऐसा कौन-सा मौका आ पड़ा है?"

"इतना भी समझ नहीं पाये! चीन की सेना हमारे देश के अन्दर पदार्पण कर चुकी है।" नल्लदम्बी क्रोध से चिल्ला उठा।

"तो पार्टी देश द्रोह करे! यही तुम्हारा इरादा है? पार्टी के लोग देश द्रोही हैं, विश्वासघाती हैं, ऐसा लाँच्छित करने के लिए यह सब हो रहा है क्या? नल्लदम्बी! मुझे सब कुछ मालूम है। चीन से लौटते वक्त मेरे साथ द्रोहपूर्ण षडयंत्र भी यहाँ आ गया है। लेकिन याद रखना, पार्टी इस देश का भला करेगी, न कि द्रोह।" शिवराम ने हर शब्द पर जोर देते हुए ऊँची आवाज में कहा।]

"विप्लव पार्टी देश का शासन हथिया ले—यह भी देश के लिए भलाई की बात है।"

"यह काम हमें निभाना है। चीनीयों को नहीं।"

"यह निर्णय करने का अधिकार प्रधान नेता का है, हमारा नहीं।"

"ओह! ऐसी बात है? यदि हम सब नेता को ही हटा दें?" शिवराम

नल्लदम्बी की ओर देखते हुए तिरस्कार पूर्वक हंसा।

नल्लदम्बी तिलमिला उठा। उसकी आँखों से चिनगारियाँ फूटीं। अंगारे-सी धधकती आँखों से शिवराम को घूरता हुआ दाँत पीसता निकल आया। शिवराम के हाथ ने अपने आप कमर के रिवाल्वर को टटोला।

नल्लदम्बी शिवराम के चेहरे के पास झुककर गुर्राया—"तुम···तुम पार्टी के द्रोही हो।"

"तुम देश के द्रोही हो।" सिर तानकर गंभीर आवाज में शिवराम ने कहा।

तभी कमरे के द्वार पर कोई खटका हुआ। शिवराम चौंका उस तरफ मुड़ा कि अपने पीछे किसी को खड़ा पाया। कमरे में फैले उस मन्द प्रकाश में उसे पहचानने से पहले ही शिवराम के सिर पर इतने जोर की चोट पड़ी कि वह लड़खड़ा कर लुढ़क गया। सिर से फव्वारा-सा निकला। खून उसके चेहरे को भिगोते हुए आँखों में छाने लगा। फिर एकदम अंधकार छा गया।

× × ×

उस दिन मुरली को अपना काम खतम करके कार्यालय छोड़ते वक्त दो बज गये। भारी थकान महसूस होने पर भी बड़ी देर तक नींद न आयी। शारदा को वह भूल न पाया। अपने प्रेम की निष्फलता उसे कचोटने लगी थी। अतीत की स्मृतियाँ उसे अकुलाने लगीं। वह अपनी मूक वेदना को किसी से प्रकट नहीं कर सकता। दिल ही दिल में उन यादों को हमेशा-हमेशा के लिए दफना देना है। अलावा इसके कोई चारा नहीं। उसे इसका भान न रहा कि नींद कब उसकी पलकों पर उतर आयी।

किसीने ज़ोर से दरवाजा खटखटाया कि मुरली की नींद टूटी। नींद से भारी पलकें खोले आँखें मींचकर देखा। द्वार पर स्वामीनाथन् खड़ा था। दरवाजा खुलते ही वह बड़बड़ाया—"सर! शिवरामजी की मृत्यु हो गयी। विप्लवपार्टी कार्यालय के पास वे मरे पड़े हैं।"

मुरली पर मानो पहाड़ टूट पड़ा। हतप्रभ-सा वह कुछ क्षण खड़ा था। मुँह से कोई शब्द न निकला। फटी-फटी आँखों से स्वामीनाथन् की ओर देखता रहा।

"सर ! कल रात भर मैं कार्यालय में ही रहा। सबेरे घर लौट रहा था, तब देखा पार्टी कार्यालय के पास भीड़ लगी है। तुरन्त वहाँ जाकर देखा···सर, खिड़की के पास धरती पर शिवराम मरे पड़े हैं। पार्टी वाले कह रहे थे—उन्होंने ऊपरी छत से गिरकर आत्म हत्या कर ली है।"

अगले कुछ क्षणों में मुरली की मोटर गाड़ी तेज रफ्तार से पार्टी कार्यालय की ओर जा रही थी।

तैंतीस

असेम्बली में सदस्यों की चीख-पुकार मची थी। अध्यक्ष उन्हें शान्त न कर पाये। विपक्षी दल के एक सदस्य कुछ कहने के लिए उठे तो सरकारी पक्ष वालों ने चिल्लाकर उन्हें बोलने न देने का प्रयत्न किया। विपक्षी सदस्य अपनी बात पर डटे खड़े थे, बैठे नहीं। उन्होंने कहा—"न्याय व सच्चाई को चीख पुकार मचाकर छिपा नहीं सकते ? शिवराम की मृत्यु के मामले पर छानबीन करने के लिए एक जाँच कमेटी नियुक्त होनी चाहिये।"

पुलिसमंत्री ने फरमाया—कमेटी की कोई जरूरत नहीं। शिवराम की जेब में एक चिट्ठी थी जिसमें उन्होंने लिखा है कि वे स्वयं आत्महत्या कर रहे हैं। यह आत्महत्या है, इसमें कोई सन्देह नहीं।"

विपक्षी सदस्य ने चुनौती दी—"माननीय मंत्री महोदय को इसका पूरा सबूत मिल गया है कि मृतक की जेब में जो चिट्ठी थी वह स्वयं उसकी ही लिखी है।"

मंत्री ने जवाब दिया—"सरकार को अब तक पूरा विवरण प्राप्त नहीं

हुआ है। विवरण मिलते ही सभा के सम्मुख पेश करूँगा।"

"भारतमणी के संपादक ने लिखा है कि मृतक की जेब में से जो चिट्ठी मिली है, वह उसकी लिखी नहीं है।"

"भारतमणी के संपादक को इसमें दखल देने की कोई जरूरत नहीं।" मंत्री फुफकार उठे।

"सरकार जो करने से चूक गयी, उसे 'भारतमणी' के संपादक प्रकाश में लाये हैं। मृतक शिवराम उनके मित्र हैं। मित्र की लिखावट से वे परिचित हैं।"

"पुलिस विभाग ने मामले को अपने हाथ में लिया है। अतः दूसरों को इसमें हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं।"

"पुलिस अधिकारी जब अपना फर्ज अदा नहीं कर रहे हैं, तब जनता को उस जिम्मेदारी को अपने ऊपर लेना पड़ेगा।"

"लाश का पोस्टमार्टम हुआ है। डाक्टर ने रिपोर्ट दी है।"

"डाक्टर की रिर्पोट यह कहती है कि सिर पर भारी चोट लगने से मृत्यु हुई है। उन्होंने घोषित नहीं किया है कि यह आत्महत्या है।"

"डाक्टर ने अपनी रिप्रोर्ट में इसका भी उल्लेख किया है कि छत पर से उलटे सिर गिरे, ऐसी चोट लगने की संभावना है। शायद माननीय सदस्य ने इस पर ध्यान नहीं दिया है।"

विपक्षी सदस्य गरज उठे—"छत पर से कूदकर आत्महत्या कर ली है यह विप्लव पार्टी वालों का कहना है। मृतक की जेब में जो चिट्ठी थी वह जाली है। सरकार अपना फर्ज अदा करने से चूक गई है।"

तुरन्त विपक्षी दल के अन्य सदस्य चिल्ला उठे—शर्म—शर्म...।

एक और विपक्षी सदस्य ने धमकी दी—"शिवराम की मृत्यु की जाँच करने को एक जाँच कमेटी नियुक्त नहीं हुई तो मैं अनशन करूँगा।"

"खुशी से कीजिएगा—" सत्ताधारी पार्टी के एक सदस्य ने धीमी आवाज में कहा—"अकाल के इन दिनों में अनशन करना जरूरी है।"

एक मार्क्सवादी ने आवाज उठायी—"मैं भी अनशन करूँगा।"

एक और मार्क्सवादी ने कहा—"इस गड़बड़ी का कारण 'भारतमणी' है ! उस पत्रिका को बैन करके उसके संपादक को जेल भेज देना

चाहिये ।"

विपक्षी दल के एक सदस्य उठकर ऊँची आवाज में चिल्लाये—"क्या इस देश को चीन समझ लिया है? यहाँ लेखन की आजादी है।"

असेम्बली में भगदड़-सी मच गयी। अधिकांश सदस्य आवेश में थे। अध्यक्ष सभा में शान्ति स्थापित करने में असमर्थ हो गये। सभा को अगले दिन के लिए स्थगित कर वे असेम्बली हॉल से निकल गये।

असल में मुरली ही इस गड़बड़ी और विवाद का कारण था। घटना-स्थल पर जाकर शिवराम की लाश को देखते ही मुरली को सन्देह हो गया। उलटे सिर पड़े शिवराम को उसने ध्यान से देखा। केवल सिर पर करारी चोट लगी थी। उससे निकला खून इधर-उधर जम गया था। शरीर पर और कहीं कोई चोट न लगी थी। छत से गिरा होता तो शरीर पर और भी कहीं न कहीं चोटें लगी होंगी। कम-से-कम कहीं से चमड़ा छिल गया होता, खरोंच लगी होती। कुछ भी न हुआ था। मुरली को लगा किसी ने सिर पर घातक चोट मारकर उसे मारा है, और लाश को यहाँ पटक दिया है।

उसी शाम को विप्लव पार्टी वालों ने एक मौन जुलूस निकाला। नल्लदम्बी ने जुलूस का नेतृत्व किया और शिवराम की लाश को श्मशान ले जाकर चिता पर रख दिया। मुरली ने पुलिस अधिकारियों के पास दरख्वास्त पेश की कि मृत्यु संदेहास्पद होने के कारण लाश को हथियाकर फिर से जाँच की जाए। मगर किसी ने उसकी एक न सुनी।

अगले दिन 'भारतमणी' में मुरली ने एक विस्तृत लेख प्रकाशित कर कुछ रोमांचक तथ्यों के साथ शिवराम की मृत्यु अपने संदेहों को उद्घाटित किया। पुलिस अधिकारियों के रूखे व्यवहार व लापरवाही पर प्रकाश डालकर, सरकारी नीति का जोरदार खण्डन किया। इसी लेख के कारण उस दिन असेम्बली में उतना हल्ला मचा था और विपक्षी सदस्यों का आक्रोश सत्तारूढ़ दल पर उतरा था।

गत दस दिनों से शिवराम की उस दुःखद मृत्यु की छानबीन करके मुरली काफी थक गया था। इसके पीछे कौन-सा कुचक्र चला, दोषी कौन है, इस खोज में उसने बड़ी तीव्रता दिखायी। थका माँदा-सा जब शिवराम

के घर गया तो देखा शिवराम की वृद्धा माता चटाई पर पाँव समेटे निर्जीव-सी पड़ी है। दस दिन के अन्दर में वह बिलकुल टूट गयी थी। इकलौता बेटा जो उसके बुढ़ापे का सहारा था, उसके हाथ से छिन गया। बुढ़िया इस भारी धक्के से तिलमिला उठी। उसका दुःख मुरली से सहा न जा रहा था। कोई भी उसे साँत्वना न दे पाया। बेटे की मृत्यु की खबर आते ही वह विक्षिप्त सी हो गयी। फटी-फटी आँखों से शून्य की ओर ताकती रही। उसकी रीति आँखों ने न किसी को पहचाना, न किसी की बातें उसके कान में पड़ीं।

शारदा ही उसकी देखभाल कर रही थी। उसे अपने साथ बंगले पर आने के लिए लाखों बार कहा, विनती की। मगर पट्टम्माल ने उस घर से बाहर निकलने से साफ इंकार कर दिया। रोज मुरली उसका हाल-चाल देखने आया करता था। उस दुखिया का दग्ध हृदय उसी के स्नेहपूर्ण शब्दों में थोड़ा आश्वासन पाता था।

एक दिन वृद्धा मुरली के दोनों हाथ पकड़ कर रुआँसी आवाज में गिड़-गिड़ायी—"बेटा ! मैं मर जाऊँ तो तुम मेरी चिता में आग लगाओगे ? जिसका भरोसा था वह मुझे अनाथ करके चल बसा।" मुरली एकदम विचलित हो गया। उसकी आँखों में आँसुओं की बाढ़ आ गयी। बुढ़िया के दोनों हाथों को आँखों से लगाकर गद्‌गद् स्वर में कहा—"माँ जी···मैं भी तो आपका बेटा हूँ न ? आप यों अकेली क्यों हैं ? मेरे साथ आ जाईये न ? मैं भी तो अकेला हूँ। मेरा भी कोई नहीं है।"

पट्टम्माल ने स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरा। कहा कुछ नहीं। लम्बी आहें भरकर रह गयी। उस घर को छोड़ने का उसका मन न था। धीरे से कहा—"बेटा, मुझे यहीं रहने दो। तुम और वह बिटिया दोनों मेरी खबर लेते ही रहते हो। मुझे चिन्ता काहे की ?"

मुरली विवश रह गया। वहाँ से वह सीधे प्रोफेसर के बंगले पर पहुँचा। प्रोफेसर बरामदे में सोफे पर बैठे चुरुट का छल्ला छोड़ रहे थे। मुरली को देखते ही चुरुट को हटाते हुए पूछा—"कुछ पता लगा है ?"

"हाँ ! जहाँ तक पता मिला है, क्ल्यू प्राप्त है, निस्सन्देह यह हत्या ही है। स्वामीनाथन् ने जितने फोटो खींचे हैं, सबमें शिवराम के सिर पर

चोट ही दिखाई देती है। शरीर पर और कहीं न कोई घाव है, न चोट।" मुरली ने कहा।

"आई सी···।" कमलस्वामी ने फिर से चुरुट को मुंह में दाब लिया। थोड़ी देर कोई न बोला।

मुरली ने मौन तोड़ा—"उन सभी फोटों को 'भारतमणी' में प्रकाशित करके सिद्ध करूँगा कि यह आत्महत्या नहीं—हत्या है। असेम्बली के सदस्यों ने इस मामले को उठाया है। इसका निष्कर्ष निकालने तक, न्याय पाने तक, मैं दम न लूंगा।" उसकी आवाज में आक्रोश था।

"जो होना था, हो गया। बुरा सपना सा उसे भूल जाओ। अनावश्यक इतनी परेशानी, दौड़-धूप क्यों कर रहे हो?" प्रोफेसर ने रुखाई से कहा तो मुरली भौंचक्का सा रह गया। वे तो बड़ी शान्ति से चुरुट का रस ले रहे थे। उनके तटस्थ चेहरे पर कोई भाव न था। शिवराम की मृत्यु का उन्हें जरा भी दुःख व संताप दिखाई न पड़ा।

मुरली ने जोर से कहा—"सर! वह मेरा मित्र था।"

"ऑल राइट···ऑल राइट···वह चल बसा···क्या करें? मुरली! जब वह इस पार्टी में मिल गया—तभी इन सब खतरों की संभावना थी न? जानता था कि वह निरापद नहीं है।"

आहत-सा मुरली उनकी तरफ घूरता रहा। फिर गंभीर होकर कहा, "वह आपका होने वाला दामाद भी था।"

"यैस! यैस! अच्छा हुआ कि···पिंड छूटा···नाऊ दि प्राब्लम इज़ ओवर।" प्रोफेसर ने आराम की साँस ली।

मन ही मन मुरली बौखला उठा—ओह! शिवराम की मृत्यु को कितने हलके से उड़ा दिया इन्होंने। प्रकट में जरा कड़ाई के साथ कहा—"लेकिन समस्या का अंत नहीं हुआ है। आपके लिए अब नई समस्या आ पड़ी है।"

उन्होंने प्रश्नसूचक भौंहें उठाकर उसकी ओर देखा।

"शारदा की समस्या।"

"ओ! दैट ईज़ ऑल राईट! उस दिन ज़रा शॉक सा लगा था। अब संभल गयी है। पुरानी बातों सासबको भूल जाना चाहिए! ऊपर बैठी है।

जाकर देखो न ?"

मुरली उठ खड़ा हुआ। रुखाई से बोला—"अभी मुझे थोड़ा काम है। फिर आऊँगा।"

प्रोफेसर चकित सा उसकी ओर देखता रहा। उसके चेहरे पर गहरी निराशा थी। जैसे इसका उसे बिलकुल ख्याल न हो, मुरली ने कार स्टार्ट कर दी।

प्रोफेसर पर उसे गुस्सा आ रहा था। उसका सारा क्रोध स्टीयरिंग पर उतरा कि कार भीड़ को चीरती निकल रही थी। विभिन्न विचारों के तूफान चल रहे थे। अन्त में जरा शान्त होने पर उसे प्रोफेसर पर दया आयी।

उन्होंने बड़ा मनोराज्य बना रखा था। उसकी यह चिराकांक्षा थी कि वह उनका···बेचारे ! अपने सपने को अब सत्य बनाना चाहें तो उनका क्या दोष ?

घर में आते वक्त काफी थकान महसूस हो रही थी। नल खोलकर उसके नीचे खड़ा हो गया। शीतल पानी के स्पर्श से उसकी सारी थकावट धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही थी। लेकिन मन ? वह तो अब भी भारी लग रहा था। उसकी थकान कैसे दूर होगी ? चिन्ताओं से उसे मुक्ति कब मिलेगी ? मन को अपनी ही इच्छा पर चलना छोड़कर वह बड़ी देर तक नहाता रहा।

शारदा का वह उदास चेहरा उसकी आँखों के सामने घूमता रहा।

शिवराम से उसका प्रेम ! केवल उसी के लिए उसका विप्लव पार्टी में शामिल होना—आदि बातें याद आते ही मुरली का दिल उसके प्रति दयार्द्र हो उठा। सोचा—'हाय ! बेचारी···।'

शिवराम के साथ बिताये दिनों का स्मरण आया। होस्टल में दोनों कितने आनन्द के साथ अपने दिन बिता रहे थे। कितने ज़ोर के वाद-विवाद में उलझ पड़ते थे। वे परस्पर विरोधी विचारों के होते हुए भी उनमें कितनी गहरी दोस्ती थी···मुरली की आँखें इन यादों से भर आयीं। शिवराम ! साहस का पुतला ! वीरता का मूर्तिमान रूप ! उसका कैसा दय-नीय अन्त हो गया। वह दृश्य आँखों के सामने आते ही वह फफक-फफक

कर रो पड़ा। उसके गरम-गरम आँसू नल की शीतल धारा से घुल-मिल कर बहने लगे।

अगले दिन कार्यालय में प्रवेश करते ही स्वामीनाथन् सामने आया। उसके चेहरे पर हवाईयाँ उड़ रही थीं, बुदबुदाया—"गोविन्द चेट्टी कम्पनी से वकील का नोटिस आया है।"

"क्योंकर ?" मुरली ने चौंककर पूछा।

"प्रिन्टिंग इंक खरीदी थी। उसका पैसा देना बाकी है। एक हफ्ते के अन्दर पैसा न चुकाया तो कानूनी कार्रवाई की जाएगी।"

"कितना देना है ?"

"तीन हजार।"

"जब पाँच हजार देना था तब हम पर उन्हें विश्वास था ?"

सुना है···आदिमूलम् उस कम्पनी के मैनेजर से मिले थे। उन्होंने ही भड़का दिया होगा। मैनेजर को रिश्वत देकर फुसलाया होगा। उस कम्पनी के हेडक्लर्क ने मुझे सारी बातें बतायीं हैं।" स्वामीनाथन् ने एक ही साँस में सारा ब्यौरा दे दिया।

मुरली को कुछ न सूझा। उसे रत्ती-भर भी आशा न थी कि उसके विरुद्ध ऐसे षड्यंत्र रचे जायेंगे। उसके दिल में क्रोध की आँधी उमड़ने लगी।

"उन्होंने स्याही देने से इन्कार कर दिया है।"

"सारे शहर में अकेले यही कम्पनी स्याही का व्यापार करती है ? और किसी कम्पनी से ले लेना।" मुरली ने झल्लाकर कहा।

"और चार-पाँच कम्पनियाँ हैं। लगता है आदिमूलम् ने उन्हें भी हमें स्याही देने से मना किया होगा।"

"वह कौन होता है उन्हें मना करने वाला ?"

"कहा होगा···एक कम्पनी को तीन हजार देना बाकी है। इसी-लिए तो वे लोग एक हजार रुपये एडवान्स मांग रहे हैं। हमारे पास जो स्याही का स्टॉक है वह केवल दस दिन चल पायेगा।"

"छि ! छि !···नोटिस दिया है। 'भारतमणी' को यह दिन भी देखना पड़ा···।" क्रोध से फुफकारें भरते हुए मुरली ने जल्दी से बैंक पासबुक

निकाल कर देखा तो दिमाग चकराया। स्वामीनाथन् की ओर विवशतापूर्ण दृष्टि डालता हुआ, जैसे एक निश्चय पर आ गया हो, कमरे से बाहर निकल गया।

जो न्यूज़प्रिन्ट स्टॉक में थी उसे एक बैंक में गिरवी के रूप में रखकर छः हजार रुपये ले लिया। रुपये लेकर कार्यालय में लौटते वक्त तक दो बज गये। भूख के मारे चेहरा सूख गया था। सीधे स्वामीनाथन् के सामने जाकर नोटों के बंडल को मेज पर डाला।

"गोविन्द चेट्टी को कितना बाकी चुकाना है उसे दे दो। आगे से वहाँ स्याही खरीदने की जरूरत नहीं। और किसी कम्पनी में एडवान्स देकर ले लेना।"

स्वामीनाथन् ने गिनकर देखा। पूरे चार हजार थे। विस्मय से मुरली की ओर देखते हुए पूछा—"सर ये रुपये···?"

बात काटकर मुरली ने कहा—"न्यूज़ प्रिन्ट को बैंक में रेहन रखकर लिया है।"

"हाय···फिर हम क्या करेंगे ?"

"डरो मत ! पूरा न्यूज़प्रिन्ट नहीं दिया है। आधा यहीं पड़ा है जो तीन महीने के लिए काफी है। फिर देख लेंगे क्या होता है। अबकी समस्या का हल हो गया न ?"

"नहीं सर।" स्वामीनाथन् ने धीमी आवाज में कहा। आज की डाक से यह नोटिस भी मिला है। इस मकान के मालिक ने तीन महीने का किराया, जो बाकी है माँगा है। बारह सौ रुपये एक हफ्ते के अन्दर न चुकाये तो···कानूनी कार्रवाई की जाएगी।"

भभकती ज्वाला में घी पड़ गया। चिल्लाकर कहा—"सब मिलकर मुझे मिटाने पर तुले हैं क्या ? चाहे कराल कालदेव आकर रास्ता रोक लें 'भारतमणी' का प्रकाशन मैं बन्द नहीं करूंगा। लो···इसे उसके मुंह पर दे मारो। बारह सौ ही चाहिए न ?" मुरली जेब में से बाकी दो हजार के बंडल को मेज पर फेंक कर अपने कमरे में चला गया।

स्वामीनाथन् की बड़ी अजीब हालत थी। मेज पर पड़े रुपयों के बंडलों को अपलक ताकता रहा। मुरली की मनोदशा उससे छिपी न थी। इस वक्त

और बाकी पड़े बिलों के बारे में उससे कैसे कहे, इसी उधेड़बुन में वह खड़ा रहा।

टेलिफोन का बिल आठ सौ तीस, बिजली का बिल तीन सौ चालीस, बाकी थे। अलावा कुछ दूकानों की छोटी मोटी रकमें बाकी पड़ी थीं। अगले दस दिनों के अन्दर टेलिफोन और बिजली का बिल न चुकायें तो वे कट जायेंगे। बिजली के बिना यंत्र कैसे चलेंगे।

थोड़ी देर वह सोचता बैठा रहा। फिर बिलों को बटोरा और उस दिन की डाक के साथ मुरली की मेज पर रख आया। चिट्ठियों को एक-एक करके देखते समय मुरली की नजर बिलों पर पड़ी। उन्हें देखते ही पेट में कुछ खलबली सी मची। इतना निश्चित है वह भूख के कारण नहीं। खाने का वक्त काफी गुजर गया था अब भूख ही न रही। केवल वेदना, व्याकुलता का दर्द है वह। थोड़ी देर वह माथे को हथेली पर टिकाये बैठा था। विपत्तियाँ अकेली नहीं आतीं···चोट पर चोट लगती जा रही है। एकाएक उसे हँसी आ गयी। अच्छा हुआ कि स्वामीनाथन् वहाँ पर न था। होता तो समझता मुरली पागल हो गया है।

मुरली अपने आपसे बुदबुदाया—'अरे! डरो मत! आगे भी तुम्हें और धीरज रखना है। ये सब आखिर तुच्छ सी बातें हैं।' जैसे एक निश्चय पर आ गया हो वह तेजी से स्वामीनाथन् के कमरे में गया—"और कितना धन चाहिए? अपने वेतन को भी मिलाकर बताना।"

मुरली की यह बात सुनकर स्वामीनाथन् दंग रह गया। फिर कहा, "सर! मेरे वेतन की अभी क्या चिन्ता है? पहले फ़ोन और बिजली का बिल अदा कर दें, फिर संभाल सकते हैं।"

मुरली ने दृढ़ता से कहा—"नहीं-नहीं एक साथ मैं सबका हिसाब चुकाना चाहता हूँ।"

"तब तो किसी से कर्जा ले के···?"

"ऐसे हाथ पसारते और कितने दिन पत्रिका चलायेंगे? इस तरह मांगने से बढ़कर···पत्रिका को बन्द कर दें तो अच्छा।"—मुरली ने विरक्ति से कहा। फिर बोला—"मैं गाँव जा रहा हूँ। दो दिन में आ जाऊँगा।"

वह सीधे गाँव गया, बची-खुची जमीन-जायदाद बेच डाली। उसके मामा ने बहुत कुछ कहा। कोई फायदा न हुआ। दो दिनों में बीस हजार रुपये लिये वह शहर वापस आ गया। अब उसकी सारी जायदाद बिक गयी। केवल एक मकान बाकी है, जमीन बेचकर रुपये देते वक्त मामाजी रो पड़े। आंसू से भरा उनका चेहरा रह-रहकर उसे याद आ रहा था। जितना 'भारतमणी' को रोकने के प्रयत्न हो रहे थे और विपक्षियों की मोरचा बन्दी हो रही थी, उतना ही मुरली हठ पकड़े बैठा था। कोई भी उसका इरादा बदल न पाया।

गाँव से लौटते ही उसने सारा बिल चुकाने का प्रबन्ध कर दिया। और अगले दिन सबेरे 'भारतमणी' का जो एडिशन निकलना था, उसकी भी देखभाल करके घर लौटते वक्त लगभग तीन से ज्यादा हो गये। बिस्तर पर लेटा ही था कि किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। अनमने से भाव से उठकर द्वार खोला तो प्रोफेसर और शारदा खड़े थे। दोनों का चेहरा घबराहट और भय से पीला पड़ गया था। शारदा थर-थर काँप रही थी। प्रोफेसर हक्के-बक्के नजर आये।

मुरली ने बारी-बारी से उन दोनों की ओर देखा। प्रोफेसर घबराये स्वर में बड़बड़ाये—"मुरली ! लगता है विप्लव पार्टी हम दोनों को भी जिन्दा न छोड़ेगी।"

"क्यों ? क्या हुआ ?"

"गत दो-तीन दिनों से कोई शारदा का पीछा कर रहा है। कल जब हम दोनों घर में न थे तब किसी ने आकर नौकर से पूछताछ की है।"

"क्या पूछा था उसने ?"

"यही···कि शारदा कब घर लौटती है ! कहाँ-कहाँ जाती है ? उससे मिलना हो तो कहाँ मिल सकते हैं ? लेडीज़ क्लब में जाया करती है क्या ?···मुरली ! वह ताक-झाँक करने आया है। पूछने पर भी अपने बारे में कुछ नहीं बताया।"

मुरली के माथे पर चिन्ता की रेखाएँ उभर आयीं।

"आज रात के सात बजे शारदा और उसकी सहेली क्लब से घर लौट रही थीं। तब अकस्मात् देखा कि कोई उन दोनों को देखते ही पेड़ की आड़

में छिप गया है। अच्छा हुआ कि वह सकुशल घर लौट आयी।"··· प्रोफेसर ने लंबी साँस ली।

"फिर क्या हुआ ! रात के इस वक्त···?"

प्रोफेसर ने बात काटी— "मुरली ! लगता है कोई हत्यारा इसके पीछे हाथ धोकर पड़ा है। इसकी हत्या करना चाहता है। रात एक बजे के लगभग खिड़की के जरिए झाँका है। भली बात है कि तब तक यह सोयी नहीं थी। खिड़की के पास किसी की छाया देखते ही धीरे से उठकर स्विच दबा दिया इसने। तुरन्त वह नल के पाईप के सहारे नीचे उतरकर भाग गया। आहट पाकर मैंने भी खिड़की से देखा—कोई नल पकड़े नीचे उतर रहा था। द्वार खोलकर मेरे बाहर निकलने के पहले वह कम्पाउण्ड फांदकर भाग गया—" कहते-कहते प्रोफेसर की साँस फूल गयी। शरीर पसीने से तर हो गया। मुरली ने मुड़कर शारदा को देखा। भयभीत हरिणी सी वह त्रस्त आँखों से उसे देख रही थी। शरीर पर कंपकंपी दौड़ रही थी। भय से थरथराते स्वर में बोली— "बेशक···यह पार्टी का ही षड़यंत्र है। शिवराम के साथ मैं भी पार्टी में सैद्धान्तिक परिवर्त्तन लाने का तीव्र प्रयत्न कर रही थी। उसी का फल है यह।"

"वह कौन था ? देखा तुमने ? पार्टी का था वह ?"

"पता नहीं कौन है। झुरमुटे में कुछ पहचान न पायी। यह पार्टी की ही करतूत है, इसमें कोई सन्देह नहीं। शिवराम के साथ मेरा भी काम तमाम कर देना चाहते हैं। एक तरह से यह भी अच्छा ही है। मेरी आत्मा को शान्ति मिल जाएगी।" शारदा फूट-फूटकर रोने लग गयी।

प्रोफेसर ने पूछा—"पुलिस में रिर्पोट करें ?"

"क्या फायदा ? शिवराम के मामले में ही वे कुछ न कर पाये··· अच्छा हो शारदा कुछ दिन कहीं छिपी रहे।" मुरली ने कुछ सोचकर कहा।

"जायेगी कहाँ ?" प्रोफेसर ने दीनता से पूछा।

"चाहे तो मेरे साथ इस घर में रहे। कोई पूछे तो कहिए कि बंगलोर या कोयम्बत्तूर चली गयी है। चार-पाँच दिनों में मैं उसे दिल्ली पहुँचा दूंगा।"

"फिर ?"

"फिर···आगे भी सोच लेंगे। फिलहाल अज्ञातवास करे।"

शारदा मुरली के सुझाव पर सहमत हो गयी। उसे वहीं छोड़कर प्रोफेसर वापस लौटे। जाने के पहले उन्होंने कहा—"मुरली, दिल्ली में जितने दिन चाहो रहिएगा। सारा खर्च मैं दूंगा।"

अकेले शारदा का खर्च दे दें—काफी है···" मुरली ने जरा कड़ाके के साथ कहा। प्रोफेसर का चेहरा यह सुनते ही मुरझा गया। बोले—"मेरे लिए तुम दोनों बराबर हो। मुरली ! तुम क्यों ऐसे विमुख हो रहे हो ! उनकी आवाज भरी थी।"

"मैं अपने निजी काम से दिल्ली जा रहा हूँ। साथ में शारदा को भी ले जाऊँगा। बस···इसीलिए ऐसा कहा था।" मुरली ने समझाने की कोशिश की।

कार में चढ़ते वक्त प्रोफेसर ने फिर कहा—"मुरली ! आखिर··· शारदा को तुम्हारे हाथ सौंप रहा हूँ।"

मुरली ने मुस्कुराते हुए कहा—"घबराओ मत ! उसे सकुशल आप के पास लौटा दूंगा।"

यह सुनते ही प्रोफेसर का मुँह कितना उदास हो गया, इसका उसे बिलकुल भान न रहा।

प्रोफेसर ओठों में ही बुदबुदाये—"आगे से यह तुम्हारी ही है।" लेकिन उनकी आवाज मुरली के कान तक न पहुँची।

चौंतीस

मुरली ने कहा—"स्वामीनाथन् ! अगले हफ्ते तुम्हारे बदले मैं दिल्ली जा रहा हूँ।"

"क्यों सर ! मेरी पट्टी खुल गयी—मुझे कोई दिक्कत नहीं है।" स्वामीनाथन् ने कहा।

"दिल्ली में मुझे थोड़ा काम है। इसलिए मैं जाऊँगा। तुम यहीं का काम संभालना। अकेले संभाल लोगे न ?"

"ओ ! यस सर···आप चिन्ता न करें। संपादकीय लेख···।"

"मैं वहाँ से भेजता रहूँगा···।"

दिल्ली न जाने का दुख रहने पर भी स्वामीनाथन् को इस बात की खुशी थी कि उसे 'भारतमणी' को अकेले निकालने का अनोखा मौका मिला हैं। पूछा, "सर ! चन्द्रमोहन और शशिरेखा की एक नयी फिल्म आई है। मैं रिव्यू करूँ ?"

"एक बार हाथ की हड्डी टूट गयी इतना काफी नहीं ?"—मुरली ने हँसते हुए पूछा।

स्वामीनाथन् ने आवेश के साथ कहा—"मेरे हाथ को उसने तुड़वाया, मैं उसकी धज्जियां उड़ा दूंगा।"

"यदि उसने अच्छा एक्टिंग किया हो तो ?"

"एक्टिंग···सर···एक्टिंग वह क्या खाक जानती है ? कल मैंने वह फिल्म देखी थी बिलकुल भद्दी···राट्टन···।"

"अच्छा-अच्छा···रिव्यू लिखकर रखना। बाद में मैं आकर देखूँगा।" इतना कहकर मुरली कार्यालय से निकल गया।

मुरली जिस मकान की छत पर रहता था आजकल शारदा वहीं

वन्दिनी थी। उसे अन्दर रखे मुरली बाहर से ताला लगा कर गया था। विप्लवपार्टी को शारदा की गंध न लग जाए, इस बात के लिये वह सावधान था। पूछने वालों से कहा गया कि शारदा बंगलौर गयी है। कमरे में इस तरह पड़ा रहना शारदा के लिए असह्य था। मन ही मन अपनी हालत पर वह बौखला उठी। मुरली के साथ अकेले रहने में वह संकोच का अनुभव कर रही थी। एक ही छत के नीचे उसके साथ रात बिताने में वह शरमायी। बेधड़क उससे बातें करना उसके लिए कठिन हो रहा था, मगर मुरली के सहज स्वभाव, स्नेह और सौजन्यता पूर्ण व्यवहार से वह थोड़ा आश्वस्त हुई।

चार पाँच दिन गुजर गये। एक दिन शाम को शारदा मुरली के कमरे में जाकर पढ़ने के लिए कोई पुस्तक ढूँढ़ने लगी तो उसकी डायरियाँ हाथ लगीं। दूसरों की डायरी पढ़ना शिष्टता नहीं ऐसा बुद्धि ने चेताया, मगर उतावला मन बेकाबू था।

कॉलेज के दिनों की डायरियों के पन्ने उलटने लगी। पढ़ते-पढ़ते उसका जी धक् से रह गया। पन्नों के साथ-साथ उसका दिल फड़फड़ाने लगा। वेदना से विह्वल हृदय घोर पछतावे और ग्लानि से भर आया। आँखों से आंसू की अजस्र धारा वह निकली। उसे इसकी बिलकुल आशा नहीं थी कि मुरली ऐसे एक रहस्य को दिल ही दिल में दबाये तिल-तिलकर जलता रहेगा। उन दिनों की धुंधुली यादें आयीं। वह जितना उससे उलझती, लड़ती झगड़ती रही, उतना ही वह उससे आत्मीयता जताता रहा, स्नेह पूरित व्यवहार करता रहा—शारदा अब उसका असली कारण समझ पायी तो चोट खाई सी रो पड़ी।

ओह ! मुरली ! कैसा उदार है ! कैसी उच्चाकाँक्षा से प्रेरित हो अपनी भावनाओं को संयत कर मन को वश में रख लिया है। भूलकर भी अपनी भावनाओं को प्रदर्शित नहीं किया जिससे वह उसके अन्दर मन की आकाँक्षाओं को ताड़ ले। मुरली की नेकनीयती और सज्जनता का ख्याल करते ही वह सिहर उठी।

शारदा से अपनी पहली मुलाकात से लेकर, उसका मन शिवराम की तरफ खिंचने तक का पूरा विवरण मुरली की डायरी में पढ़ते-पढ़ते वह

सिसकने लगी। असल में उसकी डायरी एक अद्‍भुत काव्य था। प्रणय की विह्वलता, हृदयगत भावों के मर्मस्पर्शी उद्‍गार, भग्न हृदय की निराशा व तड़पन ने शारदा के दिल को झकझोर डाला। वह डायरी नहीं शोक-काव्य था। उन पन्नों में अंकित एक घटना को पढ़ते ही वह बेचैन हो उठी। उसका हृदय फटा जा रहा था। अब तक इस सच्चाई को वह कैसे जान न पायी ? उसे अपने आप पर गुस्सा आया।

मुरली ने लिखा था कि शारदा के एम० ए० में सारे प्रान्त में सर्व-प्रथम आने के लिए उसने जान बूझकर असफलता को गले लगाया है। यह पढ़ते ही शारदा का दिल ग्लानि से भर आया। अपनी सफलता पर उसने जो गर्व पाल रखा था वह पल भर में हवा हो गया। ओह ! कितना भारी धोखा खाना पड़ा है उसे। शारदा को अपनी निराशा से ज्यादा मुरली का यह अपूर्व त्याग धधकती ज्वाला सा जलाने लगा। सोचा—अब वह कौन-सा मुंह लिये उसे देखेगी। उसका साहस छुटता जा रहा था। बड़ी मुश्किल से उसने अपनी भावनाओं को दबाये रखा था।

दिल्ली जाने के पहले एक दिन को शारदा ने मुरली से कहा, "आप मेरे लिए इतना कष्ट क्यों उठा रहे हैं ? मेरे लिए आप मुसीबत न झेलें।"

मुरली ने आँखें उठाकर स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए कहा—"इसमें मुसीबत की क्या बात है ? जब तुम आफतों से घिरी हो यह कौनसी बड़ी बात है ? शारदा ! प्रोफेसर ने तुम्हें मेरे हाथों में सौंपा है।"

"तब तो पिताजी के लिए ही आपने यह उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया है ?" शारदा उसकी ओर तेज निगाहों से देखती हुई मुस्कुरायी।

"तुम्हारा यही ख्याल है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं।" मुरली ने निश्चल स्वर में कहा।

मुरली के ये शब्द शारदा के दिल पर चाबुक की चोट से लगे। उस मार्मिक चोट से संभलकर उसने हँसने की कोशिश की। लेकिन उसकी वह हंसी निष्प्राण थी…नीरस थी।

अगले दिन रात को दोनों हवाई जहाज से दिल्ली गये। हवाई जहाज में यात्रा करते वक्त भी उसका मन अशान्त था। वह विचारों के भंवर में गोता लगा रही थी। हवाई जहाज तेज रफतार में था। जरा भी झटका

या धक्का न लगा था। लेकिन शारदा के हृदय में उथल-पुथल सी मची थी। चिन्ताएँ जबरदस्ती उसे धक्का देकर उलट-पुलट कर तिलतिल नोचती रहीं। ऐसे घोर अन्तर्द्वन्द्व में भी स्नेह का हाथ बढ़ाकर उसको आश्वासन देने को मुरली पास बैठा है, यह ख्याल उसे तसल्ली दे रहा था।

× × ×

दिल्ली के हवाई अड्डे पर सनसनी फैली थी। हर कोई चीनियों के आक्रमण की चर्चा कर रहा था। सबके चेहरे पर परेशानी नजर आयी। देश पर भारी खतरा आ पड़ा है, इसके आसार राजधानी में सर्वत्र दीख पड़े। मुरली और शारदा एक होटल में ठहरे। शारदा को कमरे में छोड़कर मुरली संसद भवन गया। जाने के पहले शारदा से कमरे का द्वार अन्दर से बन्द करने के लिए कह गया।

संसद भवन के बरामदे में समूहों में खड़े संसद सदस्य बातें कर रहे थे। मुरली उनके पास जाकर बात करने लगा। एक मेम्बर की ओर देखकर हिन्दी में पूछा—"सीमा पर दुश्मन ललकार रहा है, प्रधानमंत्री का विदेश जाना क्या उचित है ?"

गाँधी टोपी वाले एक उत्तर भारतीय सदस्य गुस्से से उसकी तरफ देखते हुए गरज उठे—"वे जहाँ कहीं जाएँ, आपकी अनुमति लेनी पड़ेगी क्या ?"

मुरलीं हँस पड़ा।

"आपके ख्याल में प्रधानमंत्री सर्वेसर्वा हैं, उन पर टिप्पणी न हो। यह डेमोक्रेटिक देश है, याद रखना।" एक काले चश्मेधारी ने टोका।

गाँधी टोपी वाले ने उसकी ओर आँखें तरेरीं।

मुरली ने इस तमाशे का रस लिया।

गाँधी टोपी वाले ने उत्तेजित स्वर में कहा—"देश का प्रशासन कैसा हो यह प्रधानमंत्री को विदित है।"

काले चश्मेधारी ने ताना मारा—"मगर इतनी सी बात समझ न पाये कि पड़ोसी हमारा दुश्मन है या दोस्त !"

"कौन जानता था कि वह मुँह में राम बगल में छुरी वाला होगा ? किसे आशा थी कि वह पीठ में छुरी घोंपेगा ?"

"जी ! पीठ में छुरी घोंप दी ! इस बात को सालों से हमसे छिपाये रखना उनका दोष नहीं ! देश की सुरक्षा के मामले में लापरवाही बरतना उनका दोष नहीं ? कम्यूनिस्ट विचार धारा वाले को प्रतिरक्षा मंत्री के पद पर नियुक्त करना दोष नहीं ? सामरिक साधनों का उत्पादन करने वाले कारखानों में अस्त्र-शस्त्रों के बदले टी-पाट का उत्पादन हो रहा था··· यह दोष नहीं ?" काला चश्माधारी दनादन आरोपों का तीर छोड़ते रहे। गाँधी टोपी वाले हाथ मलते रह गये। आस पास खड़े सदस्यों ने तालियाँ पीटीं।

मुरली बीच में पड़ा, कहा—"चीन के द्रोहपूर्ण कृत्य को हमसे छिपाया गया···इसका कुछ न कुछ महत्वपूर्ण कारण हो सकता है !"

सबकी दृष्टि उसकी तरफ फिरी। गाँधी टोपी वाले ने उसकी ओर कृतज्ञतापूर्वक देखा। मुरली ने आगे कहा, "यदि शुरू में ही चीन के द्रोह पूर्ण कृत्य को प्रकाश में लाते, संभव हैं चीन से समझौते की बातें न चला पाते। शुरू-शुरू में जो छोटी-मोटी टकराहट होती रही, उन्हें लेकर तिल को ताड़ बनाते···संभव हैं हमारे देश की प्रगति में बाधा उपस्थित हुई होती। युद्ध के लिए देशवासियों को तैयार करना, सामरिक भावना को उत्तेजित करना, हमारे भविष्य को मिट्टी में मिला देता। हमारे प्रधान मंत्री ने अगर समझौतेपूर्ण बातों द्वारा इस भारी उलझन को सुलझाने की कोशिश की तो इसमें क्या दोष है ? युद्ध घोषित करें, अकेले दुश्मन का सामना करें यह शक्ति हममें नहीं है। हमारी सामरिक शक्ति दुश्मन का मुकाबला करने में असमर्थ है। ऐसी विकट परिस्थिति में हमारे प्रधान मंत्री ने सोचा होगा चीन की दुश्मनी मोल लेने से, मित्रभाव से रहना विवेक की बात होगी। मेरा यह दावा नहीं कि सत्ताधारी पार्टी ने कोई गलती की ही नहीं है। लेकिन इस विकट परिस्थिति में हमें सत्ता का बल बढ़ाना है। नुकता-चीनी करते रहना अच्छा नहीं।"

मुरली के इस जोशीले तर्क पर काला चश्माधारी चुप हो गये। गाँधी टोपी वाले प्रसन्नता से सीना तानकर खड़े हो गये। अधिवेशन शुरू होने का समय हो गया और सदस्यगण भवन के अन्दर घुसने लगे। मुरली पत्रकारों के लिए नियत गैलरी की ओर बढ़ गया।

तीन दिन के उपरान्त भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू कोलम्बो के लिए रवाना हुए। हवाई अड्डे पर संवाददाताओं ने उन्हें घेर लिया। नेहरू के चेहरे पर हमेशा की वह ताज़गी व प्रसन्नता न थी। चिड़चिड़े से लगे। आँखों में कठोरता थी। शायद महत्त्वपूर्ण समस्या का दबाव उन्हें निरुत्साहित कर गया था।

एक अमेरिकी संवाददाता ने पूछा, "इस वक्त लंका जाने का कोई मुख्य कारण है ?"

नेहरू जी ने बदले में प्रश्न किया—"मित्र से मिलने का कोई कारण होना अनिवार्य है ?"

"हम इसका अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि सीमा पर शत्रु के ललकारते वक्त मित्र देश की सहायता लेने का इरादा है इसके पीछे ?"—एक महिला संवाददाता ने पूछा।

मुरली का ध्यान उस आवाज़ की ओर खिचा तो वह चौंक फड़ा। वह कान्तामणी थी। वह यहाँ कहाँ से टपक पड़ी ? कौन सी पत्रिका की संवाददाता है वह ?···शायद शारदा का पीछा करने आयी है ?

नेहरूजी ने फटकारा—"भारत किसी को अपना दुश्मन नहीं मानता।"

अमेरिकी संवाददाता ने विस्मित स्वर में पूछा—"सीमा परआक्रमण करते चीन को भी ?"

नेहरू जी ने मुस्कुराते हुए कहा, "हाँ ! भारत और चीन हजारों सालों से मित्र बने रहे हैं। ये छोटे-छोटे मन-मुटाव निकट भविष्य में दूर हो जायेगें।"

"चीन के आक्रमण के मुकाबले के लिये क्या कदम उठाया गया है ?" कान्तामणी ने फिर पूछा।

"नेफा के हिस्से को चीन से छुड़ाने की आज्ञा हमारी सेना को दी गयी है।"

"यह कब होगा ?" मुरली ने उतावली दिखायी।

"बता नहीं सकता यह कब संभव होगा। आक्रमण का सामना करने की आज्ञा दी गयी है। यह तो हमारी फौजी शक्ति पर निर्भर है।" उनके चेहरे पर फिर से चिन्ता की कालिमा छा गयी। मुरली भी व्याकुल हो गया।

नेहरू जी के विमान पर चढ़ने के बाद संवाददाता इधर-उधर बिखर गये। हवाई अड्डे के द्वार पर कान्तामणी मुरली की प्रतीक्षा में खड़ी थी। उसे देखते ही बोल उठी, "मिस्टर मुरली ! आपको कहाँ-कहाँ ढूंढ़ती फिरूँ ? आपसे मिलने 'भारतमणी' कार्यालय में गयी थी।"

मुरली ने उसपर तीव्र दृष्टि डालते हुए पूछा, "विप्लव पार्टी के उग्र-वादी को मुझसे क्या काम है ?"

"आईये ! हम कैन्टीन में जाकर बातें करें···" कान्तामणी आगे चली। मुरली उसके पीछे गया।

कान्तामणी ने चलते-चलते पूछा—"यहाँ कहाँ ठहरे हैं आप ?"

मुरली ने जानबूझकर झूठ कहा—"एक रिश्तेदार के घर में।" फिर पूछा—"तुम किस पत्रिका की संवाददाता हो ?"

"कलकत्ते से प्रकाशित हमारी पार्टी की पत्रिका है न ? उसकी तरफ से आयी हूँ। ग्रान्ड होटल में ठहरी हूँ।

दोनों कैन्टीन में एक एकान्त स्थान पर जा बैठे।

"आपसे एक जरूरी काम है। 'भारतमणी' से खबर मिली कि आप दिल्ली आये हैं।" कान्तामणी ने धीमी आवाज में कहा।

"क्या बात है ?"

"शिवराम जी एक विशिष्ट कार्यकर्त्ता थे। उनका निधन पार्टी के लिए महान क्षति है। अब तक हमारे लीडर इस भारी धक्के से संभल नहीं पाये हैं। शिवराम जी ने किसी मानसिक ग्रन्थी के कारण आत्महत्या कर ली—इस विषय पर आप आवश्यक···।"

मुरली ने आक्रोश के साथ टोका—"तुम चाहती हो मैं इस दलील पर विश्वास करूँ कि शिवराम ने आत्महत्या की है ?"

"हाँ···यह आत्महत्या के अलावा कुछ नहीं है।"

"एक झूठी बात की रट लगाते, दुहराते रहना आपकी पार्टी के प्रचार लिए उपयुक्त हो सकता है, लेकिन वह कभी सच नहीं हो सकता।"

"आपके ऐसे सन्देहों का कोई आधार नहीं। आप ही कहिए—हत्या का कारण क्या हो सकता है ?"

"कहिए···ट्राटस्की की हत्या के पीछे कौन-सा कारण था ? पेरिया

की हत्या क्यों की गयी ?"

कान्तामणी मुरली से आँख न मिला सकी। आँखें फेरकर खिड़की की तरफ देखती हुई बोली—"आपका सन्देह निराधार है। आप शिवराम की मृत्यु को बेकार हत्या सिद्ध करना चाहते हैं।"

"नहीं ! यह हत्या ही है।" मुरली ने आवेश के साथ कहा।

"चाहे जो कुछ भी हो। इस मामले में आप हस्तक्षेप न करें···पत्रिका में कुछ न लिखें···"

मुरली ने बात काटी, "ओह ! हत्या की बात को छिपाने का सुझाव देती हैं ? मेरे मित्र की हत्या के सम्बन्ध में न्याय माँगना मेरा कर्त्तव्य है।"

"यह हत्या नहीं है।"

"नहीं ! यह हत्या है।"

"आपसे तर्क करने में कोई फायदा नहीं" कान्तामणी झल्लाकर उठ गयी।

उससे विदा लेकर मुरली एक टैक्सी में होटल की तरफ गया। उसे इसका पता न था कि एक और टैक्सी उसका पीछा करती आ रही है।

पैंतीस

नई दिल्ली में विप्लव पार्टी कार्यालय की छत पर एक कमरे में कान्तामणी अकेली बैठी थी। उसकी आंखें बार-बार खिड़की के जरिए बाहर सड़क को देख रही थीं। द्वार पर एक टैक्सी आकर रुकी। उसमें से उतरकर दण्डयुद्धपाणी ऊपर आया।